Digitization by Hindu-Heritage-Foundation-of America- HHFA(USA)

* अथ *

गरुडपुराणम्

भाषाटीकासहितम्

प्रधान वितरक—श्री गंगा पुस्तकालय, त्रिलोचन, वाराणसी मूल्य ३)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रीरामचरितमानस आठ काण्ड

१ श्रीरामचरितमानस, भाषा टीका सचित्र तथा सजिल्द (देवदीपिका टीका) आठ काण्ड, क्षेपक सहित, रायल चौपेजी (ग्लेज) छप रहा है

२ श्रीरामचरितमानस सटीक (सचित्र तथा सजिल्द आठ काण्ड, २२×२९=८ पेजी

शिवपुराण भाषा

ग्लेज कागज पर २२×२९=८ पेजी साइज में अनेक रंग-बिरंगे चित्रों से सुसज्जित, सरल व रोचक भाषा में छपकर तैयार है।

पाक-रत्नाकर

इस पुस्तक में भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में प्रचलित तरह-तरह के उत्तमोत्तम पक्वान्नों के बनाने की अलग-अलग विधियाँ दी गई हैं। इसकी सहायता से घर-बैठे लोग बढ़िया से बढ़िया भोज्य पदार्थ बना सकेंगे। २२×३६=१६ पेजी साइज में कई एकरंगे व तिरंगे चित्रों सहित छपकर तैयार है।

महाभारत भाषा

महाभारत के १८ पर्वों की कथा केवल हिन्दी भाषा में, २२×२९=८ पेजी साइज, दर्जनों रंग-बिरंगे चित्रों से सुसज्जित, सुन्दर जिल्द की बाइंडिंग में छपकर तैयार हो गई है।

मिलने का पता—श्री गंगा पुस्तकालय, त्रिलोचन, वाराणसी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

* श्रीः *

अथ गरुडपुराण भाषाटीकासमेतं प्रारभ्यते ।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।। देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ।। १ ।।

धर्मदृढबद्धमूलो वेदस्कन्धः पुराणशाखाढ्यः ।। क्रतुकुसुमो मोक्षफलो मधुसूदनपादपो जयति ।। १ ।। नैमिषेऽनिमिषक्षेत्रे ऋषयः शौनकादयः ।। सत्रं स्वर्गाय लोकाय सहस्रसममासत ।। २ ।। एकदा मुनयः सर्वे प्रातर्हुतहुताग्नयः ।। सत्कृतं सूतमासीनं पप्रच्छुरिद-

श्री विष्णु भगवान् रूपी वृक्ष सर्वश्रेष्ठ है। भगवान् रूपी वृक्ष का धर्म ही दृढ़ मूल है, वेद शाखायें हैं, यज्ञ फूल हैं और मोक्ष फल है। ऐसे विष्णु भगवान् को नमस्कार है ।। १ ।। श्री विष्णु के क्षेत्र नैमिषारण्य में शौनक आदि ऋषियों ने स्वर्ग-प्राप्ति के लिये सहस्रवार्षिक (हजार वर्ष) के यज्ञ का आरम्भ किया ।।२।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उन ऋषियों ने एक समय नित्यक्रिया, अग्निहोत्र, आदि कर्मों से निवृत्त होकर सुखपूर्वक बैठे हुए
 श्रीसूतजी का सत्कार करके आदरपूर्वक उनसे यह प्रश्न पूछा ॥ ३ ॥ ऋषियों ने कहा—हे सूतजी !
 सुख को देनेवाले वेद के सिद्धान्त को आपने भली भाँति सुनाया, इस समय हम लोग भय को देनेवाले यमराज

मादरात् ॥३॥ ऋषय ऊचुः ॥ कथितो भवता सम्यग् वेदमार्गः सुखप्रदः ॥ इदानीं श्रोतु-
मिच्छामो यममार्गं भयप्रदम् ॥४॥ तथा संसारदुःखानि तत्क्लेशक्षयसाधनम् ॥ ऐहिकामु-
ष्मिकान् क्लेशान् यथावद्वक्तुमर्हसि ॥५॥ सूत उवाच ॥ शृणुध्वं वो विवक्ष्यामि यममार्गं
सुदुर्गमम् ॥ सुखदं पुण्यशीलानां पापिनां दुःखदायकम् ॥६॥ यथा श्रीविष्णुना प्रोक्तं वैनतेयाय
पृच्छते ॥ तथैव कथयिष्यामि सन्देहच्छेदनाय वः ॥७॥ कदाचित्सुखमासीनं वैकुण्ठे श्रीहरिं

के मार्ग का वर्णन सुनना चाहते हैं ॥ ४ ॥ संसार के दुःख और कष्टों के नाश होने के उपाय और इस लोक तथा परलोक के दुःख का वर्णन करने में आप समर्थ हैं ॥५॥ सूतजीने कहा—पापियोंको दुःखदायी और पुण्यात्माओं को सुख-दायी अत्यन्त दुर्गम यममार्ग का वर्णन आप लोगों से हित के लिये मैं कहता हूँ, सुनिये ॥६॥ गरुड़जी के पूछने पर जो
वृत्तान्त स्वर्ग में सुखपूर्वक बैठे हुए विष्णु भगवान् ने गरुड़जी से कहा था वही मैं आप लोगों से कहता हूँ,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुनिये ॥७॥ गरुड़जी ने पूछा——हे भगवन् ! आपने भक्ति के अनेक मार्गों को तथा भक्तों की उत्तम गतियों को मुझे सुनाया है ॥८-९॥ अब इस समय में आपकी भक्ति से विमुख प्राणियों का गमन दुर्गम यममार्ग को कैसे होता है सुनना चाहता हूँ। यममार्ग की कठिनाइयों का श्रवण करना चाहता हूँ ॥१०॥ हे भगवन् ! आपका नाम लेना

गुरुम् ॥ विनयावनतो भूत्वा पप्रच्छ विनतासुतः ॥८॥ गरुड उवाच ॥ भक्तिमार्गो बहुविधः कथितो भवता मम ॥ तथा च कथिता देव भक्तानां गतिरुत्तमा ॥ ९ ॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि यममार्गं भयङ्करम् ॥ त्वद्भक्तिविमुखानाञ्च तत्रैव गमनं श्रुतम् ॥१०॥ सुगमं भगवन्नाम जिह्वा च वशवर्तिनी ॥ तथापि नरकं यान्ति धिग्धिगस्तु नराधमान् ॥ ११ ॥ अतो मे भगवन् ब्रूहि पापिनां या गतिर्भवेत् ॥ यममार्गस्य दुःखानि यथा ते प्राप्नुवन्ति वै ॥१२॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वक्ष्येऽहं शृणु पक्षीन्द्र यममार्गं च येन ये ॥ नरके पापिनो यान्ति शृण्व-

सरल है और जिह्वा अपने वश में है, फिर भी आपकी भक्ति से विमुख हो जो नराधम नरक में जाते हैं, उनको धिक्कार है ॥ ११ ॥ हे नाथ ! पापियों की जो दुर्गति होती है और जिस प्रकार वे नरकगामी होते हैं तथा उसके दुःख को सहते हैं, उसे विस्तार से कहिये ॥१२॥ श्रीभगवान् ने कहा——हे पक्षिराज गरुड़ ! मैं भयङ्कर यममार्ग का वर्णन

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

करता हूँ जिसमें होकर पापी लोग यमलोक को जाते हैं। वह वर्णन सुननेवाले को भी अति भय देनेवाला है। परन्तु तुम्हारे आग्रह से मैं कहता हूँ ॥१३॥ जो लोग सर्वदा पाप में ही आसक्त रहते हैं, दया और धर्म से रहित हैं, कुसंगति में रहते हैं और उत्तम वेद-शास्त्र तथा सत्सङ्गति से विमुख रहते हैं॥१४॥ जो अपने को सम्मानित मानकर उग्र रहते हैं

तामतिभीतिदम् ॥ १३ ॥ ये हि पापरतास्तार्क्ष्य दयाधर्मविवर्जिताः। दुष्टसङ्गाश्च सच्छास्त्र-
सत्सङ्गतिपराङ्मुखाः ॥ १४ ॥ आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ॥ आसुरं
भावमापन्ना दैवीसम्पद्विवर्जिताः ॥१५॥ अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताः
कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥ ये नरा दानशीलाश्च ते यान्ति परमां गतिम् ॥
पापशीला नरा यान्ति दुःखेन यमयातनाम् ॥ १७ ॥ प्राणिनामैहिकं दुःखं यथा भवति

और धन तथा मर्यादा के गर्व से युक्त हैं तथा राक्षसी भाव प्राप्त होकर दैवी शक्तिरूपी सम्पत्ति से हीन होते हैं ॥१५॥ जो काम तथा भोग में लीन रहते हैं, जिनका मन मायाजाल में फँसा हुआ है, वे अपवित्र नरक में गिरते हैं ॥१६॥ जो मनुष्य दान देनेवाले हैं वे मोक्ष प्राप्त करते हैं। जो लोग पापी हैं वे दुःखपूर्वक यम-यातना सहते हुए यमलोक जाते हैं॥१७॥ पापियों को इस संसार के दुःख जैसे मिलते हैं उन दुःखों को भोगने के पश्चात् जैसी मृत्यु होती है,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततः वे कैसा कष्ट पाते हैं उसका वर्णन तुमसे करता हूँ, सुनो ॥१८॥ मनुष्य संसार में जन्म लेकर अपने पूर्वजन्म के संचित किये हुए पुण्य और पाप के अच्छे-बुरे फल को भोगता है। शेष अशुभ कर्मों के संयोग से शरीर में कोई रोग हो जाता है ॥१९॥ रोग और विपत्तिसे युक्त वह प्राणी जीवन की आशा से उत्कण्ठित रहता है। युवावस्था का वेदना-

तच्छृणु ॥ ततस्ते मरणं प्राप्य तथा गच्छन्ति यातनाः ॥ १८ ॥ सुकृतं दुष्कृतं वापि
भुक्त्वा पूर्वं यथार्जितम् ॥ कर्मयोगात्तदा तस्य कश्चिद्व्याधिः प्रजायते ॥ १९ ॥ आधि-
व्याधिसमायुक्तं जीविताशासमुत्सुकम् ॥ कालो बलीयानहिवज्ञातः प्रतिपद्यते ॥ २० ॥
तत्राप्यजातनिर्वेदो म्रियमाणः स्वयम्भृतैः ॥ जरयोपात्तवैरूप्यो मरणाभिमुखो गृहे ॥ २१ ॥
आस्तेऽवमत्योपन्यस्तं गृहपाल इवाहरन् ॥ आमयाव्यप्रदीप्ताग्निरल्पाहारोऽल्पचेष्टितः ॥२२॥
वायुनोत्क्रमतोत्तारः कफसंरुद्धनाडिकाः ॥ कासश्वासकृतायासः कण्ठे घुरघुरायते ॥ २३ ॥

हीन यह प्राणी स्त्री-पुत्रों से सेवित होने पर भी फिर भी बलवान् सर्प के समान काल एकाएक उसके सिर पर आ पहुँचता है ॥२०॥ वृद्धावस्था के कारण रूपहीन होकर घर में मृतक के समान रहता है ॥२१॥ गृहस्वामी द्वारा अपमान-युक्त दिये हुए आहार को श्वान के समान भोजन करता है, रोग और मन्दाग्नि के कारण आहार घट जाता है, और चलने-फिरने की शक्ति घट जाती है, चेष्टाहीन हो जाता है ॥२२॥ जब कफ से स्वर-नलियाँ रुक जाती हैं, आवागमन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तृष्णा नजीजलो०

में कष्ट होता है, खाँसी और श्वास के वेग के कारण उसके कण्ठ में घुर-घुर शब्द होने लगता है ॥ २३ ॥ चेतना रहने के कारण चारपाई पर पड़ा हुआ सोचता है, बन्धुवर्ग से घिरा हुआ वह प्राणी मृत्यु के सन्निकट आता रहता है, बुलाने से भी नहीं बोलता है ॥२४॥ इस प्रकार अब भी कुटुम्ब के पालन-पोषण में जिसकी आत्मा लगी रहती है,

शयानः परिशोचद्भिः परिवीतः स्वबन्धुभिः ॥ वाच्यमानोऽपि न ब्रूते कालपाशवशं गतः ॥२४॥ एवं कुटुम्बभरणे व्यावृतात्माऽजितेन्द्रियः ॥ म्रियते रुदतां स्वानामुरुवेदनयाऽस्तधीः ॥२५॥ तस्मिन्नन्तक्षणे तार्क्ष्य दैवी दृष्टिः प्रजायते ॥ एकीभूतं जगत्सर्वं न किञ्चिद्वक्तुमीहते ॥ २६ ॥ विकलेन्द्रियसंघाते चैतन्ये जडतां गते ॥ प्रचलन्ति ततः प्राणा याम्यैर्निकटवर्त्तिभिः ॥ २७ ॥ स्वस्थानाच्चलिते श्वास कल्पाख्यो ह्यातुरक्षणः ॥ २८ ॥

उस परिवार के प्रेम की वेदना से रोता हुआ वह प्राणी परिवार के बीच में मर जाता है ॥२५॥ हे गरुड़! उस मृत्यु के समय देवताओं के समान प्राणी की दिव्य दृष्टि हो जाती है। वह संसार को एकमय देखता है, कुछ भी बोलने में असमर्थ हो जाता है। इन्द्रियों की व्याकुलता से चैतन्य प्राणी भी जड़ के समान हो जाता है। इस कारण समीप में आये यमदूतों के भय से प्राण अपने स्थान से चलायमान हो जाता है ॥२७॥ जब प्राण आदि पाँचों वायु अपने स्थान से चल देते हैं, उस मरते समय पापी को एक क्षण भी कल्प के समान बीतता है। सौ बिच्छुओं के काटने से जो पीड़ा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

होती है वैसी ही व्यथा श्वासों के निकलते समय होती है ॥२८॥ (यमदूतों के भय से) उस जीव के मुख से लार और फेन गिरने लगता है। अतः पापियों का प्राणवायु गुदा के मार्ग से बहिर्भूत होता है ॥२९॥ प्राण निकलते समय प्राणियों को यमदूत मिलते हैं जो क्रोध से लाल नेत्रवाले, भयानक मुख, पाश और दण्ड को लिये, नग्न-शरीर, दाँतों को पीसते

शतवृश्चिकदंष्ट्रस्य या पीडा सानुभूयते ॥ फेनमुद्गिरते सोऽथ मुखं लालाकुलं भवेत् ॥
अधोद्वारेण गच्छन्ति पापिनां प्राणवायवः ॥२९॥ यमदूतौ तदा प्राप्तौ भीमौ संरभसेक्षणौ ॥
पाशदण्डधरौ नग्नौ दन्तैः कटकटायतौ ॥ ३० ॥ ऊर्ध्वकेशौ काककृष्णौ वक्रतुण्डौ नखा-
युधौ ॥ तान् दृष्ट्वा त्रस्तहृदयः सकृन्मूत्रं विमुञ्चति ॥ ३१ ॥ अंगुष्ठमात्रः पुरुषो हाहाकुर्व-
न्कलेवरात् ॥ तदैव गृह्यते दूतैर्याम्यैः पश्यन् स्वयं गृहम् ॥३२॥ यातनादेह आवृत्य पाशै-

॥३०॥ ऊपर को उठे केशवाले, काकों के समान काले, टेढ़े मुखवाले विशाल नखरूपी शस्त्रवाले यमदूत वहाँ आकर उपस्थित रहते हैं। उन दूतों को देखकर भय से वह प्राणी मल-मूत्र का त्याग करने लगता है ॥३१॥ हाय-हाय करता हुआ वह जीव शरीर से निकलकर अंगुष्ठमात्र शरीर को धारण करता है और (मोह-वश) अपने घर को देखता है। उसी समय यमदूतों द्वारा पकड़ा जाता है ॥३२॥ उस अंगुष्ठमात्र शरीरको यातनारूपी शरीर से ढक गले

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में रस्सी बाँधकर इस प्रकार ले जाते हैं, जैसे अपराधी पुरुष को राजा के सिपाही पकड़कर ले जाते हैं ॥३३॥ वे यमदूत इस प्रकार उस जीव को ले जाते हुए मार्ग में धमकी देते हैं तथा नरकों के भयानक दुःखों का वर्णन बारम्बार करते जाते हैं ॥३४॥ वे दूत कहते हैं, अरे दुष्टात्मा ! तू शीघ्र चल, तुझे यमलोक को जाना है और कुम्भीपाक आदि

बद्ध्वा गले बलात् ॥ नयतो दीर्घमध्वानं दंड्यं राजभटा यथा ॥३३॥ तस्यैवं नीयमानस्य दूताः सन्तर्जयन्ति च ॥ प्रवदन्ति भयं तीव्रं नरकाणां पुनः पुनः ॥३४॥ शीघ्रं प्रचल दुष्टात्मन् यास्यसि त्वं यमालयम् ॥ कुम्भीपाकादिनरकांस्त्वां नयावोऽद्यमा चिरम् ॥ ३५ ॥ एवं वाचस्तदा शृण्वन् बन्धूनां रुदितं तथा ॥ उच्चैर्हाहेति विलपंस्ताड्यते यमकिंकरैः ॥ ३६ ॥ तयोर्निर्भिन्नहृदयस्तर्जनैर्जातवेपथुः ॥ पथि श्वभिर्भक्ष्यमाण आर्तोऽघं स्वमनुस्मरन् ॥ ३७ ॥

नरकों का उपभोग करना है । अतः तू देर न कर ॥३५॥ यमदूतों की ऐसी वाणी को सुनता हुआ तथा अपने बन्धुवर्गों के विलाप को श्रवण करता हुआ वह जीव हाय-हाय करता है । यमदूत उसे प्रताड़ना करते हैं ॥३६॥ उन यमदूतों के धमकाने से उसका हृदय विदीर्ण हो जाता है । भय से काँपता और अपने पापों का स्मरण करता हुआ यममार्ग में कुत्तों से कटाया जाता है ॥३७॥ जब मार्ग में क्षुधा और प्यास से पीड़ित होता है, सूर्य के तेज और पवन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

की प्रबलता से तप्त बालू में चलना पड़ता है, छाया और विश्राम-रहित मार्ग में चलनेसे असमर्थ हो जाता है, तब उस जीव को कोड़ों से मारकर यमदूत घसीटते हैं ॥३८॥ ऐसे कठिन मार्ग में चलने से थककर गिरता है, मूर्छा खाता है तथा फिर उठता है। इस प्रकार वह जीव अन्धकारमय यमलोक में पहुँचाया जाता है ॥३९॥ वह जीव तीन अथवा

क्षुत्तृड्परीतोऽर्कदवानलानिलैः संतप्यमानः पथि तप्तवालुके ॥ कृच्छ्रेण पृष्ठे कशया च ताडितश्चलत्यशक्तोऽपि निराश्रमोदके ॥ ३८ ॥ तत्र तत्र पतञ्छ्रान्तो मूर्छितः पुनरुत्थितः ॥ यथा पापीयसा नीतस्तमसा यमसादनम् ॥ ३९ ॥ त्रिभिर्मुहूर्तैर्द्वाभ्यां वा नीयते तत्र मानवः ॥ प्रदर्शयन्ति दूतास्ता घोरा नरकयातनाः ॥ ४० ॥ मुहूर्तमात्रात्त्वरितं यमं वीक्ष्य भयं पुमान् ॥ यमाज्ञया समं दूतैः पुनरायाति खेचरः ॥ ४१ ॥ आगम्य वासनाबद्धो देहमिच्छन्यमानुगैः ॥ धृतः पाशेन रुदति क्षुत्तृड्भ्यां परिपीडितः ॥४२॥ भुङ्क्ते पिण्डं सुते-

दो मुहूर्त में यमलोक में पहुँचाया जाता है। वे यमदूत उसको घोर नरक की यातना दिखाते हैं ॥४०॥ यमलोक में पहुँचकर वह जीव यमराज के दर्शन तथा एक मुहूर्त में घोर नरकों की यातना को देखकर यमराज की आज्ञा से फिर मनुष्यलोक में आता है ॥४१॥ यहाँ आनेपर वह जीव पुनः अपने पूर्व शरीर में प्रवेश करने की इच्छा करता है, परन्तु यमदूत उसे पाश में बाँधे रहते हैं। इस कारण वह क्षुधा-तृषा के दुःसह दुःख को सहता और विकल होकर रोता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है ॥४२॥ तब मृत्यु के स्थान पर पुत्रों द्वारा दिये गये पिण्ड को और मरने के समय में दिये हुए दान को वह जीव खाता है, तब भी उस पापी जीव की तृप्ति नहीं होती ॥४३॥ पुत्रों द्वारा दिये हुए दान, श्राद्ध और जलाञ्जलि से पापी मनुष्य को तृप्ति नहीं होती। इसी से पिण्डदान देने पर भी वे भूख से और भी व्याकुल हो जाते हैं॥४४॥

दत्तं दानं चातुरकालिकम्। तथापि नास्तिकस्तार्क्ष्य तृप्तिं याति न पातकी ॥४३॥ पापिनां नोपतिष्ठन्ति दानं श्राद्धं जलाञ्जलिः॥ अतः क्षुद्व्याकुला यान्ति पिण्डदानभुजोऽर्पिते ॥ ४४ ॥ भवन्ति प्रेतरूपास्ते पिण्डदानविवर्जिताः॥ आकल्पं निर्जनारण्ये भ्रमन्ति बहुदुःखिताः ॥४५॥ नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ अभुक्त्वा यातनां जन्तुर्मानुष्यं लभते नहि ॥ ४६ ॥ अतो दद्यात्सुतः पिण्डान् दिनेषु दशसु द्विज ॥ प्रत्यहं ते विभज्यन्ते चतुर्भागैः खगोत्तम ॥ ४७ ॥ भागद्वयं तु देहस्य पुष्टिदं भूतपञ्चके ॥ तृतीयं

जिनका पिण्डदान नहीं होता, वे कल्प भर प्रेतयोनि में रहकर निर्जन वन में दुःखपूर्वक भ्रमण करते हैं ॥४५॥ बिना भोगे कर्म का क्षय करोड़ों कल्प तक भी नहीं होता है और बिना यम की यातना भोगे जीवों को मनुष्य का जन्म भी नहीं मिलता है ॥४६॥ इसी से पुत्र को दस दिन तक पिण्डदान करना चाहिये। हे गरुड़! उस पिण्ड के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रतिदिन चार भाग होते हैं ।।४७।। उनमें से दो भाग पञ्चभूतों के लिये होते हैं, जिनसे देह की पुष्टि होती है। तीसरा भाग यमदूतोंको मिलता है और चौथा भाग उस प्रेत को खाने को मिलता है ।।४८।। इस प्रकार प्रेत नव दिन तक का पिण्डदान खाने को पाता है। दसवें दिन के पिण्डदान से प्रेत का शरीर निर्मित होता है और चलने की सामर्थ्य होती है ।।४९।। हे पक्षियों में श्रेष्ठ ! पूर्व शरीर के दग्ध हो जाने पर पुत्र द्वारा दिये हुए पिण्डों से फिर भी उस जीव को

यमदूतानां चतुर्थं सोपजीवति ॥ ४८ ॥ अहोरात्रैश्च नवभिः प्रेतः पिण्डमवाप्नुयात् ॥
जन्तुर्निष्पन्नदेहश्च दशमे बलमाप्नुयात् ॥ ४९ ॥ दग्धे देहे पुनर्देहः पिण्डैरुत्पद्यते खग ॥
हस्तमात्रः पुमान्येन पथि भुङ्क्ते शुभाशुभम् ॥ ५० ॥ प्रथमेऽहनि यः पिण्डस्तेन मूर्धा
प्रजायते ॥ ग्रीवास्कन्धौ द्वितीयेन तृतीयाद्धृदयं भवेत् ॥ ५१ ॥ चतुर्थेन भवेत्पृष्ठं पञ्च-
मान्नाभिरेव च ॥ षष्ठेन च कटी गुह्यं सप्तमात्सक्थिनी भवेत् ॥ ५२ ॥ जानुपादौ तथा

देह मिलता है। वह जीव हाथ भर का शरीर पाकर यमलोक पथ में अपने शुभ-अशुभ कर्मों को भोगता है ।।५०।। अब दस दिन के दिये पिण्ड से जिस प्रकार शरीर बनता है, उसे कहते हैं। प्रथम दिन के पिण्ड से सिर, दूसरे दिन के पिण्ड से गर्दन और कन्धा, तीसरे दिन के पिण्ड से हृदय बनता है ।।५१।। चौथे दिन के पिण्ड से पीठ, पाँचवें दिन के पिण्ड से नाभि उत्पन्न होती है। छठे दिन के पिण्ड से कमर, गुदा, लिंग, भग और मांस के पिण्ड आदि,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सातवें दिन के पिण्ड से हड्डी आदि बन जाती है ॥५२॥ और आठवें-नवें दिन के दो पिण्डों से जंघा और पैर उत्पन्न होते हैं । दसवें दिन के पिण्ड से उस देह में क्षुधा-तृषा की उत्पत्ति होती है ॥५३॥ पिण्ड से उत्पन्न शरीर का आश्रय लेकर भूख-प्यास से पीड़ित प्रेत ग्यारहवें और बारहवें दिन के श्राद्ध को दो दिन में भोजन करता है ॥५४॥

द्वाभ्यां दशमेऽह्नि क्षुधा तृषा ॥ पिण्डजं देहमाश्रित्य क्षुधाविष्टस्तृषार्दितः ॥ ५३ ॥ एकादशं द्वादशञ्च प्रेतो भुङ्क्ते दिनद्वयम् ॥ त्रयोदशेऽहनि प्रेतो यन्त्रितो यमकिङ्करैः ॥५४॥ तस्मिन्मार्गे व्रजत्येको गृहीत इव मर्कटः ॥ ५५ ॥ षडशीतिसहस्राणि योजनानां प्रमाणतः ॥ यममार्गस्य विस्तारो विना वैतरणीं खग ॥ ५६ ॥ अहन्यहनि वै प्रेतो योजनानां शत-द्वयम् ॥ चत्वारिंशत्तथा सप्त दिवरात्रेण गच्छति ॥ ५७ ॥ अतीत्य क्रमशो मार्गे पुराणी-

तेरहवें दिन यमदूतों से बँधा वह जीव बँधे हुए बन्दर के समान अकेला जाता है ॥५५॥ हे गरुड़ ! वैतरणी को छोड़कर केवल यमलोक ८६ छियासी हजार योजन विस्तीर्ण है ॥५६॥ अब इस जीव को प्रतिदिन २४ घण्टों में क्रमशः २४७ योजन यमदूतों के सङ्ग निरन्तर चलना पड़ता है ॥५७॥ चलने वाले इस मार्ग के अंत में १६ ग्राम

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पड़ते हैं। उनको लाँघकर तब धर्मराज के नगर में वह पापी जीव पहुँचता है ॥५८॥ उन नगरों के नाम ये हैं—सौम्यपुर, सौरिपुर, नगेन्द्रभवन, गन्धर्व, शैलागम, क्रौंच, क्रूरपुर, विचित्रभवन, बह्वापद, दुःखद, नानाक्रन्दपुर, सुतप्त-

मानि षोडश ॥ प्रयाति धर्मराजस्य भवनं पातकी जनः ॥५८॥ सौम्यं सौरिपुरं नगेन्द्र-भवनं गन्धर्वशैलागमौ ॥ क्रौञ्चं क्रूरपुरं विचित्रभवनं बह्वापदं दुःखदम् ॥ नानाक्रन्दपुरं सुतप्तभवनं रौद्रं पयोवर्षणं ॥ शीताढ्यं बहुभीतिधर्मभवनं याम्यं पुरं चाग्रतः ॥५९॥ याम्य-पाशैर्धृतः पापी हा हेति प्ररुदन् पथि ॥ स्वगृहं तु परित्यज्य पुरं याम्यमनुव्रजेत् ॥६०॥

इति श्रीसारोद्धारे गरुडपुराणे पापिनामैहिकामुष्मिकदुःखनिरूपणं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

भवन, रौद्रनगर, पयोवर्षण, शीताढ्य, बहुभीति। इनके आगे यमपुर है ॥५९॥ यम के पाश (बन्धन) में बँधा हुआ वह पापी जीव मार्ग में रोता हुआ अपने घर को छोड़कर यमलोक को जाता है ॥ ६० ॥

इति श्रीगरुडपुराणे भाषाटीकायां ऐहिकामुष्मिकदुःखनिरूपणं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गरुड़जीने कहा—हे भगवन् ! यमलोक का मार्ग कितना दुःखदायी है ? यहाँ जीव पाप करने से उसमें कैसे जाता है ? वह सब मुझसे कहिये ।। १ ।। श्रीभगवान्‌जी ने कहा—हे गरुड़ ! यमलोक का मार्ग अत्यन्त दुःखदायी है । उसे सुनकर मेरे भक्त होते हुए भी तुम काँप जाओगे ।।२।। उस यमलोकमें वृक्षोंकी छाया नहीं है, जहाँ जीव

गरुड उवाच ।। कीदृशो यमलोकस्य पन्था भवति दुःखदः । तत्र यान्ति यथा पापास्तन्मे कथय केशव ।।१।। श्रीभगवानुवाच ।। यममार्गं महद्दुःखप्रदं ते कथयाम्यहम् ।। मम भक्तोऽपि तच्छ्रुत्वा त्वं भविष्यसि कम्पितः ।। २ ।। वृक्षच्छाया न तत्रास्ति यत्र विश्रमते नरः ।। यस्मिन्मार्गे न चान्नाद्यं येन प्राणान् समुद्धरेत् ।। ३ ।। न जलं दृश्यते क्वापि तृषितोऽतीव यः पिबेत् ।। तपन्ते द्वादशादित्याः प्रलयान्ते यथा खग ।। ४ ।। तस्मिन् गच्छति पापात्मा शीतवातेन पीडितः ।। कण्टकैर्विध्यते क्वापि क्वचित्सर्पैर्महाविषैः ।।५।। सिंहैर्व्याघ्रैः श्वभि-

विश्राम ले सकें और न तो वहाँ अन्न आदि है जिससे जीव के प्राण का निर्वाह हो सके ।।३।। न तो वहाँ कहीं जल दिखाई देता है, जिसे अति प्यासा प्राणी पी सके । हे खग ! उस लोक में बारहो सूर्य ऐसे तपते हैं, जैसे प्रलय के अन्त में तपते हैं।।४।। वहाँ ठण्ढक और हवा से जीव अत्यन्त पीड़ित होता है । कहीं बड़े-बड़े विषैले साँपोंसे कटाया जाता है, कहीं-कहीं काँटों से बिंध जाता है ।।५।। कहीं-कहीं घोर सिंह, व्याघ्र और कुत्तों से खाया जाता है । कहीं बिच्छुओंसे

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कटाया जाता है और कहीं अग्नि से जलाया जाता है ॥६॥ इसके बाद एक असिपत्र-वन है, जिसका विस्तार दो हजार योजन का है ॥७॥ वह वन कौवा, गीध, उलूक और शहद की मक्खियोंसे भरा है और वन के चारों ओर दावाग्नि लगी रहती है। जब डाँस और मक्खियोंके काटने से तथा अग्नि की गर्मी से वह जीव वृक्षके नीचे जाता है, तब तलवार

घोरैर्भिद्यते क्वापि पापकृत् ॥ वृश्चिकैर्दंश्यते क्वापि क्वचिद्दह्यति वन्हिना ॥ ६ ॥ ततः क्वचिन्महाघोरमसिपत्रवनं महत् ॥ योजनानां सहस्रे द्वे विस्तारायामतः स्मृतम् ॥ ७ ॥ काकोलूकवटगृध्र सरघादंशसंकुलम् ॥ सदावाग्नि च तत्पत्रैश्छिन्नभिन्नः प्रजायते ॥ ८ ॥ क्वचित्पतत्यन्धकूपे विकटात्पर्वतात्क्वचित् ॥ गच्छते क्षुरधारासु शंकूनामुपरि क्वचित् ॥ ९ ॥ स्खलत्यन्धे तमस्युग्रे जले निपतते क्वचित् ॥ क्वचित्पङ्के जलौकाढ्ये क्वचित्सन्तप्तकर्दमे ॥ १० ॥ सन्तप्तवालुकाकीर्णे ध्माततताम्रमये क्वचित् ॥ क्वचिदङ्गारराशौ च

के समान चोखे उन वृक्षोंके पत्तों से उसका शरीर छिन्न-भिन्न हो जाता है॥८॥ कहीं अँधेरे कुएँ में गिराया जाता है, कहीं पर्वत पर से नीचे गिराया जाता है, कहीं छुरों की धार के समान तीक्ष्ण मार्ग से चलाया जाता है और कहीं-कहीं कीलों के ऊपर से चलाया जाता है ॥९॥ कहीं अन्धकारयुक्त गुफाओं में, कहीं जल में, कहीं जोंक से भरे कीचड़में गिराया जाता है और जोंकों से कटाया जाता है। कहीं जलती हुई कीच में गिराया जाता है ॥१०॥ कहीं जलते

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हुए बालू में चलाया जाता है। कहीं ताँबे के समान जलती हुई पृथ्वी पर और कहीं अङ्गार-समूह में झोंका जाता है, कहीं धुएँ से व्याप्त मार्ग से चलाया जाता है ॥११॥ कहीं पर आग की वर्षा, कहीं पत्थर के टुकड़ों की वर्षा, कहीं रक्त की वर्षा और कहीं गरम जल की वर्षा होती है ॥१२॥ कहीं पर खारे कीचड़ की वर्षा होती है, कहीं पर बड़ी घोर

महाधूमाकुले क्वचित् ॥ ११ ॥ क्वचिदङ्गारवृष्टिश्च शिलावृष्टिः सवज्रका ॥ रक्तवृष्टिः शस्त्रवृष्टिः क्वचिदुष्णाम्बुवर्षणम् ॥ १२ ॥ क्षारकर्दमवृष्टिश्च महानिम्नानि च क्वचित् ॥ वप्रारोहणं क्वापि कन्दरेषु प्रवेशनम् ॥ १३ ॥ गाढान्धकारस्तत्रास्ति दुःखारोहशिला क्वचित् ॥ पूयशोणितपूर्णाश्च विष्ठापूर्णा ह्रदाः क्वचित् ॥ १४ ॥ मार्गमध्येवहत्युग्रा घोरा वैतरणी नदी ॥ सा दृष्टा दुःखदा किं वा यस्या वार्ता भयावहा ॥ १५ ॥ शतयोजनविस्तीर्णा

गुफायें हैं। कहीं कन्दरा में घुसाया जाता है ॥१३॥ जिसमें बहुत ही गहरा अन्धकार है और कहीं दुःख से चढ़ने योग्य शिलायें हैं। कहीं पीब तथा रक्त से भरे, कहीं विष्ठा से भरे कुण्ड हैं (जिनमें रहना पड़ता है) ॥१४॥ मध्य मार्ग में एक वैतरणी नाम की घोर नदी है, जो देखने मात्र से भय को देनेवाली है, जिसकी वार्ता सुनने से रोमाञ्च हो जाता है ॥१५॥ वह नदी एक सौ योजन चौड़ी है, जिसमें पीब-रक्त भरा हुआ है और जिसका किनारा हड्डियों

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से बना हुआ है, जिसमें रक्त, मांस और पीव के कीचड़ भरे हैं, जो बड़ी गहरी है तथा बड़े दुःख से पार होने योग्य है ॥१६॥ जिसमें केश ही सेवार हैं और जो बड़े-बड़े घड़ियालों से पूर्ण है। इसमें मांस खानेवाले सैकड़ों प्रकार के पक्षियों का निवास है ॥१७॥ हे गरुड़! जैसे आग की ज्वाला से तप्त हो कड़ाह में घी खौलता है उसी प्रकार पापी

पूयशोणितवाहिनी ॥ अस्थिवृन्दतटा दुर्गा मांसशोणितकर्दमा ॥ १६ ॥ अगाधा दुस्तरा पापैः केशशैवालदुर्गमा ॥ महाग्राहसमाकीर्णा घोरपक्षिशतैर्वृता ॥ १७ ॥ आगतं पापिनं दृष्ट्वा ज्वालाधूमसमाकुला । क्वथते सा नदी तार्क्ष्य कटाहान्तर्घृतं यथा ॥ १८ ॥ कृमिभिः संकुला घोरैः सूचीवक्त्रैः समन्ततः ॥ वज्रतुण्डैर्महागृध्रैर्वायसैः परिवारिता ॥ १९ ॥ शिशुमारैश्च मकरैर्जलौकामत्स्यकच्छपैः ॥ अन्यैर्जलस्थर्जीवैश्च पूरिता मांसभेदकैः ॥ २० ॥ पतितास्तत्प्रवाहे च क्रन्दन्ति बहुपापिनः ॥ हा भ्रातः पुत्र तातेति प्रलपन्ति मुहुर्मुहुः ॥ २१ ॥

को आया देखकर उस नदी का जल खौलता है ॥१८॥ और वह चारों ओर सूई के समान मुखवाले कीड़ों से युक्त है। वज्र के समान चोंचवाले गिद्ध और कौओं से वह नदी व्याप्त है ॥१९॥ और सूइस, घड़ियाल, मगर, जोंक, मछली, कछुआ तथा अन्य मांस-भक्षक जलचरों से वह भरी है ॥२०॥ उस नदी में छोड़ा गया पापी जीव अत्यन्त रोता है—हे भाई! हे पुत्र! हे पिता! आदि शब्द बारम्बार पुकारता है ॥२१॥ जब वह पापी जीव भूख-प्यास से

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पीड़ित होता है तब वही रुधिर और मांस पीने और खाने को मिलता है। वही नदी रक्तपूर्ण तथा फेन से युक्त है ॥२२॥ महाघोर गर्जती हुई भयदायक उस नदी को देखने मात्र से वह पापी मनुष्य मूर्छित हो जाता है ॥२३॥उसमें अनेक प्रकार के सर्प और बिच्छू भरे हैं। उसमें गिरे हुए प्राणी का रक्षा करनेवाला कोई नहीं रहता ॥२४॥वह पापी

क्षुधितास्तृषिताः पापाः पिबन्ति किल शोणितम् ॥ सा सरिद्रुधिरापूरं वहन्ती फेनिलं बहु ॥ २२ ॥ महाघोरातिगर्ज्जन्ती दुर्निरीक्ष्या भयावहा ॥ तस्या दर्शनमात्रेण पापाः स्युर्गतचेतनाः ॥ २३ ॥ बहुवृश्चिकसंकीर्णा सेविता कृष्णपन्नगैः ॥ तन्मध्ये पतितानाञ्च त्राता कोऽपि न विद्यते ॥२४॥ आवर्तशतसाहस्रैः पाताले यान्ति पापिनः ॥ क्षणं तिष्ठन्ति पाताले क्षणादुपरिवर्तिनः ॥ २५ ॥ पापिनां पतनायैव निर्मिता सा नदी खग ॥ न पारं दृश्यते तस्या दुस्तरा बहुदुःखदा ॥ २६ ॥ एवं बहुविधक्लेशे यममार्गेऽतिदुःखदे ॥

जीव नदीके सैकड़ों हजारों भँवरों में पड़कर नीचे पाताल को जाता है, फिर क्षण भर में ऊपर को आता है ॥२५॥ हे गरुड़ ! पापी जीवों के पतन के लिये ही यह नदी बनाई गई है। ऐसी कठोर और अत्यन्त दुःखको देनेवाली नदी का आर-पार भी नहीं दिखाई देताहै॥२६॥इस प्रकार यम के मार्ग में अनेक प्रकार के दुःखों को भोगते हुये रोता-चिल्लाता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हुआ प्राणी यमलोक को जाता है।।२७।। किसीको फाँसी में बाँधकर, किसीको अंकुशों से खींचकर, किसीको शस्त्रों से छेदते हुए यमदूत पापियों को यमलोक ले जाते हैं ।।२८।। यमदूत किसीको नाक में डोरी डालकर, किसीको कान में डोरी डालकर, किसीको कालपाश में बाँधकर, किसीको कौओं के समान खींचते हुए पापियों को यमलोक ले जाते

क्रोशन्तश्च रुदन्तश्च दुःखिता यान्ति पापिनः ।। २७ ।। पाशेन यन्त्रिताः केचित्कृष्य-माणास्तथाङ्कुशैः ।। शस्त्राग्रैः पृष्ठतः प्रोतैर्नीयमानाश्च पापिनः ।। २८ ।। नासाग्रपाश-कृष्टाश्च कर्णपाशैस्तथापरे ।। कालपाशैः कृष्यमाणाः काकैः कृष्यास्तथापरे ।। २९ ।। ग्रीवाबाहुषु पादेषु बद्धाः पृष्ठे च शृङ्खलैः ।। अयोभारञ्च ये केचिद्वहन्तः पथि यान्ति ये ।। ३० ।। यमदूतैर्महाघोरैस्ताड्यमानाश्च मुद्गरैः ।। वमन्तो रुधिरं वक्त्रात्तदेवाश्नन्ति ते पुनः ।। ३१ ।। शोचन्तः स्वानि कर्माणि ग्लानिं गच्छन्ति जन्तवः ।। अतीवदुःखसम्पन्ना

हैं ।।२९।। गर्दन, भुजा, पैर में सीकड़ बाँधकर और उन पर लोह का भार लादकर उनको रास्ते में चलने को कहते हैं।।३०।। भयानक यमदूत मुद्गर से मारते हैं। वह पापी और दुःखी जीव मुंह से रुधिर गिराता है और फिर उसीको खाता है ।।३१।। फिर अपने किये हुए कर्मों को सोचता तथा ग्लानि करता और अनेक प्रकार के दुःखों को भोगता हुआ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यमलोक को जाता है ॥३२॥ वह अज्ञानी यममार्ग में जाता हुआ 'हा पुत्र, हा पौत्र' ऐसा कहकर विलाप करता हुआ संतप्त होता है ॥३३॥ मन में सोचता है कि बड़े पुण्य से मनुष्य का जन्म मिलता है, उसको पाकर मैंने कुछ भी धर्म नहीं किया ॥३४॥ न तो कुछ दान किया, न तो अग्नि में हवन किया, न तपस्या की और न तो देवताओं

प्रयान्ति यममन्दिरम् ॥ ३२ ॥ तथापि स ब्रुवन्मार्गे पुत्र पौत्र इति ब्रुवन् ॥ हा हेति प्ररुदन्नित्यमनुतप्यति मन्दधीः ॥ ३३ ॥ महता पुण्ययोगेन मानुषं जन्म लभ्यते ॥ तत्प्राप्य न कृतो धर्मः कीदृशं हि मया कृतम् ॥ ३४ ॥ मया न दत्तं न हुतं हुताशने तपो न तप्तं त्रिदशा न पूजिताः ॥ न तीर्थसेवा विहिता विधानतो देहिन् क्वचिन्निस्तर यत्त्वया कृतम् ॥ ३५ ॥ न पूजिता विप्रगणाः सुरापगा न चाश्रिताः सत्पुरुषा न सेविताः ॥ परोपकारो न कृतः कदाचन देहिन् क्वचिन्निस्तर यत्त्वया कृतम् ॥३६॥ जलाशयो नैव

का पूजन किया, न तो सविधि तीर्थों की सेवा की, इसीसे हे शरीर ! अपने किये कर्मों के फल को भोगो ॥३५॥ न ब्राह्मणों का पूजन किया, न गंगास्नान किया, न साधुओं की सेवा की और न तो कभी परोपकार किया। इसलिये हे देहिन् ! अपने किये कर्मों के फल को भोगो ॥३६॥ पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों के हित के लिये न

जीवप्रपादोटक०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निर्जल देश में जलाशय बनवाया, न तो गाय ब्राह्मणों की जीविका के लिये कुछ वृत्ति दी, इससे हे देहिन्! अपने किये कर्मों के फल को भोगो ॥ ३७ ॥ न नित्य अन्नदान, न गौओं को कभी पर्याप्त तृण आदि दिया है, न वेदशास्त्र के अर्थों पर श्रद्धा की है, न कभी पुराणों को सुना है और न तो कभी कथा-वाचक व्यास का पूजन

कृतो हि निर्जले मनुष्यहेतोः पशुपक्षिहेतवे ॥ गोविप्रवृत्त्यर्थमकारि नाण्वपि देहिन् कचिन्निस्तर यत्त्वयाकृतम् ॥ ३७ ॥ न नित्यदानं न गवाह्निकं कृतं न वेदशास्त्रार्थवचः प्रमाणितम् ॥ श्रुतं पुराणं न च पूजितो ज्ञो देहिन् कचिन्निस्तर यत्त्वया कृतम् ॥३८॥ भर्तुर्मया नैव कृतं हितं वचः पतिव्रतं नैव कदापि पालितम् ॥ न गौरवं कापि कृतं गुरूचितं देहिन् कचिन्निस्तर यत्त्वया कृतम् ॥३९॥ न धर्मबुद्ध्या पतिरेव सेवितो वह्निप्रवेशो न कृतो मृते पतौ ॥ वैधव्यमासाद्य तपो न सेवितं देहिन् कचिन्निस्तर यत्त्वया कृतम् ॥४०॥ मासोप-

किया है। इससे हे देहिन्! अपने किये कर्मों के फल को भोगो ॥३८॥ मैंने अपने स्वामी की आज्ञा का न कभी पालन किया, न अपना पतिव्रत धर्म पालन किया, न कभी बड़ों का आदर-सत्कार तथा सेवा की, इसलिये हे शरीरी! अपने किये कर्मों को भोगो ॥३९॥ पति की सेवा करना ही स्त्रियों का परम धर्म है, यह जानते हुए भी जिस स्त्री ने पति की सेवा नहीं की, पति के मरने पर सती भी नहीं हुई, विधवा होने पर तपस्या नहीं की, इससे हे

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देहिन् ! अपने किये कर्मों का फल भोगो ॥४०॥ अपने पूर्वकर्मों द्वारा अत्यन्त दुःखदायी नारी-शरीर पाया, उससे न तो मासोपवास, न तो चान्द्रायण व्रत ही किया और न नियमों के द्वारा उस शरीर को क्लेशित किया ॥४१॥ इस प्रकार स्त्री-पुरुष-जीव अनेक विलाप करता हुआ और अपने पूर्व-देह को स्मरण करता हुआ कहता है कि हमारा

वासैर्न विशोषितं मया चान्द्रायणैर्वा नियमैः सविस्तरैः ॥ नारीशरीरं बहुदुःखभाजनं लब्धं मया पूर्वकृतैर्विकर्मभिः ॥४१॥ एवं विलप्य बहुशः स स्मरन् पूर्वदेहिकम् ॥ मानुषत्वं मम कुत इति क्रोशन् प्रसर्पति ॥४२॥ दशसप्तदिनान्येको वायुवेगेन गच्छति ॥ अष्टादशे दिने तार्क्ष्य प्रेतः सौम्यपुरं व्रजेत् ॥४३॥ तस्मिन्पुरवरे रम्ये प्रेतानाञ्च गणो महान् ॥ पुष्पभद्रा नदी तत्र न्यग्रोधः प्रियदर्शनः ॥४४॥ पुरे तत्र स विश्रामं प्राप्यते यमकिंकरः ॥

मानव-शरीर कहाँ चला गया ? ऐसा कहता हुआ वह जीव यममार्ग में जाता है ॥४२॥ सत्रह दिन तक वह प्रेतरूपी जीव वायु के समान चलता है । हे गरुड़ ! अठारहवें दिन वह प्रेत सौम्यपुर नामक नगर में पहुँचता है ॥४३॥ उस सौम्यपुर नगर में महान् प्रेतों के गण रहते हैं । वहाँ पुष्पभद्रा नाम की नदी है और वहीं अत्यन्त सुखकारी और सुन्दर एक वटवृक्ष है ॥४४॥ यमदूतों के साथ जीव वहाँ पर विश्राम करता है और स्त्री, पुत्र आदि के सुख को स्मरण करके

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दुःखित होता है ।।४५।। धन, नौकर, मित्र, स्त्री आदि की चिन्ता करता है, तब वहाँ के यमदूत कहते हैं कि धन, स्त्री, पुत्र, भृत्य यह सब सुख भोगनेवाले कहाँ हैं ? हे मूर्खो अपने किये कर्मों के फल को भोगते हुए अधिक काल के मार्ग पर चलो ।।४६-४७।। हे परलोकयात्री ! (तू यम के पराक्रम को नहीं जानता है) तुम्हारे ऐसे प्राणियों के

दारपुत्रादिकं सौख्यं स्मरते तत्र दुःखितः ।।४५।। धनानि· भृत्यमित्राणि सर्वं शोचति वै यदा ।। तदा प्रेतांस्तु तत्रत्याः किंकराश्चेदमब्रुवन् ।।४६।। क्व धनं क्व सुता जाया क्व सुहृत्क्व च बान्धवाः ।। स्वकर्मोपार्जितं भोक्ता मूढ याहि चिरं पथि ।। ४७ ।। जानासि सम्बलबलं बलमध्वगानां नो सम्बलाय यतसे परलोकपान्थ ।। गन्तव्यमस्ति तव निश्चितमेव तेन मार्गेण यत्र भवति क्रयविक्रयो हि ।। ४८ ।। आबालख्यातमार्गोऽयं नैव मर्त्य ! श्रुतस्त्वया ।। पुराणसम्भवं वाक्यं किं द्विजेभ्योपि न श्रुतम् ।। ४९ ।। एवमुक्तस्ततो दूतै-

साथ चलनेवाले हम यमदूतों के बल को तू नहीं जानता, तूने कभी ऐसा प्रयत्न नहीं किया, जिससे यम-यातना न हो। अब तो तुझे निश्चय करके यमलोक को चलना होगा। इसमें अब मोल-भाव नहीं हो सकता ।।४८।। यमलोक को तो बालक भी जानते हैं। क्या तूने यम-यातना नहीं सुनी थी ? क्या ब्राह्मणों के मुख से कभी पुराण भी नहीं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुना ॥४९॥ यमदूत ऐसे कहकर मुद्गरों से मारते हैं, तब वह मूर्छित होकर गिरता, फिर उठता, दौड़ता और यमदूतों के फन्दे से बलपूर्वक घसीटा जाता है ॥५०॥ घरसे तेरहवें दिन वह जीव चलता है। अठारहवें दिन सौम्यपुर नगर में पहुँचता है। वहाँ पहुँचकर स्नेह अथवा श्रद्धापूर्वक पुत्र-पौत्रों द्वारा दिये मासिक श्राद्धको भोजन करता है। फिर सौरिपुर

स्ताड्यमानश्च मुद्गरैः ॥ निपतन्नुत्पतन् धावन् पाशैराकृष्यते बलात् ॥ ५० ॥ अत्र दत्तंसुतैः पौत्रैः स्नेहाद्वा कृपयाऽथवा ॥ मासिकं पिण्डमश्नाति ततः सौरिपुरं व्रजेत् ॥५१॥ तत्र नाम्नास्ति राजा वै जङ्गमः कालरूपधृक् ॥ तद्दृष्ट्वा भयभीतोऽसौ विश्रामे कुरुते मतिम् ॥ ५२ ॥ उदकं चान्नसंयुक्तं भुङ्क्ते तत्र पुरे गतः ॥ त्रैपाक्षिके वै यद्दत्तं स तत्पुर-मतिक्रमेत् ॥ ५३ ॥ ततो नगेन्द्रभवनं प्रेतो याति यत्त्वरान्वितः ॥ वनानि तत्र रौद्राणि दृष्ट्वा क्रन्दति दुःखितः ॥५४॥ निर्घृणैः कृष्यमाणस्तु रुदते च पुनः पुनः ॥ मासद्वया-

को गमन करता है ॥५१॥ सौरिपुर में यम के स्वरूप को धारण करनेवाला जंगम नाम का राजा है ॥उसको देखकर भयभीत हो जाता है और वहीं विश्राम करता है ॥५२॥ उस नगर में पहुँचकर त्रिपाक्षिक श्राद्धमें दिये हुए अन्न-जल का भोजन करता है और उस नगर को पार करता है ॥५३॥ इसके बाद वह प्रेत शीघ्रता से नगेन्द्रभवन में पहुँचता है। वहाँ अत्यन्त भयानक वन है, उसको देख दुखी होता, रोता और चिल्लाता है ॥५४॥ निर्दय यमदूत उसको बारम्बार

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खींचते और घसीटते ले जाते हैं। उस वन को वह प्रेत दो मास में पार करता है ।।५५।। वहीं घरवालों द्वारा द्विमा-सिक-श्राद्ध में दिये अन्न, जल, वस्त्र आदि को खा-पहनकर फिर उन्हीं यमदूतों के साथ आगे को चलता है ।। ५६ ।। तीसरे महीने में वह प्रेत गन्धर्वपत्तनपुर पहुँचकर परिवारवालों के दिये पिण्ड का भोजन करके आगे को चलता है

वसाने तु तत्पुरं व्यथितो व्रजेत ।।५५।। भुक्त्वा पिण्डं जलं वस्त्रं दत्तं यद्बान्धवैरितः ।। कृष्यमाणः पुनः पाशैर्नीयतेऽग्रे च किङ्करैः ।। ५६ ।। मासे तृतीये सम्प्राप्ते प्राप्य गन्धर्व-पत्तनम् ।। तृतीयमासिकं पिण्डं तत्र भुक्त्वा प्रसर्पति ।। ५७ ।। शैलागमं चतुर्थे च मासि प्राप्नोति वै पुरम् ।। पाषाणास्तत्र वर्षन्ति प्रेतस्योपरि भूरिशः ।।५८।। चतुर्थमासिकं पिण्डं भुक्त्वा किञ्चित्सुखी भवेत् ।। ततो याति पुरं प्रेतः क्रौञ्चं मासेऽथ पञ्चमे ।। ५९ ।। हस्तदत्तं तदा भुङ्क्ते प्रेतः क्रौञ्चपुरे स्थितः ।। यत्पञ्चमासिकं पिण्डं भुक्त्वा क्रूरपुरं व्रजेत ।। ६० ।।

३ ।।५७।। चौथे महीने में शैलपुर नामक नगर में पहुँचता है। वहाँ पत्थरों की वर्षा से अत्यन्त पीड़ित होता है ।।५८।। वहाँ चौथे महीने में दिये पिण्ड को खाकर कुछ सुखी होता है। फिर वह जीव पाँचवें महीने में क्रौञ्चपुर में पहुँचता है ।।५९।। वहाँ पाँचवें महीने में दिये श्राद्ध आदि को खाकर क्रूरपुर में पहुँचता है, जहाँ अत्यन्त निर्दय प्राणी रहते

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हैं ॥६०॥ साढ़े पाँच महीने में दिए हुए अन्न और जल को खाकर वहाँ ठहरता है। आधे मुहूर्त तक ठहरकर यमदूतों के साथ आगे को चलता है ॥६१॥ वहाँ आधा मुहूर्त तक ठहरकर यमदूतों के ताड़न से काँपता अति दुःखित होता वह यमदूतों से घसीटा हुआ उस नगर से चलता है ॥ ६२ ॥ वहाँ से चलकर चित्रभवन नाम नगर में पहुँचता है,

सार्धके पंचभिर्मासैर्न्यूनषाण्मासिकं व्रजेत् ॥ तत्र दत्तेन पिण्डेन घटेनाप्यायितः स्थितः ॥६१॥ मुहूर्तार्धन्तु विश्राम्य कम्पमानः सुदुःखितः ॥ तत्पुरं तु परित्यज्य तर्जितो यमकिङ्करैः ॥ ६२ ॥ प्रयाति चित्रभवनं विचित्रो नाम पार्थिवः ॥ यमस्यैवानुजो भ्राता यत्र राज्यं प्रशास्ति हि ॥ ६३ ॥ तं विलोक्य महाकायं यदा भीतः पलायते ॥ तदा सम्मुख आगत्य कैवर्ता इदमब्रुवन् ॥ ६४ ॥ वयं ते तर्त्तुकामाय महावैतरणीं नदीम् ॥ नावमाप्रदाय सम्प्राप्ता यदि ते पुण्यमीदृशम् ॥६५॥ दानं वितरणं प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥

जहाँ विचित्र नाम का यमराज का छोटा भाई राज्य करता है ॥ ६३ ॥ वहाँ बड़े शरीरवाले विचित्र को देखकर वह भागना चाहता है, परन्तु परवश में पड़ा रहता है। तब उस प्रेत के आगे वैतरणी खेनेवाले मल्लाह आकर कहते हैं ॥६४॥ कि हम लोग वैतरणी नदी के पार उतारनेवाले हैं। यह नौका है। यदि तुम्हारा पुण्य हो तो आकर इस नौका पर बैठ जाओ ॥६५॥ ज्ञान को देखनेवाले मुनीश्वर ने दान को वितरण कहा है। उस दान से जिसमें तरा (पार हो) जाय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उसको वैतरणी कहते हैं ।।६६।।केवट उस प्रेत से कहते हैं कि जो तूने गोदान दिया है तो नौका से पार जा सकता है, अन्यथा नहीं। उनके वचन को सुनकर वह प्रेत केवल 'हा दैव!' कहता है ।।६७।। और वह नदी उबलने लगती है । उसे उबलता देखकर यमदूत उस नदी में पापीको छोड़ना चाहते हैं । वह जीव अत्यन्त चिल्लाता है। जिस पापी ने दान नहीं

इयं सा तीर्यते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता ॥ ६६ ॥ यदि त्वया प्रदत्ता गौस्तदा नौरुपसर्पति ॥ नान्यथेति वचस्तेषां श्रुत्वा हा दैव भाषते ॥ ६७ ॥ तं दृष्ट्वा क्वथते सा तु तां दृष्ट्वा सोऽतिक्रन्दते ॥ अदत्तदानः पापात्मा तस्यामेव निमज्जति ॥ ६८ ॥ तन्मुखे कण्टकं दत्त्वा दूतैराकाशसंस्थितैः ॥ वडिशेन यथा मत्स्यस्तथा पारं प्रणीयते ॥ ६९ ॥ षाण्मासिकञ्च यत्पिण्डं तत्र भुक्त्वा प्रसर्पति ॥ मार्गे स विलपन्याति बुभुक्षापीडितो ह्यलम् ॥७०॥ सप्तमे मासि सम्प्राप्ते पुरं बह्वापदं व्रजेत ॥ तत्र भुङ्क्ते प्रदत्तं यत्सप्तमे

दिया है,वह उस नदी में डूब जाता है ।।६८।। तब आकाशसे चलनेवाले यमदूत उस प्रेतके मुख में कँटिया फँसाकर मछली की तरह घसीटकर (उस जीव को) नदीके उस पार पहुँचाते हैं।।६९।।नदी के पार पहुँचकर छठे महीनेमें दत्त श्राद्ध आदि को खाकर आगे चलता है, फिर भूख से व्याकुल हो मार्ग में अत्यन्त विलाप करता जाता है ।।७०।। सातवें महीने में बह्वापद नामक नगर में पहुँचता है । वहाँ पुत्रों द्वारा सातवें महीने के दिये श्राद्धान्न आदि को खाकर तृप्त होता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है ॥७१॥ हे पक्षियों के राजा गरुड़जी ! उस नगर को पारकर दुःखदपुर में पहुँचता है, वहाँ आकाश-मार्ग से चलता हुआ अनेकों प्रकार के दुःखों को भोगता है ॥७२॥ वहीं पर आठवें महीने के श्राद्ध में दिये हुए अन्न, जल आदि को भोजन करके आगे चलता है, नवाँ महीना सम्पूर्ण होते ही नानाक्रन्दपुरको जाता है ॥७३॥ वहाँ नानाक्रन्दगणों

मासि पुत्रकैः ॥७१॥ तत्पुरं तु व्यतिक्रम्य दुःखदं पुरमृच्छति ॥ महद्दुःखमवाप्नोति खे गच्छन्खेचरेश्वर ॥७२॥ मास्यष्टमे प्रदत्तं यत्पिण्डं भुक्त्वा प्रसर्पति ॥ नवमे मासि सम्पूर्णे नानाक्रन्दपुरं व्रजेत ॥७३॥ नानाक्रन्दगणान् दृष्ट्वा क्रन्दमानान्सुदारुणान् ॥ स्वयं च शून्यहृदयः समाक्रन्दति दुःखितः ॥७४॥ विहाय तत्पुरं प्रेतस्तर्जितो यमकिङ्करैः ॥ सुतप्त-भवनं गच्छेद्दशमे मासि कृच्छ्रतः ॥७५॥ पिण्डदानं जलं तत्र भुक्त्वापि न सुखी भवेत् ॥ मासि चैकादशे पूर्णे पुरं रौद्रं स गच्छति ॥ ७६ ॥ दशैकमासिकं तत्र भुङ्क्ते दत्तं

को देखकर अत्यन्त दुःख से व्याकुल होता हुआ चिल्लाता है ॥७४॥ फिर यमदूतोंके धमकाने से बड़े कष्ट से चलता हुआ दसवें महीने में सुतप्तभवनपुर में पहुँचता है॥७५॥वहाँ दसवें मास के दिये पिण्ड और जल को खाकर भी तृप्त नहीं होता है। फिर वहाँ से चलकर ग्यारह महीनेमें रौद्रनगर में पहुँचता है ॥७६॥वहाँ ग्यारहवें मास के दिये श्राद्ध,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जल आदि को खाकर साढ़े ग्यारह महीने के पूरा होते पयोवर्षण नगर में पहुँचता है ॥७७॥ वहाँ प्रेतोंको दुःख देने-वाले मेघ बरसते हैं। वहीं पर न्यूनाधिक मास के दिये हुए श्राद्धान्न आदि को दुःखपूर्वक खाता है॥७८॥ वर्ष पूरा होते-होते वह प्राणी शीताढ्य नगर में पहुँचता है। वहाँ हिमालय से भी सौगुना अधिक शीत पड़ता है ॥७९॥ शीत और

सुतादिभिः ॥ सार्द्धे चैकादशे मासि पयोवर्षणमृच्छति ॥७७॥ मेघास्तत्र प्रवर्षन्ति प्रेतानां दुःखदायकाः ॥ न्यूनाधिकं च यच्छ्राद्धं तत्र भुङ्क्ते स दुःखितः ॥७८॥ सम्पूर्णे तु ततो वर्षे शीताढ्यं नगरं व्रजेत ॥ हिमाच्छतगुणं तत्र महाशीतं पतत्यपि ॥७९॥ शीतार्तः क्षुधितः सोऽपि वीक्षते हि दिशो दश ॥ तिष्ठते बान्धवः कोऽपि यो मे दुःखं व्यपोहति ॥८०॥ किङ्करास्ते वदन्त्यत्र क्व ते पुण्यं हि तादृशम् ॥ भुक्त्वा च वार्षिकं पिण्डं धैर्यमालम्बते पुनः ॥ ८१ ॥ ततः संवत्सरस्यान्ते प्रत्यासन्ने यमालये ॥ बहुभीतिपुरे गत्वा हस्तमात्रं

भूख से पीड़ित वह जीव दशों दिशाओं में देखता है कि क्या यहाँ कोई मेरा बन्धु है, जो हमारे इस दुःख को मिटावे ॥८०॥ तब उस जीव से यमदूत कहते हैं कि तेरा ऐसा पुण्य कहाँ है, जिस पुण्य के बल से तू इस दुःख से छुटकारा पा सकता है। यमदूतों के ऐसे वचन को सुनकर वह पीड़ित जीव वार्षिक श्राद्ध में दिये पिण्डको खाकर धैर्य धारण करता है॥८१॥वर्ष के अन्त में यमलोक के समीप बहुभीतिपुर में पहुँचकर पहले के मिले हाथ भर के शरीर का

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्याग करता है॥८२॥ कर्मों के फल भोगने के लिये अंगुष्ठमात्रका यातना-शरीर पाकर यमदूतों के साथ जाता है॥८३॥ हे काश्यप ! जिन्होंने मरने के समय और्ध्वदैहिक दान नहीं दिया है, धर्मसञ्चय नहीं किया है, वे इस कारण यमदूतों के दृढ़ बन्धनों से बँधे हुए कष्ट को भोगते हैं॥८४॥ हे गरुड़ ! धर्मराज के नगर में चार द्वार हैं। उनमें से तुम्हें दक्षिण

समुत्सृजेत ॥ ८२ ॥ अंगुष्ठमात्रो वायुश्च कर्मभोगाय खेचरः ॥ यातनादेहमासाद्य सह याम्यैः प्रयाति च ॥ ८३ ॥ और्ध्वदैहिकदानानि यैर्न दत्तानि काश्यप ॥ एवं कष्टेन ते यान्ति गृहीत्वा दृढबन्धनैः ॥८४॥ धर्मराजपुरे सन्ति चतुर्द्वाराणि खेचर ॥ यत्रायं दक्षिण-द्वारमार्गस्ते परिकीर्तितः ॥ ८५ ॥ अस्मिन्पथि महाघोरे क्षुत्तृषाश्रमपीडिताः ॥ यथा यान्ति तथा प्रोक्तं किम्भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥ ८६ ॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे यममार्गनिरूपणं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

मार्ग का हाल बतलाया है॥८५॥ ऐसे महाघोर मार्ग में क्षुधा और प्यास से पीड़ित जैसे प्राणी जाता है, और वहाँ जाने पर फिर क्या होता है, वह सब मैंने तुमसे कहा। अब तुम क्या सुनना चाहते हो ? ॥८६॥

इति श्रीगरुड़पुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां यममार्गनिरूपणं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गरुड़जी ने कहा—यममार्ग का अतिक्रमण करके वह पापी जीव यमलोक में पहुँचकर किन-किन प्रकार की यातनाओं को भोगता है, वह मुझसे कहिये ॥ १ ॥ श्री भगवान् विष्णुजी बोले—मैं इसका आद्यन्त वृत्तान्त कहूँगा, सुनिये। मेरे कहे हुए नरक-वर्णन से ही तुम काँप जाओगे॥२॥ हे गरुड़! बहुभीतिपुर से आगे ४४ योजनके

गरुड उवाच। यममार्गमतिक्रम्य गत्वा पापी यमालये॥ कीदृशीं यातनां भुङ्क्ते तन्मे कथय केशव ॥ १ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ आद्यन्तं च प्रवक्ष्यामि शृणुष्व विनतात्मज ॥ कथ्यमानेऽपि नरके त्वं भविष्यसि कम्पितः ॥ २ ॥ चत्वारिंशद्योजनानि चतुर्युक्तानि काश्यप ॥ बहुभीतिपुराद्ग्रे धर्मराजपुरं महत् ॥ ३ ॥ हाहाकारसमायुक्तं दृष्ट्वा क्रन्दति पातकी ॥ तत्क्रन्दितं समाकर्ण्य यमस्य पुरचारिणः ॥ ४ ॥ गत्वा च तत्र ते सर्वे प्रतीहारं वदन्ति हि ॥ धर्मध्वजः प्रतीहारस्तत्र तिष्ठति सर्वदा ॥ ५ ॥ स गत्वा चित्रगुप्ताय ब्रूते

विस्तार का बड़ा भारी धर्मराज का पुर है॥३॥ यमपुर में पहुँचकर जीव हाहाकारपूर्वक चिल्लाता हैं। उसके चिल्लाने को सुनकर यमपुर में रहनेवाले ॥४॥ जाकर धर्मध्वज नाम के द्वारपाल से कहते हैं जो सर्वदा वहाँ रहता है ॥५॥ वह धर्मध्वज चित्रगुप्त से उस जीव के सब शुभ-अशुभ कर्मों को कहता है। इसके पश्चात् चित्रगुप्त जाकर उस प्राणी के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शुभ-अशुभ कर्मों को धर्मराज से निवेदन करते हैं ॥६॥ हे गरुड़! जो नास्तिक हैं, सदा पापकर्म में लगे रहते हैं, धर्म-राज उन्हें भली भाँति जानते हैं ॥७॥ तिसपर भी उनके पापों को चित्रगुप्त से पूछते हैं, फिर चित्रगुप्त सब कुछ जानते हुए भी मनुष्यों के पापों को श्रवण से पूछते हैं ॥८॥ श्रवण लोग ब्रह्मा के पुत्र हैं और स्वर्ग, भूमि, पाताल में

तस्य शुभाऽशुभम् ॥ ततस्तं चित्रगुप्तोऽपि धर्मराजं निवेदयेत् ॥ ६ ॥ नास्तिका ये
नरास्तार्क्ष्य महापापरताः सदा ॥ तांश्च सर्वान् यथायोग्यं सम्यग् जानाति धर्मराट् ॥ ७ ॥
तथापि चित्रगुप्ताय तेषां पापं स पृच्छति ॥ चित्रगुप्तोऽपि सर्वज्ञः श्रवणान् परिपृच्छति ॥ ८ ॥
श्रवणा ब्रह्मणः पुत्राः स्वर्भूपातालचारिणः ॥ दूरश्रवणविज्ञाना दूरदर्शनचक्षुषः ॥ ९ ॥ तेषां
पत्न्यस्तथाभूताः श्रवण्यः पृथगाह्वयः ॥ स्त्रीणां विचेष्टितं सर्वं ता विजानन्ति तत्त्वतः ॥१०॥
नरैः प्रच्छन्नप्रत्यक्षं यत्प्रोक्तं च कृतं च यत् ॥ सर्वमावेदयन्त्येव चित्रगुप्ताय ते च ताः ॥११॥

आदित्यचन्द्र

विहार करनेवाले हैं और उनको दूर से सुनने और दूर से देखने का विशेष ज्ञान है ॥९॥ उनकी स्त्रियाँ भी उन्हींके समान दूर तक देखने और सुननेवाली होती हैं (परन्तु उनके नाम अलग-अलग हैं)। स्त्रियोंके जितने काम हैं, उनको वे सब अच्छी तरह जानती हैं ॥१०॥ वे सब श्रवण-श्रवणी मनुष्यों के छिपे हुए कर्मों, प्रकट किये कर्मों, कही हुई बातों और किये हुए कार्यों के तत्त्व को जानते हैं। वे सब चित्रगुप्त से कह देते हैं ॥११॥ धर्मराज के दूत मनुष्यों के

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America HHFA(USA).

= अनभिध्या परस्वेषु सर्वसत्त्वेषु सौहृदम् कर्मणां फलमस्तीति त्रिविधं मनसा चरेत्
= प्राणातिपातः स्तैन्यं च परदारान् अथापि च त्रीणि पापानि कायेन सर्वतः परिवर्जयेत्
= असत्प्रलापं पारुष्यं पैशुन्यमनृतं तथा, चत्वारि वाचा राजेन्द्र न जल्पेन्नानुचिन्तयेत्॥

मन, वचन और शरीर से किये शुभ-अशुभ सम्पूर्ण कर्मों को भली भाँति जानते हैं ॥१२॥ सत्य बोलनेवाले श्रवण लोग मनुष्य और देवताओं के सभी कर्मों को जानने की शक्ति रखते हैं, सबको वे धर्मराज से कह देते हैं ॥१३॥ व्रत, दान तथा सत्य आदि व्यवहारों से जो मनुष्य उनको प्रसन्न करते हैं, उनके लिये वे स्वर्ग और मोक्ष को देनेवाले हैं ॥१४॥

चारास्ते धर्मराजस्य मनुष्याणां शुभाशुभम् ॥ मनोवाक्कायजं कर्म सर्वं जानन्ति तत्त्वतः ॥ १२ ॥ एवं तेषां शक्तिरस्ति मर्त्यामर्त्याधिकारिणाम् ॥ कथयन्ति नृणां कर्म श्रवणाः सत्यवादिनः ॥१३॥ व्रतैर्दानैश्च सत्योक्त्या यस्तोषयति तान्नरः ॥ भवन्ति तस्य ते सौम्याः स्वर्ग मोक्षप्रदायिनः ॥ १४ ॥ पापिनां पापकर्माणि ज्ञात्वा ते सत्यवादिनः ॥ धर्मराजपुरः प्रोक्त्वा जायन्ते दुःखदायिनः ॥१५॥ आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ॥ अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तम् ॥ १६ ॥ धर्मराजश्चित्रगुप्तः श्रवणा भास्करादयः॥ कायस्थं तत्र पश्यन्ति पापं पुण्यं च सर्वशः ॥१७॥

वे सत्यवादी श्रवण पापियों के पापकर्म को जानकर धर्मराज के सामने कहकर पापियों को दुःखदायी होते हैं ॥१५॥ सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, आकाश, भूमि, जल, हृदय (आत्मा), यम, दिन, रात्रि, दोनों काल की सन्ध्या और धर्म ये मनुष्यों के आचरण को जाननेवाले हैं ॥१६॥ धर्मराज, चित्रगुप्त, श्रवण और सूर्य आदि जो देवता हैं, ये शरीर में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रहकर सब प्रकार के पाप और पुण्य को देखते रहते हैं ॥१७॥इस प्रकार यमराज पापी मनुष्यों के पापों को भली-भाँति जानकर उस पापी जीव को बुलाकर अपना भयंकर स्वरूप दिखाते हैं॥१८॥वह पापी प्राणी दण्ड हाथ में लिये, बहुत लम्बे शरीरवाले,भैंसे के ऊपर बैठे हुये यमराज के भयंकर स्वरूप को देखता है ॥१९॥प्रलयकाल के मेघ के समान

एवं सुनिश्चयं कृत्वा पापिनां पातकं यमः ॥ आहूय तान्निजं रूपं दर्शयत्यति-भीषणम् ॥१८॥ पापिष्ठास्ते प्रपश्यन्ति यमरूपं भयङ्करम् ॥ दण्डहस्तं महाकायं महिषोपरि-संस्थितम् ॥१९॥ प्रलयाम्बुदनिर्घोषं कज्जलाचलसन्निभम् ॥ विद्युत्प्रभायुधैर्भीमं द्वात्रिंशद्भुज-संयुतम् ॥ २० ॥ योजनत्रयविस्तारं वापीतुल्यविलोचनम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं रक्ताक्षं दीर्घनासिकम् ॥ २१ ॥ मृत्युज्वरादिभिर्युक्तश्चित्रगुप्तोऽपि भीषणः ॥ सर्वे दूताश्च गर्जन्ति यमतुल्यास्तदन्तिके ॥ २२ ॥ तं दृष्ट्वा भयभीतस्तु हा हेति वदते खलः ॥ अदत्तदानः

जिनका गर्जन है,कज्जलपर्वत के समान ऊँचा और काला शरीर है,जो बिजली के समान चमकनेवाले शस्त्रों को धारण किये, बत्तीस भुजावाले हैं॥२०॥तीन योजन का विस्तृत शरीर है, बावली के समान विशाल नेत्र हैं, जिनके भयानक दाँत और मुख, लाल नेत्र, दीर्घ नासिका है ॥२१॥ काल, ज्वर, व्याधि आदि की सेना के सहित मन्त्री चित्रगुप्त भी भयानक आकृति के हैं और उनके साथ यमराज के समान आकृतिवाले यमदूत लोग भी अत्यन्त गर्जन करते हैं॥२२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उन यमराज को देख भयभीत होकर वह पापी प्रेत 'हाय' 'हाय' कह पुकारता है और दान धर्म न करने से वह पापी जीव पुनः चिल्लाता है ॥२३॥ ऐसे चिल्लाते और अपने कर्मों को सोचकर पछताते उस जीव से चित्रगुप्तजी यमराज की आज्ञा सुनाते हैं ॥२४॥ कि अरे पापियों, मूर्खो ! तुम लोगों ने अभिमान से प्रमत्त होकर क्यों पाप को इकट्ठा

पापात्मा कम्पते क्रन्दते पुनः ॥ २३ ॥ ततो वदति तान्सर्वान् क्रन्दमानांश्च पापिनः ॥ शोचन्त स्वानि कर्माणि चित्रगुप्तो यमाज्ञया ॥ २४ ॥ भोः भोः पापा दुराचारा अहङ्कार-प्रदूषिताः ॥ किमर्थमर्जितं पापं युष्माभिरविवेकिभिः ॥ २५ ॥ कामक्रोधाद्यदुत्पन्नं संगमेन च पापिनाम् ॥ तत्पापं दुःखदं मूढाः किमर्थं चरितं जनाः ॥ २६ ॥ कृतवन्तः पुरा यूयं पापान्यत्यन्तहर्षिताः तथैव यातना भोग्याः किमिदानीं पराङ् मुखाः ॥२७॥ कृतानि यानि पापानि युष्माभिः सुबहून्यपि ॥ तानि पापानि दुःखस्य कारणं न च वञ्चना ॥२८॥

किया है ? ॥२५॥ काम, क्रोध और पापियों की संगति से उपार्जित इस दुःख देनेवाले पाप को तुमने क्यों किया है? ॥२६॥ पहले बड़े हर्ष से पापकर्म किये हो, अब वैसे ही हर्षित होकर यातना भी भोगनी चाहिये। अब तुम क्यों दुःखी होते हो ? ॥२७॥ तुम्हारे किये हुए पाप ही तुम्हारे दुःख के कारण हैं, इसमें कुछ धोखा नहीं किया जाता है

आक्रोतीहैन्यः स्रोढुं॰

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥२८॥ मूर्ख या पण्डित में, प्रबल-निर्बल में, दरिद्र-धनवान् में यमराज समान बर्ताव करनेवाले हैं ॥२९॥ चित्रगुप्त के वचन को सुनकर पापी जीव अपने कर्मों को सोचता हुआ मौन होकर निश्चल हो जाता है ॥३०॥ धर्मराज भी चोर की तरह निश्चल बैठे उस प्राणी को देखकर उसके किये शुभाशुभ कर्मों के योग्य दण्ड की आज्ञा उसको

मूर्खेऽपि पण्डिते पापि दरिद्रे वा श्रियान्विते ॥ सबले निर्बले वापि समवर्ती यमः स्मृतः॥२९॥ चित्रगुप्तस्येति वाक्यं श्रुत्वा ते पापिनस्तदा ॥ शोचन्तः स्वानि कर्माणि तूष्णीं तिष्ठन्ति निश्चलाः ॥३०॥ धर्मराजोऽपि तान् दृष्ट्वा चोरवन्निश्चलान् स्थितान् ॥ आज्ञापयति पापानां शास्ति चैव यथोचिताम् ॥३१॥ ततस्ते निर्दया दूतास्ताडयित्वा वदन्ति च ॥ गच्छ पापिन् महाघोरान्नरकानतिभीषणान् ॥३२॥ यमाज्ञाकारिणो दूताः प्रचण्डचण्डकादयः॥ एकपाशेन तान् बद्ध्वा नयन्ति नरकान् प्रति ॥ ३३ ॥ तत्र वृक्षो महानेको ज्वलदग्निसमप्रभः ॥

देते हैं ॥३१॥ उसके उपरान्त वे निर्दय दूत ताड़ना देकर कहते हैं कि हे पापी निर्दय! तू घोर और भयङ्कर नरक को जाओ ॥३२॥ यमराज की आज्ञा पाकर प्रचण्ड, चण्ड आदि दूत उन सब पापियों को एक फन्दे में बाँधकर नरक की ओर ले जाते हैं ॥३३॥ वहाँ जलती हुई अग्नि के समान महाविशाल एक वृक्ष है। उसका विस्तार पांच योजन का

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है, एक योजन की उसकी ऊँचाई है ।।३४।। उस वृक्ष की डाली में नीचे को मुख करके उस पापी प्राणी को सीकड़ बाँधकर ताड़ना देते हैं। उस वृक्ष में बँधा हुआ, जलता हुआ, जीव रोता है, परन्तु वहाँ उसकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं रहता।।३५।। उस सेमल के वृक्ष में अनेकों पापी लटके हुए यातना भोग रहे हैं, और क्षुधा-तृषा से पीड़ित होते हुए

पंचयोजनविस्तीर्ण एकयोजनमुच्छ्रितः ।।३४।। तद्वृक्षे शृङ्खलैर्बद्ध्वाऽधोमुखं ताडयन्ति ते ।। रुदन्ति ज्वलितास्तत्र तेषां त्राता न विद्यते ।।३५।। तस्मिन्वै शाल्मलीवृक्षे लम्बन्तेऽनेकपापिनः ।। क्षुत्पिपासापरिश्रान्ता यमदूतैश्च ताडिताः ।।३६।। क्षमध्वं भोऽपराधं मे कृताञ्जलिपुटा इति ।। विज्ञापयन्ति तान्दूतान्पापिष्ठास्ते निराश्रयाः ।। ३७ ।। पुनः पुनश्च ते दूतैर्हन्यन्ते लोहयष्टिभिः ।। मुद्गरैस्तोमरैः कुन्तैर्गदाभिर्मुसलैर्भृशम् ।। ३८ ।। ताडनाच्चैव निश्चेष्टा मूर्च्छिताश्च भवन्ति ते ।। तथा निश्चेष्टितान् दृष्ट्वा किङ्करास्ते वदन्ति

यमदूतों द्वारा ताड़ित किये जाते हैं ।।३६।। सहायकहीन वे पापी दूतों से हाथ जोड़कर कहते हैं कि हे दूतो! हमारे अपराध को क्षमा करो ।।३७।। इस प्रकार कहने पर भी उन पापी प्राणियों को लोह की लाठी, मुद्गर, तोमर, गदा, और भाला तथा मूसल आदि से यमदूत मारते हैं ।।३८।। मारने से वे जीव मूर्च्छित हो जाते हैं। उनको इस प्रकार

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मूर्च्छित देखकर यमदूत लोग इस प्रकार कहते हैं ॥३९॥ हे पापी, दुराचारी! तुमने ऐसे दुष्ट कर्मों को क्यों किया है? प्यासे को जल पिलाना, भूखे को अन्न देना आदि सरल काम तूने क्यों नहीं किया है?॥४०॥ आधा ग्रास भी तूने कभी कुत्ता और कौवा को बलिरूप में नहीं दिया है। न तो घर पर आये हुए अतिथि का सत्कार और न तो

हि ॥ ३९ ॥ भो भो पापा दुराचाराः किमर्थं दुष्टचेष्टितम् ॥ सुलभानि न दत्तानि जलान्यन्नान्यपि क्वचित् ॥ ४० ॥ ग्रासार्द्धमपि नो दत्तं न श्ववायसयोर्बलिम् ॥ नमस्कृता नातिथयो न कृतं पितृतर्पणम् ॥ ४१ ॥ यमस्य चित्रगुप्तस्य न कृतं ध्यानमुत्तमम् ॥ न जप्तश्च तयोर्मन्त्रो न भवेद्येन यातना ॥ ४२ ॥ नापि किञ्चित्कृतं तीर्थं पूजिता नैव देवताः ॥ गृहाश्रमस्थितेनापि हन्तकारोऽपि नोद्धृतः ॥४३॥ शुश्रूषिताश्च नो सन्तो भुङ्क्ष्व पापफलं स्वयम् ॥ यतस्त्वं धर्महीनोऽसि ततः सन्ताड्यसे भृशम् ॥४४॥ क्षमापराधं कुरुते

पितरों का तर्पण किया है ॥४१॥ हे जीव! अपनी यातना छुड़ाने के लिये न तो तूने कभी यमराज तथा चित्रगुप्त का ध्यान किया और न कभी इनके मन्त्रों का जप किया ॥४२॥ न तो तूने कोई तीर्थ किया, न देवताओं का पूजन किया, गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी तूने कभी अन्नदान नहीं किया, जिससे तेरी यातना न हो ॥४३॥ न तो तूने साधुओं की सेवा की, इससे अपने किये कर्मों के फल को भोग, जिस कारण तूने अधर्म को संचित किया है। इसलिए

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यमराज की आज्ञा से दण्ड भोगो ।।४४।। हरि भगवान् ही अपराध के क्षमा करनेवाले हैं, हम लोग तो उनकी आज्ञा से दण्ड देनेवाले हैं ।।४५।। ऐसा कहकर वे निर्दय होकर ताड़ना करते हैं, जलते हुए अङ्गार के सदृश ताड़न करने से वे नीचे गिर जाते हैं ।।४६।। उनके गिरने से पत्तों द्वारा शरीर कट जाता है और उन जीवों को वृक्ष के नीचे

भगवान् हरिरीश्वरः ।। वयं तु सापराधानां दण्डदा हि तदाज्ञया ।।४५।। एवमुक्त्वा च ते दूता निर्दयं ताडयन्ति तान् ।। ज्वलदङ्गारसदृशाः पतितास्ताडनादधः ।। ४६ ।। पतनात्तस्य पत्रैश्च गात्रच्छेदो भवेत्ततः ।। तानधः पतितान् श्वानो भक्षयन्ति रुदन्ति ते ।। ।। ४७ ।। रुदन्तस्ते ततो दूतैर्मुखमापूर्य रेणुभिः ।। निबद्ध्य विविधैः पाशैर्हन्यन्ते केऽपि मुद्गरैः ।। ४८ ।। पापिनः केऽपि भिद्यन्ते क्रकचैः काष्ठवद्द्विधा ।। क्षिप्त्वा चान्ये धरापृष्ठे कुठारैः खण्डशः कृताः ।। ४९ ।। अर्धं खात्वाऽवटे केचिद्भिद्यन्ते मूर्ध्नि

रहनेवाले कुत्ते खाते हैं इससे वे पापी रोते हैं ।।४७।। रोते हुए उस जीव के मुख में धूलि भरकर, रस्सियों में बाँधकर, मुद्गरों से मारते और शूलों से ताड़ना देते हैं ।।४८।। इसके बाद जैसे काष्ठ चीरा जाता है, वैसे कोई पापी आरा से चीरकर दो भाग किये जाते हैं, कोई पृथ्वी में लिटाकर कुल्हाड़ियों से टुकड़े-टुकड़े किये जाते हैं ।।४९।। किसी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का आधा शरीर जमीन में गाड़कर उसके माथे में तीर से मारते हैं, किसीको कोल्हू में डालकर ऊख के समान पेरते हैं ।।५०।। कोई जलते हुए अङ्गार सहित अधजली लकड़ियों को चारों ओर से इकट्ठा करके लोहे के गोले के समान तपाये जाते हैं ।।५१।। किसीको खौलते हुए घी के कड़ाह में, किसीको तप्त तेल के कड़ाह में डालकर बड़ा के समान

सायकैः ।। अपरे यन्त्रमध्यस्थाः पीड्यन्ते चेक्षुदण्डवत् ।। ५० ।। केचित्प्रज्वलमानैस्तु साङ्गारैः परितो भृशम् ।। उल्मुकैर्वेष्टयित्वा च ध्मायन्ते लोहपिण्डवत् ।।५१।। केचिद्घृतमये पाके तैलपाके तथा परे ।। कटाहक्षिप्तवटवत् प्रक्षिप्यन्ते यतस्ततः ।। ५२ ।। केचिन्मत्त-गजेन्द्राणां क्षिप्यन्ते पुरतः पथि ।। बद्ध्वा हस्तौ च पादौ च क्रियन्ते केऽप्यधोमुखाः ।।५३।। क्षिप्यन्ते केऽपि कूपेषु पात्यन्ते केऽपि पर्वतात् ।। निमग्नाः कृमिकुण्डेषु तुद्यन्ते कृमिभिः परे ।। ५४ ।। वज्रतुण्डैर्महाकाकैर्गृध्रैरामिषगृध्नुभिः ।। निष्कुष्यन्ते शिरोदेशे नेत्रे वास्ये च

इधर-उधर चलाते हैं ।।५२।। कोई मार्ग में मतवाले हाथी के आगे डाल दिये जाते हैं, कोई हाथ-पाँव बाँधकर नीचे को लटकाये जाते हैं ।।५३।। कोई कुएँ में गिराये जाते हैं, कोई पर्वत से गिराये जाते हैं, कोई कीड़ों के कुण्ड में डुबाये जाते और कोई कीड़ों से कटाये जाते हैं ।।५४।। वज्र के समान कठोर चोंचवाले, मास को चाहनेवाले गीध और काग आदि चोंचों से शरीर को नोचते हैं, आँखों में ठोर मारते तथा मुँह के मांस को चोंच से काटते हैं ।।५५।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कोई अपने ऋण को माँगता है—अब तुमको मैंने यमलोक में देखा है । तुमने मेरा धन खाया है ।। ५६ ।। नरक में ऐसे झगड़ा करनेवाले पापियों के मांसको सँड़सी से काटकर यमदूत लोग उन माँगनेवालों को देते हैं ।।५७।। यम के दूत इस प्रकार उन पापियों को ताड़ना देकर यम की आज्ञा से अन्धतामिस्र आदि नरकों में डाल देते हैं ।।५८।।

चञ्चुभिः ।। ५५ ।। ऋणं वै प्रार्थयन्त्यन्ये देहि देहि धनं मम ।। यमलोके मया दृष्टो धनं मे भक्षितं त्वया ।। ५६ ।। एवं विवदमानानां पापिनां नरकालये ।। छित्त्वा संदंशकैर्दूता मांसखण्डान् ददन्ति च ।। ५७ ।। एवं सन्ताड्य तान्दूताः संकृष्य यमशासनात् ।। तामिस्रादिषु घोरेषु क्षिप्यन्ते नरकेषु च ।। ५८ ।। नरका दुःखबहुलास्तत्र वृक्षसमीपतः ।। तेष्वस्ति यन्महद्दुःखं तद्वाचामप्यगोचरम् ।। ५९ ।। चतुरशीतिलक्षाणि नरके सन्ति खेचर ।। तेषां मध्ये घोरतमा धौरेयास्त्वेकविंशतिः ।। ६० ।। तमिस्रो लोहशंकुश्च महा-

नरकों में तो अनेक प्रकार के दुःख भोगने ही पड़ते हैं । परन्तु उस सेमल वृक्ष के नीचे जो ताड़ना दी जाती है वह मुख से कहते नहीं बनती ।।५९।। हे गरुड़ ! चौरासी लाख नरक हैं । उनमें से अत्यन्त घोर और कष्ट देनेवाले इक्कीस मुख्य हैं ।।६०।। उनके नाम ये हैं—तामिस्र १, लोहशंकु २, महारौरव ३, शाल्मली ४, रौरव ५,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुड्मल ६, कालसूत्रक ७, पूतिमृत्तिक ८, संघात ९, लोहितोद १०, सविष ११, संप्रतापन १२, महानिरय १३, काकोल १४, संजीवन १५, महापथ १६, अवीचि १७, अन्धतामिस्र १८, कुम्भीपाक १९, संप्रतापन २०, एकतपन २१, इतने नाम हैं ॥६१–६३॥ इन इक्कीस नरकों में अनेक प्रकार की पीड़ा भोगनी पड़ती है। ये नरक अनेक प्रकार के

रौरवशाल्मली ॥ रौरवः कुड्मलः कालसूत्रकः पूतिमृत्तिकः ॥ ६१ ॥ संघातो लोहितोदश्च सविषः सम्प्रतापनः ॥ महानिरयकाकोलौ सञ्जीवनमहापथौ ॥ ६२ ॥ अवीचिरन्धतामिस्रः कुम्भीपाकस्तथैव च ॥ सम्प्रतापननामैकस्तपनस्त्वेकविंशतिः ॥ ६३ ॥ नानापीडामयाः सर्वे नानाभेदाः प्रकल्पिताः ॥ नानापाकविपाकश्च किङ्करौघैरधिष्ठिताः ॥ ६४ ॥ एतेषु पतिता मूढाः पापिष्ठा धर्मवर्जिताः ॥ तत्र भुञ्जन्ति कल्पान्तं तास्ता नरकयातनाः ॥६५॥ यास्तामिस्रान्धतामिस्रा रौरवाद्याश्च यातनाः ॥ भुङ्क्ते नरो वा नारी वा मिथःसंगेन निर्मिताः ॥ ६६ ॥ एवं कुटुम्बं बिभ्राण उदरम्भर एव वा ॥ विसृज्येहोभयं प्रेत्य भुङ्क्ते

पापों के फल देनेवाले हैं। इन सभी में यमदूत निवास करते हैं ॥६४॥ इन नरकों में पड़े अज्ञानी, पापी, अधर्मी, उन नरकों की यातना को कल्पान्त तक भोगते हैं ॥६५॥ जो तामिस्र, अन्धतामिस्र और रौरवादिक जितने नरक हैं, उनका भोग स्त्री-पुरुष के संयोगवाले पाप से भोगना पड़ता है ॥६६॥ इस प्रकार कुटुम्बियों का पालन करनेवाले

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुटुम्ब का पालन न कर अपना पेट भरनेवाले पापी इस लोक में कुटुम्ब और देह दोनों को छोड़कर परलोक में जाकर इस प्रकार यातना द्वारा पाप का फल भोगते हैं ॥६७॥ भोगनेवाला शरीर यहीं छोड़कर द्रोहरूपी पापका सम्बल लेकर अन्धकार-स्वरूप अन्धतम नरक को जाते हैं ॥६८॥ जो केवल अधर्म ही से कुटुम्ब पालने को उद्यत रहते हैं,

तत्फलमीदृशम् ॥ ६७ ॥ एकः प्रपद्यते ध्वान्तं हित्वेदं स्वं कलेवरम् ॥ कुशलेतरपाथेयो भूतद्रोहेण यद्भृतम् ॥ ६८ ॥ दैवेनासादितं तस्य शमले निरये पुमान् ॥ भुङ्क्ते कुटुम्बपोषस्य हृतद्रव्य इवातुरः ॥ ६९ ॥ केवलेन ह्यधर्मेण कुटुम्बभरणोत्सुकः ॥ याति जीवोऽन्धतामिस्रं चरमं तमसः पदम् ॥ ७० ॥ अधस्तान्नरलोकस्य यावतीर्यातनादयः ॥ क्रमशः समनुक्रम्य पुनरत्राव्रजेच्छुचिः ॥ ७१ ॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे यमयातनानिरूपणं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

वे जीव घोर अन्धकार के स्थान अन्धतामिस्र नरक को जाते हैं ॥६९॥ जिसको मनुष्यलोक में जन्म मिलता है वह पहिले यातनाओं को भोगकर फिर पवित्र भूलोक में आता है ॥७०-७१॥

इति श्री गरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां यातनानिरूपणं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्री गरुड़जी ने कहा—हे भगवान् ! किन-किन पापों से इस महामार्ग में जीव जाते और किन पापों से वैतरणी में गिरते हैं ? किन पापों से नरक में जाते हैं? यह मुझसे कहिये ॥१॥ श्री भगवान्जी ने कहा—जो मनुष्य सदा अशुभ कर्मों में लगे रहते हैं तथा शुभ कर्म से दूर रहते हैं वे एक नरक से दूसरे नरक में और एक दुःख से दूसरे दुःख और एक

गरुड उवाच॥ कैर्गच्छन्ति महामार्गे वैतरण्यां पतन्तिकैः ॥ कैः पापैर्नरके यान्ति तन्मे कथय केशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच॥ सदैवाकर्मनिरताः शुभकर्मपराङ् मुखाः ॥ नरकान्नरकं यान्ति दुःखाद्दुःखं भयाद्भयम् ॥२॥ धर्मराजपुरे यान्ति त्रिभिर्द्वारैस्तु धार्मिकाः ॥ पापास्तु दक्षिणद्वारमार्गेणैव व्रजन्ति तत् ॥ ३ ॥ अस्मिन्नेव महादुःखे मार्गे वैतरणी नदी ॥ तत्र ये पापिनो यान्ति तानहं कथयामि ते ॥ ४ ॥ ब्रह्मघ्नाश्च सुरापाश्च गोघ्ना वा बालघातकाः ॥ स्त्रीघाती गर्भपाती च ये च प्रच्छन्नपापिनः ॥ ५ ॥ ये हरन्ति गुरो-

भय से दूसरे भय को प्राप्त होते हैं ॥२॥ धर्मात्मा प्राणी तीन द्वार से अर्थात् पूर्व, पश्चिम और उत्तर के द्वार से यमपुर को जाते हैं। पापी पुरुष केवल दक्षिण के द्वार से ही यमपुर को जाते हैं। उसको मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो। ॥३॥ दक्षिणद्वार के मार्ग में महादुःख को देनेवाली वैतरणी नदी है, उसमें जो पापी जाते हैं, उनका वर्णन मैं करता हूँ ॥४॥ ब्राह्मण को मारनेवाले, गौ को मारनेवाले, बालक-वध करनेवाले, स्त्रीको मारनेवाले, गर्भ-पतन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करनेवाले और गुप्त पापों को करनेवाले वैतरणी को जाते हैं ॥५॥ गुरु के द्रव्य को, देवता के द्रव्य को तथा स्त्री के द्रव्य को, बालक के द्रव्य को जो हरण करते हैं, ॥६॥ जो ऋण को लेकर नहीं देते हैं, विश्वासघात करते हैं और जो अन्न में विष मिलाकर खाने को देते हैं ॥७॥ दूसरे के दोष को ग्रहण करनेवाले, गुण को छिपानेवाले,

द्रव्यं देवद्रव्यं द्विजस्य वा ॥ स्त्रीद्रव्यहारिणो ये च बालद्रव्यहराश्च ये ॥ ६ ॥ ये ऋणं न प्रयच्छन्ति ये वै न्यासापहारकाः ॥ विश्वासघातका ये च सविषान्नेन मारकाः ॥ ७ ॥ दोषग्राही गुणश्लाघी गुणवत्सु समत्सराः ॥ नीचानुरागिणो मूढा सत्सङ्गतिपराङ्मुखाः ॥ ८ ॥ तीर्थसज्जनसत्कर्मगुरुदेव विनिन्दकाः ॥ पुराणवेदमीमांसान्यायवेदान्तदूषकाः ॥९॥ हर्षिता दुःखितं दृष्ट्वा हर्षिते दुःखदायकाः ॥ दुष्टवाक्यस्य वक्तारो दुष्टचित्ताश्च ये सदा ॥ १० ॥ न शृण्वन्ति हितं वाक्यं शास्त्रवार्तां कदापि न ॥ आत्मसम्भाविताः

गुणवानों से ईर्षा करनेवाले, नीच की संगति करनेवाले, सत्संग से दूर रहनेवाले, ॥८॥ तीर्थों की, सज्जनों की, शुभकर्मों की, गुरु और देवताओं की निन्दा करनेवाले, पुराण, वेद, मीमांसा, न्याय, वेदान्त आदि शास्त्रों पर दोष देनेवाले, ॥९॥ दुखियों को देखकर प्रसन्न होनेवाले, प्रसन्न को दुःख देनेवाले और दुष्ट वचन कहनेवाले, दुष्टस्वभाववाले, ॥१०॥ हित के वचन को न सुननेवाले, शास्त्र के वचन पर विश्वास न करनेवाले, शास्त्र--पुराण को

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

न सुननेवाले, योग्य पुरुष को भी देखकर घमण्ड करनेवाले, जो लोग मूर्ख होते हुए भी अपने को पण्डित समझते हैं ॥११॥ वे सब और धर्महीन-पापी दिन-रात्रि रोते हुए यममार्ग में जाते हैं ॥१२॥ यमदूतों द्वारा ताड़ित होते हुए जो प्राणी वैतरणी को जाते हैं, और जो पातकी जीव उस नदी में गिरते हैं, उनका वर्णन मैं तुमसे कहता हूँ ॥१३॥

स्तब्धाः मूढाः पण्डितमानिनः ॥ ११ ॥ एते चान्ये च बहवः पापिष्ठा धर्मवर्जिताः ॥ गच्छन्ति यममार्गे हि रोदमाना दिवानिशम् ॥ १२ ॥ यमदूतैस्ताड्यमाना यान्ति वैतरणीं प्रति ॥ तस्यां पतन्ति ये पापस्तानहं कथयामि ते ॥ १३ ॥ मातरं येऽवमन्यन्ते पितरं गुरुमेव च ॥ आचार्यं चापि पूज्यञ्च तस्यां मज्जन्ति ते नराः ॥ १४ ॥ पतिव्रतां साधुशीलां कुलीनां विनयान्विताम् ॥ स्त्रियं त्यजन्ति ये द्वेषाद्वैतरण्यां पतन्ति ते ॥ १५ ॥ सतां गुणसहस्रेषु दोषानारोपयन्ति ये ॥ तेष्ववज्ञां च कुर्वन्ति वैतरण्यां पतन्ति ते ॥१६॥

जो लोग माता, पिता, गुरु, आचार्य और पूज्य जनों का अपमान करते हैं वे पापी प्राणी वैतरणी में डुबाये जाते हैं ॥१४॥ जो लोग पतिव्रता, शीलवती, कुलीन, विनययुक्त स्त्री का द्वेष से परित्याग करते हैं, वे वैतरणी में गिरते हैं ॥१५॥ जो लोग सज्जनों में हजारों गुणों के रहते भी दोष का आरोप किया करते हैं और उनका अपमान करते हैं, वे लोग वैतरणी में गिरते हैं ॥१६॥ जो ब्राह्मण के लिये प्रतिज्ञा करके नहीं देता है, अथवा बुलाकर नहीं देता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है, ये दोनों सदा उसी वैतरणी में निवास करते हैं ॥१७॥ जो दान देकर छीन लेते हैं, अथवा दान देकर पीछे पछतावा करते हैं और जो दूसरों की दी हुई जीविका को हरण कर लेते हैं अथवा दान देनेवाले को जो रोक देते हैं वे वैतरणी में गिरते हैं ॥१८॥ जो यज्ञ को विध्वंस करनेवाले हैं, जो कथाओं में विघ्न करनेवाले हैं, और जो खेत की

ब्राह्मणाय प्रतिश्रुत्य यथार्थं न ददाति यः ॥ आहूय नास्ति यो ब्रूयात्तयोर्वासश्च सन्ततम् ॥ १७ ॥ स्वयं दत्तापहर्ता च दानं दत्त्वाऽनुतापकः ॥ परवृत्तिहरश्चैव दाने दत्ते निवारकः ॥ १८ ॥ यज्ञविध्वंसकश्चैव कथाभङ्गकरश्च यः ॥ क्षेत्रसीमाहरश्चैव यश्च गोचरकर्षकः ॥ १९ ॥ ब्राह्मणो रसविक्रेता यदि स्याद्वृषलीपतिः ॥ वेदोक्तयज्ञादन्यत्र स्वात्मार्थं पशुमारकः ॥ २० ॥ ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टो मांसभोक्ता च मद्यपः ॥ उच्छृङ्खलस्वभावो यः शास्त्राध्ययनवर्जितः ॥ २१ ॥ वेदाक्षरं पठेच्छूद्रः कापिलं यः पयः पिबेत् ॥

सीमा को तथा गाय के चरने की भूमि को जोत लेते हैं, वे सदा उसमें वास करते हैं ॥१९॥ गुड़, चीनी, शहद, मिठाई, घी, दूध, लवण आदि को बेचनेवाला ब्राह्मण, वृषली (अकुलीन) स्त्री के पति और वेद में कहे यज्ञ के अतिरिक्त अपने लिये पशुओं को मारनेवाला, ॥२०॥ ब्राह्मणों के कर्म से भ्रष्ट, मांस खानेवाला, मदिरा पीनेवाला, निरंकुश स्वभाववाला, शास्त्र के अध्ययन से रहित, ॥२१॥ जो शूद्र वेद के अक्षर को पढ़ता है और कपिला गौ का दूध पीता है,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जनेऊ धारण करता है और ब्राह्मणी का पति होता है,॥२२॥जो राजा की स्त्री की इच्छा करता है, जो पराई स्त्रीका हरण करता है, जो कन्याओं से भोग करता है और पतिव्रता स्त्रियों से छल करता है, ॥२३॥ इस प्रकार जो लोग अत्यन्त निषिद्ध आचरण को निर्भय करते हैं और शास्त्र में विहित आचरण का त्याग करते हैं,वे पापी वैतरणी में गिरते

धारयेद्ब्रह्मसूत्रं च भवेद्वा ब्राह्मणीपतिः ॥ २२ ॥ राजभार्याभिलाषी च परदारापहारकः ॥ कन्यायां कामुकश्चैव सतीनां दूषकश्च यः ॥ २३ ॥ एते चान्ये च बहवो निषिद्धाचरणोत्सुकाः ॥ विहितत्यागिनो मूढा वैतरण्यां पतन्ति ते ॥ २४ ॥ सर्वं मार्गमतिक्रम्य यान्ति पापा यमालये ॥ पुनर्यमाज्ञयाऽगत्य दूतास्तस्यां क्षिपन्ति तान् ॥ २५ ॥ या वै धुरन्धरा सर्वधौरेयाणां खगाधिप ॥ अतस्तस्यां प्रक्षिपन्ति वैतरण्यां च पापिनः ॥ २६ ॥ कृष्णा गौर्यदि नो दत्ता नोर्ध्वदेहक्रिया कृता ॥ तस्यां भुक्त्वा महद्दुःखं यान्ति वृक्षं

हैं ॥२४॥ इन उक्त मार्गों को लाँघकर पापी यमलोक को जाते हैं फिर यम की आज्ञा को पाकर वे यमदूत उनको वैतरणी में डालते हैं ॥२५॥ हे गरुड़ ! सब नरकों में मुख्य जो इक्कीस नरक हैं उनमें सबसे अधिक पीड़ा देनेवाली वैतरणी में पापियों को यमदूत यम की आज्ञा से डालते हैं ॥२६॥ जिसने काली गौ नहीं दान किया है और ऊर्ध्व-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दैहिक क्रिया जिन्होंने नहीं की है, वे प्राणी उन नरकों में कठिन दुःख को भोगकर उस वैतरणी के किनारे उत्पन्न वृक्षों पर जाते हैं ॥२७॥ झूठी गवाही देनेवाले, झूठे धर्म का आचरण करनेवाले, छल से धन इकट्ठा करनेवाले और चोर की वृत्ति से जीविका करनेवाले॥२८॥ ऊँचे वृक्षों को काटनेवाले, वन, बगीचा या फुलवाड़ी को नष्ट करनेवाले, व्रत तीर्थों के त्यागी, विधवा के शील को नष्ट करनेवाले तथा ॥२९॥ जो स्त्रियाँ अपने पति में दोष देकर दूसरे

तटोद्भवम् ॥ २७ ॥ कूटसाक्ष्यप्रदातारः कूटधर्मपरायणाः ॥ छलेनार्जनसंसक्ताश्चौर्य-
वृत्त्या च जीविनः ॥ २८ ॥ छेदयन्त्यतिवृक्षांश्च वनारामविभञ्जकाः ॥ व्रतं तीर्थं
परित्यज्य विधवाशीलनाशकाः ॥ २९ ॥ भर्तां दूषयेन्नारी परं मनसि धारयेत् ॥ इत्याद्याः
शाल्मलीवृक्षे भुञ्जते बहुताडनम् ॥ ३० ॥ ताडनात् पतितान् दूताः क्षिपन्ति
नरकेषु तान् ॥ पतन्ति तेषु ये पापास्तानहं कथयामि ते ॥३१॥ नास्तिका भिन्नमर्यादाः

पुरुष का ध्यान मन से करती हैं, ऐसे सब पापी (दूसरे अध्याय में कहे हुए) सेमल के वृक्ष में अनेक प्रकार की यातना भोगते हैं ॥ ३० ॥ उस वृक्ष पर लटके हुए पापी ताड़न किये जाने पर जब गिरते हैं, दूत उनको नरक में डालते हैं, उन नरकों में जो गिराये जाते हैं, उनके पापों को मैं तुमसे कहता हूँ ॥३१॥ ईश्वरको न माननेवाले, दान का खण्डन करनेवाले, परम्परा का उल्लंघन करनेवाले, अपने कर्म तथा आश्रितों (पुत्र, स्त्री, देवता, अतिथि

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America- HHFA(USA)

ग० पु० २५

भा० टी० अ० ४

और सेवक आदि) को दुःख देनेवाले, संसार के विषय में संलग्न, संसार को ठगने के लिए दम्भ करनेवाले और दूसरों के किए हुए उपकार को न माननेवाले घोर नरक में जाते हैं ॥ ३२ ॥ कुँआ, बावली, तालाब, देवालय और प्रजाओं के घर का नाश करनेवाले इन नरकों को भोगते हैं ॥३३॥ जो स्त्री,बालक, सेवक तथा गुरुजनों को न देकर

कदर्या विषयात्मकाः ॥ दम्भिकाश्च कृतघ्नाश्च ते वै नरकगामिनः ॥ ३२ ॥
कूपानां च तडागानां वापीनां देवसद्मनाम् ॥ प्रजागृहाणां भेत्तारस्ते वै नरकगामिनः ॥३३॥
विसृज्याश्नन्ति ये दाराऽञ्छिशून् भृत्यांस्तथा गुरून् ॥ उत्सृज्य पितृदेवेज्यां ते वै नरक-
गामिनः ॥३४॥ शंकुभिः सेतुभिः काष्ठैः पाषाणैः कण्टकैस्तथा ॥ ये मार्गमुपरुन्धन्ति ते
वै नरकगामिनः ॥ ३५ ॥ शिवं शिवां हरिं सूर्यं गणेशं सद्गुरुं बुधम् ॥ न पूजयन्ति ये
मन्दास्ते वै नरकगामिनः ॥ ३६ ॥ आरोप्य दासीं शयने विप्रो गच्छेदधोगतिम् ॥

अकेले भोजन करते हैं, और देवता, पितर, तथा बलिवैश्वदेव आदि यज्ञों को न करके भोजन करते हैं वे निश्चय नरक में जाते हैं ॥३४॥ जो काँटों से, पुल से, काष्ठों से, पत्थरों से वा कँटीले (लोहे के तार) आदि से जो मार्ग को रोकते हैं, वह निश्चय नरक में जाते हैं ॥३५॥ शिव, पार्वती, विष्णु, सूर्य, गणेश, सद्गुरु और पण्डित की जो अज्ञानी सेवा और पूजा नहीं करते हैं, वे निश्चय नरक में जानेवाले होते हैं ॥३६॥ जो ब्राह्मण दासी के सङ्ग शय्या

= अग्निसौवीर्य स्मृति

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पर सोता है वह नरक को जाता है और जो शूद्रास्त्रीमें उसकी सन्तान पैदा करता है वह ब्राह्मणत्व से नष्ट हो जाता है ॥३७॥ वह ब्राह्मणों में अधम है। ऐसे ब्राह्मण को नमस्कार तथा पूजा आदि नहीं करनी चाहिए। जो अज्ञानी देवता आदि से विमुख रहते हैं, वे अवश्य नरकगामी होते हैं ॥३८॥ जो मनुष्य ब्राह्मणों के युद्ध को और गौओं के युद्ध को

प्रजामुत्पाद्य शूद्रायां ब्राह्मण्यादेव हीयते ॥ ३७ ॥ न नमस्कारयोग्यो हि स कदापि द्विजोऽधमः ॥ न पूजयन्ति ये मूढास्ते वै नरकगामिनः ॥३८॥ ब्राह्मणानाञ्च कलहं गोयुद्धं कलहप्रियाः ॥ न वर्जयन्त्यनुमोदन्ते ते वै नरकगामिनः ॥ ३९ ॥ अनन्यशरणस्त्रीणामृतु-कालव्यतिक्रमम् ॥ ये प्रकुर्वन्ति विद्वेषात्ते वै नरकगामिनः ॥ ४० ॥ येऽपि गच्छन्ति कामान्धा नरा नारीं रजस्वलाम् ॥ पर्वस्वप्सु दिवा श्राद्धे ते वै नरकगामिनः ॥ ४१ ॥ ये वह्नौ च जलेवापि प्रक्षिपन्ति मलं स्वकम् ॥ आरामे पथि गोष्ठे वा ते वै नरक-

निवारण नहीं करते हैं, बल्कि अनुमोदन करते हैं वे निश्चय नरक को जाते हैं ॥३९॥ जिन स्त्रियोंको पति ही एक शरण है, ऐसी स्त्री के पास ऋतुकाल में भी वैर से यदि उसका पति नहीं रहता है तो वह अवश्य नरक को भोगता है ॥४०॥ जो काम से अन्धे होकर रजस्वला स्त्री में भोग करते हैं और पर्व में तथा जल में या दिन में तथा श्राद्ध के दिन जो स्त्री में गमन करते हैं, वे निश्चय नरक को जाते हैं ॥४१॥ जो अपने शरीर के मल को अग्नि या जल में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डालते हैं, बगीचे में तथा गौओंके स्थान में मल-मूत्र करते हैं, वे निश्चय नरकगामी होते हैं ॥४२॥ जो तलवार आदि शस्त्रों तथा तीर-धनुष को बनानेवाले तथा बेचनेवाले हैं, वे निश्चय नरक को जाते हैं ॥४३॥ चमड़े को बेचनेवाला वैश्य, चरित्र को बेचनेवाली स्त्री और विष को बेचनेवाले निश्चय नरक को जाते हैं ॥ ४४ ॥ जो दीन अनाथ पर

गामिनः ॥ ४२ ॥ शस्त्राणां ये च कर्तारः शराणां धनुषां तथा ॥ विक्रेतारश्च ये तेषां ते वै नरकगामिनः ॥ ४३ ॥ चर्मविक्रयिणो वैश्याः शीलविक्रेयिकाः स्त्रियः ॥ विषविक्रयिणः सर्वे ते वै नरकगामिनः ॥४४॥ अनाथं नानुकम्पन्ति ये सतां द्वेषकारकाः ॥ विनाऽपराधं दण्डयन्ति ते वै नरकगामिनः ॥ ४५ ॥ आशया समनुप्राप्तान् ब्राह्मणानर्थिनो गृहे ॥ न भोजयन्ति पाकेऽपि ते वै नरकगामिनः ॥ ४६ ॥ सर्वभूतेष्वविश्वस्तथा तेषु विनिर्दयाः ॥ सर्वभूतेषु जिह्मा ये ते वै नरकगामिनः ॥ ४७ ॥ नियमान् समुपादाय ये पश्चाद-

दया नहीं करते हैं और जो सज्जनों से बुराई मानते हैं, जो बिना अपराध के किसी को दण्ड देते हैं, वे निश्चय नरक को जाते हैं ॥४५॥ आशा से युक्त घर में आये हुए याचक ब्राह्मणको रसोई तैयार होने पर भी जो भोजन नहीं देते हैं वे निश्चय नरक को जाते हैं॥४६॥सब जीवों में अविश्वास करनेवाले और दया न करनेवाले, सकल प्राणियों के सङ्ग कुटिलता करनेवाले निश्चय नरक को जानेवाले होते हैं ॥४७॥ जो सन्ध्यावन्दन, कृच्छ्र, चान्द्रायण आदि नियम

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हैं, उनको प्रतिज्ञापूर्वक अङ्गीकार करके पीछे इन्द्रियोंके वश में होकर छोड़ देते हैं, वे निश्चय नरक को जाते हैं ॥ ४८ ॥ अध्यात्मविद्या देनेवाले को जो गुरु नहीं मानते हैं, पुराण बाँचनेवालोंको भी जो गुरु के भाव से नहीं मानते हैं, वे निश्चय नरक को जाते हैं ॥४९॥ जो मित्रों से द्रोह करते हैं, जो प्रीति-भङ्ग करते हैं, जो

जितेन्द्रियाः ॥ विग्लापयन्ति तान् भूयस्ते वै नरकगामिनः ॥४८॥ अध्यात्मविद्यादातारं नैव मन्यन्ति ये गुरुम् ॥ तथा पुराणवक्तारं ते वै नरकगामिनः ॥४९॥ मित्रद्रोहकरा ये च प्रीतिच्छेदकराश्च ये ॥ आशाच्छेदकरा ये च ते वै नरकगामिनः ॥ ५० ॥ विवाहं देवयात्रां च तीर्थे सार्थान् विलुम्पति ॥ स वसेन्नरके घोरे तस्मान्नावर्तनं पुनः ॥५१॥ अग्निं दद्यान्महापापी गृहे ग्रामे तथा वने ॥ स नीतो यमदूतैश्च वह्निकुण्डेषु पच्यते ॥५२॥ अग्निना दग्धगात्रोऽसौ यदा छायां प्रयाचते ॥ नीयते च तदा दूतैरसिपत्रवनान्तरे ॥५३॥

आशाओं पर तुषारापात करते हैं, वे निश्चय नरक को जानेवाले होते हैं ॥५०॥ विवाह को, देवयात्रा को और तीर्थ यात्रियोंको जो नष्ट करते हैं, वे निश्चय घोर नरक में बसते हैं, वहाँ से वे फिर पुनः नहीं लौटते हैं ॥५१॥ गृह में, ग्राम में तथा वन में आग लगानेवालेको यमदूत पकड़कर अग्निकुण्ड में पकाते हैं ॥५२॥ जब अग्नि में शरीर जलने से वह पापी प्राणी छाया माँगता है तब उसको यमदूत पकड़कर (पूर्वोक्त) असिपत्र-वन में ले जाते हैं ॥५३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तलवार के समान चोखे पत्तों के लगने से जब शरीर कट जाता है, तब यमदूत कहते हैं कि हे पापी ! ठण्डी छाया में सुख की निद्रा ले ले ॥५४॥ जब वह पापी पानी पीने को माँगता है, तब यमदूत उसको पीने के लिए अत्यन्त गरम तेल देते हैं ॥५५॥ और कहते हैं कि लीजिये, खाइये, पीजिये । उस गरम तेल को पीते ही उस जीव की

खड्गतीक्ष्णैश्च तत्पत्रैर्गात्रच्छेदो यदा भवेत् ॥ तदोचुः शीतलच्छाये सुखनिद्रां कुरुष्व भो ॥ ५४ ॥ पानीयं पातुमिच्छन्वै तृषार्तो यदि याचते ॥ पानार्थं तैलमत्युष्णं तदा दूतैः प्रदीयते ॥५५॥ पीयतां भुज्यतां पानमन्नमूचुस्तदेति ते ॥ पीतमात्रेण तेनैव दग्धान्त्रा निपतन्ति ते ॥५६॥ कथञ्चित्पुनरुत्थाय प्रलपन्ति सुदीनवत् ॥ विवशा उच्छ्वसन्तश्च ते वक्तुमपि नाशकन् ॥५७॥ इत्येवं बहुशस्तार्क्ष्य यातनाः पापिनां स्मृताः ॥ किमेतैर्विस्तरात्प्रोक्तैः सर्वशास्त्रेषु भाषितैः ॥ ५८ ॥ एवं वै क्लिश्यमानास्ते नराः नार्यः सहस्रशः ॥

अँतड़ी जल जाती है और वह मूर्छित होकर गिर पड़ता है ॥५६॥ बड़ी कठिनाइयों से किसी प्रकार फिर उठकर, बड़ी दीनता दिखाते और परवश होने के कारण लम्बी साँसें लेते हैं, कुछ कहने में भी असमर्थ रहते हैं, ॥५७॥ हे गरुड़! पापियों की यातना को मैंने इस प्रकार कहा। इतने से क्या होता है, इनका वर्णन सब शास्त्रों में और विशेष है ॥५८॥

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

जलज ९००००० – ९ लाख पक्षिगणवर्ग १०००००० – १० लाख | ८४ लाख
स्थावर २०००००० – २० लाख पशुयोनिवर्ग ३०००००० – ३० लाख
कृमिकीट पतंग ११००००० ११ लाख मानववर्गयोनि ४००००० – ४ लाख

पापी प्राणी जितने स्त्री वा पुरुष हैं, वे इस प्रकार हजारों कष्टोंको सहकर प्रलयकाल पर्यन्त घोर नरक में पचाये जाते हैं ॥५९॥ ऐसे पाप के अक्षय फल को भोगकर सृष्टि के आरम्भ में नरक ही में वे जन्म लेते हैं, अर्थात् नरक में रहनेवाला शरीर उन्हें मिलता है, पृथ्वी में आकर यमराजकी आज्ञा से वृक्षादिकों की योनिमें जन्म लेते हैं ॥६०॥ वृक्ष,

पच्यन्ते नरके घोरे यावदाभूतसम्प्लवम् ॥५९॥ तस्याक्षयं फलं भुक्त्वा तत्रैवोत्पद्यते पुनः ॥ यमाऽऽज्ञया महीं प्राप्य भवन्ति स्थावरादयः ॥६०॥ वृक्षगुल्मलतावल्लीगिरयश्च तृणानि च ॥ स्थावरा इति विख्याता महामोहसमावृताः ॥६१॥ कीटाश्च पशवश्चैव पक्षिणश्च जलेचराः ॥ चतुरशीतिलक्षेषु कथिता देवयोनयः ॥६२॥ एताः सर्वाः परिभ्रम्य ततो यान्ति मनुष्यताम् ॥ मनुषेऽपि श्वपाकेषु जायन्ते नरकाऽऽगताः ॥ तत्रापि पापचिन्हैस्ते

गुल्म लता, वल्ली, पर्वत, तृण, घास, फूल आदि की स्थावर संज्ञा है, अर्थात् इनको स्थावर कहते हैं ॥६१॥ कीट, पशु, पक्षी, जलचर आदि ८४ लाख देवयोनियाँ हैं। इनमें भ्रमण करके मनुष्य का शरीर मिलता है, परन्तु जो नरक से आकर मनुष्य होते हैं, वे चाण्डाल आदि की योनिमें जन्म लेकर पूर्वकृत पाप-चिन्ह से बहुत दुखी होते हैं ॥६२-६३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्त्री हों चाहे पुरुष, नरक के ये चिह्न अर्थात् गलित कुष्ठ, जन्म के अन्धे तथा और भी भयानक रोगों से पीड़ित रहते हैं ॥६४॥

इति श्रीगरुड़पुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

भवन्ति बहुदुःखिताः ॥ ६३ ॥ गलत्कुष्ठाश्च जन्मान्धा महारोगसमाकुलाः ॥ भवन्त्येवं नरा नार्यः पापचिन्होपलक्षिताः ॥ ६४ ॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे नरकप्रदपापचिन्हनिरूपणं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

श्रीगरुड उवाच ॥ येन येन च पापेन यद्यच्चिन्हं प्रजायते ॥ यां यां योनिं च गच्छन्ति तन्मे कथय केशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ये पापैर्यान्ति या योनिं पापिनो नरका-गताः ॥ येन पापेन यच्चिह्नं जायते मम तच्छृणु ॥ २ ॥ ब्रह्महा क्षयरोगी स्याद्गोघ्नः

श्रीगरुड़जी ने कहा—हे प्रभो ! जिन-जिन पापों के करने से जो-जो चिन्ह होते हैं और जिन-जिन योनियों में जाते हैं, वह सब मुझसे कहिये ॥१॥ श्री भगवान्‌जी ने कहा—नरक से लौटकर आये हुए पापी लोग जिन पापों से जिन-जिन योनियों में जाते हैं, और जिस पाप से उन्हें जो चिन्ह रहता है, वह सब मैं तुमसे कहता हूं, सुनो ॥२॥

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

ब्राह्मण को मारनेवाला क्षयरोगसे पीड़ित होता है, गौ को मारनेवाला कुबड़ा तथा मूर्ख होता है, कन्या को मारनेवाला कोढ़ी होता है, ये तीनों चाण्डाल की योनि में जन्म लेते हैं ।। ३ ।। स्त्री को मारनेवाला, गर्भ को, नष्ट करनेवाला पुलिन्द नाम म्लेच्छ की जाति में रोगी होकर उत्पन्न होता हैं । अगम्य स्त्री में गमन करनेवाला नपुंसक होता है और

स्यात् कुब्जको जडः ।। कन्याघाती भवेत्कुष्ठी त्रयश्चाण्डालयोनिषु ।। ३ ।। स्त्रीघाती गर्भ-
पाती च पुलिन्दो रोगवान्भवेत् ।। अगम्यागमनात्षण्ढो दुश्चर्मा गुरुतल्पगः ।। ४ ।।
मांसभोक्तातिरक्तांगः श्यामदन्तस्तु मद्यपः ।। अभक्ष्यभक्षको लौल्याद्ब्राह्मणः स्यान्महो-
दरः ।। ५ ।। अदत्त्वा मिष्टमश्नाति स भवेद्गलगण्डवान् ।। श्राद्धेऽन्नमशुचिं दत्त्वा श्वित्र-
कुष्ठी प्रजायते ।। ६ ।। गुरोर्गर्वेणावमानादपस्मारी भवेन्नरः ।। निन्दको वेदशास्त्राणां

गुरुपत्नी में गमन करनेवाला दुश्चर्मरोग से पीड़ित होता है ।। ४ ।। मांस खानेवाले का अङ्ग अति लाल होता है, मदिरा पीनेवाले के दाँत काले होते हैं और जो ब्राह्मण जीभ की चंचलता से अभक्ष्य भक्षण करते हैं उनका पेट बहुत बड़ा होता है ।।५।। जो दूसरे को न देकर स्वादिष्ठ वस्तु स्वयं खाता है, वह गलगण्ड रोग से पीड़ित होता है । जो श्राद्ध में अशुद्ध अन्न देता है, वह सफेद कुष्ठ से पीड़ित होता है ।।६ ।। अभिमान युक्त जो गुरु का अपमान करता है,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वह मूर्छा (मृगी) के रोग से पीड़ित होता है, शास्त्र तथा वेदों की निन्दा करनेवाला निश्चय पाण्डुरोग से पीड़ित होता है ॥७॥ झूठी गवाही देनेवाला, गूँगा, पंक्तिभेद करनेवाला, काना, लगे हुए विवाह को बिगाड़नेवाला बिना ओठ का होता है और पुस्तक चुरानेवाला जन्मांध होता है ॥८॥ गौ-ब्राह्मण को लात मारनेवाला खञ्ज तथा पंगु होता

पाण्डुरोगी भवेद्ध्रुवम् ॥ ७॥ कूटसाक्षी भवेन्मूकः काणः स्यात् पङ्क्ति भेदकः ॥ अनोष्ठः स्याद्विवाहघ्नः जन्मान्धः पुस्तकं हरेत् ॥८॥ गोब्राह्मणपदाघातात् खञ्जः पंगुश्च जायते ॥ गद्गदोऽनृतवादी स्यात्तच्छ्रोता बधिरो भवेत् ॥ ९ ॥ गरदः स्याज्जडोन्मत्तः खल्वाटोऽग्नि-प्रदायकः ॥ दुर्भगः पलविक्रेता रोगवान् परमांसभुक् ॥ १० ॥ हीनजातौ प्रजायेत रत्नानामपहारकः । कुनखी स्वर्णहर्ता स्याद्धातुमात्रहरोऽधनः ॥ ११ ॥ अन्नहर्ता भवेदाखुः

है। असत्य बोलनेवाला गद्गद (हकलानेवाला) और झूठ सुननेवाला बधिर होता है ॥९॥ विष देनेवाला मूर्ख और उन्मत्त होता है। घर में आग लगानेवाला खल्वाट, मांस बेचनेवाला दुर्भग और पराये मांस को खानेवाला रोगी होता है ॥१०॥ रत्न चुरानेवाला नीच कुल में उत्पन्न होता है, सोना चुरानेवाला, बुरे नखवाला और धातुओं को चुराने-वाला निर्धन होता है ॥११॥ अन्न चुरानेवाला मूसा, (साँवा, कोदो, कक्कुनी) धान आदि को चुरानेवाला टिड्डी,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जल को चुरानेवाला पपीहा और विष को चुरानेवाला बिच्छू होता है ॥१२॥ शाक और पत्ते आदि को चुरानेवाला मोर होता है, गन्ध चुरानेवाला छुछुन्दरी, मधु चुरानेवाला डांस, मांस चुरानेवाला गीध और नमक चुरानेवाला चींटी होता है ॥१३॥ पान, फूल, फल को चुरानेवाला वानर होता है। जूता, तृण, कपास आदि को चुरानेवाला भेड़ा

शलभो धान्यहारकः ॥ चातको जलहर्ता स्याद्विषहर्ता च वृश्चिकः ॥ १२ ॥ शाकं पत्रं शिखी हृत्वा गन्धाञ्छुछुन्दरी शुभान् ॥ मधु दंशः पलं गृध्रो लवणं च पिपीलिका ॥१३॥ ताम्बूलफलपुष्पादिहर्ता स्याद्वानरो वने ॥ उपानत्तृणकार्पासहर्ता स्यान्मेषयोनिषु ॥१४॥ यश्च रौद्रोपजीवी च मार्गे सार्थान्विलुम्पति ॥ मृगयाव्यसनी यस्तु छागः स्याद्वधिक-गृहे ॥ १५ ॥ यो मृतो विषपानेन कृष्णसर्पो भवेद्गिरौ ॥ निरंकुशस्वभावः स्यात्कुञ्जरो निर्जने वने ॥ १६ ॥ वैश्वदेवमकर्तारः सर्वभक्षाश्च ये द्विजा ॥ अपरीक्षितभोक्तारो व्याघ्राः

होता है ॥१४॥ हिंसा करनेवाला अथवा उससे जीविका करनेवाला, तीर्थ करनेवाले यात्रियों के धन को लूटनेवाला, मृगया करनेवाला कसाई के घर में बकरा होता है॥१५॥विष पानकर मरनेवाला सर्प होता है। सदा उद्दण्ड रहनेवाला जङ्गल में हाथी होता है ॥१६॥ बलिवैश्वदेव न करनेवाले ब्राह्मण जो नीच का अन्न भोजन करते हैं, उन्हें व्याघ्र की

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

योनि मिलती है ॥१७॥ जो ब्राह्मण संध्या और गायत्री का जप नहीं करते और जिनका अन्तःकरण मलिन है, ऊपर से स्वच्छ बने रहते हैं, वे बगला का जन्म लेते हैं ॥१८॥ जो शूद्रों का यज्ञ कराते हैं, वे गाँव के सूअर होते हैं। जो बहुतों की पुरोहिती कराते हैं वे गदहा होते हैं और जो बिना निमन्त्रण के भोजन करते हैं वे कौआ होते

स्युर्निर्जने वने ॥ १७ ॥ गायत्रीं न स्मरेद्यस्तु यो न सन्ध्यामुपासते ॥ अन्तर्दुष्टो वहिः साधुः स भवेद्ब्राह्मणो बकः ॥ १८ ॥ अयाज्ययाचको विप्रः स भवेद्ग्रामसूकरः ॥ खरो वै बहुयाजित्वात् काको निर्मन्त्रभोजनात् ॥ १९ ॥ पात्रे विद्यामदाता च बलीवर्दो भवेद्द्विजः ॥ गुरुसेवामकर्ता च शिष्यः स्याद्गोखरःपशुः ॥२०॥ गुरुं हुंकृत्य तुं कृत्य विप्रं निर्जित्य वादतः ॥ अरण्ये निर्जले देशे जायते ब्रह्मराक्षसः ॥ २१ ॥ प्रतिश्रुतं द्विजे दानमदत्त्वा जम्बुको भवेत् ॥ सतामसत्कारकरः फेत्कारोऽग्निमुखो भवेत् ॥ २२ ॥

कुत्ता भोज्य

हैं ॥१९॥ जो ब्राह्मण पात्र में विद्या नहीं देता है वह बलवान् बलीवर्द (बैल) और जो शिष्य गुरु की सेवा नहीं करता है वह पशु-योनि को पाता है ॥२०॥ गुरुको जबाब देनेवाला और विवाद करके ब्राह्मण को जीतनेवाला ब्रह्मराक्षस होता है॥२१॥कहकर जो ब्राह्मण को दान नहीं देता वह सियार और जो सज्जनों का सत्कार नहीं करता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वह फेत्कार की योनि को प्राप्त होता है ॥२२॥ मित्र से द्रोह करनेवाला पहाड़ी गीध, धोखा देकर खरीदनेवाला उल्लू, वर्णाश्रम की निन्दा करनेवाला कबूतर होता है ॥२३॥ आशा भङ्ग करनेवाला, स्नेहको भङ्ग करनेवाला, द्वेष से स्त्री को चुरानेवाला मोर, द्वेषवश स्त्री का परित्याग करनेवाला चिरकालतक चकवा-चकवी होता है २४ ॥

मित्रध्रुग्गिरिगृध्रः स्यादुलूकः क्रयवञ्चनात् ॥ वर्णाश्रमपरीवादात्कपोतो जायते वने ॥ २३ ॥ आशाच्छेदकरो यस्तु स्नेहच्छेदकरस्तु यः ॥ यो द्वेषात् स्त्रीपरित्यागी चक्रवाकश्चिरं भवेत् ॥ २४ ॥ मातृपितृगुरुद्वेषी भगिनीभ्रातृवैरकृत् ॥ गर्भे योनौ विनष्टः स्याद्यावद्योनिसहस्रशः ॥ २५ ॥ श्वश्रोऽपशब्ददा नारी नित्यं कलहकारिणी ॥ सा जलौका च यूका स्याद्भर्तारं भर्त्सते च या ॥ २६ ॥ स्वपतिं च परित्यज्य परपुंसानुवर्तिनी ॥ वल्गुली गृहगोधा स्याद्द्विमुखी वाथ सर्पिणी ॥ २७ ॥ याः स्वगोत्रोपघाती च स्वगोत्रस्त्रीनिषेवणात् ।

माता, पिता,गुरु, भाई और बहिन से वैर करनेवाले हजारों जन्म लेले और गर्भ में नष्ट हो जाते हैं ॥ २५ ॥ सास को गाली देनेवाली जोंक, नित्य कलह करनेवाली और अपने पति को धिक्कारनेवाली ढील होती हैं ॥२६॥ जो स्त्री अपन पति को छोड़कर दूसरे पुरुष से प्रीति करती है, वह गोह अथवा दो मुंह की साँपिन होती है ॥२७॥ अपने गोत्रको भ्रष्ट करनेवाले, अपने गोत्र की स्त्री में गमन करनेवाले तरक्षु और शल्लकी होकर भालू

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

की योनि में उत्पन्न होते हैं ॥२८॥ तापस स्त्री में गमन करनेवाला पुरुष मरुस्थल में पिशाच की योनि पाता है। जो ऋतुमती नहीं हुई है ऐसी स्त्री में भोग करनेवाला वन में अजगर होता है ॥२९॥ गुरु की स्त्री में भोग करनेवाला विषखोपड़ा, राजा की स्त्री में गमन करनेवाला दुष्ट, और मित्र की स्त्री में गमन करनेवाला गदहा होता है॥३०॥गुदा

तरक्षुः शल्लको भूत्वा ऋक्षयोनिषु जायते ॥२८॥ तापसीगमनात्कामी भवेन्मरुपिशाचकः॥
अप्राप्तयौवनासङ्गाद्भवेदजगरो वने ॥ २९ ॥ गुरुदाराभिलाषी च कृकलासो भवेन्नरः ॥
राज्ञीं गत्वा भवेद्दुष्टो मित्रपत्नीं च गर्दभः ॥ ३० ॥ गुदगो विड्वराहः स्याद्वृषः स्याद्-
वृषलीपतिः ॥ महाकामी भवेद्यस्तु स्यादश्वः कामलम्पटः ॥ ३१ ॥ मृतस्यैकादशाहं तु
भुञ्जानः श्वा विजायते ॥ लभेद्देवलको विप्रो योनिं कुक्कुटसंज्ञकाम् ॥३२॥ द्रव्यार्थं देवता-
पूजां यः करोति द्विजाधमः ॥ स वै देवलको नाम हव्यकव्येषु गर्हितः ॥३३॥ महापातक-

में गमन करनेवाला सूअर, वृषली (शूद्रा) में गमन करनेवाला बैल और महाकामी तथा लम्पट, घोड़ा होता है॥३१॥ मृतक के एकादशाह के दिन भोजन करनेवाला कुत्ता और देवताओं के भागों को खानेवाला मुर्गा होता है ॥३२॥जो ब्राह्मण द्रव्य के लोभ से देवताओंका पूजन करता है वह देवलक कहा जाता है,और देवकार्य तथा पितृकार्य में निन्दित होता है ॥३३॥महापातकों से युक्त होकर जो प्राणी घोर नरकों का उपभोग करके कर्म के क्षय होने पर इस संसार

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में पुनः आते हैं फिर भी वे महापातकी ही होते हैं॥३४॥ब्रह्महत्या करनेवाला मनुष्य गदहा,ऊँट और भैंस की योनि में उत्पन्न होता है,मदिरा पीनेवाला भेड़िया, कुत्ता और सियार की योनि पाता है ॥३५॥ सोना चुराने वाला कीड़ा, मकोड़ा,पतङ्ग आदि की योनि पाता है। गुरु-पत्नी में गमन करनेवाला क्रम से तृण,लता,वृक्ष आदि की योनि पाता है

जान् घोरान्नरकान् प्राप्य दारुणान् ॥ कर्मक्षये प्रजायन्ते महापातकिनस्त्विह ॥ ३४ ॥

खरोष्ट्रमहिषीणां हि ब्रह्महा योनिमृच्छति ॥ वृकश्वानशृगालानां सुरापा यान्ति योनिषु ॥ ३५॥

कृमिकीटपतङ्गत्वं स्वर्णस्तेयी समाप्नुयात् ॥ तृणगुल्मलतात्वं च क्रमशो गुरुतल्पगः ॥ ३६ ॥

परस्य योषितं हृत्वा न्यासापहरणेन च ॥ ब्रह्मस्वहरणाच्चैव जायते ब्रह्मराक्षसः ॥ ३७ ॥

ब्रह्मस्वं प्रणयाद्भुक्तं दहत्यासप्तमं कुलम् ॥ बलात्कारेण चौर्येण दहत्याचन्द्रतारकम् ॥ ३८ ॥

लोहचूर्णाश्मचूर्णं च विषं च जरयेन्नरः ॥ ब्रह्मस्वं त्रिषु लोकेषु कः पुमाञ्जरयिष्यति ॥ ३९ ॥

॥३६॥दूसरे की स्त्री हरण करनेवाला, दूसरे की धरोहर को पचानेवाला, देवता-ब्राह्मण के धन को हरनेवाला ब्रह्म-राक्षस होता है॥३७॥कपट-स्नेह से खाया हुआ ब्राह्मणका धन सात पीढ़ी तक जला देता है और बलात्कार से तथा चोरी से खाया हुआ धन चन्द्र तारा पर्यन्त जला देता है ॥३८॥ लोह और पत्थर के चूरे को तथा विष को तो मनुष्य पचा सकता है, परन्तु ब्राह्मणके धन को तीनों लोक में कौन पचायेगा ? ॥३९॥ ब्राह्मण के धन से पुष्ट

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वाहन और सेना ये सब युद्ध के समय बालू के पुल सदृश बिखर जाते हैं ॥४०॥ देवताओं का द्रव्य भोगने, ब्राह्मण का धन हरने, तथा ब्राह्मणका अतिक्रमण करने से कुल अकुल हो जाते हैं (नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं) ॥४१॥ वेद-शास्त्रज्ञ स्वाश्रित-ब्राह्मण को छोड़कर दूसरों को दान देने का नाम अतिक्रमण है ॥ ४२ ॥ वेद-शास्त्र से रहित ब्राह्मण को

ब्रह्मस्वरसपुष्टानि वाहनानि बलानि च ॥ युद्धकाले विशीर्यन्ते सैकताः सेतवो तथा ॥४०॥
देवद्रव्योपभोगेन ब्रह्मस्वहरणेन च ॥ कुलान्यकुलतां यान्ति ब्राह्मणातिक्रमेण च ॥ ४१ ॥
स्वमाश्रितं परित्यज्य वेदशास्त्रपरायणम् ॥ अन्येभ्यो दीयते दानं कथ्यतेऽयमतिक्रमः ॥४२॥
ब्राह्मणातिक्रमो नास्ति विप्रे वेदविवर्जिते ॥ ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्य न हि भस्मनि हूयते ॥४३॥
अतिक्रमे कृते तार्क्ष्य भुक्त्वा च नरकान् क्रमात् ॥ जन्मान्धः सन् दरिद्रः स्यान्न दाता किन्तु
याचकः ॥४४॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेच्च वसुन्धराम् ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां

दान न देना उनका अतिक्रमण नहीं है, क्योंकि जलती हुई अग्नि को छोड़कर राख में हवन नहीं किया जाता है ॥४३॥ हे गरुड़ ! अतिक्रम करने में क्रम से नरकों को भोग, जन्म का अन्धा और दरिद्री होता है, दान देनेवाला नहीं होता है अपितु माँगनेवाला होता है ॥४४॥ अपनी दी हुई अथवा और की दी हुई पृथ्वी को जो छीन लेते हैं,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वे साठ हजार वर्ष तक विष्ठा के कीड़े होते हैं ॥४५॥ जो अपने दिये हुए पदार्थ को स्वयं छीन लेता है, वह पापी प्रलयकाल पर्यन्त नरक में वास करता है ॥४६॥ भूमि और जीविका देकर उसे अक्षुण्ण बनाने की यत्न से चेष्टा करे। जो रक्षा नहीं करता है, बल्कि स्वयं ले लेता है, वह पंगु कुत्ता होता है ॥४७॥ ब्राह्मण की जीविका करने में लाख

जायते कृमिः ॥ ४५ ॥ स्वयमेव च यो दत्त्वा स्वयमेवापकर्षति ॥ स पापी नरकं याति यावदाभूतसम्प्लवम् ॥ ४६ ॥ दत्वा वृत्तिं भूमिदानं यत्नतः परिपालयेत् ॥ न रक्षति हरेद्यस्तु स पङ्गुश्वाऽभिजायते ॥ ४७ ॥ विप्रस्य वृत्तिकरणे लक्षधेनुफलं भवेत् ॥ विप्रस्य वृत्तिहरणान्मर्कटः श्वा कपिर्भवेत् ॥ ४८ ॥ एवमादीनि चिह्नानि योनयश्च खगेश्वर ॥ स्वकर्मविहिता लोके दृश्यन्तेऽत्र शरीरिणाम् ॥ ४९ ॥ एवं दुष्कर्मकर्तारो भुक्त्वा निरय यातनात् ॥ जायन्ते पापशेषेण प्रोक्तास्वेतासु योनिषु ॥ ५० ॥ ततो जन्मसहस्रेषु प्राप्य

गौ देने का पुण्य होता है और ब्राह्मण की जीविका हर लेने से मर्कट, कुत्ता और बन्दर होता है ॥४८॥ हे गरुड़! उपर्युक्त कहे हुए ये सब चिह्न और योनियाँ अपने कर्म द्वारा प्राप्त हैं जो देहधारियोंमें दिखायी देती हैं ॥४९॥ इस प्रकार बुरे कर्म के करनेवाले नरकों की यातना भोगकर शेष पापों से उपर्युक्त योनियों में जन्म लेते हैं ॥५०॥ इसके

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पश्चात् हजारों जन्म में पशु-पक्षी आदि तिर्यक् योनि को प्राप्त होकर भारवाहक पशु की देह (ऊँट, बैल, गधा आदि) होते हैं ॥५१॥ उसके पश्चात् वर्षा, शीत, घाम से उत्पन्न हुए पक्षियोंके दुःख को भोगने पर जब जीवों का शुभा-शुभ कर्मफल समाप्त हो जाता है, तब मनुष्य देह पाते हैं ॥५२॥ यह जीव स्त्री-पुरुष के प्रसङ्ग से गर्भ में जीव होकर

तिर्यक्छरीरताम् ॥ दुःखानि भारवहनोद्भवादीनि लभन्ति ते ॥ ५१ ॥ पक्षिदुःखं ततो भुक्त्वा वृष्टिशीतातपोद्भवम् ॥ मानुषं लभते पश्चात्समीभूते शुभाशुभे ॥ ५२॥ स्त्रीपुंसोस्तु प्रसङ्गेन भूत्वा गर्भे क्रमादसौ ॥ गर्भादिमरणान्तं च प्राप्य दुःखं म्रियेत्पुनः ॥ ५३ ॥ समुत्पत्तेर्विनाशश्च जायते सर्वदेहिनाम् ॥ एवं प्रवर्तितं चक्रं भूतग्रामे चतुर्विधे ॥ ५४ ॥ घटीयन्त्रं यथा मर्त्या भ्रमन्ति मम मायया ॥ भूमौ कदाचिन्नरके कर्मपाशसमावृताः ॥ ५५ ॥ अदत्तदानाच्च भवेद्दरिद्रो दरिद्रभावाच्च करोति पापम् ॥ पापप्रभावान्नरकं प्रयाति पुनर्दरिद्रः

क्रमशः बढ़ता हुआ गर्भ से लेकर मरणपर्यन्त दुःख पाकर फिर मर जाता है॥५३॥ सभी शरीरधारियों का जन्म और विनाश होता है। चार प्रकार के भूत-ग्रामों (अण्डज, स्वेदज, उद्भिज और जरायुज) का इस प्रकार चक्र चला करता है ॥५४॥ मनुष्य जीव मेरी माया से घटीयन्त्र के समान भ्रमण करते हैं। कर्मजाल में बँधे हुए जीव कभी मर्त्यलोक में और कभी नरक में जाते हैं ॥५५॥ अदेय वस्तुओं के दान करने से लोग दरिद्री होते हैं और दरिद्री होने से पाप

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करते हैं तथा पाप के प्रभाव से नरक में जाते हैं। इस प्रकार बारम्बार दरिद्री और पापी होते हैं ॥५६॥ किये हुये शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है, बिना भोगे लाखों कल्पों तक कर्मफल क्षीण नहीं होता ॥५७॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां पापचिह्न निरूपणं नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

—०—

पुनरेव पापी ॥ ५६ ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥ नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ ५७ ॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे पापचिह्ननिरूपणं नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

गरुड उवाच ॥ कथमुत्पद्यते मातुर्जठरे नरकागतः ॥ गर्भादिदुःखं यद्भुङ्क्ते तन्मे कथय केशव ॥ १ ॥ विष्णुरुवाच ॥ स्त्रीपुंसोस्तु प्रसङ्गेन निरुद्धे शुक्रशोणिते ॥ यथायं जायते मर्त्यस्तथा वक्ष्याम्यहं तव ॥ २ ॥ ऋतुमध्ये हि पापानां देहोत्पत्तिः प्रजायते ॥ इन्द्रस्य

गरुड़जी ने कहा—हे केशव ! नरक से आये हुए प्राणी माता के पेट से कैसे उत्पन्न होते हैं? और गर्भ आदि में जो दुःख भोगते हैं, मुझसे कहिये ॥१॥ श्रीभगवान्‌जी ने कहा—स्त्री-पुरुषके प्रसङ्ग द्वारा वीर्य और रज के गर्भ में ठहर जाने पर जैसे प्राणी उत्पन्न होते हैं, वह मैं तुमसे कहता हूँ ॥२॥ ऋतु के मध्य में पापियों की देह-उत्पत्ति होती है स्त्रियों

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America, HHFA (USA)

के रजोकाल के प्रारम्भिक तीन दिन में इन्द्र की ब्रह्महत्या का पाप रहता है। उन तीन दिनोंमें पापियों की उत्पत्ति होती है ॥३॥ ऋतु-दर्शन होनेवाले प्रथम दिन स्त्री चाण्डाली, दूसरे दिन ब्रह्महत्यारी, तीसरे दिन रजकी होती हैं। ये ही नरक से आये हुए पापियों की माता हैं अर्थात् नरक से आये हुए पापियों की ये ही मातायें होती हैं ॥४॥ जीव प्रारब्ध कर्मवश देहप्राप्ति के लिये पुरुष के वीर्यकण के आश्रित होकर स्त्री के उदर में प्रविष्ट होता है॥५॥ एक रात्रि

ब्रह्महत्यास्ति यस्मिन् तस्मिन्दिनत्रये ॥ ३ ॥ प्रथमेऽहनि चाण्डाली द्वितीये ब्रह्मघातिनी ॥ तृतीये रजकी ह्येता नरकागतमातरः ॥ ४ ॥ कर्मणा दैवनेत्रेण जन्तुर्देहोपपत्तये ॥ स्त्रियाः प्रविष्ट उदरं पुंसो रेतःकणाश्रयः ॥ ५ ॥ *कललं त्वेकरात्रेण पञ्चरात्रेण बुद्बुदम् ॥ दशाहेन तु कर्कन्धूः पेश्यण्डं वा ततः परम् ॥ ६ ॥ मासेन तु शिरो द्वाभ्यां बाह्वङ्गाद्यङ्गविग्रहः ॥ नखलोमास्थिचर्माणि लिङ्गच्छिद्रोद्भवस्त्रिभिः ॥ ७ ॥ चतुर्भिर्धातवस्सप्त पञ्चभिः क्षुत्तृडुद्भव ॥

में कलल, पाँच रात्रि में बुद्बुद होता है। दश रात्रि में कर्कन्धू नाम का होता है मांस का पिण्ड होता है, अथवा दूसरी योनि में अण्डा होता है ॥६॥ उसके पीछे दो महीने में सिर होता है और बाहु आदि अंगों का विभाग होता है और तीन महीने में नख, रोम, हड्डी, चाम और लिंग आदि छेद होते हैं॥७॥ चार महीने में सातों धातुयें होती हैं। पाँचवें मास में क्षुधा-तृषा की उत्पत्ति होती है और छः महीने में झिल्ली होती है जिसको जरायु कहते हैं। उसमें लिपटा हुआ

* ज्यौतिष शास्त्र में इसका वर्णन इससे पृथक् है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दाहिनी कोख में भ्रमण करता है ॥८॥ इस जरायु का रस, धातु, रक्त आदि माता से खाये हुए अन्न, पान आदि से बढ़ता है। जरायु से दुर्गन्ध आती है, जिस स्थान से जीव की उत्पत्ति होती है वह विष्ठा-मूत्र के गर्त सदृश है। उसी में जीव सोता है ॥९॥ गर्त में उत्पन्न भूखे कीड़ों से काटे जाने पर उरुक्लेश से पीड़ित हो सुकुमार जरायु-पिण्ड मूर्छित हो

षड्भिर्जरायुणा वीतः कुक्षौ भ्राम्यति दक्षिणे ॥ ८ ॥ मातुर्जग्धान्नपानाद्यैरेधद्धातुरसम्मते ॥
शेते विण्मूत्रयोर्गर्ते स जन्तु र्जन्तुसम्भवे ॥ ९ ॥ कृमिभिः क्षतसर्वाङ्गः सौकुमार्यात्प्रति-
क्षणम् ॥ मूर्छामाप्नोत्युरुक्लेशस्तत्रत्यैः क्षुधितैर्मुहुः ॥ १० ॥ कटुतीक्ष्णोष्णलवणरूक्षा-
म्लादिभिरुल्बणैः मातृभुक्तैरुपस्पृष्टः सर्वाङ्गोत्थितवेदनः ॥ उल्बेन संवृतस्तस्मिन्नन्त्रैश्च
बहिरावृतः ॥ ११ ॥ आस्ते कृत्वा शिरः कुक्षौ भग्नपृष्ठ शिरोधरः ॥ अकल्पः स्वाङ्गचेष्टायां
शकुन्त इव पिञ्जरे ॥१२॥ तत्र लब्धस्मृतिर्दैवात्कर्म जन्मशतोद्भवम् ॥ स्मरन्दीर्घमनुच्छ्वासं

जाता है ॥१०॥ माता से खाये हुए कड़ुए, तीक्ष्ण, नमकीन, रूखे और खट्टे आदि उल्बण पदार्थ से छूए जाने पर अङ्गों में वेदना होती है तथा जरायु और आँत के बन्धन में पड़कर ॥११॥ जीव कोख में शिर करके पीठ ग्रीवा को लचकीला बनाये हुए पिंजरे के पक्षी के समान अङ्गों के चलाने में असमर्थ हो जाता है ॥१२॥ वहाँ दैवयोग से सौ जन्मों की

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बातें स्मरण कर दीर्घ श्वास लेता है, अतः तनिक भी सुख नहीं मिलता ॥१३॥ सन्तप्त और भयभीत जीव धातुरूप सात बन्धनों में जकड़ा रहता है तथा हाथ जोड़कर दीन वचनों से इस उदर में डालनेवाले भगवान् की स्तुति करता है॥१४॥ सप्तम मास में सचेत होकर भी जीव प्रसूति-वायु से काँपता हुआ विष्ठा से उत्पन्न सहोदर कृमि

शर्म किं नाम विन्दते ॥ १३ ॥ नाथमान ऋषिर्भीतः सप्तबन्धः कृताञ्जलिः ॥ स्तुवीत
तं विक्लवया वाचा येनोदरेऽर्पितः ॥ १४ ॥ आरभ्य सप्तमान्मासाँल्लब्धबोधोऽपि वेपितः ॥
नैकत्रास्ते सूतिवातैर्विष्ठाभूरिव सोदरः ॥ १५ ॥ जीव उवाच ॥ श्रीपतिं जगदाधारम-
शुभक्षयकारकम् ॥ व्रजामि शरणं विष्णुं शरणागतवत्सलम् ॥ १६ ॥ त्वन्मायामोहितो
देहे तथा पुत्रकलत्रके ॥ अहमात्माभिमानेन गतोऽहं नाथ संसृतिम् ॥ १७ ॥ कृतं परिजन-
स्यार्थे मया कर्म शुभाशुभम् ॥ एकाकी तेन दग्धोऽहं गतास्ते फलभागिनः ॥ १८ ॥ यदि

के समान रेंगता रहता है ॥१५॥ जीवने कहा—श्री के पति, जगत् के आधार, अशुभ के नाशकर्त्ता, शरणागत के वत्सल, श्रीविष्णु भगवान् की शरण में जाता हूँ ॥१६॥ आपकी मायासे मोहित होकर देहधारी मैं अपने शरीर तथा पुत्र-स्त्री का अभिमान करके आपको भूल गया। हे नाथ ! अब मैं संसार में पुनः प्राप्त हूँ ॥१७॥ मैंने कुटुम्ब के लिये शुभ-अशुभ कर्म किया परन्तु उस कर्म के फल से मैं अकेला दग्ध होता हूँ और वे कुटुम्बी फल भोगी होकर अलग हो गये ॥१८॥

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

यदि इस योनि से मुक्त हुआ तो आपके चरण का स्मरण करूँगा, और ऐसा उपाय करूँगा जिससे संसार से मुक्त हो जाऊँ ॥१९॥ विष्ठा और मूत्रके कूपमें गिरा हुआ मैं जठराग्नि से जल रहा हूँ। बाहर निकलने की इच्छा करता हूँ। हे भगवन्! बाहर कब निकालोगे? ॥२०॥ जिस दीनदयालु ने मुझे ऐसा विशेष ज्ञान दिया, उसीकी शरण जाऊँ, जिससे पुनः संसार

योन्याः प्रमुच्येऽहं तत्स्मरिष्ये पदं तव॥ तमुपायं करिष्यामि येन मुक्तिं व्रजाम्यहम्॥१९॥
विण्मूत्रकूपे पतितो दग्धोऽहं जठराग्निना॥ इच्छन्नितो विवसितुं कदा निर्मास्यते बहिः॥२०॥
येनेदृशं मे विज्ञानं दत्तं दीनदयालुना॥ तमेव शरणं यामि पुनर्मे माऽस्तु
संसृतिः॥ २१॥ न च निर्गन्तुमिच्छामि बहिर्गर्भात्कदाचन॥ यत्र यातस्य मे पापकर्मणा
दुर्गतिर्भवेत्॥ २२॥ तस्मादत्र महद्दुःखे स्थितोऽपि विगतक्लमः॥ उद्धरिष्यामि संसारा-
दात्मानं ते पदाश्रयः॥ २३॥ श्री भगवानुवाच॥ एवं कृतमतिर्गर्भे दशमास्यः स्तुव-

में जन्म न हो ॥२१॥ ऐसी स्थिति में मैं गर्भ से बाहर कभी नहीं निकलना चाहता हूँ, कि जहाँ जन्म लेने पर पापकर्म से मेरी दुर्गति हो ॥२२॥ अतः यहाँ बड़े दुःख में स्थित भी मैं खेदरहित हूँ। और आपके चरण का आश्रय लेकर अपना उद्धार करूँगा ॥२३॥ श्री भगवान् ने कहा—इस प्रकार जीव दस मास तक गर्भ में रहकर स्तुति में बुद्धि लगाये रहता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है, ततः जन्म के लिये सिर को नीचे किये हुये जीव को प्रसूति-वायु प्रेरित करता है ॥२४॥ उस वायु से प्रेरित आतुर जीव नीचे को सिर करके उच्छ्वास-रहित नष्टस्मृति होकर कष्ट के साथ बाहर निकलता है॥२५॥ पृथ्वी पर विष्ठा-मूत्र में गिरकर कीड़ा के ऐसी चेष्टा करता है। ज्ञान के न रहने पर विपरीत गति को प्राप्त हो बहुत ही रोता है॥२६॥

न्नृषिः ॥ सद्यः क्षिपत्यवाचीनः प्रसूत्यै सूतिमारुतः ॥ २४ ॥ तेनावसृष्टः सहसा कृत्वाऽवाक्छिर आतुरः ॥ विनिष्क्रामति कृच्छ्रेण निरुच्छ्वासो हतस्मृतिः ॥ २५ ॥ पतिता भुवि विण्मूत्रे विष्ठाभूरिव चेष्टते ॥ रोरूयति गते ज्ञाने विपरीतां गतिं गतः ॥ २६ ॥ गर्भे व्याधौ श्मशाने च पुराणे या मतिर्भवेत् ॥ सा यदि स्थिरतां याति को न मुच्येत बन्धनात् ॥ २७ ॥ यदा गर्भाद्बहिर्याति कर्मभोगादनन्तरम् ॥ तदैव वैष्णवी माया मोहयत्येव पूरुषम् ॥ २८ ॥ स तदा मायया स्पृष्टो न किञ्चिद्वदतेऽवशः ॥ शैशवादिभवं दुःखं परा-

गर्भ, रोग, श्मशान और पुराण के सुनने पर जैसी बुद्धि होती है, यदि वह स्थिर बनी रहे, तो संसाररूपी बन्धन से कौन न छूट जाय ॥२७॥ कर्म भोगने के पश्चात् जब जीव बाहर आता है, तभी वैष्णवी माया उसको मोहित करती है ॥२८॥ तब वह माया में लिप्त और परवश हो कुछ नहीं बोलता है, शिशुकाल में होनेवाले दुःख को

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

आसुरी सम्पत्ति:- दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च, अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ ४
दैवी:- तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता; भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥ गी. अ. १६ श्लोक ३

पराधीन होकर भोगता है ॥२९॥ अभिप्राय को नहीं जाननेवाले पराये प्राणी से उसका पालन-पोषण होता है। इच्छा के विरुद्ध होने पर भी वह मना करने में असमर्थ रहता है ॥३०॥ जूँ, खटमल आदिसे दूषित मल-मूत्र से अपवित्र, शय्या पर सोया हुआ जीव कीड़ों तथा मल-मूत्र के कारण अङ्गों में उत्पन्न खुजलाहट को दूर करनेमें तथा उठने में

धीनतयाऽश्नुते ॥ २९ ॥ परच्छन्दं न विदुषा पोष्यमाणो जनेन सः ॥ अनभिप्रेतमापन्नः प्रत्याख्यातुमनीश्वरः ॥ ३० ॥ शायितोऽशुचिपर्यंके जन्तुस्वेदजदूषिते ॥ नेशः कण्डूयनेऽङ्गानामासनोत्थानचेष्टने ॥ ३१ ॥ तुदन्त्यामत्वचं दंशा मशका मत्कुणादयः ॥ रुदन्तं विगतज्ञानं कृमयः कृमिकं यथा ॥ ३२ ॥ इत्येवं शैशवं भुक्त्वा दुःखं पौगण्डमेव च ॥ ततो यौवनमासाद्य याति सम्पदमासुरीम् ॥३३॥ तदा दुर्व्यसनासक्तो नीचसङ्गपरायणः ॥ शास्त्रसत्पुरुषाणां च द्वेष्टा स्यात्कामलम्पटः ॥३४॥ दृष्ट्वा स्त्रियं देवमायां तद्भावैरजिते-

असमर्थ होता है॥३१॥जैसे कृमि कीड़े को काटते हैं उसी तरह उस ज्ञानरहित रोते हुए बालक की नर्म त्वचा में डँस, मसा, खटमल आदि काटते हैं जिससे वह बालक रोता है ॥३२॥ इस प्रकार जीव शिशुकाल के दुःखों को भोगकर पुनः किशोर अवस्था के दुःख को भोगता है। उसके बाद यौवन-अवस्था को प्राप्त कर आसुरी सम्पत्ति प्राप्त करता है ॥३३॥ यौवन के आने पर दुर्व्यसन में आसक्त होकर नीच के सङ्ग में लगा रहता है, शास्त्र तथा सत्पुरुषों का

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनं दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥

१ शारीरिक
२ वाचिक
३ मानसिक

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

शत्रु होता है और काम में लम्पट हो जाता है ॥३४॥ देवमाया-स्त्री को देखकर उसके कटाक्ष आदि भावों के वशीभूत होकर तथा लोभ में आकर अग्नि में फतिङ्गा के समान अन्धतम महामोह में गिरता है ॥३५॥ हरिण, हाथी, फतिङ्गा भौंरा और मीन (मछली) ये पाँच एक-एक विषय के लोभ में पड़कर मारे जाते हैं और एक यह प्रमादी पुरुष जो

न्द्रियः ॥ प्रलोभितः पतत्यन्धे तमस्यग्नौ पतङ्गवत् ॥ ३५ ॥ कुरङ्गमातङ्गपतङ्गभृङ्गमीना हताः पञ्चभिरेव पञ्च ॥ एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च ॥ ३६ ॥ अलब्धाभीप्सितोऽज्ञानादिद्धमन्युः शुचार्पितः॥ सह देहेन मानेन वर्धमानेन मन्युना ॥३७॥ करोति विग्रहं कामी कामिष्वन्ताय चात्मनः ॥ बलाधिकैः स हन्येत गजैरन्यैर्गजो यथा ॥ ३८ ॥ एवं यो विषयासक्त्या नरत्वमतिदुर्लभम् ॥ वृथा नाशयते मूढस्तस्मात्पापतरो हि कः ॥३९॥ जातीशतेषु लभते भुवि मानुषत्वं तत्रापि दुर्लभतरं खलु भो द्विजत्वम् ॥

पाँच इन्द्रियों से पाँचों विषयों को सेवन करता है, वह क्यों न मारा जाय ? ॥३६॥ इच्छानुसार वस्तु के न मिलने से अज्ञान के कारण देह के साथ बढ़नेवाले क्रोध तथा शोक के वशीभूत होता है ॥३७॥ कामी पुरुष अपने नाश के लिये अपने से बलवान् से युद्ध करता है । जिस प्रकार बलवान् गजों से युद्ध करने पर निर्बल गज मारा जाता है उसी तरह वह प्रबल जारों से मारा जाता है ॥३८॥ इस प्रकार जो मूढ़ पुरुष विषय की आसक्ति से अति दुर्लभ मनुष्य-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रश्न लोकेषु निर्धना दुःखा ऋणग्रस्तास्ततोऽधिकः तेभ्यां रोगयुता दुःखी तेभ्यो दुःखी कुभार्यकः ॥

सूतजी ने कहा——इस प्रकार का वर्णन सुनकर गरुड़ पीपल के पत्ते के समान काँपने लगे और उन्होंने मनुष्यों के उपकार के लिए श्री केशव भगवान् से फिर पूछा ॥१॥ गरुड़जी ने पूछा——मनुष्य जानकर अथवा अनजाने पापों को करके यम की यातनाओं को न पावें, ऐसे कौन से उपाय हैं ? उन्हें कहिये ॥२॥ संसाररूपी समुद्र में डूबते हुए,

सूत उवाच ॥ इति श्रुत्वा तु गरुडः कम्पितोऽश्वत्थपत्रवत् ॥ जनानामुपकारार्थं पुनः पप्रच्छ केशवम् ॥ १ ॥ गरुड उवाच ॥ कृत्वा पापानि मनुजाः प्रमादाद्बुद्धितोपि वा ॥ न यान्ति यातना याम्याः केनोपायेन कथ्यताम् ॥ २ ॥ संसारार्णवमग्नानां नराणां दीन-चेतसाम् ॥ पापोपहतबुद्धीनां विषयोपहतात्मनाम् ॥ ३ ॥ उद्धारार्थं वद स्वामिन् पुराणार्थं विनिश्चयम् ॥ उपायं येन मनुजाः सद्गतिं यान्ति माधव ॥ ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधु पृष्टं त्वया तार्क्ष्य मानुषाणां हिताय वै श्रृणुष्वावहितो भूत्वा सर्वं ते कथयाम्यहम् ॥ ५ ॥

दुःखित आत्मावाले, पाप से नष्ट बुद्धिवाले, विषय-वासनाओं से नष्ट आत्मावाले के उद्धारके लिए ॥३॥ हे स्वामिन्! पुराणों में जो निश्चित उपाय बतलाये हैं उन्हें कहिए, जिससे मनुष्य सद्गति को प्राप्त होते हैं ॥४॥ श्री भगवान् ने कहा——हे गरुड़ ! तुमने मनुष्यों के उपकार के लिए बहुत अच्छा प्रश्न किया। अब तुम सावधान चित्त हो कर सुनो, मैं तुमसे सब कहता हूँ ॥५॥ पहले मैंने पुत्रहीन पापियों की दुर्गति कही है——हे खगेश्वर ! पुत्रवाले धर्मात्माओं की कभी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जीवन का व्यर्थ नाश करता है, इससे अधिक पापी कौन है ? ॥३९॥ पशु आदि सौ जातियों में अत्यन्त दुर्लभ मनुष्यत्व है, उसमें भी द्विजत्व अति दुर्लभ है। हे गरुड़! उसको पाकर जो आत्मज्ञान से उसकी रक्षा नहीं करते हैं, किन्तु इन्द्रियों का ही पालन किया करते हैं, उनके हाथ में प्राप्त अमृत के समान तारुण्य प्रमादवश नष्ट हो जाता है ॥४०॥ उसके पश्चात् जीव वृद्धता को प्राप्त होता है और महाव्याधि से व्याकुल हो मृत्यु पाता है तथा पहले

यस्तन्न पालयति लालयतीन्द्रियाणि तस्यामृतं क्षरति हस्तगतं प्रमादात् ॥४०॥ ततस्तां वृद्धतां प्राप्य महाव्याधिसमाकुलः ॥ मृत्युं प्राप्य महद्दुःखं नरकं याति पूर्ववत् ॥४१॥ एवं गतागतैः कर्मपाशैर्बद्धाश्च पापिनः ॥ कदापि न विरज्यन्ते मम मायाविमोहिताः ॥४२॥ इति ते कथिता तार्क्ष्यपापिनां नारकीगतिः॥अन्त्येष्टिकर्महीनानांकिंभूयःश्रोतुमिच्छसि ॥४३॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे पापजन्मादिदुःखनिरूणं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

की भाँति नरक में जाता है ॥४१॥ इस प्रकार भुक्त-भोग्य कर्मफाँसों में बँधा हुआ पापी मेरी माया स मोहित हो कभी वैराग्य को नहीं प्राप्त होता है ॥४२॥ हे गरुड़! इस प्रकार मैंने तुमसे पापी और अन्त्येष्टि कर्म से रहित पुरुषों के नारकीय जीवन का वर्णन किया। अब तुम क्या सुनना चाहते हो ॥ ४३ ॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां पापजन्मादिदुःखनिरूपणं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

= पुण्य तीर्थं कृतं येन तपः [illegible] सुदुष्करम् । तस्य पुत्रो भवेद्वश्यः समृद्धो धार्मिकः सुधीः ॥ श्री गालिय; सुचालितः पिता

१- एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना । वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा ॥ सुपुत्र

एतान [illegible] शुश्रूषा कार्या पितरि [illegible] नाहमेतत्तु मन्येत [illegible] ॥ भा० ३।२६।५६

दुर्गति नहीं होती है ॥६॥ यदि किसी कर्म के विरोध से पुत्र की उत्पत्ति न हो तो बुद्धिमान् मनुष्य किसी उपाय से पुत्र उत्पन्न होने के लिए यत्न साधन करे ॥७॥ पुत्र के उत्पन्न होने का उपाय कहते हैं। भक्तिपूर्वक शतचण्डी के विधान से हरिवंश-पुराण की कथा को सुने और भक्ति-भावना से शिव की आराधना द्वारा अच्छी बुद्धिवाला मनुष्य

दुर्गतिः कथिता पूर्वमपुत्राणां च पापिनाम् ॥ पुत्रिणां धार्मिकाणां तु न कदाचित्खगेश्वर ॥ ६ ॥ पुत्रजन्मनिरोधः स्याद्यदि केनापि कर्मणा ॥ तदा कश्चिदुपायेन पुत्रोत्पत्तिं प्रसाधयेत् ॥ ७ ॥ हरिवंशकथां श्रुत्वा शतचंडीविधानतः ॥ भक्त्या श्रीशिवमाराध्य पुत्रमुत्पादयेत्सुधीः ॥ ८ ॥ पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात्पितरं त्रायते सुतः ॥ तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयम्भुवा ॥ ९ ॥ एकोऽपि पुत्रो[२] धर्मात्मा सर्वं तारयते कुलम् ॥ पुत्रेण लोकाञ्जयति श्रुतिरेषा सनातनी ॥ १० ॥ इति वेदैरपि प्रोक्तं पुत्रमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा मुच्यते पैतृकादृणात् ॥११॥ पौत्रस्य स्पर्शनान्मर्त्यो मुच्यते च ऋण-

पुत्र उत्पन्न करे ॥८॥ पुत्र पुन्नामक नरक से पिता को बचाता है। इसलिये ब्रह्मा ने आप ही इसे पुत्र कहा है ॥ ९ ॥ एक भी धर्मात्मा पुत्र सब कुल को तार देता है और पुत्र सकल लोकों को जीत लेता है, यह सनातनी पद्धति है ॥१०॥ इस उत्तम पुत्र का माहात्म्य वेदों में कहा हुआ है, इसलिए पुत्र का मुख देखकर पिता पितृ-ऋण से मुक्त

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हो जाता है ।।११।। पौत्र के स्पर्श करने से मनुष्य तीन प्रकार के ऋण से छूट जाता है और यमलोक आदि लोकों को उल्लंघन कर जाता है और पुत्र-पौत्र से स्वर्ग की प्राप्ति होती है ।।१२।। ब्राह्म विवाह से ब्याही गई जो पत्नी है उससे उत्पन्न पुत्र ब्राह्मोढा पुत्र होता है। वह पुत्र ऊर्ध्वलोक (स्वर्गलोक आदि) में पहुँचाता है और संगृहीत अर्थात् बिना विवाहिता स्त्री से उत्पन्न पुत्र अधोगति (नरक) में पहुँचाता है। इस तथ्य को जानकर मनुष्य हीन जाति की

त्रयात् ॥ लोकानत्येद्दिवः प्राप्तिः पुत्रपौत्रप्रपौत्रकैः ॥ १२ ॥ ब्राह्मोढापुत्रोन्नयति संगृहीतस्त्वधो नयेत् ॥ एवं ज्ञात्वा खगश्रेष्ठ हीनजातिसुतां त्यजेत् ॥ १३ ॥ सवर्णेभ्यः सवर्णासु ये पुत्रा औरसाः खग ॥ ते एव श्राद्धदानेन पितॄणां स्वर्गहेतवः ॥१४॥ श्राद्धेन पुत्रदत्तेन स्वर्यातीति किमुच्यते ॥ प्रेतोऽपि परदत्तेन गतः स्वर्गमथ शृणु ॥ १५ ॥ अत्रैवोदाहरिष्येऽहमितिहासं पुरातनम् ॥ और्ध्वदेहिकदानस्य परं माहात्म्यसूचकम् ॥ १६ ॥ पुरा त्रेतायुगे

कन्या से विवाह का त्याग करे ।।१३।। हे गरुड़! सवर्ण स्त्रियों में सवर्ण पतियों से जो सवर्ण औरस पुत्र उत्पन्न होते हैं, वे ही श्राद्ध-दान से पितरों को स्वर्ग को पहुँचाते हैं ।। १४ ।। पुत्र द्वारा प्राप्त श्राद्ध से मनुष्य स्वर्ग जाता है, यही नहीं अपितु प्रेत भी पराये के दिये श्राद्ध से स्वर्ग को गया है, उसे सुनो ।।१५।। इसी बात के दृष्टान्त के लिये मैं पारलौकिक दान के उत्तम माहात्म्य का सूचक एक प्राचीन इतिहास कहता हूँ ।।१६।। हे गरुड़ ! पहले त्रेतायुग में

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

सुन्दर महोदयपुर में महाबलवान् और धर्म में निष्ठावान् बभ्रु वाहन नामक राजा हुआ ।।१७।। विधिवत् यज्ञ-कर्ता, दान देनेवाला, लक्ष्मीवान्, ब्राह्मणों का भक्त, साधु का प्यारा और चरित्र, आचार तथा गुणों से युक्त और दया तथा दाक्षिण्य से युक्त ।। १८ ।। धर्मसे अपने औरस पुत्र के समान प्रजा का पालन करता था और दण्ड देने योग्य अप-

तार्थ्यं राजाऽऽसीद्बभ्रुवाहनः ।। महोदये पुरे रम्ये धर्मनिष्ठो महाबलः ।। १७ ।। यज्वा दानपतिः श्रीमान्ब्रह्मण्यः साधुवत्सलः ।। शीलाचारगुणोपेतो दयादाक्षिण्यसंयुतः ।। १८ ।। पालयामास धर्मेण प्रजाः पुत्रानिवौरसान् ।। क्षत्रधर्मरतो नित्यं स दण्ड्यान् दण्डयन्नृपः ।।१९।। स कदाचिन्महाबाहुः ससैन्यो मृगयां गतः ।। वनं विवेश गहनं नानावृक्षसमन्वितम् ।।२०।। नानामृगगणाकीर्णं नानपक्षिनिनादितम् ।। वनमध्ये तदा राजा मृगं दूरादपश्यत ।।२१।। तेन विद्धो मृगोऽतीव बाणेन सुदृढेन च ।। बाणमादाय तं तस्य

राधियों को दण्ड देता हुआ वह राजा नित्य ही क्षत्रियों के धर्म में तत्पर रहता था ।।१९।। किसी समय महाबलवान् वह राजा सेनासहित शिकार के लिए गया और नाना प्रकार के वृक्षों से युक्त घने वन में प्रवेश किया ।।२०।। वह वन नाना प्रकार के मृगों से भरा हुआ था। उसमें नाना प्रकार के पक्षी कलरव कर रहे थे । राजा ने वन में दूर से एक मृग देखा ।।२१।। ततः राजा ने अति तीक्ष्ण और अति पुष्ट बाण से उस मृग को बेधा और वह मृग राजा के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बाण को लेकर अदृश्य हो गया ॥२२॥ रुधिर से गीले स्थल को देखते हुए उस राजा ने उस हिरण का पीछा किया और उसी प्रसङ्ग से दूसरे वन में प्रवेश किया ॥२३॥ भूख-प्यास से सूखे कण्ठवाले और श्रम के संताप से अर्द्ध-मूच्छित राजा ने जलाशय पर पहुँचकर घोड़े समेत ही स्नान किया ॥२४॥ कमल आदि के गन्ध से सुगन्धित

वनेऽदर्शनमेयिवान् ॥२२॥ क्ष्मेण रुधिरार्द्रेण स राजानुजगाम तम् ॥ ततो मृगप्रसङ्गेन वनमन्यद्विवेश सः ॥२३॥ क्षुत्क्षामकण्ठो नृपतिः श्रमसन्तापमूर्च्छितः ॥ जलाशयं समासाद्य साश्व एव व्यगाहत ॥२४॥ पपौ तदुदकं शीतं पद्मगन्धादिवासितम् ॥ ततोऽवतीर्य सलिलाद्विश्रमो बभ्रुवाहनः ॥२५॥ ददर्शाग्रे च न्यग्रोधं तच्छायं सुमनोहरम् ॥ महाविटप-विस्तीर्णं पक्षिसङ्घनिनादितम् ॥ २६ ॥ वनस्य तस्य सर्वस्य महाकेतुमिव स्थितम् ॥ मूलं तस्य समासाद्य निषसाद महीपतिः ॥२७॥ अथ प्रेतं ददर्शासौ क्षुत्तृड्भ्यां व्याकुलेन्द्रियम् ॥

शीतल जल पिया, बाद में उस बभ्रुवाहन राजा ने जल से बाहर निकलकर विश्राम किया ॥२५॥ सामने शीतल छायावाले बड़ी-बड़ी शाखाओं से अति विस्तृत और नाना प्रकार के पक्षियों के समूहों से गुञ्जित मनोहर वट-वृक्ष को देखा था ॥२६॥ सबसे अधिक ऊँचा होने के कारण वह वट-वृक्ष उस जङ्गल की बड़ी भारी पताका के समान प्रतीत होता था। उसी के मूल के समीप पहुँचकर राजा अर्द्धनिद्रित हो गया ॥२७॥ उस राजा ने क्षुधा-तृषा से पीड़ित,

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

= न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः।
ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः।।

व्याकुल इन्द्रियोंवाले, बिखरे बालोंवाले और मैले-कुचैले, अत्यन्त भयानक, कुबड़े, लम्बे और दुर्बल एक प्रेत को देखा ।।२८।। विकृत और घोर (प्रेत) राक्षस को देखकर बभ्रुवाहन बहुत विस्मित हुआ और प्रेत भी उस घोर वन में आये हुए उस राजा को देखकर चकित हुआ।।२९।।वह प्रेत भी उत्कण्ठित मन से राजा के समीप आया और हे गरुड़ ! प्रेत-

उत्कचं मलिनं कुब्जं निर्मांसं भीमदर्शनम् ।। २८ ।। तं दृष्ट्वा विकृतं घोरं विस्मितो बभ्रुवाहनः ।। प्रेतोऽपि दृष्ट्वा तं घोरमटवीमागतं नृपम् ।। २९ ।। समुत्सुकमना भूत्वा तस्यान्तिकमुपागतः ।। अब्रवीत्स तदा तार्क्ष्य प्रेतराजो नृपं वचः ।।३०।। प्रेतभावो मया त्यक्तः प्राप्तोऽस्मि परमां गतिम् ।। त्वत्संयोगान्महाबाहो जातो धन्यतरोऽस्म्यहम् ।।३१।। राजोवाच।।कृष्णवर्णं करालास्य प्रेतत्वं घोरदर्शनम् ।। कर्मविपाकेन प्राप्तं त्वं रूपं बह्वमंगलम् ।।३२।। प्रेतत्वकारणं तात ब्रूहि सर्वमशेषतः ।। कोऽसि त्वं केन दानेन प्रेतत्वं ते विनश्यति ।।३३।।

राज उस समय राजा से बोला कि ।।३०।। हे राजन् ! आपके दर्शनरूपी मिलन से मैंने प्रेत-भाव छोड़ा और परम गति को प्राप्त हुआ। हे महाबाहो ! आपके संयोग से आज अति धन्य हुआ हूँ ।।३१।। राजा ने कहा—हे प्रेत ! यह कृष्णवर्ण, बड़ा भयानक मुख और घोर दर्शन, ऐसा बड़ा अमङ्गल प्रेतत्व तुमने किस कर्म के परिणाम से पाया है ? ।।३२।। हे तात ! तुम मुझसे इस प्रेतत्व का सब कारण कहो। तुम कौन हो ? किस दान से तुम्हारा प्रेतत्व दूर होगा ? ।।३३।।

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

प्रेत ने जवाब दिया कि हे राजश्रेष्ठ ! मैं तुमसे आदि से अन्त तक सब कहता हूँ और मेरे प्रेतत्व का कारण सुनकर तुम मुझपर दया करने योग्य हो ॥३४॥ सब सम्पत्तियों से पूर्ण वैदिश नाम का एक नगर है जो अनेक प्रकार के जनपदों तथा रत्नों से परिपूर्ण है ॥३५॥ भवनों और प्रासादों की शोभा से संयुक्त है और नाना प्रकार के श्रौत,

प्रेत उवाच ॥ कथयामि नृपश्रेष्ठ सर्वमेवादितस्तव ॥ प्रेतत्वकारणं श्रुत्वा दयां कर्तुं त्वमर्हसि ॥ ३४ ॥ वैदिशं नाम नगरं सर्वसम्पत्समन्वितम् ॥ नानाजनपदाकीर्णं नानारत्नसमाकुलम् ॥ ३५ ॥ हर्म्यप्रासादशोभाढ्यं नानाधर्मसमन्वितम् ॥ तत्राहमवसं तात देवार्चनरतः सदा ॥ ३६ ॥ वैश्यो जात्या सुदेवोऽहं नाम्ना विदितमस्तु ते ॥ हव्येन तर्पिता देवाः कव्येन पितरस्तथा ॥ ३७ ॥ विविधैर्दानयोगैश्च विप्राः सन्तर्पिता मया ॥ दीनान्धपङ्गवेभ्यश्चदत्तमन्नमनेकधा ॥ ३८ ॥ तत्सर्वं निष्फलं राजन्मम दैवादुपागतम् ॥ यथा मे

स्मार्त्त आदि धर्म से युक्त है । हे तात ! उस पुर में देवताओं का पूजन करता हुआ मैं निवास करता था ॥३६॥ मैं वैश्य जाति का हूँ, मेरा नाम सुदेव है, यह आप जानें। हविष्यान्न से देवताओं को और कव्यान्न (पिण्डदान) से पितरों को सन्तुष्ट करता था ॥३७॥ नाना प्रकार के और दानों से मैंने ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया और दीन, अन्धे तथा पंगु मनुष्यों को मैंने अनेक प्रकार से अन्न दिया ॥३८॥ हे राजन् ! वह सब मेरा सुकर्म दैवयोग से निष्फल हो

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गया। जिस प्रकार मेरा सुकृत निष्फल हो गया उसे मैं कहता हूँ ।।३९।। मुझे सन्तति, मित्र, बान्धव आदि ऐसा कोई नहीं हैं जो मेरी और्ध्वदेहिक क्रिया करे ।।४०।। हे महाराज! जिसका षोडशमासिक श्राद्ध नहीं होता है, सैकड़ों श्राद्ध करने पर भी उसका प्रेतत्व नहीं जाता है ।।४१।। हे महीपते! तुम और्ध्वदेहिक क्रिया करके मेरा उद्धार

निष्फलं जातं सुकृतं तद्वदामि ते ॥ ३९ ॥ मम वै सन्ततिर्नास्ति न सुहृन्न च बान्धवः ॥ न च मित्रं हि मे तादृग्यः कुर्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ४० ॥ यस्य न स्यान्महाराज श्राद्धं मासिकषोडशम् ॥ प्रेतत्वं सुस्थिरं तस्य दत्तैः श्राद्धशतैरपि ॥ ४१ ॥ त्वमौर्ध्वदेहिकं कृत्वा मामुद्धर महीपते ॥ वर्णानां चैव सर्वेषां राजा बन्धुरिहोच्यते ॥४२॥ तन्मां तारय राजेन्द्र मणिरत्नं ददामि ते ॥ यथा मे सद्गतिर्भूयात्प्रेतयोनिश्च गच्छति ॥४३॥ तथा कार्यं त्वया वीर मम चेदिच्छसि प्रियम् ॥ क्षुधातृषादिभिर्दुःखैः प्रेतत्वं दुःसहं मम ॥४४॥

करो। राजा इस लोक में सब वर्णों का बन्धु कहा जाता है ।।४२।। इससे हे राजन्! मुझे तारें, मैं आपको मणि-रत्न दूंगा। जिससे मेरी सद्गति हो और प्रेत की योनि छूट जाय ऐसा कार्य करें ।।४३।। हे वीर महाराज! जो मेरा प्रिय करना चाहते हो तो आपको ऐसा करना चाहिये। भूख और प्यास आदि के दुःखों के कारण प्रेतत्व मुझे बहुत ही दुःसह है ।।४४।। इस वन में सुन्दर स्वादिष्ट फल है और शीतल जल है क्षुधा से पीड़ित मैं उन फलों को नहीं पाता हूँ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और प्यासा हुआ भी मैं उस जल को नहीं पी सकता हूँ ॥४५॥ हे राजन् ! यदि मेरी और्ध्वदेहिक क्रिया नारायणविधि से हो और उसके आगे की सब विधियाँ भी वेदमन्त्रों से कराई जायँ ॥४६॥ तो निश्चय मेरा प्रेतत्व नष्ट हो जाय, इसमें सन्देह नहीं है। वेद, मन्त्र, तप, दान तथा सब जीवों पर दया, ॥४७॥ उत्तम शास्त्र को सुनना, विष्णु की

स्वादूदकं फलं चास्ति वनेऽस्मिन् शीतलं शिवम् ॥ न प्राप्नोमि क्षुधार्तोऽहं तृषार्तो न जलं क्वचित् ॥ ४५ ॥ यदि मे हि भवेद्राजन्विधिर्नारायणो महान् ॥ तदग्रे वेदमन्त्रैश्च क्रिया सर्वौर्ध्वदेहिकी ॥ ४६ ॥ तदा नश्यति मे नूनं प्रेतत्वं नात्र संशयः ॥ वेदामन्त्रास्तपो दानं दया सर्वत्र जन्तुषु ॥४७॥ सच्छास्त्र श्रवणं विष्णोः पूजा सज्जनसङ्गतिः ॥ प्रेतयोनिविनाशाय भवन्तीति मया श्रुतम् ॥४८॥ अतो वक्ष्यामि ते विष्णुपूजां प्रेतत्वनाशिनीन् ॥ सुवर्णद्वय-मानीय सुवर्णं न्यायसञ्चितम् ॥ तस्य नारायणस्यैकां प्रतिमामुपकल्पयेत् ॥४९॥ पीतवस्त्रयुग-

पूजा, सज्जनों की सङ्गति, ये सब बातें प्रेतयोनि के नाश के लिये होती हैं यह मैंने सुना है ॥४८॥ इसमें प्रेतत्व को नाश करनेवाली विष्णु की पूजा को तुमसे कहता हूँ। न्याय से एकत्र किये हुये स्वर्ण (३२ मासे सुवर्ण) लेकर हे राजन् ! उसकी एक नारायण की प्रतिमा बनावे ॥४९॥ उस प्रतिमा को दो पीले कपड़ों से आच्छादित और सब आभरणों

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से सुशोभित करे और अनेक प्रकार (सप्ततीर्थ) के जलों से स्नान कराकर सिंहासन पर स्थापित करके पूजन करे ।।५०।। उस सुवर्णमयी प्रतिमा के पूर्वभाग में श्रीधर, दक्षिण में मधुसूदन, पश्चिम में वामनदेव और उत्तर में गदाधरको।।५१।। और मध्य में ब्रह्मा तथा महेश्वर देव को स्थापित कर, गन्ध पुष्प आदि से विधिपूर्वक पृथक्-पृथक् पूजन करे ।।५२।।

च्छन्नां सर्वाभरणभूषिताम् ।। स्नापितां विविधैस्तोयैरधिवास्य यजेत्ततः ।।५०।। पूर्वे तु श्रीधरं तस्या दक्षिणे मधुसूदनम् ।। पश्चिमे वामनं देवमुत्तरे च गदाधरम् ।।५१।। मध्ये पितामहं चैव तथा देवं महेश्वरम् ।। पूजयेच्च विधानेन गन्धपुष्पादिभिः पृथक् ।।५२।। ततः प्रदक्षिणीकृत्य वह्नौ सन्तर्प्य देवताः ।। घृतेन दध्ना क्षीरेण विश्वेदेवांश्च तर्पयेत् ।। ५३ ।। ततः स्नातो विनीतात्मा यजमानः समाहितः ।। नारायणाग्रे विधिवत्स्वां क्रियामौर्ध्वदेहिकीम् ।।५४।। आरभेत यथाशास्त्रं क्रोधलोभविवर्जितः ।। कुर्याच्छ्राद्धानि सर्वाणि वृषस्योत्सर्जनं तथा ।।५५।। ततः पदानि विप्रेभ्यो दद्याच्चैव त्रयोदश ।। शय्यादानं प्रदत्त्वा च

ततः प्रदक्षिणा करके अग्नि में देवताओं को तृप्त करके घी, दही और दूध से विश्वेदेवको तृप्त करे ।।५३।। अनन्तर स्नान कर नारायण के आगे विधिपूर्वक और्ध्वदेहिक क्रिया करे ।।५४।। क्रोध तथा लोभ से रहित होकर शास्त्र की रीति से सब श्राद्ध और वृषोत्सर्ग करे ।।५५।। उसके पीछे ब्राह्मणों के लिए तेरह पद-दान करे और शय्यादान देकर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रेत के लिये घट का दान करे ॥५६॥ राजाने पूछा—हे प्रेत ! प्रेतघट कैसे दान करे और किस विधि से उसका दान होगा ? यह सब तुम सब जीवों पर दया करके प्रेतको मुक्ति देनेवाले घटदान की विधि कहो ॥५७॥ प्रेत बोला—महाराज! तुमने अच्छा प्रश्न किया । मैं कहता हूँ, आप मन लगाकर सुनिये । जिस सुदृढ़ दान से प्रेतत्व नहीं

घटं प्रेतस्य निर्वपेत् ॥५६॥ राजोवाच ॥ कथं प्रेतघटं कुर्याद्द्यात्केन विधानतः ॥ ब्रूहि सर्वानुकम्पार्थं घटं प्रेतविमुक्तिदम् ॥५७॥ प्रेत उवाच ॥ साधु पृष्टं महाराज कथयामि निबोध ते ॥ प्रेतत्वं न भवेद्येन दानेन सुदृढेन च ॥५८॥ दानं प्रेतघटं नाम सर्वाशुभ-विनाशनम् ॥ दुर्लभं सर्वलोकानां दुर्गतिक्षयकारकम् ॥ ५९ ॥ संतप्तहाटकमयं तु घटं विधाय ब्रह्मेशकेशवयुतं सह लोकपालैः ॥ क्षीराज्यपूर्णविवरं प्रणिपत्य भक्त्या विप्राय देहि तव दानशतैः किमन्यैः ॥६०॥ ब्रह्मा मध्ये तथा विष्णुः शङ्करः शङ्करोऽव्ययः ॥ प्राच्या-

होता ॥५८॥ यह प्रेतघट नामक दान सब अशुभों को नाश करनेवाला है, अगतियोंको क्षय करनेवाला है, यह भी लोकों में दुर्लभ है । ॥५९॥ तपाये हुए सोनेका घट बनाकर ब्रह्मा, ईश, केशव और लोकपालों (इन्द्र, यम, वरुण कुबेर आदि) को आवाहन कर इस घड़े में संयुक्त करे। फिर उसमें दूध और घी भरकर भक्ति और नम्रतासे ब्राह्मण को दान कर दे । इस घटके दान देनेपर अतिरिक्त और सैकड़ों दानोंकी कोई आवश्यकता नहीं ॥६०॥ उस घटके

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मध्य में ब्रह्मा तथा विष्णु और अविनाशी शङ्कर का आवाहन तथा पूजन करे, पूर्व आदि दिशाओं में और घट के कण्ठ में क्रम से लोकपालों का पूजन करे ॥६१॥ हे राजन् ! धूप, फूल और चन्दनसे विधिपूर्वक पूजन करके दूध और घी समेत उस सोने क घट को दान करना चाहिये ॥६२॥ महापातकों को नाश करनेवाले यह सब दानों से

दिषु च तत्कण्ठे लोकपालान्क्रमेण तु ॥६१॥ सम्पूज्य विधिवद्राजन्धूपैः कुसुमचन्दनैः ॥
ततो दुग्धाज्यसहितं घटं देयं हिरण्मयम् ॥६२॥ सर्वदानाधिकं चैतन्महापातकनाशनम् ॥
कर्तव्यं श्रद्धया राजन् प्रेतत्वविनिवृत्तये ॥६३॥ श्रीभगवानुवाच ॥ एवं संजल्पतस्तस्य
प्रेतेन सह काश्यप ॥ सेनाऽऽजगामानुपदं हस्त्यश्वरथसंकुला ॥६४॥ ततो बले समायाता
दत्वा राज्ञे महामणिम् ॥ नमस्कृत्य पुनः प्रार्थ्य प्रेतोऽदर्शनमेयिवान् ॥६५॥ तस्माद्वना-
द्विनिष्क्रम्य राजापि स्वपुरं ययौ ॥ स्वपुरं च समासाद्य तत्सर्वं प्रेतभाषितम् ॥६६॥ चकार

श्रेष्ठ दान है। इसलिए हे राजन् ! प्रेतत्व दूर करने के लिए मनुष्यों को यह दान अवश्य करना चाहिये ॥६३॥ श्रीभगवान् ने कहा—हे काश्यप ! इस प्रेत के साथ जब राजा बात कर रहा था, उसी समय हाथी, घोड़ों तथा रथों से भरी हुई उस राजा की सेना भी राजा को ढूंढ़ती हुई आ गई ॥६४॥ सेना के आ जाने पर राजा को महामणि देकर और नमस्कार कर पुनः प्रार्थना कर प्रेत अन्तर्धान हो गया ॥६५॥ फिर उस वन से निकलकर राजा भी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अपने नगर को आया और अपने पुर में पहुँच उसने प्रेत के कथनानुसार कहा ।।६६।। हे गरुड़ ! और्ध्वदेहिक विधिसे उस प्रेत के लिये सभी श्राद्ध किया । उसके पुण्य देने से प्रेतयोनि से छूटकर वह स्वर्गलोक को गया ।।६७।। दूसरे के दिये दान और श्राद्ध से प्रेत भी उत्तम गति को प्राप्त हुआ । अतः यदि पुत्रों से दिये गये श्राद्ध से पिता सद्गति

विधिवत्पद्दिन्नौर्ध्वदेहिकजं विधिम् ।। तस्य पुण्यप्रदानेन प्रेतो मुक्तो दिवं ययौ ।।६७।। श्राद्धेन परदत्तेन गतः प्रेतोऽपि सद्गतिम् ।। किं पुनः पुत्रदत्तेन पिता यातीति चाद्भुतम् ।।६८।। इतिहासमिमं पुण्यं शृणोति श्रावयेच्च यः ।। न तौ प्रेतत्वमायातः पापाचारयुतावपि ।। ६९ ।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे बभ्रुवाहनप्रेतसंसकारो नाम सप्तमोऽध्यायः ।। ७ ।।

को प्राप्त होता है, तो इसमें क्या आश्चर्य है ।। ६८।। इस पवित्र इतिहास को जो सुनेगा और कहेगा वे दोनों पापी होने पर भी प्रेतयोनि को प्राप्त नहीं होंगे ।।६९।।

इति श्रीगरुडपुराणे भाषाटीकायां बभ्रुवाहनप्रेतसंस्कारो नाम सप्तमोध्यायः ।।७।।

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

= अस्थिरं जीवितं लोके अस्थिरं धनयौवनं, अस्थिराः पुत्र दाराश्च धर्मः कीर्तिः द्वयं स्थिरम्
दारा पुत्राः; धनं०

गरुड़जी ने कहा—हे प्रभो! पुण्यात्माओं की सब पारलौकिक क्रिया कहिये और वे क्रियायें पुत्र किस प्रकार करें उसे भी कहिये ॥ १ ॥ श्रीभगवान् ने कहा—हे गरुड़! मनुष्यों के लिये तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया। धार्मिकों के योग्य जो क्रियायें हैं वे सब मैं तुमसे कहता हूँ ॥ २ ॥ पुण्यात्मा मनुष्य बुढ़ापे में व्याधियों से

गरुड उवाच ॥ आमुष्मिकीं क्रियां सर्वां वद सुकृतिनां मम ॥ कर्तव्या सा यथा पुत्रैस्तथा च कथय प्रभो ॥१॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधु पृष्टं त्वया तार्क्ष्य मानुषाणां हिताय वै ॥ धार्मिकार्हं च यत्कृत्यं तत्सर्वं कथयामि ते ॥२॥ सुकृती वार्धके दृष्ट्वा शरीरं व्याधिसंयुतम् ॥ प्रतिकूलान्ग्रहांश्चैव प्राणघोषस्य चाश्रुतिम् ॥३॥ तदा स्वमरणं ज्ञात्वा निर्भयः स्यादतन्द्रितः ॥ अज्ञातज्ञातपापानां प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥४॥ यदा स्यादातुरः कालस्तदा स्नानं समारभेत् ॥ पूजनं कारयेद्विष्णोः शालग्रामस्वरूपिणः ॥५॥ अर्चयेद्गन्धपुष्पैश्च

युक्त अपने शरीर को प्रतिकूल ग्रहों के कारण कानों को बन्द करने पर सन्‌सन् शब्द न सुनाई दे ॥३॥ तब अपनी मृत्यु समीप समझकर आलस्य छोड़कर जान या अनजान में किये पापों का प्रायश्चित्त करे ॥४॥ जब अन्त-समय आ जाय तब स्नान करके शालिग्राम रूप विष्णु भगवान् का पूजन करे ॥५॥ गन्ध, फूल, कुंकुम, तुलसी, धूप, दीप, नैवेद्य अनेक प्रकार की मिठाई आदि से उनकी पूजा करे ॥६॥ ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उस नैवेद्य को

१- हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः । अनिच्छयापि संस्पृष्टो दहत्येव हि पावकः ।
हरेर्नाम ३ एव केवलं कलौ०

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

भोजन करावे और अष्टाक्षर (ॐ विष्णवे नमः) तथा द्वादशाक्षर (ॐनमो भगवते वासुदेवाय) मन्त्रों का जप करे ॥ ७ ॥ विष्णु और शङ्करजी को स्मरण करे और सुने । विष्णु के नाम सुनने से पाप छूट जाता है ॥८॥ रोगियों के पास जाकर वन्धुओंको सोच नहीं करना चाहिए बल्कि हमारा (विष्णु का) नाम बारम्बार स्मरण करना

कुङ्कुमैस्तुलसीदलैः ॥ धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्बहुभिर्मोदकादिभिः ॥६॥ दत्त्वा च दक्षिणां विप्रान्नैवेद्यादेव भोजयेत् ॥ अष्टाक्षरं जपेन्मंत्र द्वादशाक्षरमेव च ॥ ७ ॥ संस्मरेच्छृणुयाच्चैव विष्णोर्नाम शिवस्य च ॥ [१]हरेर्नाम हरेत्पापं नृणां श्रवणगोचरम् ॥ ८ ॥ रोगिणोऽन्तिकमासाद्य शोचनीयं न बान्धवैः ॥ स्मरणीयं पवित्रं मे नामधेयं मुहुर्मुहुः ॥ ९ ॥ मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नारसिंहश्च वामनः ॥ रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की तथैव च ॥ १० ॥ एतानि दश नामानि स्मर्तव्यानि सदा बुधैः ॥ समीपे रोगिणो ब्रूयुर्बान्धवास्ते प्रकीर्तिताः ॥ ११ ॥ कृष्णेति मङ्गलं नाम यस्य वाचि प्रवर्तते ॥ तस्य भस्मीभवन्त्याशु महापातक-

चाहिये ॥९॥ मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र, कृष्ण, बुद्ध और कल्की ॥ १०॥ इन दस नामों का बुद्धिमान् को स्मरण करना चाहिय । रोगी का बन्धु परिवार पूर्वोक्त दस नामों को कहे ॥११॥'कृष्ण' यह मङ्गल नाम जिनके मुख से निकलता है उसके करोड़ों महापाप शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं ॥ १२ ॥ नारायण नामक

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

पापानलस्य दीप्तस्य मा कुर्वन्तु भयं नराः। गोविन्द नाम मेघौघैर्नश्यते नीरबिन्दुभिः।
२- नो दीक्षां न च सत्क्रियां न च पुरश्चर्यां मनागीक्षते, मन्त्रोऽयं रसनास्पृगेव फलति श्रीकृष्णनामात्मकः

अपने पुत्र को पुकारते हुए मृत्यु के समय अजामिल ने भी मोक्षपद पाया था, तो फिर श्रद्धा से विष्णु के नाम को उच्चारण करने पर बात ही क्या है, अर्थात् वह अवश्य ही मोक्षपद पाता है ॥१३॥ दुष्ट स्वभाव वालों को स्मरण करने पर श्रीविष्णु भगवान् पापों का नाश करते हैं। जिस प्रकार अग्नि बिना इच्छा से स्पर्श करने पर भी जलाती

कोटयः ॥ १२ ॥ म्रियमाणो हरेर्नाम गृणन्पुत्रोपचारितम् ॥ अजामिलोऽप्यगाद्धाम किं पुनः श्रद्धया गृणन् ॥ १३ ॥ हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः ॥ अनिच्छयापि संस्पृष्टो दहत्येव हि पावकः ॥१४॥ २हरेर्नाम्नश्च या शक्तिः पापनिर्हरणे द्विज ॥ तावत्कर्तुं समर्थो न पातकं पातकी जनः ॥१५॥ किंकरेभ्यो यमः प्राहानयध्वं नास्तिकं जनम् ॥ नैवानयत भो दूता हरिनामस्मरं नरम् ॥ १६ ॥ अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ॥ श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजेत् ॥१७॥ कमलनयन

ही है ॥१४॥ हे गरुड़ ! पाप को नाश करने में विष्णु भगवान् के नाम की जितनी शक्ति है पापी मनुष्यों की शक्ति पाप करने में उतनी नहीं हो सकती है ॥१५॥ यमराज अपने दूतों से कहते हैं कि तुम लोग नास्तिकों को ले आओ, हरि के नाम स्मरण करनेवालों को मत लाना ॥१६॥ अच्युत, केशव, रामचंद्र, नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, हरि, श्रीधर, माधव, गोपिकावल्लभ, जानकीनायक, श्रीरामचन्द्र आदि नाम भजन करना चाहिये ॥१७॥ हे कमलनयन!

यद् गोविन्देति चुक्रोश कृष्णा मां द्वारकावासिनं, ऋणमेतत्प्रवृद्धं मे हृदयान्नापसर्पति

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हे वासुदेव ! हे विष्णो ! हे धरणिधर ! हे शङ्ख और चक्रको हाथ में धारण करनेवाले ! आपकी शरण हूँ, ऐसा जो कहते हैं, उन पापहीन प्राणियों को दूर से ही छोड़ देना ॥१८॥ अकिञ्चन और भक्तिरस को जाननेवाले परमहंस-कुल से सर्वदा सेवित श्रीविष्णु भगवान् के चरणकमल-रूपी पराग-रस से जो निरन्तर विमुख रहनेवाले और

वासुदेव विष्णो धरणीधराच्युत शङ्खचक्रपाणे ॥ भव शरणमितीरयन्ति ये वै त्यज भट दूरतरेण तानपापान् ॥ १८ ॥ तानानयध्वमसतो विमुखान्मुकुन्दपादारविन्दमकरन्दरसादजस्रम् ॥ निष्किञ्चनैः परमहंसकुलै रसज्ञैर्जुष्टाद्गृहे निरयवर्त्मनि बद्धतृष्णान् ॥ १९ ॥ जिह्वा न वक्ति भगवद्गुणनामधेयं चेतश्च न स्मरति तच्चरणारविन्दम् ॥ कृष्णाय नो नमति यच्छिर एकदापि तानानयध्वमसतोऽकृतविष्णुकृत्यान् ॥ २० ॥ तस्मात्संकीर्तनं विष्णोर्जगन्मङ्गलमंहसाम् ॥ महतामपि पक्षीन्द्र विद्ध्यैकान्तिकनिष्कृतिम् ॥२१॥ प्रायश्चित्तानि

नरक के रास्ते में तृष्णा रखनेवाले हैं उन दुष्टों को तुम लोग लाओ ॥ १९ ॥ जिनकी जिह्वा भगवान् के नाम का उच्चारण नहीं करती है, जिनका चित्त भगवान्के चरणारविन्दको स्मरण नहीं करता है, और जिनका सिर श्रीकृष्णजी के लिये एक बार भी नमस्कार नहीं करता है, विष्णु के पूजनादि कृत्यों से विमुख उन दुष्टों को लाओ ॥२०॥ इस कारण हे गरुड़ ! विष्णु के नाम को संसारका मङ्गल करनेवाला और बड़े महान् पापोंका भी प्रायश्चित जानो ॥२१॥

= सततं कीर्तयन्तो मां दे०

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

यदि नामास्य देहस्थयदन्तस्ततो बहिर्भवेत्, दृष्ट्वा यायथाहि जनः शुनः काकोच्छिष्ट गायेत

पापों के प्रायश्चित्त भी नारायण से विमुख दुर्बुद्धिवाले मनुष्य को पवित्र नहीं करते हैं, जैसे नदियाँ मदिरा के घड़े को पवित्र नहीं करतीं ।।२२।। कृष्ण के नाम लेने से पापहीन प्राणी नरक, यमराज और यमदूतों को कभी स्वप्न में भी नहीं देखते हैं ।।२३।। जिस प्रकार प्राणी अन्तकाल में ब्राह्मणों को गोदान करने से मांस, हड्डी और खूनवाली वैतरणी ६

चीर्णानि नारायणपराङ्मुखम् ॥ न निष्पुनन्ति दुर्बुद्धिं सुराकुम्भमिवापगाः ॥ २२ ॥ कृष्णनाम्ना न नरकं पश्यन्ति गतकिल्बिषाः यमं च तद्भटांश्चैव स्वप्नेऽपि न कदाचन ॥ २३ ॥ मांसास्थिरक्तवत्काये वैतरण्यां पतेन्न सः ॥ योऽन्ते दद्याद्द्विजेभ्यश्च नन्दनन्दन गामिति ॥ २४ ॥ अतः स्मरेन्महाविष्णोर्नाम पापौघनाशनम् ॥ गीता सहस्रनामानि पठेद्वा शृणुयादपि ॥ २५ ॥ एकादशीव्रतं गीता गङ्गाम्बु तुलसीदलम् ॥ विष्णोः पादाम्बु नामानि मरणे मुक्तिदानि च ॥ २६ ॥ ततः संकल्पयेदन्नं सघृतं च सकाञ्चनम् ॥ सवत्सा

नदी में नहीं गिरता है, उसी तरह (दाँतों) जिह्वा से नन्दनन्दन (कृष्ण) का नामोच्चारण कर मांस, हड्डी और खून युक्त शरीर में नहीं गिरता है अर्थात् फिर वह शरीर धारण नहीं करता, अपितु मुक्त हो जाता है ।।२४।। इस कारण पाप-समूह को नष्ट करनेवाले विष्णु का नाम स्मरण करना चाहिये अथवा गीता और विष्णु-सहस्रनाम का पाठ करना या सुनना चाहिये ।।२५।। एकादशी का व्रत, गीता, गङ्गाजल, तुलसीदल और विष्णु का चरणोदक तथा नाम

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मरणकाल में मुक्ति देनेवाले हैं ॥२६॥ अतएव घी तथा सुवर्ण के सहित अन्न का सङ्कल्प कर बछड़ा सहित गौ को वेद जाननेवाले ब्राह्मण को देना चाहिये ॥२७॥ हे गरुड़! अन्तकाल में थोड़ा या बहुत जो कुछ दिया जाता है, वह अक्षय फल देनेवाला होता है, यदि उस दान का पुत्र भी अनुमोदन करता है ॥२८॥ सत्पुत्र पिता के अन्तकाल में सब तरह

धेनवो देयाः श्रोत्रियाय द्विजातये ॥ २७॥ अन्ते जनो यद्ददाति स्वल्पं वा यदि वा बहु ॥
तदक्षयं भवेत्तार्क्ष्य यत्पुत्रश्चानुमोदते ॥ २८ ॥ अन्तकाले तु सत्पुत्रः सर्वदानानि दापयेत् ॥
एतदर्थं सुतो लोके प्रार्थ्यते धर्मकोविदैः ॥२९॥ भूमिष्ठं पितरं दृष्ट्वा अर्धोन्मीलितलोचनम् ॥
पुत्रैस्तृष्णा न कर्तव्या तद्धने पूर्वसञ्चिते ॥ ३० ॥ स तद्ददाति सत्पुत्रो यावज्जीवत्यसौ
चिरम् ॥ अतिवाहस्तु तन्मार्गे दुःखं न लभते यतः ॥ ३१ ॥ आतुरे चोपरागे च द्वयं

का दान उससे दिलावे, क्योंकि उसी के लिये धर्म को जाननेवाले लोग पुत्र की कामना करते हैं ॥२९॥ आधे खुले हुए नेत्रवाले और भूमि पर सोए हुए पिता को देखकर पिता के संचित धन में पुत्र को लोभ नहीं करना चाहिये (यथेष्ट दान दिलवाना चाहिये) ॥३०॥ पिता के अन्त समय में पिता द्वारा सत्पुत्र जो दान दिलाते हैं उससे जब तक वह पुत्र जीता है, तब तक परलोकगामी पिता उस मार्ग में उस अन्त समय के दान से दुःख नहीं पाता है ॥३१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मरने के समय और (चन्द्र-सूर्य) ग्रहण के समय ये दो दान सब दानों से विशिष्ट होते हैं, अतएव तिल आदि आठ दान इन दोनों समय में अवश्य कराना चाहिये ॥३२॥ तिल, लोहा, सोना, कपास, नमक, सप्तधान्य, पृथ्वी और गौ—ये प्रत्येक पवित्र दान हैं॥३३॥ महापापों को नाश करनेवाले ये ही अष्ट महादान कहे गये हैं। इसे अन्तकाल में दिलवाना

दानं विशिष्यते ॥ अतोऽवश्यं प्रदातव्यमष्टदानं तिलादिकम् ॥ ३२ ॥ तिला लोहं हिरण्यं च कार्पासो लवणं तथा॥ सप्तधान्यं क्षितिर्गावो ह्येकैकं पावनं स्मृतम् ॥ ३३ ॥ एतदष्ट महादानं महापातकनाशनम् ॥ अन्तकाले प्रदातव्यं शृणु तस्य च सत्फलम् ॥ ३४ ॥ मम स्वेदसमुद्भूताः पवित्रास्त्रिविधास्तिलाः ॥ आसुरा दानवा दैत्यास्तृष्यन्ति तिल-दानतः ॥ ३५ ॥ तिलाः श्वेतास्तथा कृष्णा दानेन कपिलास्तिलाः ॥ संहरन्ति त्रिधा पापं वाङ्मनःकायसञ्चितम् ॥ ३६ ॥ लोहदानं च दातव्यं भूमियुक्तेन पाणिना ॥ यमसीमां

चाहिये। उसका जो सत्फल है उसे सुनो॥३४॥ हमारे पसीने से तीनों प्रकार के तिल पैदा हुए हैं। असुर, दानव और दैत्य तिल के दान से सन्तुष्ट हो जाते हैं ॥३५॥ सफेद, काले और कपिल रङ्ग के तिल दान करने से वाणी, मन तथा शरीर से किये हुए तीन प्रकार के पापों का नाश होता है ॥३६॥ भूमि में हाथ धरकर लोह का दान करना चाहिये।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यह दान करनेवाले मनुष्य यमराज की सीमा में नहीं जाते हैं और न उसके मार्गमें जाते हैं ॥३७॥ पापी मनुष्य के दण्ड देने के लिये यम के हाथ में कुल्हाड़ी, मूसल, दण्ड, खड्ग और छुरी ये हथियार रहते हैं ॥३८॥ यम के आयुधों की प्रसन्नता के लिये यह दान कहा गया है। इसलिये यमलोक में सुख देनेवाले लोह का दान करना चाहिये ॥३९॥

न चाप्नोति न गच्छेत्तस्य वर्त्मनि ॥३७॥ कुठारो मुसलो दण्डः खड्गश्च छुरिका तथा ॥ शस्त्राणि यमहस्ते च निग्रहे पापकर्मणाम् ॥ ३८ ॥ यमायुधानां सन्तुष्ट्यै दानमेतदुदाहृतम् ॥ तस्माद्द्यालोहदानं यमलोके सुखावहम् ॥ ३९ ॥ ऊरणः श्यामसूत्रश्च शुण्डामर्कोऽप्युदुम्बरः ॥ शेषम्बलो महादूता लोहदानात् सुखप्रदाः ॥ ४० ॥ शृणु तार्क्ष्य परं गुह्यं दानानां दानमुत्तमम् ॥ दत्तेन तेन तुष्यन्ति भूर्भुवः स्वर्गवासिनः ॥ ४१ ॥ ब्रह्माद्या ऋषयो देवा धर्मराजसभासदाः ॥ स्वर्णदानेन सन्तुष्टा भवन्ति वरदायकाः ॥४२॥ तस्माद्देयं

ऊरण, श्यामसूत्र, शुण्डामर्क, उदुम्बर, शेषम्बल ये महादूत लोह के दान से सुख देनेवाले होते हैं ॥४०॥ हे गरुड़! बहुत ही गुप्त तथा सब दानों में श्रेष्ठ दान को सुनो। जिस दान के करने से भूलोक, भुवर्लोक और स्वर्गलोक में बसनेवाले सन्तुष्ट होते हैं ॥४१॥ वह दान स्वर्णदान है। ब्रह्मा आदि देवता, ऋषि और इन्द्र आदि देवता और धर्मराज की सभा के सभासद स्वर्णदान से सन्तुष्ट होते हैं और वर के देनेवाले होते हैं ॥४२॥ इस कारण प्रेत के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उद्धार के लिये स्वर्ण का दान देना चाहिये। हे तात! वह दान देनेवाला मनुष्य यमलोक को नहीं जाता है। स्वर्ग की गति को प्राप्त होता है ॥४३॥ फिर बहुत काल तक सत्यलोक में वास करके इस लोक में उत्पन्न होकर रूपवान्, धर्मात्मा, बोलने में चतुर, लक्ष्मीवान् और बड़ा पराक्रमी राजा होता है ॥४४॥ कपास के दानसे दूतों का भय

स्वर्णदानं प्रेतोद्धरणहेतवे ॥ न याति यमलोकं स स्वर्गतिं तात गच्छति ॥ ४३ ॥ चिरं वसेत्सत्यलोके ततो राजा भवेदिह ॥ रूपवान् धार्मिको वाग्मी श्रीमानतुलविक्रमः ॥४४॥ कार्पासस्य तु दानेन दूतेभ्यो न भयं भवेत् ॥ लवणं दीयते यच्च तेन नैव भयं यमात् ॥४५॥ अयोलवणकार्पासतिलकाञ्चनदानतः ॥ चित्रगुप्तादयस्तुष्टा यमस्य पुरवासिनः ॥४६॥ सप्तधान्यप्रदानेन प्रीतो धर्मध्वजो भवेत् ॥ तुष्टा भवन्ति येऽन्येऽपि त्रिषु द्वारेष्वधिष्ठिताः ॥४७॥ व्रीहयो यवगोधूमा मुद्गा माषाः प्रियङ्गवः ॥ चणकाः सप्तमा ज्ञेयाः सप्तधान्यमुदाहृतम् ॥४८॥

उसको नहीं होता है और लवण के दान करने से यम का भय नहीं होता है ॥४५॥ लोहा, नमक, कपास, तिल और स्वर्ण के दान से यमपुर के बसनेवाले चित्रगुप्त आदि सभी सन्तुष्ट होते हैं ॥४६॥ सप्तधान्य के दानसे धर्मध्वज (धर्मराज) प्रसन्न होते हैं और यमपुर के तीन द्वारों में स्थित रहनेवाले भी प्रसन्न होते हैं ॥४७॥ धान १, जौ २, गेहूँ ३, मूँग ४, उड़द ५, कँगुनी ६ और चना ७ ये सात धान्य कहे हैं ॥४८॥ गोचर्ममात्र (बैल के सहित सौ गौ जितनी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भूमि में बैठ सकें उतनी भूमि को गोचर्म कहते हैं) भूमि सत्पात्र को दान देने पर ब्रह्महत्या के पाप से पवित्र (मुक्त) कर देती है, ऐसा मुनीश्वरों ने देखा है ।।४९।। व्रत करने से और अन्य प्रकार के दानों से राज्य में किये हुए महापाप नाश नहीं होते, किन्तु भूमि के दान से सब पाप दूर हो जाते हैं ।।५०।। जो मनुष्य धान्य से पूर्ण पृथ्वी को ब्राह्मण

गोचर्ममात्रं वसुधा दत्ता पात्रे विधानतः ॥ पुनाति ब्रह्महत्याया दृष्टमेतन्मुनीश्वरैः ॥४९॥
न व्रतेभ्यो न तीर्थेभ्यो नान्यदानाद्विनश्यति ॥ राज्ये कृतं महापापं भूमिदाना-
द्विलीयते ॥ ५० ॥ पृथिवीं सस्यसम्पूर्णां यो ददाति द्विजातये ॥ स प्रयातीन्द्रभुवने
पूज्यमानः सुरासुरैः ॥ ५१ ॥ अत्यल्पफलदानानि स्युरन्यदानानि काश्यप ॥ पृथिवी-
दानजं पुण्यमहन्यहनि वर्द्धते ॥ ५२॥ यो भूत्वा भूमिपो भूमिं न ददाति द्विजातये ॥ स
नाप्नोति कुटीं ग्रामे दरिद्रः स्यात्समुद्भवे ॥५३॥ अदानाद् भूमिदानस्यभूपतित्वाभिमानतः ॥

को दान करता है, वह सुर और असुरों से पूजित होकर इन्द्रलोक को जाता है ।।५१।। हे काश्यप ! और दान बहुत ही थोड़े फलको देनेवाले होते हैं और पृथ्वी के दान से उत्पन्न पुण्य प्रतिदिन बढ़ता है ।।५२।। जो राजा होकर ब्राह्मण को भूमि दान नहीं करता है वह संसार में दूसरा जन्म पाने पर गाँव में कुटी भी नहीं पाता है और दरिद्री होता है ।।५३।। तथा राजा अभिमान-वश भूमि का दान देने से तब तक नरक में वास करता है, जब तक शेषभूमि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को धारण करता है ॥५४॥ इसलिये भूमि का स्वामी होकर भूमि के दान को अवश्य करे, औरों को (जो राजा नहीं हैं उनको), भूमि-दान के लिये मैंने गोदान कहा है, क्योंकि भूमि भी गोरूप ही है ॥५५॥ अष्टदान में कही हुई (अन्तर्धेनु रुद्रमृत्युञ्जय को कहते हैं अतएव मृत्यु के कष्ट-निवारणार्थ) रुद्रधेनु, (जान या अनजान में किये हुए ऋण से छूटने के लिये) ऋणधेनु (मोक्ष पाने के लिये) और मोक्षधेनु का दान करे ॥५६॥ हे गरुड़ ! वैतरणी के

निवसेन्नरके यावच्छेषो धारयते धराम् ॥ ५४ ॥ तस्माद् भूमीश्वरो भूमिदानमेव प्रदापयेत् ॥
अन्येषां भूमिदानार्थं गोदानं कथितंमया ॥ ५५ ॥ ततोऽन्तर्धेनुदातव्या रुद्रधेनुं प्रदापयेत् ॥
ऋणधेनुं ततो दत्त्वा मोक्षधेनुं प्रदापयेत् ॥ ५६ ॥ दद्याद्वैतरणीं धेनुं विशेषविधिना खग ॥
तारयन्ति नरं गावस्त्रिविधाच्चैव पातकात् ॥ ५७ ॥ बालत्वे यच्च कौमारे यत्पापं यौवने
कृतम् ॥ वयः परिणतौ यच्च यच्च जन्मान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥ यन्निशायां तथा प्रातर्यन्मध्याह्न-
पराह्णयोः ॥ सन्ध्ययोर्यत्कृतं पापं कायेन मनसा गिरा ॥५९॥ दत्त्वा धेनुं सकृद्वापि कपिलां

पार उतरनेके लिये वैतरणी धेनु को विशेष विधि से दान करे। हे गरुड़ ! गौवें मनुष्य का तीन प्रकार के पापों से उद्धार करती हैं ॥ ५७ ॥ बालकपन में, कुमार अवस्था में और तरुणावस्था में, बुढ़ापे में तथा दूसरे जन्म में जो पाप किये हैं, ॥ ५८ ॥ रात में, प्रातःकाल में, मध्याह्नकाल में, अपराह्नकाल में और दोनों सन्ध्याओं में मन, वचन तथा काया से जो पाप किये हैं ॥ ५९ ॥ जन्मभर में एक बार भी दूधयुक्त सब सामग्री तथा बच्चे सहित

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कपिला गौ को तपस्वी और ।।६०।। वेदको जाननेवाले ब्राह्मण के लिये दान करने से प्राणी सब पापों से छूट जाता है। वह गाय उस दाता का अन्तकाल में पाप समूह से उद्धार करती है।।६१।।सावधानचित्त होकर एक गौ का, आतुर चित्त से सौ गौ का और तत्काल मरनेवाले की अचेतन अवस्था में एक हजार गौ का दान।।६२।। मरनेकेपश्चात् एक लाख

क्षीरसंयुताम् ।। सोपस्करां सवत्सां च तपोवृत्तसमन्विते ।।६०।। ब्राह्मणे वेदविदुषे सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। उद्धरेदन्तकालं सा दातारं पापसञ्चयात् ।। ६१ ।। एका गौः स्वस्थचित्तस्य ह्यातुरस्य च गोः शतम् ।। सहस्रं म्रियमाणस्य दत्तं चित्तविवर्जितम् ।।६२।। मृतस्यैतत्पुनर्लक्षं विधिपूतं च तत्समम् ।। तीर्थपात्रसमोपेतं दानमेकं च लक्षधा ।।६३ ।। पात्रे दत्तं च यद्दानं तल्लक्षगुणितं भवेत् ।। दातुः फलमनन्तं स्यान्न पात्रस्य प्रतिग्रहः ।। ६४ ।। स्वाध्यायहोम-संयुक्तः परपाकविवर्जितः ।। रत्नपूर्णामपि महीं प्रतिगृह्य न लिप्यते ।। ६५ ।। विषशीतापहौ

गौ के विधिपूर्वक दिये हुए दान के समान फल देनेवाला होता है, और तीर्थ तथा सत्पात्रयुक्त वह दान लाख प्रकार का होता है ।।६३।। जो दान सत्पात्र में दिया जाता है वह लाख गुना होता है और देनेवाले को अनन्त फल होता है। सत्पात्र को प्रतिग्रह का दोष नहीं लगता है ।।६४।।स्वाध्याय-पाठ,होम से युक्त और पराये पाक से वर्जित (स्वयंपाकी) ब्राह्मण रत्न से भरी हुई पृथ्वी का दान लेकर भी प्रतिग्रह के दोष से लिप्त नहीं होता।।६५।। विष तथा शीत के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दूर करनेवाले मन्त्र और अग्नि क्या दोषभागी होते हैं? अर्थात् नहीं। अपात्रमें दान की हुई गौ दाता को नरक में पहुँचाती है ॥६६॥ और दान ग्रहण करनेवाले के एक सौ एक कुल को नरक में डालती है। अपना कल्याण चाहनेवाले विद्वान् को अपात्र में गौ का दान नहीं करना चाहिये ॥६७॥ एक गौ एक ही मनुष्य को देने योग्य है और

मन्त्रवह्नी किं दोषभागिनौ ॥ अपात्रे सा च गौर्दत्ता दातारं नरकं नयेत् ॥ ६६ ॥ कुलैकशतसंयुक्तं गृहीतारं तु पातयेत् ॥ नापात्रे विदुषा देया ह्यात्मनः श्रेय इच्छता ॥ ६७ ॥ एका ह्येकस्य दातव्या बहूनां न कदाचन ॥ सा विक्रीता विभक्ता वा दहत्यासप्तमं कुलम् ॥६८॥ कथिता या मया पूर्वं तव वैतरणी नदी ॥ तस्या ह्युद्धरणोपायं गोदानं कथयामि ते ॥ ६९ ॥ कृष्णां वा पाटलां वापि धेनुं कुर्यादलंकृताम् ॥ स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां कांस्यपात्रोपदोहिनीम् ॥७०॥ कृष्णवस्त्रयुगच्छन्नां कण्ठघण्टासमन्विताम् ॥ कार्पासोपरि संस्थाप्य

बहुत मनुष्यों को कभी नहीं देनी चाहिये, क्योंकि बेची अथवा बाँटी गई वह गौ सात कुलपर्यन्त जला देती है ॥६८॥ पहले जो तुमसे वैतरणी नामक नदी का वर्णन किया है उसको पार जाने के उपायरूप गोदान को मैं तुमसे कहता हूँ ॥६९॥ कृष्ण वा लाल वर्ण की गौ को आभूषणों से शोभित करे और सोने की सिंगौटी, चाँदी के खुर, काँसे की दोहनी पात्रवाली ॥७०॥ काले रङ्ग के वस्त्र से ढकी हुई और कण्ठ में सुन्दर घण्टा से शोभित गौ को, कपास के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऊपर खड़ी कर वस्त्र समेत ताँबे का पात्र रख ॥७१॥ वहाँ लोहदण्डधारी स्वर्णनिर्मित यमराज का स्थापन करे, उसके बाद काँसे के पात्र में घी डाल सब उसके ऊपर रख देवे ॥७२॥ ऊख की नाव बनाकर रेशम के सूत से लपेट और जल समेत गढ़े में उस नाव को डाले ॥७३॥ सूर्य की देह से उत्पन्न उस गौ को उस नाव के ऊपर

ताम्रपात्रं सचैलकम् ॥ ७१ ॥ यमं हैमं न्यसेत्तत्र लोहदण्डसमन्वितम् ॥ कांस्यपात्रे घृतं कृत्वा सर्वं तस्योपरि न्यसेत् ॥७२॥ नावमिक्षुमयीं कृत्वा पट्टसूत्रेण वेष्टयेत् ॥ गर्तं विधाय सजलं कृत्वा तस्मिन्क्षिपेत्तरिम् ॥ ७३ ॥ तस्योपरि स्थितां कृत्वा सूर्यदेहसमुद्भवाम् ॥ धेनुं संकल्पयेत्तत्र यथाशास्त्रविधानतः ॥ ७४ ॥ सालङ्काराणि वस्त्राणि ब्राह्मणाय प्रकल्पयेत् ॥ पूजां कुर्याद्विधानेन गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ॥ ७५ ॥ पुच्छं संगृह्य धेनोस्तु नावमाश्रित्य पादतः ॥ पुरस्कृत्य ततो विप्रमिमं मन्त्रमुदीरयेत् ॥ ७६ ॥ भवसागरमग्नानां शोकतापो-

स्थापित कर शास्त्र में कही हुई विधि से धेनु को सङ्कल्प करे ॥७४॥ अलङ्कार समेत वस्त्र ब्राह्मण को दे। गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि से विधिपूर्वक पूजन कर ॥७५॥ गौ की पूँछ पकड़ पाँव को नाव में रखकर ब्राह्मण को आगे करके इस मन्त्र को पढ़े ॥७६॥ हे जगन्नाथ ! हे शरणागतवत्सल ! आप संसाररूपी सागर में डूबते हुए और शोक-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सन्तापरूपी लहरों से दुःखित मनुष्य के रक्षक हैं ॥७७॥ हे विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ ! महीसुर ! मेरा उद्धार करो, मैंने आपको दक्षिणा समेत गोदान दिया। आपको तथा वैतरणी रूपी गाय को नमस्कार है॥७८॥ अतिघोर यमलोक के मार्ग में सौ योजन चौड़ी उस नदी के पार उतारने के लिए मैंने तुम्हारे लिए यह गोदान दिया है आपको तथा वैतरणी

र्मिदुःखिनाम् ॥ त्रात्रा त्वं हि जगन्नाथः शरणागतवत्सलः ॥ ७७ ॥ विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ मामुद्धर महीसुर ॥ सदक्षिणा मया दत्ता तुभ्यं वैतरणीं नमः ॥ ७८ ॥ यममार्गे महाघोरे तां नदीं शतयोजनाम् ॥ तर्तुकामो ददाम्येतां तुभ्यं वैतरणीं नमः ॥ ७९ ॥ धेनुके मां प्रतीक्षस्व यमद्वारमहापथे ॥ उत्तारणार्थं च देवेसि वैतरण्यै नमोऽस्तु ते ॥ ८० ॥ गावो मे अग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः॥ गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥ ८१ ॥ या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवे प्रतिष्ठिता ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ ८२ ॥ इति मन्त्रैश्च सम्प्रार्थ्य साञ्जलिधेनुकां यमम् ॥ सर्वं प्रदक्षिणीकृत्य ब्राह्मणाय

रूपी गाय को नमस्कार है ॥७९॥ हे धेनु ! हे देवेशि ! यमद्वार के महापथ में उतारने के लिये तू मेरी राह देखना, तुझे नमस्कार है ॥८०॥ गौ मेरे आगे होवें, पीछे होवें और मेरे हृदय में होवें। मैं गौवों के मध्य में निवास करूँ ॥८१॥ जो लक्ष्मी सब जीवों में है और जो लक्ष्मी देवताओं में स्थित है, वह धेनु के रूप से मेरे पापों

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को नाश करे ॥८२॥ हाथ जोड़े हुए इन मन्त्रों को पढ़कर गाय और यम की प्रार्थना कर प्रदक्षिणा करके सब सामग्री ब्राह्मणों को दे दे ॥८३॥ हे खग ! इस प्रकार विधान से जो वैतरणी गौ को देता है, वह धर्म के मार्ग में होकर धर्मराज की सभा के मध्य में जाता है ॥८४॥ स्वस्थावस्थायुक्त शरीर होने पर वैतरणी का व्रत कर और उस नदी के पार होने की इच्छा करनेवाला विद्वान् धेनु का दान करे ॥८५॥ हे गरुड़ ! वह महानदी गोदान करने से

निवेदयेत् ॥ ८३ ॥ एवं दद्याद्विधानेन यो गां वैतरणीं खग ॥ स याति धर्ममार्गेण धर्मराजसभान्तरे ॥ ८४ ॥ स्वस्थावस्थशरीरे तु वैतरण्यां व्रतं चरेत् ॥ देया च विदुषा धेनुस्तां नदीं तर्तुमिच्छता ॥ ८५ ॥ सा नायाति महामार्गे गोदानेन नदी खग ॥ तस्मादवश्यं दातव्यं पुण्यकालेषु सर्वदा ॥८६॥ गङ्गादिसर्वतीर्थेषु ब्राह्मणावसथेषु च ॥ चन्द्रसूर्योपरागेषु संक्रान्तौ दर्शवासरे ॥ ८७ ॥ अयने विषुवे चैव व्यतीपाते युगादिषु ॥ अन्येषु पुण्यकालेषु दद्याद् गोदानमुत्तमम् ॥ ८८ ॥ यदैव जायते श्रद्धा पात्रं सम्प्राप्यते तदा ॥ स एष पुण्य-

महामार्ग में नहीं आती है, इसलिये पुण्यकाल में अवश्य गोदान करना चाहिये ॥८६॥ गङ्गा आदि सब तीर्थ में, ब्राह्मण के स्थान में, चन्द्र सूर्य के ग्रहण में, संक्रान्ति में, अमावस्या को ॥८७॥ अयनसंक्रान्ति में और मेष, कर्क, मकर तथा तुला की संक्रान्ति में, व्यतीपात योग में युगादि (अक्षयतृतीया, अक्षयनवमी आदि) तिथियों में और सब पुण्यकालों में उत्तम गोदान कराना चाहिये ॥८८॥ जब श्रद्धा उत्पन्न हो, जब सत्पात्र मिल जायँ, वही पुण्यकाल है; क्योंकि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विद्युत्सर्वं किं धनयौवनादि

सम्पत्ति स्थिर नहीं रहती ।।८९।। शरीर अस्थिर है, वैभव सदा नहीं रहता है और मृत्यु सदा निकट ही है, इसलिये धर्म का संग्रह करना चाहिये ।।९०।। अपने वित्त के अनुसार उस समय में दिया हुआ दान अनन्त होता है, अपना कल्याण चाहनेवाले पुरुष को विद्वान् ब्राह्मण को दान देना चाहिये ।।९१।। अपने लिए किया गया थोड़ा भी दान

कालः स्याद्यतः सम्पत्तिरस्थिरा ।। ८९ ।। अस्थिराणि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः ।।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसञ्चयः ।। ९० ।। आत्मवित्तानुसारेण तत्र दानमनन्तकम् ।। देयं विप्राय विदुषे स्वात्मनः श्रेय इच्छता ।। ९१ ।। अल्पेनापि हि वित्तेन स्वहस्तेनात्मने कृतम् ।। तदक्षय्यं भवेद्दानं तत्काले चोपतिष्ठति ।। ९२ ।। गृहीतदानपाथेयः सुखं याति महाध्वनि ।। अन्यथा क्लिश्यते जन्तुः पाथेयरहितः पथि ।। ९३ ।। यानि यानि च दानानि दत्तानि भुवि मानवैः ।। यमलोकपथे तानि ह्युपतिष्ठन्ति चाग्रतः ।। ९४ ।।
महापुण्यप्रभावेण मानुषं जन्म लभ्यते ।। यस्तत्प्राप्य चरेद्धर्मं स याति परमां गतिम् ।।९५।।

अक्षय होता है और वह दान समय पर मिलता है ।।९२।। जिसने दानरूपी राह का खर्च ले लिया है, वह महामार्ग में सुख से जाता है । अन्यथा मार्ग-व्यय बिना प्राणी मार्ग में क्लेश पाता है ।।९३।। जो जो दान पृथ्वी में मनुष्यों द्वारा दिये जाते हैं, वे सब देय वस्तुयें यमलोक के मार्ग में आगे-आगे प्राप्त होती हैं ।।९४।।अत्यन्त पुण्य के प्रभाव से मनुष्य-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जन्म मिलता है, जो मनुष्य-देह पाकर धर्म करता है, वह परमगति (मोक्ष) को प्राप्त होता है ॥९५॥ जो मनुष्य
 धर्म को नहीं जानता वह दुःख से आता है और चला जाता है। मनुष्य जन्म की सफलता केवल धर्म-सेवन में है ॥९६॥
 धन, पुत्र, स्त्री, शरीर आदि भी तथा भाई-बन्धु ये सब नाशवान हैं। धर्म स्थिर रहता है, इसलिये धर्म करना चाहिये
अविज्ञाय नरो धर्मं दुःखमायाति याति च ॥ मनुष्यजन्मसाफल्यं केवलं धर्मसेवनम् ॥ ९६ ॥
धनपुत्रकलत्रादि शरीरमपि बान्धवाः ॥ अनित्यं सर्वमेवेदं तस्माद्धर्मं समाचरेत् ॥ ९७ ॥
तावद्बन्धुःपिता तावद्यावज्जीवति मानवः ॥ मृतानामन्तरं ज्ञात्वा क्षणात्स्नेहो निवर्तते ॥९८॥
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरिति विद्यान्मुहुर्मुहुः ॥ जीवन्नपीति सञ्चिन्त्य मृतानां कः प्रदा-
स्यति ॥ ९९ ॥ एवं जानन्निदं सर्वं स्वहस्तेनैव दीयताम् ॥ अनित्यं जीवितं यस्मात्पश्चा-
त्कोऽपि न दास्यति ॥ १०० ॥ मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्टसमं क्षितौ ॥ विमुखा
॥९७॥ जब तक मनुष्य जीता है तब तक बन्धु पिता और भ्राता हैं। मरने के पश्चात् लोगों का स्नेह या प्रेम क्षणमात्र में
दूर हो जाता है ॥९८॥ जीवन भर प्राणी अपनी आत्मा ही अपना बन्धु है यह बात बारम्बार स्मरण रखे। अतः आत्मा
के लिये दान दे। मरने पर कौन देगा, यह ध्यान में रखे ॥९९॥ ऐसा जानता हुआ पुरुष यह सब अपने हाथ से दान करे,
क्योंकि यह जीवन अनित्य है, पीछे कोई नहीं देगा ॥१००॥ मरे हुए शरीर को काष्ठ तथा कङ्कड़ के समान पृथ्वी पर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१-दारापुत्रा धनं वा०

छोड़कर मुख फेरकर बान्धव चले जाते हैं और धर्म ही उसके साथ जाता है ।।१०१।। घर पर ही अर्थ साथ छोड़ देता है और श्मशान से सब भाई लौट जाते हैं, केवल किया हुआ शुभ-अशुभ कर्म ही मृतक जीव के साथ जाता है ।।१०२।। शरीर आग से जलाया गया और किया हुआ कर्म साथ लेकर पुण्य अथवा पाप को मनुष्य सर्वत्र भोगता है ।।१०३।।

बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ।।१०१।। गृहदर्था निवर्तन्ते श्मशानात्सर्वबान्धवाः ।।
शुभाशुभं कृतं कर्म गच्छन्तमनुगच्छति ।। १०२ ।। शरीरं वह्निना दग्धं कृतं कर्म सहा-
स्थितम् ।। पुण्यं वा यदि वा पापं भुङ्क्ते सर्वत्र मानवः ।।१०३।। न कोऽपि कस्यचिद्बन्धुः
संसारे दुःखसागरे ।। आयाति कर्मसम्बन्धाद्याति कर्मक्षये पुनः ।। १०४ ।। मातृपितृसुत-
भ्रातृबन्धुदारादिसङ्गमः ।। प्रपायामिव जन्तूनां नद्यां काष्ठौघवच्चलः ।। १०५ ।। कस्य
पुत्राश्च पौत्राश्च कस्य भार्या धनं च वा ।। संसारे नास्ति कः कस्य स्वयं तस्मात्प्रदीय-

दुःख के सागररूप संसार में कोई किसी का बन्धु नहीं है, कर्म के सम्बन्ध से प्राणी आते हैं और कर्म के क्षीण होने पर फिर चले जाते हैं ।।१०४।। माता, पिता, पुत्र, भ्राता, बन्धु और स्त्री आदि का साथ प्याऊ पर एकत्र प्राणियों के समान या नदी में बहते हुए काष्ठ के समूह सदृश चलायमान है ।।१०५।। पुत्र, पौत्र, भार्या तथा धन किसके हैं? संसार में कोई किसी का नहीं है, इसलिए स्वयं ही दान देना चाहिये ।। १०६ ।। जब तक धन अपने अधीन है

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तब तक ब्राह्मण को समर्पण करे और धन के पराधीन हो जाने पर कुछ कहने का उत्साह न करे ॥१०७॥पूर्वजन्म में किये हुए दान से यहाँ धन बहुत प्राप्त हुआ, इसलिये ऐसा जानकर धर्म के लिये देना चाहिये ॥१०८॥ धर्म से अर्थ होता है, धर्म से काम होता है, धर्म ही मोक्ष के लिये होता है, इसलिये धर्म करना चाहिये ॥१०९॥ धर्म श्रद्धा

ताम् ॥१०६॥ आत्मायत्तं धनं यावत्तावद्विप्रे समर्पयेत् ॥ पराधीने धने जाते न किञ्चिद्वक्तुमुत्सहेत्
॥१०७॥ पूर्वजन्मकृताद्दानादत्र लब्धं धनं बहु ॥ तस्मादेवं परिज्ञाय धर्मार्थं दीयतां धनम्
॥१०८॥ धर्मात्संजायतेऽर्थश्च धर्मात्कामोऽभिजायते ॥ धर्म एवापवर्गाय तस्माद्धर्मं समाचरेत्
॥१०९॥ श्रद्धया धार्यते धर्मो बहुभिर्नार्थराशिभिः ॥ निष्किञ्चना हि मुनयः श्रद्धावन्तो
दिवं गताः ॥११०॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ॥ तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि
यतात्मनः ॥१११॥ तस्मादवश्यं दातव्यं तदा दानं विधानतः ॥ अल्पं वा बहु वेतीमां गणना नैव
प्रकारयेत् ॥११२॥ धर्मात्मा च स पुत्रो वै दैवतैरपि पूज्यते ॥ दापयेद्यस्तु दानानि पितरं

से धारण किया जाता है, बहुत धन के समूह से नहीं। धनहीन मुनि श्रद्धा के कारण स्वर्ग को गये ॥११०॥ पत्र, पुष्प, फल और जल श्रद्धा से पवित्र होकर जो मुझको भक्ति से समर्पण करता है, श्रद्धा से पवित्र चित्तवालों की उन वस्तुओं को मैं भोजन करता हूँ ॥१११॥ उसी विधान से दान अवश्य देना चाहिये। दान अल्प हो अथवा अधिक, इस बात की गिनती न करे ॥११२॥ संसार में माता पिता से जो दान दिलाता है वह धर्मात्मा पुत्र देवताओं से भी पूजा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जाता है।। ११३।।माता और पिता के निमित्त जो धन पुत्रों द्वारा सत्पात्र को दिया जाता है, उस धन से वह पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र तक की आत्मा को पवित्र करता है ।।११४।। पिता द्वारा दान दिलाने से सौगुना, माता द्वारा हजारगुना और बहिन द्वारा दस हजारगुना और सहोदर द्वारा दिया हुआ दान अक्षय पुण्यदायक होता है।। ११५।।दान देनेवालेको कोई उपद्रव नहीं होता है',

ह्यातुरं भुवि।। ११३।।पित्रोर्निमित्तं यद्वित्तं पुत्रैः पात्रे समर्पितम्।। आत्मापि पावितस्तेन पुत्रपौत्र-प्रपौत्रकैः ।।११४।। पितुःशतगुणं पुण्यं सहस्रं मातुरेवच ।। भगिनीदशसाहस्रं सोदरे दत्तमक्षयम् ।।११५।।न चैवोपद्रवा दातुर्न वा नरकयातनाः।। मृत्युकाले न च भयं यमदूतसमुद्भवम्।।११६।। यदिलोभान्न यच्छन्ति काले ह्यातुरसंज्ञके।। मृताः शोचन्ति ते सर्वे कदर्याःपापिनः खग ।।११७।। पुत्राः पौत्राः सह भ्राता सगोत्राः सुहृदस्तु ये।।ददाति नातुरे दानं ब्रह्मघ्नास्ते न संशयः।।११८।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे आतुरदाननिरूपणो नामाष्टमोऽध्यायः ।। ८ ।।

नरक की यातना भी नहीं होती है और मरने के समय यम-दूतों द्वारा उत्पन्न भय भी नहीं होता है।। ११६।।जो लोभसे आतुर (मरणासन्न) द्वारा दान नहीं कराता है, हे गरुड़! यह कृपण पापी मरने के पीछे पश्चात्ताप करता है।। ११७।। भाई, पुत्र, पौत्र, सगोती और मित्र ये यदि आतुर (आसन्नमृत्यु) समय में दान नहीं देते हैं वे निःसन्देह ब्रह्महत्यारे हैं ।।११८।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ।। ८ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गरुड़जी ने पूछा—आपने आतुरकाल का दान विस्तार पूर्वक कहा, हे प्रभु! मरते हुए प्राणी के कृत्यों को इस समय कहिये ॥१॥ श्री भगवान् ने उत्तर दिया—हे गरुड़! सुनो, देह-त्याग कालीन उस विधान को मैं तुमसे कहता हूँ, जिससे मरे हुए मनुष्य सद्गति प्राप्त करते हैं ॥२॥ संसार में जब देही कर्म-वश अपने शरीर त्याग का

श्रीगरुड उवाच ॥ कथितं भवता सम्यग्दानमातुरकालिकम् ॥ म्रियमाणस्य यत्कृत्यं तदिदानीं वद प्रभो ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु तार्क्ष्य प्रवक्ष्यामि देहत्यागस्य तद्विधिम् ॥ मृता येन विधानेन सद्गतिं यान्ति मानवाः ॥२॥ कर्मयोगाद्यदा देही मुञ्चत्यत्र निजं वपुः ॥ तुलसीसन्निधौ कुर्यान्मण्डलं गोमयेन तु ॥ ३ ॥ तिलांश्चैव विकीर्याथ दर्भांश्चैव विनिःक्षिपेत् ॥ स्थापयेदासने शुभ्रे शालिग्रामशिलां तदा ॥४॥ शालिग्रामशिला यत्र पापदोषभयापहा ॥ तत्सन्निधानमरणान्मुक्तिर्जन्तोः सुनिश्चिता ॥ ५ ॥ तुलसीविटप-

अवसर जाने, उस समय तुलसी के समीप गोबर का मण्डल बनावे ॥३॥ उसमें तिल को फैलाकर कुश डाले, ततः श्वेत आसन पर शालिग्राम-शिला स्थापित करे ॥४॥ पाप, दोष और भय को नाश करनेवाली शालिग्राम की शिला है, उसके समीप मरने से प्राणी की निश्चय मुक्ति होती है ॥५॥ संसार के ताप को दूर करनेवाली तुलसी के वृक्ष की छाया जहाँ पर विद्यमान है वहाँ मरने से मुक्ति होती है, वह सब दानों से दुर्लभ है ॥६॥ जिसके घर में तुलसी

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

या दृष्टा निखिलाघसंघशमनी स्पृष्टा वपुःपावनी रोगाणामभिवन्दिता निरसनी सिक्तान्तकत्रासिनी। प्रत्यासत्तिविधायिनी भगवतः कृष्णस्य संरोपिता। न्यस्ता तच्चरणे विमुक्तिफलदा तस्यै तुलस्यै नमः।

का स्थान है, वह गृह तीर्थरूप है, उसमें यम के दूत नहीं जाते हैं ॥७॥ जो तुलसी की मञ्जरी से युक्त हो प्राण को छोड़ता है। सैकड़ों पापों से युक्त होने पर भी उस प्राणी को यम नहीं देख सकते हैं ॥८॥ तुलसी का दल मुख में रखकर तिल-कुश के आसन पर मरा हुआ प्राणी पुत्रहीन होने पर भी निःसन्देह विष्णुलोक को जाता है॥९॥ तीन

च्छाया यत्रास्ति भावतापहा ॥ तत्रैव मरणान्मुक्तिः सर्वदा दानदुर्लभा ॥६॥ तुलसीविटपस्थानं गृहे यस्यावतिष्ठते ॥ तद्गृहं तीर्थं रूपं हि न यान्ति यमकिङ्कराः ॥ ७ ॥ तुलसीमञ्जरीयुक्तो यस्तु प्राणान्विमुञ्चति ॥ यमस्तं नेक्षितुं शक्तो युक्तं पापशतैरपि ॥ ८ ॥ तस्या दलं मुखे कृत्वा तिलदर्भासने मृतः ॥ नरो विष्णुपुरं याति पुत्रहीनोऽप्यसंशयः ॥ ९ ॥
तिलाः पवित्रास्त्रिविधा दर्भाश्च तुलसी तथा ॥ निरं निवारयन्त्येते दुर्गतिं यान्तमातुरम् ॥ १० ॥
मम स्वेदसमुद्भूता यतस्ते पावनास्तिलाः ॥ असुरा दानवा दैत्या विद्रवन्ति तिलैस्ततः ॥ ११ ॥
दर्भा विभूतिर्मे तार्क्ष्य मम रोमसमुद्भवाः ॥ अतस्तत्स्पर्शनादेव स्वर्गं गच्छन्ति मानवाः ॥ १२ ॥

प्रकार के तिल, दर्भ और तुलसीदल ये सब दुर्गति को प्राप्त होते हुए आतुर के दुःखों का निवारण करते हैं ॥१०॥ तिल मेरे स्वेद (पसीने) से उत्पन्न हैं। इसलिये पवित्र हैं। इस कारण तिलों से असुर, दानव, दैत्य भागते हैं ॥११॥ हे गरुड़! मेरे रोम से उत्पन्न कुश मेरी विभूति हैं, इससे उनके स्पर्शमात्र ही से मनुष्य स्वर्गलोक को जाते हैं ॥१२॥

तुलस्या कुरुते यस्तु शालग्रामशिलार्चनं। द्वात्रिंशदपराधांश्च क्षमते तस्य केशवः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुशा के मूल में ब्रह्मा, मध्य में जनार्दन और अग्रभाग (नोक) में शङ्कर देव स्थित हैं, इस प्रकार तीनों देवता कुश में स्थित हैं ॥१३॥ इससे कुश, अग्नि, मन्त्र, तुलसी, ब्राह्मण और गौ, ये बारम्बार काम में लगने पर भी (अपवित्र) (या अर्पित) नहीं होते हैं ॥१४॥ कुश पिण्ड में निर्माल्य होता है और ब्राह्मण प्रेत के भोजन में निर्माल्य होता

कुशमूले स्थितो ब्रह्मा कुशमध्ये जनार्दनः ॥ कुशाग्रे शङ्करो देवस्त्रयो देवाः कुशे स्थिताः ॥ १३ ॥ अतः कुशावह्निमन्त्रतुलसीविप्रधेनवः ॥ नैते निर्माल्यतां यान्ति क्रियमाणाः पुनः पुनः ॥ १४ ॥ दर्भाः पिण्डेषु निर्माल्या ब्राह्मणाः प्रेतभोजने ॥ मन्त्रा गौस्तुलसी हीनैः चितायां च हुताशनः ॥ १५ ॥ गोमयेनोपलिप्ते तु दर्भास्तरणसंस्कृते ॥ भूतले ह्यातुर कुर्यादन्तरिक्षं विवर्जयेत् ॥ १६ ॥ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वे देवा हुताशनः ॥ मण्डलोपरि तिष्ठन्ति तस्मात्कुर्वीत मण्डलम् ॥ १७ ॥ सर्वत्र वसुधा पूता लेपो यत्र न

हैं। मन्त्र, गौ और तुलसी नीच के गृह में निर्माल्य होते हैं तथा अग्नि चिता में निर्माल्य होती है ॥१५॥ गोबर से लिपे हुए और दर्भ के बिछौने से संस्कार किये हुए स्थान में भूमिपर आतुर को सुलावे, अन्तरिक्ष को त्याग करे (भूमि से ऊपर पलँग आदि से उतार दे) ॥१६॥ ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और अग्नि, ये सब देवता मण्डल के ऊपर बैठते हैं, इससे मण्डल करे ॥१७॥ बिना लीपी जानेवाली सब भूमि पवित्र है और जो लीपी जाती है वह फिर लीपने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से पवित्र होती है ॥१८॥ पिशाच, राक्षस, भूत, प्रेत और यम के दूत बिना लिपे हुए स्थान में, खाटमें और अन्तरिक्ष में प्रवेश करते हैं॥१९॥ इससे अग्निहोत्र, श्राद्ध, ब्राह्मणभोजन और देवता का पूजन, इन सबको बिना मण्डल की भूमि में आतुर से न करावे ॥२०॥ इसके पश्चात् उस आतुर को लीपी हुई भूमि में सुलाकर उसके मुख में स्वर्ण

विद्यते ॥ यत्र लेपः कृतस्तत्र पुनर्लेपेन शुध्यति ॥१८॥ राक्षसाश्च पिशाचाश्च भूताः प्रेता
यमानुगाः ॥ अलिप्तदेशे खट्वायामन्तरिक्षे विशन्ति च ॥१९॥ अतोऽग्निहोत्रं श्राद्धं च
ब्रह्मभोज्यं सुरार्चनम् ॥ मण्डलेन विना भूम्यामातुरं नैव कारयेत् ॥२०॥ लिप्तभूम्यामतः
कृत्वा स्वर्णं रत्नं मुखे क्षिपेत् ॥ विष्णोः पादोदकं दद्याच्छालिग्रामस्वरूपिणः ॥ २१ ॥
शालिग्रामशिलातोयं यः पिबेद्बिन्दुमात्रकम् ॥ स सर्वपापनिर्मुक्तो वैकुण्ठभवनं व्रजेत् ॥२२॥
ततो गङ्गाजलं दद्यान्महापातकनाशनम् ॥ सर्वतीर्थकृतस्नानदानपुण्यफलप्रदम् ॥ २३ ॥

और रत्न डाले, फिर शालिग्रामस्वरूप विष्णु, चरणामृत पिलावे ॥ २१ ॥ शालिग्राम शिला के जल को जो बिन्दुमात्र पीता है, वह सब पापों से छूटकर स्वर्ग जाता है ॥२२॥ उसके पश्चात् महापातक को नाश करनेवाले गङ्गाजल को पिलावे, वह गङ्गाजल सब तीर्थों में किये हुए स्नान दान के पुण्य-फल को देनेवाला है ॥२३॥ काया को शुद्ध करने के लिये एक हजार चान्द्रायण व्रत करनेवाले और गङ्गाजल पीनेवाले (दोनों) बराबर

= अकाल मृत्युहरणं सर्व व्याधि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हैं ।।२४।। हे गरुड़ ! जैसे अग्नि को पाकर रूई का ढेर जल जाता है, वैसे ही गङ्गाजल को पीने से पाप जल जाता (नष्ट हो जाता) है ।।२५।। जो सूर्य के किरणों से तप्त गङ्गाजल पीता है, वह सब योनियों से छूटकर हरिलोक को जाता है।।२६।।नदियों के जल में स्नान करने से मनुष्य पवित्र होता है। किन्तु गङ्गाजी का दर्शन, स्पर्श, पान और

चान्द्रायणं चरेद्यस्तु सहस्रं कायशोधनम् ।। पिबेद्यश्चैव गङ्गाम्भः समौ स्यातामुभावपि ।।२४।।
अग्निं प्राप्य यथा तार्क्ष्य तूलराशिर्विनश्यति ।। तथा गङ्गाम्बुपानेन पातकं भस्मसा-
द्भवेत् ।।२५।। यस्तु सूर्यांशुसन्तप्तं गङ्गायाः सलिलं पिबेत् ।। स सर्वयोनिनिर्मुक्तः प्रयाति
सदनं हरेः ।। २६ ।। नद्यो जलावगाहेन पावयन्तीतराञ्जनान् ।। दर्शनात्स्पर्शनात्पानात्तथा
गङ्गेति कीर्तनात् ।। २७ ।। पुनात्यपुण्यान्पुरुषान् शतशोऽथ सहस्रशः ।। गङ्गा तस्मात्पिबे-
त्तस्या जलं संसारतारकम् ।। २८ ।। गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात्प्राणैः कण्ठगतैरपि ।। मृतो
विष्णुपुरं याति न पुनर्जायते भुवि ।।२९।। उत्क्रामद्भिश्च यः प्राणैः पुरुषः श्रद्धयाऽन्वितः ।।

'गङ्गा' यह नाम कहने से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है ।।२७।। गंगाजल सैकड़ों, हजारों अपवित्र पुरुषों को पवित्र करता है। इसलिये संसार से तरनेवाले उसी जल को पीवें ।।२८।। जो पुरुष कण्ठ में आये हुए प्राणों के समय भी 'गङ्गा' ऐसा कहता है वह मरने पर विष्णुपुर को जाता है और पृथिवी पर फिर नहीं उत्पन्न होता है ।।२९।। प्राण निकलते समय

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा । आगच्छन्तु पवित्राणि
स्नान काले सदा मम

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

गंगे तव महिमानं वक्तुं मनोऽशक्ताशोऽपि विवरस्कुंचुतपदं... विष्णु ...पिकम्

जो लोग श्रद्धा से मन में गङ्गा का चिन्तन करते हैं वे भी मोक्ष को प्राप्त होते हैं ।।३०।। अतः गङ्गाजी का ध्यान और उन्हें नमस्कार करे । गङ्गाजल पीवे, उसके पश्चात् मोक्ष देनेवाले श्रीमद्भागवत की कथा सुने ।।३१।। श्रीमद्भागवत का एक श्लोक वा आधा श्लोक अथवा चौथाई श्लोक जो अन्त समय में पढ़ता है, वह ब्रह्मलोक से

चिन्तयेन्मनसा गङ्गां सोऽपि याति परां गतिम् ।।३०।। अतो ध्यायेन्नमेद्गङ्गां संस्मरेत्तज्जलं पिबेत् ।। ततो भागवतं किञ्चिच्छृणुयान्मोक्षदायकम् ।।३१।। श्लोकं श्लोकार्धपादं वा योऽन्ते भागवतं पठेत् ।। न तस्य पुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ।। ३२ ।। वेदोपनिषदां पाठाच्छिव-विष्णुस्तवादपि ।। ब्राह्मणक्षत्रियविशां मरणं मुक्तिदायकम् ।। ३३ ।। प्राणप्रयाणसमये कुर्यादनशनं खग ।। दद्यादातुरसंन्यासं विरक्तस्य द्विजन्मनः ।। ३४ ।। संन्यस्तमिति यो ब्रूयात्प्राणैः कण्ठगतैरपि ।। मृतो विष्णुपुरं याति न पुनर्जायते भुवि ।। ३५ ।। एवं जात-

कभी नहीं लौटता है ।।३२।। वेद तथा उपनिषद् के पाठ से और शिव तथा विष्णु के स्तोत्र से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की मुक्ति (मरने के पश्चात्) होती है ।।३३।। हे गरुड़ ! प्राणों की यात्रा (मरने) के समय अनशन व्रत करे, और विरक्त द्विजमात्र को आतुर संन्यास देवे ।। ३४ ।। जो कण्ठ में आये हुए प्राणों के समय भी मैंने "संन्यास लिया है", ऐसा कहता है, वह मरकर विष्णुलोक को जाता है, भूमि में फिर उत्पन्न नहीं होता है ।।३५।।

ॐ अच्युतच्या... तरंगिणि... अम्बुजमम्बुनः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस प्रकार आतुर कार्य किये हुए धर्मात्मा पुरुष के प्राण मुख से ऊपर के छिद्र द्वारा निकलता है ।।३६।। मुख, आँख, नाक और दोनों कान इस सात द्वारों से होकर सुकृती लोग जाते हैं (प्राण छोड़ते हैं) और योगी लोग तालु के छिद्र से प्राण छोड़ते हैं ।।३७।। अपानवायु से मिले हुए प्राण जब इस शरीर से अलग होते हैं तब वायु भी सूक्ष्म 'पुत्तल

विधानस्य धार्मिकस्य तदा खग ।। ऊर्ध्वच्छिद्रेण गच्छन्ति प्राणास्तस्य मुखेन हि ।।३६।।
मुखं च चक्षुषी नासे कर्णौ द्वाराणि सप्त च ।। एभ्यः सुकृतिनो यान्ति योगिनस्तालु-
रन्ध्रतः ।। ३७ ।। अपानान्मिलितप्राणौ यदा हि भवतः पृथक् ।। सूक्ष्मीभूत्वा तदा वायु-
र्विनिष्कामति पुत्तलात् ।।३८।। शरीरं पतते पश्चान्निर्गते मारुतीश्वरे ।। कालाहतं पतत्येव
निराधारो यथा द्रुमः ।।३९।। निर्विचेष्टं शरीरं तु प्राणैर्मुक्तं जुगुप्सितम् ।। अस्पृश्यं जायते
सद्यो दुर्गन्धं सर्वनिन्दितम् ।। ४० ।। त्रिधावस्था शरीरस्य कृमिविड्भस्मरूपतः ।। किं
गर्वं क्रियते देहे क्षणविध्वंसिभिर्नरैः ।।४१।। पृथिव्यां लीयते पृथ्वी आपश्चैव तथा जले ।।

से निकल जाता है ।।३८।। इस प्रकार काल से आहत शरीर ईश्वररूपी वायु के निकल जाने पर निराधार वृक्ष के समान गिर जाता है ।।३९।। प्राणों के छूटने पर शरीर चेष्टाहीन, जुगुप्सित, अस्पृश्य, शीघ्र ही दुर्गन्धयुक्त तथा निन्दित हो जाता है ।।४०।। शरीर की अवस्था कृमि, विष्ठा और भस्मरूपी से तीन प्रकार की होती है और क्षण में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विध्वंस होनेवाले शरीर पर मनुष्यों द्वारा क्यों गर्व किया जाता है ? ।। ४१ ।। पृथ्वी में पृथ्वी, जल में जल, तेज में तेज और पवन में पवन लीन हो जाता है ।। ४२ ।। वैसे ही आकाश में आकाश लीन हो जाता है, वह आकाश सर्वव्यापी और शिवरूपी है। नित्य ही मुक्त, जगत् का साक्षीरूप, अजन्मा, अमर तथा आत्मा, देह में स्थित है ।।४३।।

तेजस्तेजसि लीयते समीरस्तु समीरणे ॥ ४२ ॥ आकाशश्च तथाऽऽकाशे सर्वव्यापी च शंकरः ॥ नित्यमुक्तो जगत्साक्षी आत्मा देहेष्वजोऽमरः ।।४३।। सर्वेन्द्रिययुतो जीवः शब्दादिविषयैर्वृतः ।। कामरागादिभिर्युक्तः कर्मकोशसमन्वितः ।।४४।। पुण्यवासनया युक्तो निर्मिते स्वेन कर्मणा ॥ प्रविशेत्स नवे देहे गृहे दग्धे यथा गृही ।।४५।। तदा विमान-मादाय किंकिणीजालमालि यत् ॥ आयान्ति देवदूताश्च लसच्चामरशोभिताः ॥ ४६ ॥ धर्मतत्त्वविदः प्राज्ञाः सदा धार्मिकवल्लभाः ॥ तदैनं कृतकृत्यं स्वर्विमानेन नयन्ति

इन्द्रियों से युक्त जीव शब्द आदि विषयों से घिरा हुआ, काम-प्रेम आदि तथा कर्मरूपी कोश से युक्त होकर ।।४४।। पुण्य और वासना से युक्त होकर अपने कर्म द्वारा, बनाये हुए नवीन देह में प्रवेश करता है जैसे घर जल जाने पर गृही दूसरे घर में प्रवेश करता है ।।४५।। तब किङ्किणी जाल की मालावाले विमान को लेकर चलते हुए चमरों से शोभित देवताओं के दूत आते हैं ।।४६।। धर्म के जाननेवाले पण्डित और धर्मात्मा को सदा प्यार करनेवाले देवता के दूत

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कृतकृत्य प्राणी को विमान में बैठाकर स्वर्ग को ले जाते हैं ।।४७।। सुन्दर दिव्य देहधारी वह पुरुष देवतारूप धारण करता है, वह महानुभाव पुरुष दान के प्रताप से निर्मल वस्त्र तथा माला, रत्न जटित आभरणों से युक्त देवताओं से पूज्यमान हो स्वर्ग में निवास करता है ।। ४८ ।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां नवमोऽध्यायः ।। ९ ।।

ते ।। ४७ ।। सुदिव्यदेहो विरजाम्बरस्रक्सुवर्णरत्नाभरणैरुपेतः ।। दानप्रभावात्स महानुभावः प्राप्नोति नाकं सुरपूज्यमानः ।। ४८ ।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे म्रियमाणकृत्यनिरूपणो नाम नवमोऽध्यायः ।।९।।

गरुड उवाच ।। देहदाहविधानं च विभो सुकृतिनां वद ।। सती यदि भवेत्पत्नी तस्याश्च महिमां वद ।।१।। श्रीभगवानुवाच ।। शृणु तार्क्ष्य प्रवक्ष्यामि सर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् ।। यत्कृत्वा पुत्रपौत्राश्च मुच्यन्ते पैतृकादृणात् ।।२।। किं दत्तैर्बहुभिर्दानैः पित्रोरन्त्येष्टिमाचरेत् ।। तेना-

गरुड़ जी ने कहा :—हे विभो ! सुकृती पुरुषों के देह के दाह का विधान कहिये और यदि उसकी पत्नी साध्वी हो तो उसकी महत्ता भी कहिये ।।१।। श्रीभगवान् ने उत्तर दिया—हे गरुड़ ! सुनो, मैं सब और्ध्वदेहिक (मरने के पीछे के) कर्म को कहूँगा जिसके करने से पुत्र पौत्रादि पिता के ऋण से मुक्त हो जाते हैं ।।२।। दिए हुए बहुत

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से दान से कोई तात्पर्य नहीं (पुत्र उस दान का विचार न करके) माता-पिता की अन्त्येष्टि करे, जिससे पुत्रको अग्निष्टोम यज्ञ के समान फल प्राप्त होता है ।।३।। माता या पिता की मृत्यु के पश्चात् पुत्र शोक को छोड़कर अपने सब पापों को दूर करने के लिये भाई-बन्धुसमेत मुण्डन करावे ।।४।। माता या पिता के मरने के पश्चात् जिस पुत्र ने

ग्निष्टोमसदृशं पुत्रः फलमाप्नुयात् ॥ ३ ॥ तदा शोकं परित्यज्य कारयेन्मुण्डनं सुतः ॥
समस्तबान्धवैर्युक्तः सर्वपापविमुक्तये ॥ ४ ॥ मातापित्रोर्मृतौ येन कारितं मुण्डनं न हि ॥
आत्मजः स कथं ज्ञेयः संसारार्णवतारकः ॥५॥ अतो मुण्डनमावश्यं नखकुक्षिविवर्जितम् ॥
ततः सबान्धवः स्नात्वा धौतवस्त्राणि धारयेत् ॥६॥ सद्यो जलं समानीय ततस्तं स्नापये-
च्छवम् ॥ मण्डयेच्चन्दनैः स्रग्भिर्गङ्गामृत्तिकयाऽथवा ॥ ७ ॥ नवीनवस्त्रैः सञ्छाद्य तदा-
पिण्डं सदक्षिणम् ॥ नामगोत्रे समुच्चार्य संकल्पेनापसव्यतः ॥ ८ ॥ मृत्युस्थाने शवो नाम

मुण्डन नहीं कराया वह संसार रूपी समुद्र को तारनेवाला अपनी आत्मा से उत्पन्न पुत्र किस प्रकार हुआ ?।।५।। इससे नखच्छेदन और काँख के बालों को छोड़कर मुण्डन अवश्य कराना चाहिये। उसके पश्चात् बान्धवों समेत स्नान करके, धौत वस्त्र धारण करे ।।६।। उसी समय ताजा जल मँगवाकर मृतक शरीर को स्नान कराकर फिर चन्दन, माला आदि से अथवा गङ्गा की मृत्तिका से शोभित करे ।। ७ ।। नवीन वस्त्रों से उसे ढाँककर दक्षिणासमेत पिण्ड देवे,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नाम और गोत्र का उच्चारण करके अपसव्य* हो सङ्कल्प करे ॥८॥ मृत्यु स्थान में मृतक नाम के साथ 'शव' त्यागकर पिण्ड दे, उस पिण्ड से भूमि तथा उसके अधिष्ठाता देवता प्रसन्न होते हैं ॥९॥ द्वारदेश में मृतक के नाम के साथ 'पान्थ' शब्द जोड़कर पिण्डदान करे, उस द्वारपिण्ड से भूतों की गणना तथा अशुद्ध स्थान के दुर्गति प्राप्त जीव बाधा करने को समर्थ नहीं होते हैं ॥ १० ॥ उसके बाद प्रदक्षिणा करके पुत्र, पुत्र-वधू आदि के द्वारा उनका पूजन

तस्य नाम्ना प्रदापयेत् ॥ तेन भूमिर्भवेत्तुष्टा तदधिष्ठातृदेवता ॥९॥ द्वारदेशे भवेत्पान्थस्तस्य नाम्ना प्रदापयेत् ॥ तेन नैवोपघाताय भूतकोटिषु दुर्गताः ॥१०॥ ततः प्रदक्षिणां कृत्वा पूजनीयः स्नुषादिभिः ॥ स्कन्धः पुत्रेण दातव्यस्तदाऽन्यैर्बान्धवैः सह ॥११॥ धृत्वा स्कन्धे स्वपितरं यः श्मशानाय गच्छति ॥ सोऽश्वमेधफलं पुत्रो लभते च पदे पदे ॥१२॥ नीत्वा स्कन्धे स्वपृष्ठे वा सदा तातेन लालितः ॥ तदैव तदृणान्मुच्येन्मृतं स्वपितरं वहेत् ॥१३॥

करना चाहिये । ततः पुत्र को कन्धा लगाना चाहिये उसके पश्चात् बान्धवों को कन्धा लगाना चाहिये ॥११॥ पिता को कन्धे पर रखकर जो पुत्र श्मशान तक जाता है, वह पुत्र प्रत्येक पद पर अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करता है ॥ १२ ॥ पिता द्वारा लाड़-प्यार से पाला हुआ पुत्र कन्धे अथवा अपनी पीठ पर अपने मरे हुए पिता को श्मशान

* यज्ञोपवीत दक्षिण कन्धे पर धारण करने को अपसव्य कहते हैं ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ले जाता है तत्काल वह उस ऋण से छूट जाता है ।।१३।। उसके पश्चात् आधे मार्ग में भूमि को शुद्ध करके शव को विश्राम करावे, उसके बाद स्नान कराकर भूत नामक उस प्रेत के लिये पिण्डदान करावे।।१४।।इस पिण्डदान से अन्य दिशामें रहनेवाले प्रेत,पिशाच,राक्षस,यक्ष तथा प्रेत गणादि अग्नि को समर्पण करने के योग्य उस शव को अयोग्य करने

ततोऽर्धमार्गे विश्रामं सम्मार्ज्याभ्युक्ष्य कारयेत् ।। संस्नाप्य भूतसंज्ञाय तस्मै तेन प्रदापयेत् ।।१४।। पिशाचा राक्षसा यक्षा ये चान्ये दिक्षु संस्थिताः ।। तस्य होतव्यदेहस्य नैवायोग्यत्व-कारकाः ।।१५।। ततो नीत्वा श्मशानेषु स्थापयेदुत्तरामुखम् ।। तत्र देहस्य दाहार्थं स्थलं संशोधयेद्यथा ।। १६ ।। संमार्ज्य भूमिं संलिप्योल्लिख्योद्धृत्य च वेदिकाम् ।। अभ्युक्ष्योप-समाधाय वह्निं तत्र विधानतः ।। १७ ।। पुष्पाक्षतैरथाभ्यर्च्य देवं क्रव्यादसंज्ञकम् ।। लोम-भ्यस्त्वनुवाकेन होमं कुर्याद्यथाविधि ।। १८ ।। त्वं भूतभृज्जगद्योनिस्त्वं भूतपरिपालकः ।।

में समर्थ नहीं होते हैं ।।१५।। ततः श्मशान में ले जाकर उत्तराभिमुख रखे । इसके पश्चात् देह जलाने के लिये भूमि का शोधन करे ।।१६।। भूमि झाड़कर और गोबर से लीपकर कुश से रेखा खींचकर बीच में अनामिका—और अँगूठे से थोड़ी मिट्टी उठाकर जल छिड़के, और विधिपूर्वक अग्नि स्थापित करे ।।१७।। क्रव्याद नामक (अर्थात् कच्चे मांस के भक्षक) देव को फूल अक्षत आदि से पूजन कर "लोमभ्यः स्वाहा" इत्यादि अनुवाक वेदमन्त्र से विधिपूर्वक हवन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करे ॥१८॥ ततः प्रार्थना करे—तुम भूतों के धारण करनेवाले हो और जगत् के योनि (उत्पत्तिस्थान) हो और भूतों के पालनेवाले हो, इसलिये मरे हुए इस सांसारिक को तुम स्वर्ग ले जाओ ॥ १९ ॥ इस प्रकार ऐसी अग्नि की प्रार्थना करके वहीं चन्दन, तुलसी की लकड़ी, पलास तथा पीपल की लकड़ियों से चिता बनावे ॥२०॥ हे गरुड़!

मृतः सांसारिकस्तस्मादेनं त्वं स्वर्गतिं नय ॥ १९ ॥ इति सम्प्रार्थयित्वाऽग्निं चितां तत्रैव कारयेत् ॥ श्रीखण्डतुलसीकाष्ठैः पलाशाश्वत्थदारुभिः ॥ २० ॥ चितामारोप्य तं प्रेतं पिण्डौ द्वौ तत्र दापयेत् ॥ चितायां शवहस्ते च प्रेतनाम्ना खगेश्वर ॥ चितामोक्षप्रभृतिकं प्रेतत्वमुपजायते ॥ २१ ॥ केऽपि तं साधकं प्राहुः प्रेतकल्पविदो जनाः ॥ चितायां तेन नाम्ना वा प्रेतनाम्नाऽथवा करे ॥ २२ ॥ इत्येवं पञ्चभिः पिण्डैः शवस्याहुतियोग्यता ॥ अन्यथा चोपघाताय पूर्वोक्तास्ते भवन्ति हि ॥ २३ ॥ प्रेते दत्त्वा पञ्च पिण्डान् हुतमादाय

उस प्रेत को चिता में रखकर, वहाँ चिता में शव के हाथ पर उसके नाम के साथ प्रेत लगाकर दो पिण्ड देवे, चिता में छोड़ने पर शव प्रेतत्वमय होता है ॥ २१ ॥ कुछ प्रेतकल्प के जाननेवाले उसको साधक कहते हैं। चिता में उस (साधक) नाम से अथवा प्रेत के नाम से पिण्ड हाथ में देवे ॥ २२ ॥ इस प्रकार पाँच पिण्ड-दान के पश्चात् शव (जलाने) योग्य होता है, अन्यथा (पाँच पिण्ड न देने से) पहले कहे हुए भूतादि विघ्न के लिये उपस्थित होते

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हैं ॥२३॥ प्रेत को पाँच पिण्ड देकर पहले 'लोमभ्यः स्वाहा' इस अनुवाक से होम की हुई अग्नि को तृणों में लेकर पुत्र अग्नि देवे (जो अग्निहोत्री हैं उनको अग्निहोत्र से लेकर देवे) यदि पंचक न हो तभी दाह करे ॥ २४ ॥ जो लोग पञ्चक में मरते हैं वे सद्गति को प्राप्त नहीं होते हैं। अतः पञ्चक में दाह न करना चाहिये। यदि किया

तं तृणैः ॥ अग्निं पुत्रस्तदा दद्यान्न भवेत्पञ्चकं यदि ॥२४॥ पञ्चकेषु मृता यस्तु न गतिं लभते नरः ॥ दाहस्तत्र न कर्तव्यः कृतेऽन्यमरणं भवेत् ॥ २५ ॥ आदौ कृत्वा धनिष्ठार्धमेतन्नक्षत्रपञ्चकम् ॥ रेवत्यन्तं न दाहेऽर्हं दाहे च न शुभं भवेत् ॥ २६ ॥ गृहे हानिर्भवेत्तस्य ऋक्षेष्वेषु मृतो हि यः ॥ पुत्राणां गोत्रिणां चापि कश्चिद्विघ्नः प्रजायते ॥२७॥ अथवा ऋक्षमध्ये हि दाहः स्याद्विधिपूर्वकः ॥ तद्विधिं ते प्रवक्ष्यामि सर्वदोषप्रशान्तये ॥२८॥ शवस्य निकटे तार्क्ष्य निःक्षिपेत्पुत्तलांस्तदा ॥ दर्भमयांश्च चतुर ऋक्षमन्त्राभिमन्त्रि-

जाय तो दूसरे का मरण होता है ॥२५॥ धनिष्ठा के अन्तिम आधे भाग से रेवती तक ये पाँच नक्षत्र दाह में योग्य नहीं हैं और यदि दाह करे तो शुभ नहीं होता ॥ २६ ॥ जो लोग इन पाँचों नक्षत्रों में मरते हैं, उनके पुत्रों तथा गोत्रवालों में कोई विघ्न होता है ॥२७॥ अथवा जिस विधि से उक्त पाँचों नक्षत्रों में ही विधिपूर्वक दाह तथा उसके सब दोषों की शान्ति हो उस विधि को मैं तुमसे कहूँगा ॥ २८ ॥ हे गरुड़! मृतक के निकट चार पुतलों को रखे, वे पुतले

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुशा के बने हों और शेष नक्षत्रों के मन्त्रों से अभिमन्त्रित हों ॥२९॥ सोना तपाना चाहिये। उस स्वर्ण में शेष चार नक्षत्रों का नाम अङ्कित कराना चाहिये और 'प्रेताजयत' इस मन्त्र से प्रेतनाम को सम्पुट करके हवन करना चाहिये ॥३०॥ उसके पश्चात् उन पुतलों के साथ शव-दाह करना चाहिये पुत्र और सपिण्डी के दिन उसकी शान्ति

तान् ॥ २९ ॥ तप्तहेम प्रकर्तव्यं वहन्ति ऋक्षनामभिः ॥ "प्रेताजयत" मन्त्रेण पुनर्होमस्तु सम्पुटैः ॥ ३० ॥ ततो दाहः प्रकर्तव्यस्तैश्च पुत्तलकैः सह ॥ सपिण्डदिवसे कुर्यात्तस्य शान्तिविधिं सुतः ॥ ३१ ॥ तिलपात्रं हिरण्यं च रूप्यं रत्नं यथाक्रमम् ॥ घृतपूर्णं कांस्यपात्रं दद्याद्दोषप्रशान्तये ॥ ३२ ॥ एवं शान्तिविधानं तु कृत्वा दाहं करोति यः ॥ न तस्य विघ्नो जायेत प्रेतो याति परां गतिम् ॥ ३३ ॥ एवं पञ्चकदाहः स्यात्तद्विना केवलं दहेत् ॥ सती यदि भवेत्पत्नी तया सह विनिर्दहेत् ॥३४॥ पतिव्रता यदा नारी भर्तुः प्रियहिते रता ॥

विधिपूर्वक करे ॥३१॥ तिल का पात्र, सुवर्ण, चाँदी व रत्न; (घी भरा) काँसे का पात्र धनिष्ठादि नक्षत्रों के क्रम से दोष की शान्ति के लिये दान करे ॥३२॥ ऐसे शान्ति-विधान करके जो दाह करता है उसे विघ्न नहीं होता है और प्रेत परमगति को प्राप्त होता है ॥३३॥ इस प्रकार पञ्चक में दाह होता है। पञ्चक के न रहने पर अकेला ही जलावे। यदि पत्नी सती स्त्री हो तो उसके साथ जलावे ॥३४॥ जो नारी पतिव्रता हो और पति के हित में तत्पर हो और

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पतिके साथ जाना चाहे तो स्नान करे ॥३५॥ कुंकुम, अञ्जन, उत्तम वस्त्र, भूषण से शरीर को भूषित करे और ब्राह्मणों बन्धुवर्गों को दान दे ॥३६॥ उसके बाद गुरु को नमस्कार करके घर से बाहर निकले, उसके बाद देवालय में जाकर भक्ति से हरि को प्रणाम करे ॥३७॥ वहाँ भगवान् को आभरण देकर और श्रीफल ग्रहण कर लज्जा तथा मोह

इच्छेत्सहैव गमनं तदा स्नानं समाचरेत् ॥ ३५ ॥ कुङ्कुमाञ्जनसद्वस्त्रैर्भूषणैर्भूषितां तनुम् ॥ दानं दद्याद् द्विजातिभ्यो बन्धुवर्गेभ्य एव च ॥ ३६ ॥ गुरुं नमस्कृत्य तदा निर्गच्छेन्मन्दिराद् बहिः ॥ ततो देवालयं गत्वा भक्त्वा तं प्रणमेद्धरिम् ॥ ३७ ॥ समर्प्याभरणं तत्र श्रीफलं परिगृह्य च ॥ लज्जां मोहं परित्यज्य श्मशानभवनं व्रजेत् ॥३८॥ तत्र सूर्यं नमस्कृत्य परिक्रम्य चितां तदा ॥ पुष्पशय्यां तदाऽऽरोहेन्निजाङ्के स्त्रापयेत्पतिम् ॥ ३९ ॥ सखिभ्यः श्रीफलं दद्याद्दाहमाज्ञापयेत्ततः ॥ गङ्गास्नानसमं ज्ञात्वा शरीरं परिदाहयेत् ॥ ॥४०॥ न दहेद् गर्भिणी नारी शरीरं पतिना सह ॥ जनयित्वा प्रसूतिं च बालं पोष्य सती

छोड़, श्मशान भूमि में जाय ॥३८॥ वहाँ सूर्य को नमस्कार कर और चिता की परिक्रमा करे तब चिताको फूल की सेज के समान समझकर उस पर चढ़े और अपनी गोदी में पतिको सुलावे ॥३९॥ सखियों को श्रीफल दे। उसके बाद दाह की आज्ञा दे, अग्नि की लपटों को गङ्गास्नान के समान जानकर अपने शरीर को जलावे ॥४०॥ गर्भिणी स्त्री पति

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

के साथ शरीर न जलावे अपितु सन्तति को उत्पन्न करके उसका पालन करके तब सती हो ॥४१॥ जो नारी भर्ता (पति) के साथ शरीर को जलाती है, अग्नि उसके शरीर को जला देती है किन्तु आत्मा को कष्ट नहीं होता है ॥४२॥ जैसे धौंकी हुई आग में धातुओं का मल जल जाता है वैसे ही नारी अमृत के समान अग्नि में अपने पापों को जला

भवेत् ॥४१॥ नारी भर्तारमासाद्य शरीरं दहते यदि। अग्निर्दहति गात्राणि नैवात्मानं प्रपीडयेत् ॥४२॥ दह्यते ध्मायमानानां धातूनां च यथा मलः ॥ तथा नारी दहेत्पापं हुताशे ह्यमृतोपमे ॥४३॥ दिव्यादौ सत्ययुक्तश्च शुद्धो धर्मयुतो नरः ॥ यथा न दह्यते तप्तलोहपिण्डेन कर्हिचित् ॥४४॥ तथा सा पतिसंयुक्ता दह्यते न कदाचना ॥ अन्तरात्मात्मना भर्त्रा मृतेनैकत्वमागता ॥४५॥ यावच्चाग्नौ मृते पत्यौ स्त्री नात्मानं प्रदाहयेत् ॥ तावन्न मुच्यते सा हि स्त्री शरीरात्कथञ्चन ॥ ४६ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन स्वपतिं सेवयेत्सदा ॥ कर्मणा मनसा

देती है ॥४३॥ शपथ आदि अग्नि से सत्ययुक्त धर्मात्मा मनुष्य शुद्ध होता है और जैसे धातु तपाये हुए लोहे के पिण्ड से कभी नहीं जलती है अपितु शुद्ध हो जाती है ॥४४॥ ऐसे ही वह स्त्री पति के साथ पति समेत कभी जलती नहीं है, अपितु उसकी अन्तरात्मा मरे हुए पति की आत्मा के साथ एकरूप हो जाती है ॥४५॥ पति के मरने पर जब तक स्त्री अपनी देह को नहीं जलाती है, तब तक वह स्त्री के शरीर से कभी भी नहीं छूटती है ॥४६॥ इसलिये

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सब यत्न से, कर्म से, मन से, वचन से सदा अपने जीवित पति का सेवन करे और मरने पर उसके साथ जाय ।।४७।। पति के मरने पर जो नारी अग्नि में प्रवेश करती है वह अरुन्धती के समान होकर स्वर्गलोक में आनन्द करती है ।।४८।। स्वर्ग में वह पति से युक्त रहती है, रूपवती अप्सरायें उनकी स्तुति करती हैं। जब तक चौदहों इन्द्र

वाचा पत्यौ जीवति तद्गता ।।४७।। मृते भर्त्तरि या नारी समारोहेद्धुताशनम् ।। साऽरु-
न्धतीसमा भूत्वा स्वर्गलोके महीयते ।।४८।। तत्र सा भर्तृसहिता स्तूयमानाऽप्सरोगणैः ।।
रमते पतिना सार्धं यावदिन्द्राश्चतुर्दश ।। ४९ ।। मातृकं पैतृकं चैव यत्र सा च प्रदीयते ।।
कुलत्रयं पुनात्यत्र भर्तारं याऽनुगच्छसि ।। ५० ।। तिस्रः कोटयोऽर्द्धकोटी च यानि रोमाणि
मानुषे ।। तावत्कालं वसेत्स्वर्गे पतिना सह मोदते ।। ५१ ।। विमाने सूर्यसंकाशे क्रीडते
रमणेन सा ।। यावदादित्यचन्द्रौ च भर्तृलोके चिरं वसेत् ।। ५२ ।। पुनश्चिरायु सा भूत्वा

रहते हैं, तब तक वह स्त्री पति के साथ विहार करती है ।।४९।। पति के साथ सती होनेवाली स्त्री माता, पिता और पति इन तीनों कुलों को पवित्र करती है ।।५०।। साढ़े तीन करोड़ रोम मनुष्य के देह में हैं उतने काल पर्यन्त वह स्त्री स्वर्गलोक में पति के साथ आनन्द करती है ।।५१।। सूर्य के समान कान्ति वाले विमान में पति के साथ विहार करती है और जब तक सूर्य-चन्द्रमा प्रकाश करते हैं तब तक भर्ता के लोक में चिरकाल वास करती है ।।५२।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

फिर पतिव्रता नारी अधिक आयु लेकर निर्मल कुल में उत्पन्न होती है और उसी पति को प्राप्त होती है ॥५३॥ जो विधवा क्षण भर के दाह-दुख से डरकर ऐसे सुख को छोड़ देती है वह मूर्खा जन्मपर्यन्त विरहकी आग में जलती है ॥५४॥ इसलिये पति को शिव जानकर उसके साथ स्त्री अपना शरीर जलावे। हे गरुड़! जो स्त्री सती नहीं है

जायते विमले कुले ॥ पतिव्रता तु या नारी तमेव लभते पतिम् ॥ ५३ ॥ या क्षणं दाह-दुःखेन सुखमेतादृशं त्यजेत् ॥ सा मूढा जन्मपर्यन्तं दह्यते विरहाग्निना ॥५४॥ तस्मात्पतिं शिवं ज्ञात्वा सह तेन दहेत्तनुम् ॥ यदि न स्यात्सती तार्क्ष्य तमेव प्रदहेत्तदा ॥५५॥ अर्धे दग्धेऽथवा पूर्णे स्फोटयेत्तस्य मस्तकम् ॥ गृहस्थानां तु काष्ठेन यतीनां श्रीफलेन च ॥५६॥ प्राप्तये पितृलोकानां भित्त्वा तद्ब्रह्मरन्ध्रकम् ॥ आज्याहुतिं ततो दद्यान्मन्त्रेणानेन तत्सुतः ॥ ५७ ॥ अस्मात्त्वमधिजातोऽसि त्वदयं जायतां पुनः ॥ असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा

तो उसे भी जलावे ॥५५॥ आधा दग्ध होने पर अथवा पूरा दग्ध होने पर उस मृतक के मस्तक को फोड़े। गृहस्थों का मस्तक काष्ठ से और यतियों का मस्तक श्रीफल से फोड़े ॥५६॥ मृतक का पुत्र ब्रह्मलोक की प्राप्ति के लिये ब्रह्मरन्ध्र को भेदकर उसको इस मन्त्र से घी की आहुति दे ॥५७॥ हे पावक! तुम ब्रह्म से उत्पन्न हो और तुम्हारे द्वारा स्वर्गलोक जाने के लिए इस जीव का तेजोमय-दिव्य-शरीर उत्पन्न हो और शव का यह स्थूल देह तुममें हवि हो,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसलिये तुम प्रज्वलित होवो ॥५८॥ इस प्रकार तिलयुक्त मन्त्रसहित आहुति देकर उसके बाद खूब रोना चाहिये, इससे वह मृतक प्राणी सुखी होता है ॥५९॥ दाह के पश्चात् पहले स्त्री को और पीछे पुत्रको स्नान करना चाहिये, उस मृतक का नाम गोत्र कहकर तिलाञ्जलि देवे ॥६०॥ पीछे नीम की पत्ती दाँतों से कतरे और मृतक के गुणों

ज्वलतु पावकः ॥ ५८ ॥ एवमाज्याहुतिं दत्त्वा तिलमिश्रां समन्त्रकाम् ॥ रोदितव्यं ततो गाढं तेन तस्य सुखं भवेत् ॥५९॥ दाहादनन्तरं कार्यं स्त्रीभिः स्नानं ततः सुतैः ॥ तिलोदकं ततो दद्यान्नामगोत्रोपकल्पितम् ॥ ६० ॥ प्राशयेन्निम्बपत्राणि मृतकस्य गुणान् वदेत् ॥ स्त्रीजनोऽग्रे गृहं गच्छेत् पृष्ठतो नरसञ्चयः ॥६१॥ गृहे स्नानं पुनः कृत्वा गोग्रासं च प्रदापयेत् ॥ पत्रावल्यां च भुञ्जीयाद् गृहान्नं नैव भक्षयेत् ॥६२॥ मृतकस्थानमालिप्य दक्षिणाभिमुखं ततः ॥ द्वादशाहकपर्यन्तं दीपं कुर्यादहर्निशम् ॥ ६३ ॥ सूर्येऽस्तमागते तार्क्ष्य श्मशाने वा चतुष्पदे ॥ दुग्धं च मृण्मये पात्रे तोयं दद्याद्दिनत्रयम् ॥ ६४॥ अपक्वमृण्मयं

का वर्णन करे। पहले स्त्री घर जाय पीछे और मनुष्यों को जाना चाहिये ॥६१॥ घर में फिर स्नान करके गोग्रास दे, पत्रावली (पत्तल) में भोजन करे और घर का अन्न न खाय ॥६२॥ दक्षिणामुख होकर मृतक-स्थान को लीपे, फिर बारह दिन तक रात दिन दीपक जलावे ॥६३॥ हे गरुड़ ! सूर्य के अस्त होने पर श्मशान में अथवा चौराहे में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मिट्टी के पात्र में तीन दिन तक दूध और जल देवे ॥६४॥ दूध और जल भरा हुआ कच्चा मिट्टी का पात्र सूत से बँधी हुई तीन लकड़ी के ऊपर रखकर यह मन्त्र पढ़े ॥ ६५ ॥ (हे मृतक!) तुम श्मशान में आग से जलाये गये हो और बान्धवों से त्याग किये गये हो, यह जल और यह दूध है, यहाँ इस जल से स्नान करो और दूध पीवो ॥६६॥

पात्रं क्षीरनीरप्रपूरितम् ॥ काष्ठत्रयं गुणैर्बद्धं धृत्वा मन्त्रं पठेदिमम् ॥६५॥ श्मशानानल-दग्धोऽसि परित्यक्तोऽसि बान्धवैः ॥ इदं नीरमिदं क्षीरमत्र स्नाहि इदं पिब ॥६६॥ चतुर्थे सञ्चयः कार्यः साग्निकैश्च निरग्निकैः ॥ तृतीयेऽह्नि द्वितीये वा कर्तव्य श्चाविरोधतः ॥६७॥ गत्वा श्मशानभूमिं च स्नानं कृत्वा शुचिर्भवेत् ॥ ऊर्णासूत्रं वेष्टयित्वा पवित्रीं परिधाय च ॥६८॥ दद्यात् श्मशानवासिभ्यस्ततो माषबलिं सुतः ॥ यमाय त्वेति मन्त्रेण तिस्रः कुर्यात्परिक्रमाः ॥ ६९ ॥ ततो दुग्धेन चाभ्युक्ष्य चितास्थानं खगेश्वर ॥ जलेन सेचये-

अग्निहोत्र वाले पुरुष का चौथे दिन अस्थि सञ्चय करना चाहिये और जो अग्निरहित हैं उनका अस्थि सञ्चय निर्विरोध तीसरे दिन करना योग्य है ॥ ६७ ॥ श्मशान भूमि में जाकर स्नान करके शुद्ध होवे और ऊन का सूत लपेट के पवित्री धारण करे ॥६८॥ तब पुत्र श्मशान-वासियों के लिये "यमाय" त्वा० इस मन्त्र से माषबलि देवे और तीन परिक्रमा करे ॥६९॥ हे गरुड़! तदनन्तर चिता स्थान को दूध छिड़क कर जल से सींचे तब अस्थिसञ्चय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करे ॥७०॥ उन अस्थियों को पलाश के पत्ते पर रखकर दूध और जल से धोवे, फिर मिट्टी के पात्र में रख के विधिपूर्वक श्राद्ध करे ॥७१॥ तिकोना स्थण्डिल करके गोबर से लीपे, फिर दक्षिणाभिमुख हो तीन दिशा में तीन पिण्ड देवे ॥७२॥ चिता की भस्म को इकट्ठा करके वहाँ त्रिपादुका करे और खुला हुआ घट जल भर कर स्थापित

त्पश्चादुद्धरेदस्थिवृन्दकम् ॥ ७० ॥ कृत्वा पलाशपत्रेषु क्षालयेद्दुग्धवारिभिः ॥ संस्थाप्य मृण्मये पात्रे श्राद्ध कुर्याद्यथाविधि ॥ ७१ ॥ त्रिकोण स्थण्डिलं कृत्वा गोमयेनोपलेपितम् ॥ दक्षिणाभिमुखो दिक्षु दद्यात्पिण्डत्रयं त्रिषु ॥ ७२ ॥ पुञ्जीकृत्य चिताभस्म तत्र धृत्वा त्रिपादुकाम् ॥ स्थापयेत्तत्र सजलमनाच्छाद्य मुखं घटम् ॥ ७३ ॥ ततस्तण्डुलपाकेन दधिघृतसमन्वितम् ॥ बलिं प्रेताय सजलं दद्यान्मिष्टं यथाविधि ॥ ७४ ॥ पदानि दश पञ्चैव चोत्तरस्यां दिशि व्रजेत् ॥ गर्तं विधाय तत्रास्थिपात्रं संस्थापयेत्खग ॥ ७५ ॥ तस्योपरि ततो दद्यात्पिण्डं दाहार्तिनाशकम् ॥ गर्तादुद्धृत्य तत्पात्रं नीत्वा गच्छेज्जलाशयम् ॥७६॥

करे ॥७३॥ इसके पश्चात् चावल पकाकर दही और घी मिलाकर विधिपूर्वक जलसमेत मीठी बलि प्रेत के लिये दे ॥ ७४ ॥ पन्द्रह पग उत्तर दिशा में चले, हे गरुड़! वहाँ गड्ढा खोदकर हड्डी के पात्र को गाड़ दे ॥ ७५ ॥ उसके ऊपर दाह पीड़ा को नाश करने वाले पिण्ड देकर गड्ढे से उस पात्र को निकाल कर जलाशय पर जाय ॥७६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वहां दूध और जल से बारम्बार हड्डियों को धोवे, फिर उनको चन्दन से और विशेषकर कुंकुम से लिप्त करे ॥७७॥ उनको कर-सम्पुट में रखकर हृदय और मस्तक में लगावे फिर परिक्रमा और नमस्कार कर गङ्गा के मध्य में डाल दे ॥७८॥ दस दिन के भीतर जिसकी हड्डी गङ्गा के जल में डूबती है उनकी पुनरावृत्ति नहीं होती है ॥७९॥

तत्र प्रक्षालयेद्दुग्धजलादस्थि पुनः पुनः ॥ चर्चयेच्चन्दनेनाथ कुङ्कुमेन विशेषतः ॥ ७७ ॥ धृत्वा सम्पुटके तानि कृत्वा च हृदि मस्तके ॥ परिक्रम्य नमस्कृत्य गङ्गामध्ये विनिक्षिपेत् ॥ ७८ ॥ अन्तर्दशाहं यस्यास्थि गङ्गातोये निमज्जति ॥ न तस्य पुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्कदाचन ॥ ७९ ॥ यावदस्थि मनुष्यस्य गङ्गातोयेषु तिष्ठति ॥ तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥ ८० ॥ गङ्गाजलोर्मिं संस्पृश्य मृतकं पवनो यदा ॥ स्पृशते पातकं तस्य सद्य एव विनश्यति ॥ ८१ ॥ आराध्य तपसोग्रेण गङ्गादेवीं भगीरथः ॥ उद्धारार्थं पूर्वजानामानयद्ब्रह्मलोकतः ॥ ८२ ॥ त्रिषु लोकेषु विख्यातं गङ्गायाः पावनं यशः ॥ या पुत्रान्सगर-

जितने वर्ष तक मनुष्य की हड्डी गङ्गाजल में स्थित रहती है उतने ही हजार वर्ष तक वह स्वर्गलोक में आनन्द करता है ॥८०॥ गङ्गाजल की लहरों को छूकर पवन जब मृतक का स्पर्श करता है तो उसका पाप शीघ्र ही नाश हो जाता है ॥८१॥ राजा भगीरथ उग्रतप से आराधनाकर अपने पूर्व पुरुषोंके उद्धार के लिये गङ्गादेवीको ब्रह्मलोकसे लाये॥८२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गङ्गा का पवित्र यश तीनों लोक में प्रसिद्ध है, जिस गङ्गा ने भस्म मात्र अवशेष वाले ६० हजार सगर के पुत्रों को स्वर्ग में पहुँचा दिया ॥८३॥ जो मनुष्य पहली अवस्था में पाप करके मर गये, वे गङ्गा में हड्डी गिरने से स्वर्गलोक को जाते हैं ॥८४॥ किसी बड़े वन में सब प्राणियों को मारनेवाला कोई व्याधा सिंह से मारा गया। वह नरक

स्यैतान्भस्माख्याननयद्दिवम् ॥८३॥ पूर्वेवयसि पापानि ये कृत्वा मानवा मृताः ॥ गङ्गाया-मस्थिपतनात्स्वर्गलोकं प्रयान्ति ते ॥ ८४ ॥ कश्चिद्व्याधो महारण्ये सर्वप्राणिविहिंसकः ॥ सिंहेन निहतो यावत्प्रयाति नरकालयम् ॥ ८५ ॥ तावत्कालेन तस्यास्थि गङ्गायां पतितं स्तदा ॥ दिव्यं विमानमारुह्य स गतो देवमंदिरम् ॥८६॥ अतः स्वयं हि सत्पुत्रो गङ्गाया-मस्थि पातयेत् ॥ अस्थिसञ्चयनादूर्ध्वं दशगात्रं समाचरेत् ॥ ८७ ॥ अथ कश्चिद्विदेशे वा वने चौरभये मृतः ॥ न लब्धस्तस्य देहश्चेच्छृणुयाद्यद्दिने तदा ॥८८॥ दर्भपुत्तलकं कृत्वा

जा रहा था ॥८५॥ उसी काल में उसकी हड्डी गङ्गा में गिर पड़ी तब वह दिव्य विमान पर चढ़कर देवलोक को गया ॥८६॥ (गङ्गा ही मुक्ति को देनेवाली हैं) इसी कारण से हड्डी को सत्पुत्र गंगा में स्वयं ही ले जाकर डाले और अस्थिसञ्चयन के पीछे दशगात्र करे ॥८७॥ कोई पुरुष विदेश में, वन में अथवा चोरों के भय से मर गया हो और उसकी देह न मिली हो तो जिस दिन उसके मरण का संवाद सुने उसी दिन ॥८८॥ केवल कुशा का पुतला

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बनाकर पूर्वोक्त विधि से दाह करे और उसका भस्म लेकर गंगा-जल में प्रवाहित कर दे ।।८९।। उसी दिन से दशगात्र-विधान आदि करे और सांवत्सरिक श्राद्ध आदि में वही दिन लेना चाहिये ।।९०।। जो गर्भ पूरा होने पर नारी मर जाय तो पेट चीरकर बालक को निकालकर उसे भूमि में गाड़ दे और उस स्त्री का दाह करे ।।९०।। गङ्गा के तीर में

पूर्ववत्केवलं दहेत् ॥ तस्य भस्म समादाय गङ्गातोये विनिक्षिपेत् ॥ ८९ ॥ दशगात्रादिकं कर्म तद्दिनादेव कारयेत् ॥ स एव दिवसो ग्राह्यः श्राद्धे सांवत्सरादिके ॥९०॥ पूर्णे गर्भे मृता नारी विदार्य जठरं तदा ॥ बालं निष्कास्य निक्षिप्य भूमौ तामेव दाहयेत् ॥ ९१ ॥ गङ्गातीरे मृतं बालं गङ्गायामेव पातयेत् ॥ अन्यदेशे क्षिपेद्भूमौ सप्तविंशतिमासजम् ॥९२॥ अतः परं दहेत्तस्य गङ्गायामस्थि निक्षिपेत् ॥ जलकुम्भश्च दातव्यो बालानामेव भोजनम् ॥९३॥ गर्भे नष्टे क्रिया नास्ति दुग्धं देयं मृते शिशौ ॥ घटं च पायसंभोज्यं दद्याद्बालविप-

जो बालक मरे उसको गङ्गा ही में बहा दे। अन्य देश में सत्ताईस महीने तक के बालक को भूमि में गाड़ दे ।।९२।। सत्ताईस महीने से अधिक अवस्था के बालक का दाहकर्म करे और उसकी हड्डी गङ्गा में बहावे । जल का घट और भोजन बालक को देना चाहिये ।।९३।। गर्भ के नष्ट होने पर क्रिया नहीं है और बालक के मरने पर दूध देना चाहिये, पानी का घट और खीर भोजन ही बालक के मरने में उसके निमित्त देना चाहिये ।।९४।। कुमार बालक के मरने पर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुमार को ही खिलावे और यदि उपनीत कुमार मरे तो व्रती उसके निमित्त बालक-समेत ब्राह्मणों को भोजन करावे ॥९५॥ वर्ष की अवस्था के उपरान्त यज्ञोपवीत समेत अथवा बिना यज्ञोपवीत हुआ बालक मरे तो उसे खीर वा गुड़ से दश पाँच पिण्ड देवे॥९६॥ कुमार का एकादशाह और द्वादशाह सामान्य रीति से करना चाहिये; वृषोत्सर्ग, महादान,

त्तिषु ॥ ९४ ॥ कुमारे च मृते बालान् कुमारानेव भोजयेत् ॥ सबालान्भोजयेद्विप्रान्पौगण्डे सव्रते मृते ॥ ९५ ॥ मृतश्च पञ्चमादूर्ध्वमव्रतः सव्रतोऽपि वा ॥ पायसेन गुडेनापि पिण्डान्दद्याद्दश क्रमात् ॥९६॥ एकादशं द्वादशं च वृषोत्सर्गविधिं विना ॥ महादानविहीनं च पौगण्डे कृत्यमाचरेत् ॥ ९७ ॥ जीवमाने च पितरि न पौगण्डे सपिण्डनम् ॥ अतस्तस्य द्वादशाहन्येकोद्दिष्ट समाचरेत् ॥ ९८ ॥ स्त्रीशूद्राणां विवाहस्तु व्रतस्थाने प्रकीर्तितः ॥ व्रतात्प्राक्सर्ववर्णानां वयस्तुल्या क्रिया भवेत् ॥ ९९ ॥ स्वल्पात्कर्मप्रसङ्गाच्च स्वल्पाद्विषय-

शय्यादान आदि कार्य न करे ॥९७॥ पिता के जीते हुए कुमार अवस्थावाले मृतक का सपिण्डन नहीं होता है, इसलिये बारहवें दिन उसका एकोद्दिष्ट श्राद्ध कर देना चाहिये ॥९८॥ स्त्री और शूद्रों को यज्ञोपवीत संस्कार के स्थान में विवाह ही कहा गया है। व्रतबन्ध के पहले की अवस्था सभी जातियों के मृतकों की क्रिया तुल्य होती है ॥ ९९ ॥ थोड़े कर्म-प्रसङ्ग से, स्वल्प ही विषय-वासना के बन्धन से, स्वल्प ही अवस्था में, देह के स्वल्प होने से अन्तिम क्रिया

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भी स्वल्प ही करने की इच्छा होती है ॥१००॥ किशोर तथा तरुण अवस्था के प्रेत-कर्म में शय्या और वृषोत्सर्ग आदि करे, पददान, महादान और गोदान भी करावे ॥१०१॥ सब यतियों का न तो दाह है और न उदकक्रिया है और उनके पुत्र आदिको उनका दशगात्र आदि भी न करना चाहिये ॥१०२॥ दण्ड के ग्रहणमात्र ही से नर नारायण रूप हो

वन्धनात् ॥ स्वल्पे वयसि देहे च क्रियां स्वल्पामपीच्छति ॥ १०० ॥ किशोरे तरुणे कुर्या-
च्छय्यावृषमखादिकम् ॥ पददानं महादानं गोदानमपि दापयेत् ॥ १०१ ॥ यतीनां चैव
सर्वेषां न दाहो नोदकक्रिया ॥ दशगात्रादिकं तेषांन्कर्त्तव्यं सुतादिभिः ॥ १०२ ॥ दण्ड-
ग्रहणमात्रेण नरो नारायणो भवेत् ॥ त्रिदण्डग्रहणात्तेषां प्रेतत्वं नैव जायते ॥ १०३ ॥
ज्ञानिनस्तु सदा मुक्ताः स्वरूपानुभवेन हि ॥ अतस्ते तु प्रदत्तानां पिण्डानां नैव कांक्षिणः
॥१०४॥ तस्मात्पिण्डादिकं तेषां न तु नोदकमाचरेत् ॥ तीर्थश्राद्धं गयाश्राद्धं पितृभक्त्या
समाचरेत् ॥ १०५ ॥ हंसं परमहंसं च कुटीचकबहूदकौ ॥ एतान्संन्यासिनस्तार्क्ष्य पृथिव्यां

जाता है और त्रिदण्ड के ग्रहण से प्रेतत्व नहीं होता है ॥१०३॥ ज्ञानी लोग आत्मस्वरूप के अनुभव से सदा मुक्त होते हैं, इसीलिये पुत्र द्वारा दिये हुए पिण्ड की अभिलाषा वे नहीं करते हैं ॥१०४॥ अतः उनका पिण्डदान और जलदान आदि न करे, किन्तु पिता की भक्ति से तीर्थश्राद्ध और गयाश्राद्ध आदि करे ॥१०५॥ हंस, परमहंस, कुटीचक औ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बहूदक, इन संन्यासियों को मरने पर हे गरुड़! भूमि में स्थापित करे ॥१०६॥ गङ्गा आदि नदियों के न होने पर पृथ्वी में गाड़ना कहा गया है और जहाँ महानदी हैं, वहाँ उन्हीं में प्रवाह कर दे ॥१०७॥

इति श्रीगरुड़पुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां दाहास्थिसञ्चयकर्म निरूपणंनाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥

स्थापयेन्मृतान् ॥ १०६ ॥ गङ्गादीनामभावे हि पृथिव्यां स्थापनं स्मृतम् ॥ यत्र सन्ति महानद्यस्तदा तास्वेव निःक्षिपेत् ॥ १०७ ॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे दाहास्थिसञ्चयकर्मनिरूपणं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

गरुड उवाच ॥ दशगात्रविधिं ब्रूहि कृते किं सुकृतं भवेत् ॥ पुत्राभावे तु कः कुर्यात्तन्मे ब्रूहि जनार्दन ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु तार्क्ष्य प्रवक्ष्यामि दशगात्रविधिं तव ॥ यद्विधाय च सत्पुत्र मुच्यते पैतृकादृणात् ॥ २ ॥ पुत्रः शोकं परित्यज्य धृतिमास्थाय

गरुड़जी ने पूछा--हे केशव! दशगात्र की विधि कहिये, उसके करने से क्या सुकृत होता है? और पुत्र के न होने पर यह क्रिया कौन करे? यह सब मुझसे कहिये॥१॥ श्रीभगवान्‌ने उत्तर दिया--हे गरुड़! सुनो, मैं तुमसे दशगात्र की विधि कहता हूँ जिसके करने से सत्पुत्र पिता के ऋण से मुक्त हो जाता है॥२॥ पुत्रशोक को छोड़ और

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सत्त्वगुणी होकर धैर्य धारण कर पिता का पिण्ड आदि करे, आँसू न बहावे ॥३॥ बान्धवों से त्याग किये गये खखार और आँसू को प्रेत बाध्य होकर खाते हैं, इसलिए शोक के कारण व्यर्थ रोना न चाहिये ॥४॥ मनुष्य हजार वर्ष तक रात-दिन शोक करे तब भी मरा हुआ कभी भी नहीं दिखाई देगा ॥५॥ जन्मे हुए की निश्चय ही मृत्यु

सात्त्विकीम् ॥ पितुः पिण्डादिकं कुर्यादश्रुपातं न कारयेत् ॥ ३ ॥ श्लेष्माश्रु बान्धवैर्मुक्तं प्रेतो भुङ्क्ते यतोऽवशः ॥ अतो न रोदितव्यं हि तदा शोकान्निरर्थकात् ॥ ४ ॥ यदि वर्षसहस्राणि शोचतेऽहर्निशं नरः ॥ तथापि नैव निधनं गतो दृश्येत कर्हिचित् ॥ ५ ॥ जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ॥ तस्मादपरिहार्येऽर्थे न शोकं कारयेद् बुधः ॥ ६ ॥ न हि कश्चिदुपायोऽस्ति दैवो वा मानुषोऽपि वा ॥ यो हि मृत्युवशं प्राप्तो जन्तुः पुनरिहाव्रजेत् ॥ ७ ॥ अवश्यंभाविभावानां प्रतीकारो भवेद्यदि ॥ तदा दुःखैर्न युज्येरन्नलरामयुधिष्ठिराः ॥ ८ ॥ नायमत्यन्तसंवासः कस्यचित्केनचित्सह ॥ अपि स्वस्य

होती है और मरे हुए का निश्चय जन्म होता है, अतः इस अनिवार्य आवागमन के लिये पण्डित कदापि शोक न करे ॥६॥ दैवी अथवा मानुषी ऐसी कोई विधि नहीं है जिससे मरा हुआ जीव फिर यहाँ आवे ॥७॥ अनिवार्य होनेवाली भावी का यदि कुछ भी उपाय होता तो राजा नल, रामचन्द्र और युधिष्ठिर दुःख से युक्त न होते ॥८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अपने शरीर से भी किसी के साथ किसी तरह अत्यन्त सहवास नहीं होता है तो पृथक् जनों का क्या कहना है ? ॥९॥ जैसे कोई यात्री छाया का सहारा लेकर विश्राम करता है और विश्राम लेकर फिर अपने मार्ग पर चल देता है ऐसे ही प्राणियों का सम्बन्ध और आवागमन है ॥१०॥ प्रातःकाल जो भोजनयोग्य वस्तु बनाई जाती है सायंकाल में वह

शरीरेण किमुतान्यैः पृथग्जनैः ॥ ९ ॥ यथा हि पथिकः कश्चिच्छायामाश्रित्य विश्रमेत् ॥
विश्रम्य च पुनर्गच्छेत्तद्वद्भूत समागमः ॥ १० ॥ यत्प्रातः संस्कृतं भोज्यं सायं तच्च
विनश्यति ॥ तदन्नरससम्पुष्टे काये का नाम नित्यता ॥ ११ ॥ भैषज्यमेतद् दुःखस्य
विचारं परिचिन्त्य च ॥ अज्ञानप्रभवं शोकं त्यक्त्वा कुर्यात्क्रियां सुतः ॥ १२ ॥ पुत्राभावे
वधूः कुर्याद्भार्याभावे च सोदरः ॥ शिष्यो वा ब्राह्मणस्यैव सपिण्डो वा समाचरेत् ॥ १३ ॥
ज्येष्ठस्य वा कनिष्ठस्य भ्रातुः पुत्रैश्च पौत्रकैः ॥ दशगात्रादिकं कार्यं पुत्रहीने नरे खग ॥ १४ ॥

नष्ट हो जाती है, उस अन्न के रस से पुष्ट शरीर में भी क्या स्थिरता है ? (नहीं) ॥११॥ इस दुःख की औषधि विचार और चिन्तन है, अतः अज्ञान से उत्पन्न हुए शोक को छोड़कर पुत्र मृतक की क्रिया करे ॥१२॥ पुत्र के न होने पर मृतक की वधू क्रिया करे। उसके भी न होने पर मृतक का सगा भाई क्रिया करे। अथवा ब्राह्मण की क्रिया शिष्य करे अथवा सपिण्ड करे ॥१३॥ हे गरुड़ ! मनुष्य के पुत्रहीन होनेपर जेठे अथवा छोटे भाई या उनके पुत्र,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पौत्र आदि दशगात्र आदि करें ॥१४॥ एक पिता से उत्पन्न हुए भाइयों में यदि एक पुत्रवान् हो तो उसी पुत्र से सब भाई पुत्रवाले हैं, ऐसा मनु ने कहा है ॥१५॥ एक पुरुष को यदि बहुत सी स्त्रियाँ हों और उनमें से एक को पुत्र उत्पन्न हो तो उसी एक पुत्र से सब पुत्रवती होती हैं ॥१६॥ यदि सब पुत्रहीन हों तो मित्र पिण्डदान करे, क्रिया

भ्रातृणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान् भवेत् ॥ सर्वे ते तेन पुत्रेण पुत्रिणो मनुरब्रवीत् ॥१५॥ पत्न्यश्च बह्वयश्चैव चैका पुत्रवती भवेत् ॥ च सर्वास्ताः पुत्रवत्यः स्युस्तेनैकेन सुतेन हि ॥ १६ ॥ सर्वेषां पुत्रहीनानां मित्रः पिंडं प्रदापयेत् ॥ क्रियालोपो न कर्तव्यः सर्वाभावे पुरोहितः ॥ १७ ॥ स्त्री वाथ पुरुषः कश्चिदिष्टस्य कुरुते क्रियाम् ॥ अनाथप्रेतसंस्कारात्कोटि-यज्ञफलं लभेत् ॥ १८ ॥ पितुः पुत्रेण कर्तव्यं दशगात्रादिकं खग ॥ मृते ज्येष्ठेप्यति-स्नेहान्न कुर्वीत पिता सुते ॥ १९ ॥ *बहवोऽपि यदा पुत्रा विधिमेकः समाचरेत् ॥ दशगात्रं

का लोप न करना चाहिये। मित्र भी न हो तो पुरोहित पिण्डदान करे ॥१७॥ कोई स्त्री या पुरुष जो इष्ट मित्र की क्रिया करता है तो वह अनाथ-प्रेत के संस्कार करने के कारण कोटि यज्ञों के फल का भागी होता है ॥ १८ ॥ हे गरुड़! पुत्र को पिता का दशगात्र आदि करना चाहिये, ज्येष्ठ पुत्र के मरने पर अति स्नेह से पिता दशगात्रादि न

* ऊपर कह आये हैं कि सपिण्डन ज्येष्ठ पुत्र ही करे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करे ॥१९॥ जो बहुत से पुत्र होवें तो सब दशगात्रादि विधि एक पुत्र करे । दशगात्र, सपिण्डी तथा सोलह-श्राद्ध इन सबों को एक ही पुत्र करे ॥२०॥ धन विभाग होने पर भी एक पुत्र ही को सब दशगात्रादि कृत्य करना चाहिये । परन्तु संवतसर-श्राद्ध आदि जिनमें सम्पत्ति का विभाग हो गया है उन सबको पृथक्-पृथक् करना चाहिये ॥२१॥

सपिण्डत्वं श्राद्धान्यन्यानि षोडश ॥ २० ॥ एकेनैव तु कार्याणि संविभक्तधनेष्वपि ॥ विभक्तैस्तु पृथक्कार्यं श्राद्धं सांवत्सरादिकम् ॥ २१ ॥ तस्माज्ज्येष्ठः सुतो भक्त्या दशगात्रं समाचरेत् ॥ एकभोजी भूमिशायी भूत्वा ब्रह्मपरः शुचिः ॥ २२ ॥ सप्तवारं परिक्रम्य धरणीं यत्फलं लभेत् ॥ क्रियां कृत्वा पितुर्मातुस्तत्फलं लभते सुतः ॥ २३ ॥ आरभ्य दश-गात्रे च यावद्वै वार्षिकं भवेत् ॥ तावत्पुत्रः क्रियां कुर्वन् गयाश्राद्धफलं लभेत् ॥ २४ ॥ कूपे तडागे वाऽऽरामे तीर्थे देवालयेऽपि वा ॥ गत्वा मध्यमयामे तु स्नानं कुर्यादमन्त्र-

इसलिये ज्येष्ट पुत्र भक्तिपूर्वक दशगात्र करे और दशगात्र करने तक नित्य एक बार भोजन करे, भूमि में सोवे सदा शुद्ध रहे तथा ब्रह्म के ध्यान में तत्पर रहे ॥२२॥ सात बार पृथ्वी की परिक्रमा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल माता-पिता की क्रिया करने से पुत्र को प्राप्त होता है ॥२३॥ दशगात्र को आरम्भ कर जब तक बरसी हो तब तक पुत्र एकाहारी, भूमिशायी आदि क्रिया करता रहे तो गयाश्राद्ध का फल प्राप्त होता है ॥२४॥ कुएँ, तालाब

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथवा बगीचे, तीर्थ में, देवालय में जाकर मध्यम प्रहर में बिना मन्त्र के स्नान करे ॥२५॥ शुद्ध होकर वृक्ष के मूल में दक्षिणाभिमुख स्थित होकर वहाँ वेदी बनावे और गोबर से लीपे ॥२६॥ उसमें पत्ते पर कुशा के ब्राह्मण को स्थापित कर पाद्य आदि से उनकी पूजा कर, "अतसीपुष्पसङ्काशम्" इत्यादि मन्त्र को पढ़कर प्रणाम करे ॥२७॥

कम् ॥२५॥ शुचिर्भूत्वा वृक्षमूले दक्षिणाभिमुखः स्थितः ॥ कुर्याच्च वेदिकां तत्र गोमये-
नोपलिप्यताम् ॥२६॥ तस्यां पर्णे दर्भमयं स्थापयेत्कौशिकं द्विजम् ॥ तं पाद्यादिभिरभ्यर्च्य
प्रणमेदतसीति च ॥ २७ ॥ तदग्रे च ततो दत्त्वा पिण्डार्थं कौशमासनम् ॥ तस्योपरि ततः
पिण्डं नामगोत्रोपकल्पितम् ॥ २८ ॥ दद्यात्तण्डुलपाकेन यवपिष्टेन वा सुतः ॥ उशीरं
चन्दनं भृङ्गराजपुष्पं निवेदयेत् ॥ धूपं दीपं च नैवेद्यं मुखवासं च दक्षिणाम् ॥ २९ ॥
काकान्नं पयसः पात्रे वर्धमानजलाञ्जलीन् ॥ प्रेतायामुकनाम्ने च मद्दत्तमुपतिष्ठतु ॥ ३० ॥

ततः उस कुश के आगे पिण्ड के लिये कुश का आसन और उसके ऊपर नाम गोत्र कहकर पिण्ड धरे ॥२८॥ चावल के भात से अथवा जौ के आटे से पुत्र उस पिण्ड को बनावे। इसके बाद खस, चन्दन और भृङ्गराज के फूल उसके ऊपर चढ़ावे। फिर धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल और दक्षिणा उसके आगे समर्पित करे ॥२९॥ काक अन्न दूध और पानी पात्र में रखे और जल की अञ्जलि दे और कहे कि "अमुनाम्ने प्रेताय मद्दत्तमुपतिष्ठतु" (अमुक नामक प्रेत

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को मेरी दी हुई श्राद्ध वस्तु प्राप्त हो) ॥ ३० ॥ अन्न, और जल अथवा और जो वस्तु भी प्रेतशब्द से दी जाती है, वह मृतक को आनन्द देनेवाली होती है ॥३१॥ इसलिये प्रथम दिन से लगाकर सपिण्डी विधान तक मृतक स्त्री या पुरुष दोनों को श्राद्धादि में नाम के साथ प्रेत शब्द उच्चारण करे ॥३२॥ पहले दिन जो पिण्ड

अन्नं वस्त्रं जलं द्रव्यमन्यद्वा दीयते च यत् ॥ प्रेतशब्देन यद्दत्तं मृतस्यानन्त्यदायकम् ॥३१॥ तस्मादादिदिनादूर्ध्वं प्राक्सपिण्डीविधानतः ॥ योषितः पुरुषस्यापि प्रेतशब्दं समुच्चरेत् ॥३२॥ प्रथमेऽहनि यत्पिण्डो दीयते विधिपूर्वकम् ॥ तेनैव विधिनान्नेन नव पिण्डान् प्रदापयेत् ॥ ३३ ॥ नवमे दिवसे चैव सपिण्डैः सकलैर्जनैः ॥ तैलाभ्यङ्गः प्रकर्तव्यो मृतकस्वर्गकाम्यया ॥ ३४ ॥ बहिः स्नात्वा गृहीत्वा च दूर्वालाजसमन्विताः ॥ अग्रतः प्रमदां कृत्वा समागच्छेन्मृतालयम् ॥३५॥ दूर्वावत्कुलवृद्धिःस्याल्लाजा इव विकाशता ॥ एवमुक्त्वा

विधिपूर्वक दिया जाय उसी विधि तथा उसी प्रकार के अन्न से नव पिण्ड दे ॥३३॥ नवें दिन सब सपिण्ड के लोग मृतक की स्वर्गकामना करके तेल लगावें ॥३४॥ बाहर कहीं स्नान करके धान के लावा समेत दूब को लेकर मृतक की स्त्री को आगे करके मृतक के घर जाय ॥३५॥ 'दूब के समान आपके कुल की वृद्धि हो और धान के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लावा के समान आपका विकास हो' ऐसा कहकर उसके घर में दूब-युक्त धान का लावा फेंके ॥३६॥ हे गरुड़ ! दसवें दिन मांस का पिण्ड देवे। मांस का पिण्ड कलियुग में निषिद्ध है, अतः उड़द का देवे, क्योंकि कलियुग में पितरों को मांस का पिण्ड नहीं दिया जाता है ॥३७॥ दसवें दिन सब बान्धव मुण्डन करावें और क्रिया करनेवाला पुत्र

त्यजेद् गेहे लाजान्दूर्वासमन्वितात् ॥ ३६ ॥ दशमेऽहनि मांसेन पिण्डं दद्यात्खगेश्वर ॥ माषेण तन्निषेधाद्वा कलौ न पलपैतृकम् ॥ ३७ ॥ दशमे दिवसे क्षौरं बान्धवानां च मुण्डनम् ॥ क्रियाकर्तुः सुतस्यापि पुनर्मुण्डनमाचरेत् ॥ ३८ ॥ मिष्टान्नैर्भोजयेदेकं दिनेषु दशसु द्विजम् ॥ प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिं च हरिं ध्यात्वा कृताञ्जलिः ॥ ३९ ॥ अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम् ॥ ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् ॥४०॥ अनादिनिधना देवः शंखचक्रगदाधरः ॥ अक्षय्यः पुण्डरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ ४१ ॥ इति सम्प्रा-

भी फिर मुण्डन करावे ॥३८॥ दस दिन तक एक ब्राह्मण को मिष्टान्न भोजन करावे और हाथ जोड़ हरि का ध्यान कर प्रेत की मुक्ति की प्रार्थना करे ॥३९॥ तीसी के फूल के समान कान्तिवाले और पीत वस्त्र धारण करनेवाले और अच्युत अविनाशी विष्णु भगवान् गोविन्द को जो लोग नमस्कार करते हैं, उन्हें भय नहीं होता है ॥४०॥ आदि और अन्त से रहित और शङ्ख, चक्र तथा गदा को धारण किये हुए अक्षय पुण्डरीकाक्ष देव विष्णु आप प्रेत को

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मुक्ति देनेवाले होवें ।।४१।। इस प्रार्थना के मन्त्र को श्राद्ध के अन्त में प्रतिदिन पढ़े, स्नान करके घर में जाय और गोग्रास देकर स्वयं भोजन करे ।।४२।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां दशगात्रविधिनिरूपणं नामैकादशोऽध्यायः ।।११।।

र्थनामन्त्रं श्राद्धान्ते प्रत्यहं पठेत् ।। स्नात्वा गत्वा गृहे दत्त्वा गोग्रासं भोजनं चरेत् ।।४२।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे दशगात्रविधिनिरूपणं नामैकादशोऽध्यायः ।।११।।

गरुड उवाच ।। एकादशदिनस्यापि विधिं ब्रूहि सुरेश्वर ।। वृषोत्सर्गविधानं च वद मे जगदीश्वर ।। १ ।। श्रीभगवानुवाच ।। एकादशेऽह्नि गन्तव्यं प्रातरेव जलाशये ।। और्ध्व-देहिक्रिया सर्वा करणीया प्रयत्नतः ।। २ ।। निमन्त्रयेद् ब्राह्मणांश्च वेदशास्त्रपरायणान् ।।

गरुड़जी ने पूछा—हे सुरेश्वर! जगदीश्वर! एकादशाह की विधि और वृषोत्सर्ग का विधान मुझसे कहिये ।।१।। श्रीभगवान्‌जी ने उत्तर दिया—ग्यारहवें दिन प्रातःकाल ही जलाशय पर जाना चाहिये और सब और्ध्वदेहिक क्रिया प्रयत्नपूर्वक करनी चाहिये ।।२।। वेद-शास्त्र में आस्था रखनेवाले ब्राह्मणों को निमन्त्रण देवे ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हाथ जोड़कर नमस्कार करे। उनसे प्रेत की मुक्ति के लिये प्रार्थना करे ॥३॥ स्नान-सन्ध्या आदि करके आचार्य भी शुद्ध होकर एकादशाह का विधान विधिवत् करे ॥४॥ दस दिन तक बिना मन्त्र के नाम गोत्र का उच्चारण करके श्राद्ध करे और ग्यारहवें दिन प्रेत को मन्त्र सहित पिण्डदान करे ॥ ५॥ हे गरुड़! विष्णु की स्वर्णमयी प्रतिमा

प्रार्थयेत्प्रेतमुक्तिं च नमस्कृत्य कृताञ्जलिः ॥ ३ ॥ स्नानसन्ध्यादिकं कृत्वा ह्याचार्योऽपि शुचिर्भवेत् ॥ विधानं विधिवत्कुर्यादेकादशदिनोचितम् ॥ ४ ॥ अमन्त्रं कारयेच्छ्राद्धं दशाहं नामगोत्रतः ॥ एकादशेऽह्नि प्रेतस्य दद्यात्पिण्डं समन्त्रकम् ॥ ५ ॥ सौवर्णं कारयेद्विष्णुं ब्रह्माणं रौप्यकं तथा ॥ रुद्रस्ताम्रमयः कार्यो यमो लोहमयः खग ॥ ६ ॥ पश्चिमे विष्णुकलशं गङ्गोदकसमन्वितम् ॥ तस्योपरि न्यसेद्विष्णुं पीतवस्त्रेण वेष्टितम् ॥ ७ ॥ पूर्वे तु ब्रह्मकलशं क्षीरोदकसमन्वितम् ॥ ब्रह्माणं स्थापयेत्तत्र श्वेतवस्त्रेण वेष्टितम् ॥ ८ ॥ उत्तरस्यां रुद्रकुम्भं पूरितं मधुसर्पिषा ॥ श्रीरुद्रं स्थापयेत्तत्र रक्तवस्त्रेण वेष्टितम् ॥ ९ ॥

बनवावे, ब्रह्मा की मूर्ति चाँदी की, रुद्र की मूर्ति ताँबे की, और यम की मूर्ति लोहे की बनवावे ॥६॥ पश्चिम दिशा में गङ्गाजल भरकर विष्णु का कलश रखे, उसके ऊपर पीले कपड़े में लपेटकर विष्णु-मूर्ति स्थापित करे ॥ ७ ॥ पूर्व दिशा में जल समेत ब्रह्मा का कलश रखे, उस पर श्वेत कपड़ा लपेटकर ब्रह्मा की मूर्ति स्थापित करे ॥ ८ ॥ उत्तर में शहद और घी से भरा हुआ रुद्र-कलश रखे, उसके ऊपर लाल वस्त्र से लपेटकर श्रीरुद्र को स्थापित करे ॥९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षिण दिशा इन्द्र-जल से भरा हुआ यम-घट रखे, उसके ऊपर काले वस्त्र से लपेट यमकी मूर्ति स्थापित करे ॥१०॥ मध्य में मण्डल करके कौशिक-पुत्र ब्राह्मण को स्थापित करे। दक्षिणाभिमुख होकर अपसव्य होकर तर्पण करे ॥११॥ विष्णु, ब्रह्मा, शिव और धर्म (यमराज) को वेद क मन्त्रोंसे तर्पण करे और हवन करने के

दक्षिणस्यां यमघटमिन्द्रोदकसमन्वितम् । कृष्णवस्त्रेण संवेष्ट्य तस्योपरि यमं न्यसेत् ॥१०॥
मध्ये तु मण्डलं कृत्वा स्थापयेत्कौशिकं सुतः ॥ दक्षिणाभिमुखो भूत्वाऽपसव्येन च तर्पयेत् ॥ ११ ॥ विष्णुं विधिं शिवं धर्मं वेदमन्त्रैश्च तर्पयेत् ॥ होमं कृत्वा चरेत्पश्चाच्छ्राद्धं दशघटादिकम् ॥ १२ ॥ गोदानं च ततो दद्यात्पितृणां तारणाय वै ॥ गौरेषा हि मया दत्ता प्रीतये तेऽस्तु माधव ॥ १३ ॥ उपभुक्तं तु तस्यासीद्वस्त्रभूषणवाहनम् ॥ घृतपूर्णं कांस्यपात्रं सप्तधान्यं तदीप्सितम् ॥ १४ ॥ तिलाद्यष्टमहादानमन्तकाले न यत्कृतम् ॥

पश्चात् दश-घट आदि श्राद्ध करे ॥१२॥ फिर पितरों को तारने के लिये गोदान दे। हे माधव ! मुझसे दी हुई यह गौ आपकी प्रसन्नता के लिए होवे ॥१३॥ उस मृतक द्वारा उपभोग किये हुए वस्त्र, भूषण तथा वाहन आदि घी से भरा हुआ काँसे का पात्र, सप्तधान्य तथा उसकी प्यारी वस्तुयें ॥१४॥ और तिल आदि आठ महादान, जो अन्तकाल में न किया गया हो, इन सबको शय्या के समीप रखकर दान देवे ॥१५॥ ब्राह्मण के चरण को धोकर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वस्त्र आदि से पूजन करे और लड्डू, मालपूआ आदि सिद्ध अन्न तथा दूध उसको देना चाहिये ॥१६॥ उस समय पुत्र शय्या के ऊपर स्वर्ण के पुरुषको स्थापित कर उसका पूजन करके पूर्व कथनानुसार मृतशय्या दे ॥१७॥ हे विप्र! प्रेत की प्रतिमायुक्त और सम्पूर्ण सामग्री सहित यह प्रेतशय्या मैंने आपको दी ॥१८॥ इस प्रकार कहकर

शय्यासमीपे धृत्वैतद्दानं तस्याः प्रदापयेत् ॥१५॥ प्रक्षाल्य विप्रचरणौ पूजयेदम्बरादिभिः ॥ सिद्धान्नं तस्य दातव्यं मोदकाऽपूपकाः पयः ॥ १६ ॥ स्थापयेत्पुरुषं हैमं शय्योपरि तदा सुतः ॥ पूजयित्वा प्रदातव्या मृतशय्या यथोदिता ॥ १७ ॥ प्रेतस्य प्रतिमायुक्ता सर्वोपकरणैर्वृता ॥ प्रेतशय्या मया ह्येषा तुभ्यं विप्र निवेदिता ॥ १८ ॥ इत्याचार्याय दातव्या ब्राह्मणाय कुटुम्बिने ॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्य प्रणिपत्य विसर्जयेत् ॥ १९ ॥ एवं शय्याप्रदानेन श्राद्धेन नवकादिना ॥ वृषोत्सर्गविधानेन प्रेतो याति परां गतिम् ॥ २० ॥ एकादशेऽह्नि विधिना वृषोत्सर्गं समाचरेत् ॥ हीनाङ्गं रोगिणं बालं त्यक्त्वा कुर्यात्सलक्षणम् ॥ २१ ॥

कुटुम्बी आचार्य को शय्या दे, उसके बाद प्रदक्षिणा करके नमस्कार कर विसर्जन करे ॥१९॥ इस प्रकार शय्या देने से नवकादि श्राद्ध से और वृषोत्सर्ग के विधान से प्रेत परमगति को प्राप्त होते हैं ॥२०॥ ग्यारहवें दिन विधि से वृषोत्सर्ग कर, हीन अङ्गवाले, रोगी और बच्चे को छोड़ सलक्षण वृषभ का त्याग करे ॥२१॥ जिसकी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लाल आँखें, पिङ्गल वर्ण, सींग, गला तथा खुर लाल, पेट श्वेत, पीठ काली हो ऐसा वृषभ ब्राह्मण को छोड़ना चाहिये ॥२२॥ अच्छा चिकना लाल रङ्ग का क्षत्रिय के लिये, पीले रङ्ग का वैश्य के लिये और काले रंग का शूद्र के लिये कहा गया है ॥२३॥ जिसके सब अङ्ग पिङ्गल वर्ण के हों, पूँछ और पैर श्वेत हों उसको पिङ्गवृष कहते हैं, वह पितरों की

रक्ताक्षः पिङ्गलो यस्तु रक्तः शृङ्गे गले खुरे ॥ श्वेतोदरः कृष्णपृष्ठो ब्राह्मणस्य विधीयते ॥ २२ ॥ सुस्निग्धवर्णो यो रक्तः क्षत्रियस्य विधीयते ॥ पीतवर्णश्च वैश्यस्य कृष्णः शूद्रस्य शस्यते ॥ २३ ॥ यस्तु सर्वाङ्गपिङ्गः स्याच्छ्वेतः पुच्छे पदेषु च ॥ स पिङ्गो वृष इत्याहुः पितॄणां प्रीतिवर्धनः ॥ २४ ॥ चरणास्तु मुखं पुच्छं यस्य श्वेतानि गोपतेः ॥ लाक्षारससवर्णो यः स नील इति कीर्तितः ॥ २५ ॥ लोहितो यस्तु वर्णेन मुखे पुच्छे च पाण्डुर ॥ पिङ्गः खुरविषाणाभ्यां रक्तनीलो निगद्यते ॥ २६ ॥ सर्वाङ्गेष्वेकवर्णो यः पिङ्गः पुच्छे खुरेषु यः ॥ तं नीलपिङ्गमित्याहुः पूर्वजोद्धारकारकम् ॥ २७ ॥ पारावतसवर्णस्तु

प्रीति को बढ़ानेवाला है ॥२४॥ जिस बैल के पैर, मुख और पूँछ श्वेत हों और शेष शरीर लाही के रंग का लाल हो उसको नील-वृषभ कहते हैं ॥ २५ ॥ जिस बैल का शरीर लाल रङ्ग का हो, मुख तथा पूँछ पाण्डु वर्ण (कुछ पीला) हो, खुर तथा सींग पीत वर्ण का हो उस वृषभ को रक्तनील कहते हैं ॥ २६ ॥ जो सब अङ्ग में एक रङ्ग हो, खुर और पूँछ पीत वर्ण की हो उसको नीलपिङ्ग कहते हैं, यह पूर्वजों का उद्धार करनेवाला है ॥ २७ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जिसका कबूतर (गोला) के समान रंग हो और माथे में तिलक हो उस सर्वाङ्गसुन्दर वृषभ को बभ्रुनील कहते
हैं ।।२८।। जिसका सब शरीर नीला हो, दोनों आँखें लाल हों उसको महानील कहते हैं । नील ५ प्रकार के होते
हैं ।।२९।। ये अवश्य ही वृषोत्सर्ग में छोड़ने योग्य होते हैं,ये घर में रखने योग्य नहीं हैं, उसके लिये पुरानी गाथा

ललाटे तिलकान्वितः ।। तं बभ्रुनीलमित्याहुः पूर्णं सर्वाङ्गशोभनम् ।। २८ ।। नीलः सर्व-
शरीरेषु रक्तश्च नयनद्वये ।। तमप्याहुर्महानीलं नीलः पञ्चविधः स्मृतः ।। २९ ।। अवश्यमेव
मोक्तव्यो न स धार्यो गृहे भवेत् ।। तदर्थमेषा चरति लोके गाथा पुरातनी ।।३०।। एष्टव्या
बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि गयां व्रजेत् ।। गौरीं विवाहयेत्कन्यां नीलं वा वृषमुत्सृजेत् ।। ३१ ।।
स एव पुत्रो मन्तव्यो वृषोत्सर्गं तु यश्चरेत् ।। गयायां श्राद्धदाता च योऽन्यो विष्ठासमः
किल ।। ३२ ।। रौरवादिषु ये केचित्पच्यन्ते यस्य पूर्वजाः ।। वृषोत्सर्गेण तान्सर्वांस्तारये-

जनता में प्रचलित है ।।३०।। बहुत से पुत्रों की कामना करनी चाहिये, जिनमें कोई एक भी गया श्राद्ध करे,गौरी
कन्या से विवाह करे अथवा नील बैल को छोड़े ।।३१।। वही पुत्र मानने योग्य है, जो वृषोत्सर्ग करे और जो गया श्राद्ध
करे, और अन्य पुत्र विष्ठा के समान हैं ।।३२।। जिसके पितर रौरव आदि नरक में जाते हैं, वृषोत्सर्ग द्वारा उन सबको
तथा इक्कीस पीढ़ी तक को गति मिलती है ।।३३।। स्वर्ग में गये हुए पितर भी निश्चय वृषोत्सर्ग की इच्छा करते हैं कि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हमारे वंश में कोई पुत्र वृषोत्सर्ग करेगा ॥३४॥ उसके वृषोत्सर्ग से हम सब परमगति को प्राप्त होंगे, सब यज्ञों में वृषयज्ञ हम सबके लिये निश्चय मुक्ति देनेवाला है ॥३५॥ अतः पितरों की मुक्ति के लिये वृषयज्ञ करना चाहिये तथा यत्नपूर्वक यथोक्त विधान करे ॥३६॥ ग्रहों को स्थापित करके उनके वैदिक मन्त्रों से पूजन करे, शास्त्र के अनुसार

देकविंशतिम् ॥ ३३ ॥ वृषोत्सर्गं किलेच्छन्ति पितरः स्वर्गता अपि ॥ अस्मद्वंशे सुतः कोऽपि वृषोत्सर्गं करिष्यति ॥ ३४ ॥ तदुत्सर्गाद्वयं सर्वे यास्यामः परमां गतिम् ॥ सर्वयज्ञेषु चास्माकं वृषयज्ञो हि मुक्तिदः ॥ ३५ ॥ तस्मात्पितृविमुक्त्यर्थं वृषयज्ञं समाचरेत् ॥ यथोक्तेन विधानेन कुर्यात्सर्वं प्रयत्नतः ॥ ३६ ॥ ग्रहाणां स्थापनं कृत्वा तत्तन्त्रैश्च पूजनम् ॥ होमं कुर्याद्यथाशास्त्रं पूजयेद् वृषमातरः ॥३७॥ वत्सं वत्सीं समानीय बध्नीयात्कङ्कणं तयोः॥ वैवाह्येन विधानेन स्तम्भमारोपयेत्तदा ॥ ३८ ॥ स्नापयेच्च वृषं वत्सीं रुद्रकुम्भोदकेन च ॥ गन्धमाल्यैश्च सम्पूज्य कारयेच्च प्रदक्षिणाम् ॥ ३९ ॥ त्रिशूलं दक्षिणे पार्श्वे वामे चक्रं

हवन करे। वृष और गाय का पूजन करे ॥३७॥ बछवा और बछिया को लाकर उन दोनों को कंगन बाँधे और विवाह के विधान से खम्भे गाड़े ॥३८॥ वृष और बछिया को रुद्र कुम्भ के जल से स्नान करावे। गन्ध और माला से पूजन करके प्रदक्षिणा करे ॥३९॥ दाहिनी ओर त्रिशूल और बाईं ओर चक्र का चिह्न लगावे। बैल को छोड़कर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हाथ जोड़कर यह मन्त्र पढ़े ।।४०।। तुम धर्म हो, प्राचीनकाल में ब्रह्मा द्वारा बैल के स्वरूप में बनाये गये हो, इस आपके उत्सर्ग से मेरे पितरों को भवरूपी समुद्र से तारो ।।४१।। इस मन्त्र से नमस्कार करके बछवा और बछिया को छोड़ दे, मैं (भगवान्) सदा उसको वर देनेवाला और प्रेत को मोक्ष देनेवाला होता हूँ ।।४२।। इस कारण यह वृषोत्सर्ग

प्रदापयेत् ॥ तं विमुच्याञ्जलिं बद्ध्वा पठेन्मंत्रमिमं सुतः ॥ ४० ॥ धर्मस्त्वं वृषरूपेण ब्रह्मणा निर्मितः पुरा ॥ तवोत्सर्गप्रदानेन तारयस्व भवार्णवात् ॥ ४१ ॥ इति मन्त्रान्नमस्कृत्य वत्सं वत्सीं समुत्सृजेत् ॥ वरदोऽहं सदा तस्य प्रेतमोक्षं ददामि च ॥ ४२ ॥ तस्मादेष प्रकर्त्तव्यस्तत्फलं जीवतो भवेत् ॥ ॥ अपुत्रस्तु स्वयं कृत्वा सुखं याति परां गतिम् ॥४३॥ कार्तिकादौ शुभे मासे चोत्तरायणगे रवौ ॥ शुक्लपक्षेऽथवा कृष्णे द्वादश्यादितिथौ तथा ॥ ४४ ॥ ग्रहणद्वितये चैव पुण्यतीर्थेऽयनद्वये ॥ विषुवद्द्वितये चापि वृषोत्सर्गं समा-

अवश्य करना चाहिये कि जीवनकाल में ही उसका फल प्राप्त हो, पुत्ररहित पुरुष स्वयं ही इसको विधिपूर्वक करके सुखपूर्वक परमगति को प्राप्त होता है ।।४३।। कार्तिक आदि शुभ महीनों में, सूर्य के उत्तरायण में, शुक्लपक्ष अथवा कृष्णपक्ष में तथा द्वादशी आदि तिथियों में ।।४४।। सूर्य, चन्द्र के ग्रहण में, दोनों विषुवत् (मेष और तुला संक्रांति) में वृषोत्सर्ग करे ।।४५।। शुभ लग्न, शुभ मुहूर्त तथा शुभ देश में सावधान होकर विधि के जाननेवाले

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शुभ युक्त लक्षण ब्राह्मण को बुलाकर ॥४६॥ जप, होम तथा दान से देह को पवित्र करे और पहले की तरह हवन आदि सब विधियाँ करे ॥४७॥ शालिग्रामको रखकर वैष्णव-श्राद्ध करे तत्पश्चात् अपना श्राद्ध करे और ब्राह्मणको दान दे ॥४८॥ हे गरुड़ ! पुत्रवान् तथा बिना पुत्रवाला, जो कोई इस प्रकार वृषोत्सर्ग करता है उसको वृषोत्सर्गका

चरेत् ॥ ४५ ॥ शुभे लग्ने मुहूर्ते च शुचौ देशे समाहितः ॥ ब्राह्मणं तु समाहूय विधिज्ञं शुभलक्षणम् ॥ ४६ ॥ जपैर्होमैस्तथा दानैः प्रकुर्याद् देहशोधनम् ॥ पूर्ववत्सकलं कृत्यं कुर्याद्धोमादिलक्षणम् ॥ ४७ ॥ शालिग्रामं च संस्थाप्य वैष्णवं श्राद्धमाचरेत् ॥ आत्मश्राद्धं ततः कुर्याद्दद्याद्दानं द्विजन्मने ॥ ४८ ॥ एवं यः कुरुते पक्षिन्नपुत्रश्चापि पुत्रवान् ॥ सर्वकामफलं तस्य वृषोत्सर्गात् प्रजायते ॥ ४९ ॥ अग्निहोत्रादिभिर्यागैर्दानैश्च विविधैरपि न तां गतिमवाप्नोति वृषोत्सर्गेण यां लभेत् ॥५०॥ बाल्य-कौमार-पौगण्डे यौवने वार्धके कृतम् ॥ यत्पापं तद्विनश्येत वृषोत्सर्गान्न संशयः ॥ ५१ ॥ मित्रद्रोही कृतघ्नश्च सुरापी गुरु-

सब वाञ्छित फल मिलता है ॥ ४९ ॥ जो गति वृषोत्सर्ग से होती है वह गति अग्निहोत्र आदि यज्ञों से और नाना प्रकार के दानों से नहीं प्राप्त होती है ॥५०॥ बालक अवस्था में, कुमार अवस्था में, किशोर अवस्था में, युवा में तथा बुढ़ापा में किये हुए सभी पाप वृषोत्सर्ग से दूर हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं है ॥५१॥ मित्रद्रोही, कृतघ्न,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मदिरा पान करनेवाला, गुरुपत्नी में गमन करनेवाला, ब्रह्महत्या का पापी और स्वर्ण चुरानेवाला ये सब वृषोत्सर्ग से मुक्त हो जाते हैं ॥५२॥ इसलिये सब प्रकार से वृषोत्सर्ग करे। हे गरुड़! तीनों लोक में वृषोत्सर्ग के समान अन्य पुण्य नहीं हैं ॥५३॥ पति-पुत्रवाली स्त्री जो दोनों (पति-पुत्र) से पहिले मर जाय तो उसके लिये वृषोत्सर्ग न

तल्पगः ॥ ब्रह्महा हेमहारी च वृषोत्सर्गात् प्रमुच्यते ॥ ५२ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वृषयज्ञं समाचरेत् ॥ वृषोत्सर्गसमं पुण्यं नास्ति तार्क्ष्य जगत्त्रये ॥ ५३ ॥ पतिपुत्रवती नारी द्वयो-रग्रे मृता यदि ॥ वृषोत्सर्गं नैव कुर्याद्दद्याद् गां च पयस्विनीम् ॥ ५४ ॥ वृषभं वाहयेद्यस्तु स्कन्धे पृष्ठे च खेचर ॥ स पतेन्नरके घोरे यावदाभूतसंप्लवम् ॥ ५५ ॥ वृषभं ताडयेद्यस्तु निर्दयो मुष्टियष्टिभिः ॥ स नरः कल्पपर्यन्तं भुनक्ति यमयातनाम् ॥५६॥ एवं कृत्वा वृषो-त्सर्गं कुर्याच्छ्राद्धानि षोडश ॥ सपिण्डीकरणदर्वाक्तदहं कथयामि ते ॥ ५७ ॥ स्थाने

करे, किन्तु दूध देती हुई गौ का दान करे ॥५४॥ हे गरुड़! जो (वृषोत्सर्गवाले) बैल के कन्धे में जोतते हैं और जो पीठपर लादते हैं वे महाप्रलय पर्यन्त घोर नरक में पड़े रहते हैं ॥५५॥ जो निर्दयी घूँसों अथवा लाठियों से (वृषोत्सर्गवाला) बैल को मारते हैं वे मनुष्य कल्पपर्यन्त यम की यातना भोगते हैं ॥५६॥ इस प्रकार वृषोत्सर्ग करके षोडशश्राद्ध सपिण्डी करने से पहले करे, उसे मैं तुमसे कहता हूँ ॥ ५७ ॥ मृतक स्थान, द्वार, आधे

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मार्ग, चिता, मृतक के हाथ पर, अस्थि के संचयन में और दस दिन के दस ये सोलह पिण्ड देवे ॥५८॥ मैंने जो तुमसे यह षोडश-श्राद्ध पहले कहा वह मलिनषोडशी है और दूसरा षोडश-श्राद्ध मध्य में तुमसे कहता हूँ ॥५९॥ पहला पिण्ड विष्णु के निमित्त दे, दूसरा पिण्ड शिव के निमित्त और तीसरा पिण्ड सपरिवार यम के लिये देवे॥६०॥

द्वारेऽर्धमार्गे च चितायां शवहस्तके ॥ अस्थिसञ्चयने षष्ठो दश पिण्डा दशाह्निका ॥५८॥
मलिनं षोडशं चैतत्प्रथमं परिकीर्तितम् ॥ अन्यच्च षोडशं मध्ये द्वितीयं कथयामि ते ॥५९॥
प्रथमं विष्णवे दद्याद् द्वितीयं श्रीशिवाय च ॥ यमाय परिवाराय तृतीयं पिण्डमुत्सृजेत् ॥६०॥
चतुर्थं सोमराजाय हव्यवाहाय पञ्चमम् ॥ कव्यवाहाय षष्ठं च दद्यात्कालाय सप्तमम् ॥६१॥
रुद्राय चाष्टमं दद्यान्नवमं पुरुषाय च ॥ प्रेताय दशमं चैवेकादशं विष्णवे नमः ॥६२॥ द्वादशं
ब्रह्मणे दद्याद्विष्णवे च त्रयोदशम् ॥ चतुर्दशं शिवायैव यमाय दशपञ्चकम् ॥ ६३ ॥ दद्या-

चौथा सोमराज के लिये और पाँचवाँ हव्यवाह के लिये, छठा कव्य वाह के लिये और सातवाँ काल के लिये पिण्डदान करे।।६१।। आठवाँ रुद्र के लिये पिण्डदान करे और नवाँ पुरुष के लिये, दसवाँ प्रेत के लिये और ग्यारहवाँ विष्णु के लिये दान करे ॥६२॥ बारहवाँ ब्रह्मा के लिये, तेरहवाँ विष्णु के लिये, चौदहवाँ शिव के लिये और पन्द्रहवाँ यम के लिये पिण्डदान करे ॥६३॥ हे गरुड़ ! सोलहवाँ पिण्ड तत्पुरुष के लिए दान करे, तत्व के जाननेवाले पुरुष

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसको मध्यषोडशी कहते हैं ॥६४॥ बारह महीनों में १२ पिण्ड, पाक्षिक, त्रैपाक्षिक और न्यूनषाण्मासिक पिण्ड तथा आब्दिक पिण्ड का दान करे ॥६५॥ यह उत्तम षोडशी मैंने तुमसे कही। हे गरुड़, खीर को पकाकर ग्यारहवें दिन का श्राद्ध करे ॥ ६६ ॥ ये चालीस और आठ (अड़तालीस) प्रेतत्व के नाशक श्राद्ध जिसके लिये विधिपूर्वक

तत्पुरुषायैव पिण्डं षोडशकं खग ॥ मध्यं षोडशकं प्राहुरेतत्तत्त्वविदो जनाः ॥ ६४ ॥ द्वादश प्रतिमासेषु पाक्षिकं च त्रिपाक्षिकम् ॥ न्यूनषाण्मासिकं पिण्डं दद्यान्न्यूनाब्दिकं तथा ॥ ६५ ॥ उत्तमं षोडशं चैतन्मया ते परिकीर्तितम् ॥ पाचयित्वा चरुं तार्क्ष्य कुर्यादेकादशेऽहनि ॥ ६६ ॥ चत्वारिंशत्तथैवाष्टौ श्राद्धं प्रेतत्वनाशनम् ॥ यस्य जातं विधानेन स भवेत्पितृपंक्तिभाक् ॥ ६७ ॥ पितृपंक्तिप्रवेशार्थं कारयेत्षोडशत्रयम् ॥ एतच्छ्राद्धविहीनश्चेत्प्रेतो भवति सुस्थिरम् ॥ ६८ ॥ यावन्न दीयते श्राद्धं षोडशत्रयसंज्ञकम् ॥ स्वदत्तं परदत्तं च तावन्नैवोपतिष्ठते ॥ ६९ ॥ तस्मात्पुत्रेण कर्तव्यं विधिना षोडशत्रयम् भर्तुर्वा

होते हैं, वह पितरों की पंक्ति में गिना जाता है ॥६७॥ पितरों की पंक्ति में प्रवेश करने के लिए उपर्युक्त षोडशत्रय (४८ श्राद्ध) करावे। इन श्राद्धों से हीन (मृतक) स्थिर प्रेत होते हैं ॥६८॥ यह तीन षोडशी जब तक नहीं दी जाती है, तब तक अपना और दूसरों का दिया हुआ भोजनादि भी नहीं प्राप्त होता है ॥६९॥ इसलिए पुत्र विधिपूर्वक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तीनों षोडश श्राद्ध करे और पति के लिए जो पत्नी उपर्युक्त षोडशत्रय श्राद्ध करती है, तो उसका अनन्त कल्याण होता है।।७०।। जो स्त्री मरे हुए पति का और्ध्वदेहिक कर्म करती है, क्षयाह और पाक्षिक श्राद्ध करती है, वह मेरे द्वारा सती कही जाती है ।।७१।। वह पतिव्रता पति के उपकार के लिए जीती है । उसका जीना सफल है । जो मरे हुए

कुरुते पत्नी तस्य श्रेयो ह्यनन्तकम् ।। ७० ।। संपरेतस्य या पत्युः कुरुते चौर्ध्वदेहिकम् ।। क्षयाहं पाक्षिकश्राद्धं सा सतीत्युच्यते मया ।।७१।। उपकाराय सा भर्तुर्जीवत्येषा पतिव्रता ।। जीवितं सफलं तस्या या मृतं स्वामिनं भजेत् ।। ७२ ।। अथ कश्चित्प्रमादेन म्रियते वह्नि-वारिभिः ।। संस्कारप्रमुखं कर्म सर्वं कुर्याद्यथाविधि ।।७३।। प्रमादादिच्छया वापि नागाद्वा म्रियते यदि ।। पक्षयोरुभयोर्नागं पञ्चमीषु प्रपूजयेत् ।। ७४ ।। कुर्यात्पिष्टमयीं लेख्यां नाग-भोगाकृतिं भुवि ।। अर्चयेत्तां सितैः पुष्पैः सुगन्धैश्चन्दनेन च ।।७५।। प्रदद्याद् धूपदीपौ च

अपने स्वामी का स्मरण करती हुई जीवन बिता देती है ।।७२।। यदि कोई प्रमाद से, आग या जल से मर जाता है, उसका और्ध्वदेहिक संस्कार आदि श्राद्धादि सब प्रमुख कर्म विधिपूर्वक करे ।।७३।। प्रमाद से वा इच्छा से अथवा साँप से जो मनुष्य मरता है, उसके लिये दोनों पक्षों की पञ्चमी तिथि में नाग का पूजन करे ।।७४।। पृथ्वी पर सर्प के शरीर की आकृति आटा की बनावे, सफेद और सुगन्धित फूलों से तथा चन्दन से पूजन करे ।।७५।। धूप,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दीप देकर तण्डुल और तिलों को छोड़े, कच्चा पिसा हुआ नैवेद्य और दूध निवेदन करे॥ ७६॥ शक्ति के अनुसार गौ और स्वर्ण का नाग ब्राह्मण को दान करे, ततः हाथ जोड़कर 'नागराज प्रसन्न होवें' ऐसा कहे ॥७७॥ फिर उनकी नारायण-बलि क्रिया करे। इस प्रकार वे स्वर्ग पाते हैं और सब पाप से छूट जाते हैं॥७८॥ इस प्रकार

तण्डुलांश्च तिलान् क्षिपेत् ॥ आमपिष्टं च नैवेद्यं क्षीरं च विनिवेदयेत् ॥ ७६ ॥ सौवर्णं शक्तितो नागं गां च दद्याद्द्विजन्मने ॥ कृताञ्जलिस्ततो ब्रूयात्प्रीयतां नागराडिति ॥७७॥ पुनस्तेषां प्रकुर्वीत नारायणबलिक्रियाम् ॥ तया लभन्ते स्ववार्सं मुच्यन्ते सर्वपातकैः ॥७८॥ एवं सर्वक्रियां कृत्वा घटं सान्नं जलान्वितम् ॥ दद्यादब्दं यथासंख्यान्पिण्डान्वा सजलान् क्रमात् ॥ ७९ ॥ एवमेकादशे कृत्वा कुर्यात्सापिण्डनं ततः ॥ शय्यापदानां दानं च कारयेत्सूतके गते ॥८०॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे एकादशदिनविधिनिरूपणं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

सब क्रिया करके अन्न तथा जल सहित घटका दान वर्ष पर्यन्त करे अथवा अर्घ्य समेत क्रम से पिण्डदान दे ॥७९॥ ऐसे ग्यारहवें दिन पिण्डदान कर तब सपिण्डन करे और सूतक के बीत जाने पर शय्या तथा पद दान करे ॥८०॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां एकादशदिनविधिनिरूपणं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गरुड़जी ने पूछा—हे भगवन् ! सपिण्डन की विधि और सूतक का निर्णय कहिये। शय्या तथा पद दान की सामग्री और उनकी महिमा कहिये ॥ १ ॥ श्रीभगवान् ने उत्तर दिया—हे गरुड़ ! सुनो, सपिण्डन आदि सम्पूर्ण क्रिया मैं तुमसे कहता हूँ जिस क्रिया के करने से प्राणी प्रेतका नाम छोड़कर पितृगण में निवास करते हैं ॥ २ ॥

गरुड उवाच ॥ सपिण्डनविधिं ब्रूहि सूतकस्य च निर्णयम् ॥ शय्यापदानां सामग्रीं तेषां च महिमां प्रभो ॥१॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु तार्क्ष्य प्रवक्ष्यामि सापिण्ड्याद्यखिलां क्रियाम् ॥ प्रेतनाम परित्यज्य यथा पितृगणे विशेत् ॥ २ ॥ न पिण्डो मिलितो ह्येषां पितामहशिवादिषु ॥ नोपतिष्ठन्ति दानानि पुत्रैर्दत्तान्यनेकधा ॥ ३ ॥ अशुद्धः स्यात्सदा पुत्रो न शुद्ध्यति कदाचन ॥ सूतकं न निवर्तेत सपिण्डीकरणं विना ॥४॥ तस्मात्पुत्रेण कर्तव्यं सूतकान्ते सपिण्डनम् ॥ सूतकान्तं प्रवक्ष्यामि सर्वेषां च यथोचितम् ॥ ५ ॥ ब्राह्मणस्तु दशाहेन क्षत्रियो द्वादशेऽहनि ॥ वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति ॥६॥

जिनका पिण्ड पितामह शिवादिक में नहीं मिला है, उनको पुत्र द्वारा दिये हुए अनेक प्रकार के दान नहीं मिलते हैं ॥ ३ ॥ पुत्र सदा अशुद्ध रहता है, कभी भी शुद्ध नहीं होता है, क्योंकि बिना सपिण्डी किये सूतक नहीं निवृत्त होता है ॥४॥ इसलिये पुत्र को सूतक के अन्त में सपिण्ड करना चाहिये। सबका यथोचित सूतकान्त मैं तुमसे कहता हूँ ॥५॥ ब्राह्मण दस दिन में, क्षत्रिय बारह दिन में, वैश्य पन्द्रह दिन में और शूद्र एक महीने में शुद्ध होता है ॥६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सपिण्ड के लोग दस दिन में प्रेतके सूतक से शुद्ध होते हैं, सकुल्य को लोग तीन रात्रि में शुद्ध होते हैं और गोत्रज स्नान मात्रसे शुद्ध होते हैं ॥७॥ चौथी पीढ़ी में दस रात्रि तक सूतक रहता है, पाँचवीं पीढ़ी में छः रात्रि, छठी पीढ़ी में चार दिन और सातवीं में तीन दिन सूतक रहता है ॥८॥ आठवीं में एक दिन, नवीं में दो पहर और दसवीं पीढ़ी

दशाहेन सपिण्डास्तु शुद्ध्यन्ति प्रेतसूतके ॥ त्रिरात्रेण सकुल्यास्तु स्नात्वा शुद्ध्यन्ति गोत्रजाः ॥७॥ चतुर्थे दशरात्रं स्यात्षण्निशाः पुंसि पञ्चमे ॥ षष्ठे चतुरहः प्रोक्तं सप्तमे च दिनत्रयम् ॥ ८ ॥ अष्टमे दिनमेकं तु नवमे प्रहरद्वयम् ॥ दशमे स्नानमात्रं हि मृतकं जन्म-सूतकम् ॥ ९ ॥ देशान्तरगतः कश्चिच्छृणुयाद्योऽह्ननिर्दशम् ॥ यच्छेषं दशरात्रस्य तावदेवा-शुचिर्भवेत् ॥१०॥ अतिक्रान्ते दशाहे तु त्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ संवत्सरे व्यतीते तु स्नान-मात्राद्विशुद्ध्यति ॥११॥ आद्यभागद्वयं यावन्मृतकस्य च सूतके॥ द्वितीये पतिते चाद्या-

में स्नान करने ही से मृतकसूतक जननसूतक छूट जाते हैं॥९॥परदेश में गये हुए का मृत्यु-संवाद उसके मरने के दस दिन के भीतर मिले उस समय दस दिन में जितने दिन शेष रहें उतना सूतककाल जानिये॥१०॥दस दिन के बीतजाने पर १वर्ष से पहले यदि मृत्युका संवाद मिले तब३ रात्रि पर्यन्त सूतक जानिये और १वर्ष के बाद मृत्यु-समाचार मिलने पर स्नानमात्र से शुद्ध होता है॥११॥मृतक-सूतक में प्रथम दो भाग बीत जाने के पश्चात् यदि दूसरा सूतक लग जाय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तो पहले सूतकान्त में ही दूसरा सूतक समाप्त हो जाता है ॥१२॥ दाँत उत्पन्न होने से पहले बालक का देहान्त हो तो स्नानमात्र से शुद्धि होती है। मुण्डनपर्यन्त यदि बालक स्वर्गगत हो जाय तो एक रात और यज्ञोपवीत होने पर यदि बालक मृतक हो जाय तो तीन रात्रि पर्यन्त, इसके उपरान्त के मृत्यु पर दश रात्रि में शुद्धि होती है ॥१३॥ जन्म से लगाकर मुण्डनपर्यन्त जो कन्या मर जाय तो सब वर्णों में सदा सद्यःशौच अर्थात् स्नानमात्र से शुद्धि होती है॥१४॥

त्सूतकाच्छुद्धिरिष्यते ॥ १२ ॥ आदन्तजननात्सद्य आचौलान्नैशिकी स्मृता ॥ त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमतः परम्॥ १३ ॥ आजन्मतस्तु चौलान्तं यत्र कन्या विपद्यते ॥ सद्यः शौचं भवेत्तत्र सर्ववर्णेषु नित्यशः ॥ १४ ॥ ततो वाग्दानपर्यन्तं यावदेकाहमेव हि ॥ अतः परं प्रवृद्धानां त्रिरात्रमिति निश्चयः ॥ १५ ॥ वाक्प्रदाने कृते त्वत्र ज्ञेयं चोभयतस्त्र्यहम् ॥ पितुर्वरस्य च ततो दत्तानां भर्तुरेव हि ॥ १६ ॥ षण्मासाभ्यन्तरं यावद् गर्भस्रावो भवेद्यदि ॥

इसके पश्चात् विवाह निमित्त वाग्दान पर्यन्त एक ही दिन का सूतक लगता है। उसके पश्चात् बढ़ी हुई कन्याका दोनों कुलों में तीन रात्रि का सूतक होता है, यह निश्चय है ॥१५॥ वाग्दान करने पर तो दोनों कुलों में तीन दिन का सूतक जानिये, अर्थात् तीन दिन का पिता के कुल में और तीन दिनका वरके कुल में सूतक होता है। जो कन्या ब्याही गई हो तो उसका सूतक पति हीके कुलमें होता है, पिताके कुलमें नहीं होता ॥१६॥ छः महीनेके भीतर जो गर्भस्राव हो तो गर्भ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

के मासतुल्य दिनों में शुद्धि है (जितने मासका गर्भ हो उतने ही दिन सूतक होता है)॥ १७॥ इसके उपरान्त अपनी जाति के अनुसार अशौच उनकी माताओं में रहता है। गर्भ के पतन होने पर सपिण्डक लोगों को सद्यःशौच कहाता है ॥१८॥कलियुग में यह शास्त्र का निश्चय है कि सभी वर्णों के वृद्धि-सूतक और मृतक-सूतक में दस दिनों में शुद्धि होती

तदा माससमैस्तासां दिवसैः शुद्धिरिष्यते ॥ १७ ॥ अत ऊर्ध्वं स्वजात्युक्तमाशौचं तासु विद्यते ॥ सद्यःशौचं सपिण्डानां गर्भस्य पतने सति ॥ १८ ॥ सर्वेषामेव वर्णानां सूतके मृतकेऽपि वा ॥ दशाहाच्छुद्धिरित्येष कलौ शास्त्रस्य निश्चयः ॥ १९ ॥ आशीर्वादं देवपूजां प्रत्युत्थानाभिवन्दनम् ॥ पर्यङ्के शयनं स्पर्शं न कुर्यान्मृतसूतके ॥ २० ॥ सन्ध्यां दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम् ॥ ब्रह्मभोज्यं व्रतं नैव कर्तव्यं मृतसूतके ॥ २१ ॥ नित्यं नैमित्तिकं काम्यं सूतके यः समाचरेत् ॥ तस्य पूर्वकृतं नित्यादिकं कर्म विनश्यति ॥ २२ ॥

है॥१९॥आशीर्वाद, देवता की पूजा,प्रत्युत्थान, अभिवादन, शय्या पर सोना और स्पर्श, इन सबको मृतक-सूतक में न करे॥२०॥ सन्ध्या, दान, जप, होम, वेद का पढ़ना, पितरों का तर्पण, ब्राह्मण-भोजन और व्रत, इन सबको मृतक सूतक में न करे ॥२१॥ जो लोग सूतक में नित्य, नैमित्तिक और काम्य इन सबको करते हैं, उनके पूर्व किये हुए नित्य नैमित्तिक आदि सब कर्म नष्ट हो जाते हैं ॥२२॥ व्रती को, मन्त्र से पवित्र को, अग्निहोत्री को, ब्रह्मनिष्ठ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गृहस्थ को, यति को तथा राजा को सूतक नहीं लगता है ॥२३॥ विवाह उत्सव और यज्ञ में मृतक सूतक के होनेपर पूर्व से पका हुआ अन्न भोजन करना चाहिये, यह मनु ने कहा है॥२४॥ सूतक को न जानकर जो सूतक में अन्न ग्रहण करते हैं वे दोषभागी नहीं होते हैं। मृतक-सूतक में याचकों को देनेवाला दाता दोष भागी होता है ॥२५॥ मृतक-सूतक में

व्रतिनो मन्त्रपूतस्य साग्निकस्य द्विजस्य च ॥ ब्रह्मनिष्ठस्य यतिनो न हि राज्ञां च सूतकम् ॥ २३ ॥ विवाहोत्सवयज्ञेषु जाते च मृतसूतके ॥ तस्य पूर्वकृतं चान्नं भोज्यं तन्मनुरब्रवीत् ॥२४॥ सूतके यस्तु गृह्णाति तदज्ञानान्न दोषभाक् ॥ दाता दोषमवाप्नोति याचकाय ददन्नपि ॥ २५ ॥ प्रच्छाद्य सूतकं यस्तु ददात्यन्नं द्विजाय च ॥ ज्ञात्वा गृह्णन्ति ये विप्रा दोषभाजस्त एव हि ॥ २६ ॥ तस्मात्सूतकशुद्ध्यर्थं पितुः कुर्यात्सपिण्डनम् ॥ ततः पितृगणैः सार्धं पितृलोकं स गच्छति ॥ २७ ॥ द्वादशाहे त्रिपक्षे वा षण्मासे वत्सरेऽपि वा ॥ सपिण्डीकरणं प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ २८ ॥ मया तु प्रोच्यते तार्क्ष्य शास्त्रधर्मानु-

जो सूतक छिपाकर ब्राह्मण को अन्न देता है और जो ब्राह्मण जानकर लेता है वे दोनों दोषभागी होते हैं ॥२६॥ अतः सूतक की शुद्धि के लिए पिता का सपिण्डन करे, उसके पश्चात् वह पिता पितृगणों के पितृलोक को जाता है॥२७॥ बारहवें दिन, तीन पक्ष में, छ महीने में अथवा एक वर्ष में सपिण्डीकरण कहा है॥२८॥ हे गरुड़ ! मैंने तो धर्मशास्त्र

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

के अनुसार चारों वर्णों को बारहवें दिन सपिण्डन कहा है ॥२९॥ कलि में धर्म की अनित्यता से पुरुष की आयु कम होने से शरीर के स्थिर न रहने से बारहवें दिन सपिण्डन करना उचित है ॥ ३० ॥ यज्ञोपवीत, व्रतों का उद्यापन, उत्सव, विवाह और यज्ञ आदि गृहस्थों के घर में किसी के मरने पर नहीं होते हैं ॥३१॥ जब तक सपिण्डन

सारतः ॥ चतुर्णामेव वर्णानां द्वादशाहे सपिण्डनम् ॥ २९ ॥ अत्यल्पात्कलिधर्माणां पुंसां चैवायुषः क्षयात् ॥ अस्थिरत्वाच्छरीरस्य द्वादशाहे प्रशस्यते ॥ ३० ॥ व्रतबन्धोत्सवादीनि व्रतस्योद्यापनानि च ॥ विवाहादि भवेन्नैव मृते च गृहमेधिनि ॥ ३१ ॥ भिक्षुर्भिक्षां न गृह्णाति हन्तकारो न गृह्यते ॥ नित्यं नैमित्तिकं लुप्येद्यावत्पिण्डो न मेलितः ॥३२॥ कर्म-लोपात्प्रत्यवायी भवेत्तस्मात्सपिण्डनम् ॥ निरग्निकः साग्निको वा द्वादशाहे समाचरेत् ॥३३॥ यत्फलं सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ॥ तत्फलं समवाप्नोति द्वादशाहे सपिण्डनात् ॥ ३४ ॥

नहीं हो जाता तब तक याचक भिक्षा नहीं लेता; बलि, वैश्वदेव और नित्य नैमित्तिक कर्म सब लुप्त हो जाते हैं ॥ ३२॥ कर्म के लोप से (वह जीव) विघ्नकारक होता है, इसलिए सपिण्डन अवश्य करना चाहिये, चाहे निरग्निक हो और चाहे साग्निक । बारहवें दिन सपिण्डन अवश्य करे ॥३३॥ जो फल सब तीर्थों में होता है और जो फल सब यज्ञों में है वह सब फल बारहवें दिन सपिण्डन करने से प्राप्त होता है ॥ ३४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America, HHFA(USA)

इसलिये स्नान करके मृतक-स्थान को गोबर से लीपे और शास्त्र में कहे हुए विधान से पुत्र सपिण्डी करे ॥३५॥ पाद्य, अर्घ्य, आचमन आदि से विश्वेदेवों का पूजन करे और जो प्रेतयोनि से नहीं छूटनेवाले पितरों को विकिर-अन्न देकर जल से आचमन करे ॥३६॥ वसु, रुद्र और सूर्य स्वरूप और पितामह आदिकों को यथाक्रम से तीन तीन

अतः स्नात्वा मृतस्थाने गोमयेनोपलेपिते ॥ शास्त्रोक्तेन विधानेन सपिण्डीं कारये-
त्सुतः ॥३५॥ पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैर्विश्वेदेवांश्च पूजयेत् ॥ को पित्रे विकिरं दत्त्वा पुनश्चापि
उपस्पृशेत् ॥३६॥ दद्यात्पितामहादीनां त्रीन्पिण्डांश्च यथाक्रमम् ॥ वसुरुद्रार्करूपाणां
चतुर्थं मृतकस्य च ॥ ३७ ॥ चन्दनैस्तुलसीपत्रैर्धूपैर्दीपैः सुभोजनैः ॥ मुखवासैः सुवस्त्रैश्च
दक्षिणाभिश्च पूजयेत् ॥ ३८ ॥ प्रेतपिण्डं त्रिधा कृत्वा सुवर्णस्य शलाकया ॥ पितामहा-
दिपिण्डेषु मेलयेत्तं पृथक्पृथक् ॥ ३९ ॥ पितामह्या समं मातुः पितामहसमं पितुः ॥
सपिण्डीकरणं कुर्यादिति तार्क्ष्य मतं मम ॥ ४० ॥ मृते पितरि यस्याथ विद्यते च

पिण्ड देवे और चौथा पिण्ड मृतक को देवे ॥३७॥ चन्दन, तुलसीपत्र, धूप, दीप, उत्तम भोजन, ताम्बूल, इलायची, वस्त्र और दक्षिणा आदि से पूजन करे ॥३८॥ तदनन्तर सोने की शलाका से प्रेत के पिंड को तीन भाग करके पितामह आदि से पिण्ड में उसको पृथक्-पृथक् मिलावे ॥३९॥ पितामही के साथ माता का और पितामह के साथ पिता का सपिंडीकरण करे । हे गरुड़! यह मेरा मत है ॥४०॥ पिता के मरने पर भी यदि पितामह जीवित हों तो

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उसे प्रपितामह, वृद्ध-प्रपितामह आदि को तीन पिंड देना चाहिये ॥४१॥ पिता के पिंड को तीन भाग करके प्रपितामह आदि के तीन पिंडों में क्रम से मिला देवे, माता के पहले मर जाने पर पितामही विद्यमान होवे तो ॥४२॥ मातृश्राद्ध में पिता के पिंड की ऐसी ही विधि करे अर्थात् प्रपितामही वृद्ध प्रपितामही आदि को तीन पिंड देकर उनके साथ

पितामहः ॥ तेन देयास्त्रयः पिण्डाः प्रपितामहपूर्वकाः ॥ ४१ ॥ तेभ्यश्च पैतृकं पिण्डं मेलयेत्तं त्रिधा कृतम् ॥ मातर्यग्रे प्रशान्तायां विद्यते च पितामही ॥ ४२ ॥ तदा मातृकश्राद्धेऽपि कुर्यात्पैतृकवद्विधिम् ॥ यद्वा मयि महालक्ष्म्यां तयोः पिण्डं च मेलयेत् ॥ ४३ ॥ अपुत्रायाः स्त्रियाः कुर्यात्पतिः सपिण्डनादिकम् ॥ श्वश्र्वादिभिः सहैवास्याः सपिण्डीकरणं भवेत् ॥ ४४ ॥ भर्त्रादिभिस्त्रिभिः कार्यं सपिण्डिकरणं स्त्रियाः ॥ नैतन्मम मतं तार्क्ष्य पत्या सापिण्ड्यमर्हति ॥४५॥ एकां चितां समारूढौ दम्पती यदि काश्यप ॥ तृणमन्तरतः कृत्वा

माता के पिंड के तीन भाग करके उनमें क्रम से मिलावे अथवा उस माता-पिता के पितामहरूप मैं हूँ, मुझमें पिता को और पितामहीरूप लक्ष्मी हैं उनमें माता के पिंड को मिलावे ॥४३॥ पुत्र-रहित स्त्री का सपिंडन आदि पति करे, स्त्री की सास आदि के साथ ही उसका सपिंडन होता है ॥४४॥ स्त्री का सपिंडीकरण भर्ता आदि तीन के साथ करना चाहिये। हे गरुड़! यह मेरी सम्मति नहीं है कि वह पति के साथ सपिंडता के योग्य नहीं है ॥४५॥ हे गरुड़!

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जो स्त्री-पुरुष दोनों एक चिता पर चढ़कर जले हों तो श्वशुर आदि के बीच में तृण करके तब उस सती का सपिंडन करे ।।४६।। एक ही पुत्र पहले पिता का पिंडदान करे पश्चात् सती का करे, अनन्तर स्नान करे ।।४७।। यदि सती दस दिन के भीतर अग्नि में प्रवेश करे तो उसका पति के साथ ही शय्यादान और पिंडदान करना चाहिये ।।४८।। हे

श्वशुरादेस्तदा चरेत् ।। ४६ ।। एक एव सुतः कुर्यादादौ पिण्डादिकं पितुः ।। तदूर्ध्वं च प्रकुर्वीत सत्याः स्नानं पुनश्चरेत् ।। ४७ ।। हुताशं या समारूढा दशाहाभ्यन्तरे सती ।। तस्या भर्तुर्दिने कार्यं शय्यादानं सपिण्डनम् ।। ४८ ।। कृत्वा सपिण्डनं तार्क्ष्य प्रकुर्यात्पितृतर्पणम् ।। उदाहरेत्स्वधाकारं वेदमन्त्रैः समन्वितम् ।। ४९ ।। अतिथिं भोजयेत्पश्चाद्धन्तकारं च सर्वदा ।। तेन तृप्यन्ति पितरो मुनयो देवदानवाः ।। ५० ।। ग्रासमात्रा भवेद्भिक्षा चतुर्ग्रासं तु पुष्कलम् ।। पुष्कलानि च चत्वारि हन्तकारो विधीयते ।। ५१ ।।

गरुड़ ! सपिंडन करके पितृतर्पण करे और वेद के मन्त्रों के साथ स्वधा का उच्चारण करे ।।४९।। पश्चात् अतिथिको भोजन देकर सदा बलिवैश्वदेव करे । उससे पितर, मुनि, देवता और दानव सब तृप्त होते हैं ।।५०।। एक ग्रास के बराबर भिक्षा होती है । चार ग्रास का एक पुष्कल होता है और चार पुष्कल का एक हन्तकार होता है ।।५१।। सपिंडी में चन्दन अक्षतों से ब्राह्मण के चरण की पूजा करे और पितरों की अक्षय- तृप्ति के लिये उनको दान देना चाहिये

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।।५२।। वर्ष भर के लिये जीविका, घी, अन्न, स्वर्ण, चाँदी, गौ, घोड़ा, हाथी, रथ और भूमि ये सब आचार्य को दान करे ।।५३।। तदनन्तर स्वस्तिवाचन कर मन्त्र से कुङ्कुम, अक्षत और नैवेद्य देकर नवग्रहों, देवी और विनायक का पूजन करे ।।५४।। पश्चात् आचार्य मन्त्र-सहित अभिषेक करे और हाथ में सूत बाँधकर मन्त्र से पवित्र

सपिण्ड्यां विप्रचरणौ पूजयेच्चन्दनाक्षतैः ।। दानं तस्मै प्रदातव्यमक्षय्यतृप्तिहेतवे ।। ५२ ।।
वर्षवृत्तिं घृतं चान्नं सुवर्णं रजतं सुगाम् ।। अश्वं गजं रथं भूमिमाचार्याय प्रदापयेत् ।। ५३ ।।
ततश्च पूजयेन्मन्त्रैः स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ।। कुङ्कुमाक्षतनैवेद्यैर्ग्रहान्देवीं विनायकम् ।। ५४ ।।
आचार्यस्तु ततः कुर्यादभिषेकं समन्त्रकम् ।। बद्ध्वा सूत्रं करे दद्यान्मन्त्रपूतांस्तथाक्षतान् ।।५५।। ततश्च भोजयेद्विप्रान्मिष्टान्नैर्विविधैः शुभैः ।। दद्यात्सदक्षिणांस्तेभ्यः सजलान्नान्द्विषड्घटान् ।। ५६ ।। वार्यायुधप्रतोदस्तु दण्डस्तु द्विजभोजनात् ।। स्प्रष्टव्याश्च ततो वर्णैः शुध्येरन् ते ततः क्रमात् ।। ५७ ।। एवं सपिण्डनं कृत्वा क्रियावस्त्राणि सन्त्यजेत् ।।

अक्षत दे ।।५५।। पश्चात् नाना प्रकार के सुन्दर मिष्टान्न से १२ ब्राह्मणों को भोजन करावे और उनको दक्षिणा के साथ, जल और अन्न सहित बारह घट दान करे ।।५६।। ब्राह्मण-भोजन के पश्चात् चार वर्णों को क्रम से जल, आयुध, प्रतोद और दण्ड छूना चाहिये (ब्राह्मण जल को, क्षत्रिय आयुध को, वैश्य प्रतोद को और शूद्र दण्ड को स्पर्श करे) तब शुद्धि होती है ।।५७।। इस प्रकार सपण्डिन करके क्रिया के वस्त्रों का त्याग

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करे और शुक्ल वस्त्र धारण करके शय्यादान करे ॥५८॥ इन्द्र सहित सब देवता शय्यादान की प्रशंसा करते हैं, अतः मरने पर अथवा जीते जी भी शय्यादान करना चाहिये ॥५९॥ पुष्ट काष्ठ की बनी हुई, मनोहर, अनेक चित्रों से सुसज्जित, पुष्ट रेशमी सूत से बुनी हुई और स्वर्ण के पत्रों से शोभित ॥६०॥ हंस के समान श्वेत रूई से ढकी

शुक्लाम्बरधरो भूत्वा शय्यादानं प्रदापयेत् ॥५८॥ शय्यादानं प्रशंसन्ति सर्वे देवाः सवासवाः ॥ तस्माच्छय्या प्रदातव्या मरणे जीवितेऽपि वा ॥५९॥ सारदारुमयीं रम्यां सुचित्रैश्चित्रितां दृढाम् ॥ पट्टसूत्रैर्वितनितां हेमपत्रैरलंकृताम् ॥ ६० ॥ हंसतूलीप्रतिच्छन्नां शुभशीर्षोपधानिकाम् ॥ प्रच्छादनपटीयुक्तां पुष्पगन्धैः सुवासिताम् ॥६१॥ दिव्यबन्धैः सुबद्धां च सुविशालां सुखप्रदाम् ॥ शय्यामेवंविधां कृत्वा विस्तृतायां न्यसेद्भुवि ॥ ६२ ॥ छत्रं दीपालयं रोप्यं चामरासनभाजनम् ॥ भृङ्गारकरकादर्शं पञ्चवर्णवितानकम् ॥६३॥ शयनस्य

गद्दी हो, सुन्दर तकिया हो और ऊपर सुन्दर चादर के वस्त्र से युक्त और गन्ध आदि से सुगन्धित हो ॥६१॥ सुन्दर दिव्य बन्धन से बँधी हो और सुख को देनेवाली हो, ऐसी शय्या बनाकर विस्तृत भूमि में स्थापित करे ॥६२॥ छाता, चाँदी की दीवट, चामर, आसन, पात्र, झारी, गडुआ, दर्पण और पाँच रंग का चँदवा ॥६३॥ और भी जो कुछ वस्तु शय्या के लिये लाभदायक हो, उन सब वस्तुओं को चारों ओर अपने-अपने स्थान में स्थापित करे ॥६४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उस शय्या पर स्वर्ण की लक्ष्मी सहित विष्णु की मूर्ति को स्थापित करे, विष्णु की मूर्ति को सम्पूर्ण गहने और आभूषणों से संयुक्त करके और चक्र, गदा आदि शस्त्र तथा वस्त्र उपवस्त्रों से युक्त करे ॥६५॥ स्त्री की शय्या पर काजल, महावर, रोली, वस्त्र और भूषण आदि सोहाग की वस्तुओं को दे ॥६६॥ पश्चात् गन्ध पुष्प से भूषित करके ब्राह्मण

भवेत्किञ्चिद्यच्चान्यदुपकारकम् ॥ तत्सर्वं परितस्तस्याः स्वे स्वे स्थाने नियोजयेत् ॥ ६४ ॥
तस्यां संस्थापयेद्धैमं हरिं लक्ष्मीसमन्वितम् ॥ सर्वाभरणसंयुक्तमायुधाम्बरसंयुतम् ॥ ६५ ॥
स्त्रीणां च शयने धृत्वा कज्जलालक्तकुङ्कुमम् ॥ वस्त्रं भूषादिकं यच्च सर्वमेव प्रदापयेत् ॥६६॥
ततो विप्रं सपत्नीकं गन्धपुष्पैरलङ्कृतम् ॥ कर्णाङ्गुलीयाभरणैः कण्ठसूत्रैश्च काञ्चनैः ॥६७॥
उष्णीषमुत्तरीयं च चोलकं परिधाय च ॥ स्थापयेत्सुखशय्यां लक्ष्मीनारायणाग्रतः ॥६८॥
कुङ्कुमैः पुष्पमालाभिर्हरिं लक्ष्मीं समर्चयेत् ॥ पूजयेल्लोकपालांश्च ग्रहान् देवीं विनायकम् ॥६९॥

को कान के भूषण, अँगूठी और सिकड़ी आदि भूषण से और सोने के अलंकारों से सुशोभित करे ॥६७॥ पगड़ी, दुपट्टा और अँगरखा धारण कराकर शय्या के ऊपर लक्ष्मीनारायण के आगे बैठावे ॥६८॥ कुङ्कुम और फूलों की मालाओं से विष्णु तथा लक्ष्मी का पूजन करे और भी लोकपाल, ग्रह, देवी तथा गणेश की पूजा करे ॥६९॥ फिर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उत्तराभिमुख होकर फूलों की अञ्जलि से ब्राह्मण के आगे खड़ा होकर मन्त्र उच्चारण करे ।।७०।। हे कृष्ण ! क्षीर सागर में जैसी तुम्हारी शय्या है वसी ही शैय्या जन्म-जन्म में हमको प्राप्त हो ।।७१।। इस प्रकार पुष्पाञ्जलिको ब्राह्मण पर और विष्णु की प्रतिमा पर छोड़े और पश्चात् सामग्री सहित उक्त शय्या संकल्पपूर्वक ब्राह्मण को दान करे ।।७२।।

उत्तराभिमुखो भूत्वा गृहीत्वा कुसुमाञ्जलिम् ।। उच्चारयेदिमं मन्त्रं विप्रस्य पुरतः स्थितः ।।७०।। यथा कृष्ण त्वदीयास्ति शय्या क्षीरोदसागरे ।। तथा भूयादशून्येयं मम जन्मनि जन्मनि ।।७१।। एवं पुष्पाञ्जलिं विप्रे प्रतिमायां हरेः क्षिपेत् ।। ततः सोपस्करं शय्यादानं संकल्पपूर्वकम् ।।७२।। दद्याद् व्रतोपदेष्ट्रे च गुरवे ब्रह्मवादिने ।। गृहाण ब्राह्मणैनां त्वं को ददातीति कीर्तयन् ।। ७३ ।। आन्दोलयेद् द्विजं लक्ष्मीं हरिं च शयने स्थितम् ।। ततः प्रदक्षिणीकृत्य प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।। ७४ ।। सर्वोपस्करणैर्युक्तं प्रदद्यादतिसुन्दरम् ।। शय्यायां सुख-

व्रतके उपदेश करनेवाले ब्रह्मवादी गुरुको शय्यादान करते समय ऐसा कहे—हे ब्राह्मण ! इसको ग्रहण कीजिये । आपको कौन दे सकता है ? ऐसे कहकर देवे ।।७३।। शय्या पर बैठे हुए विष्णु, ब्राह्मण और लक्ष्मी आदि को हिला करके प्रदक्षिणापूर्वक नमस्कार कर विसर्जन करे ।।७४।। सब सामग्रीयुक्त अति सुन्दर शय्या में सुखपूर्वक शयन करने के लिये वैभव हो तो घर का भी दान करे ।।७५।। जीता हुआ पुरुष अपने हाथ से जो शय्यादान करता है तो जीते

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जी ही पर्वपर उसको वृषोत्सर्ग भी करना चाहिये ॥७६॥ यह शय्या एक से अतिरिक्त ब्राह्मण को नहीं देनी चाहिये । शय्या बहुतों को देने से अथवा बेचने से देनेवाला नरक में पड़ता है ॥७७॥ योग्य ब्राह्मण को शय्यादान करने से वाञ्छित फल मिलता है । दाता का पिता और पुत्र परलोक तथा इस लोक में प्रसन्न होते हैं ॥७८॥ शय्यादान के

सुप्त्यर्थं गृहं च विभवे सति ॥ ७५ ॥ जीवमानः स्वहस्तेन यदि शय्यां ददाति यः ॥ स जीवंश्च वृषोत्सर्गं पर्वण्येव समाचरेत् ॥७६॥ इयमेकस्य दातव्या बहूनां न कदाचन ॥ सा विभक्ता च विक्रीता दातारं पातयत्यधः ॥७७॥ पात्रे प्रदाय शयनं वाञ्छितं फलमाप्नुयात् ॥ पिता च दाता तनयः परत्रेह च मोदते ॥७८॥ पुरन्दरगृहे दिव्ये सूर्यपुत्रालयेऽपि च ॥ उपतिष्ठेन्नैव सन्देहः शय्यादानप्रभावतः ॥७९॥ विमानवरमारूढः सेव्यमानोऽप्सरोगणैः ॥ आभूतसम्प्लवं यावत्तिष्ठत्यातङ्कवर्जितः ॥ ८० ॥ सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वपर्वदिनेषु च ॥ तेभ्यश्चाप्यधिकं पुण्यं शय्यादानोद्भवं भवेत् ॥८१॥ एवं दत्त्वा सुतः शय्यां पददानं

प्रभाव से सुन्दर दिव्य इन्द्र-भवन में और यमपुरी में सुख से रहता है, इसमें सन्देह नहीं है ॥७९॥ सुन्दर विमान में बैठकर अप्सराओं के सहित महाप्रलय पर्यन्त आनन्द सहित वास करता है ॥८०॥ सब तीर्थ में और सब पर्वों में जो पुण्य होता है उससे अधिक पुण्य शय्यादान करने से प्राप्त होता है ॥८१॥ पुत्र इस प्रकार शय्यादान करके पददान

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करे। उसकी विधि मुझसे सुनो, मैं तुमसे कहता हूँ।।८२।। छाता, जूता, वस्त्र, अँगूठी, कमंडलु, आसन, पंचपात्र, ये वस्तुयें पद-दानमें दी जाती हैं जो पाँच प्रकारका कहा गया है।।८३।। इन वस्तुओं के साथ दंड, ताँबे के पात्र, आमान्न-भोजन, यज्ञोपवीत देने से पददानसम्पूर्ण होता है।।८४।। इस प्रकार बारहवें दिन यथाशक्ति १३ पददान १३ ब्राह्मणों को देवे।।८५।। इस पद-

प्रदापयेत् ॥ तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥८२॥ छत्रोपानहवस्त्राणि मुद्रिका च कमण्डलुः ॥ आसनं पञ्चपात्राणि पदं पञ्चविधं स्मृतम् ॥ ८३ ॥ दंडेन ताम्रपात्रेण ह्यामान्नैर्भोजनैरपि ॥ अर्थयज्ञोपवीतैश्च पदं सम्पूर्णतां व्रजेत् ॥ ८४ ॥ त्रयोदशपदानीत्थं यथाशक्त्या विधाय च ॥ त्रयोदशभ्यो विप्रेभ्यः प्रदद्याद् द्वादशेऽहनि ॥ ८५ ॥ अनेन पददानेन धार्मिका यान्ति सद्गतिम् ॥ यममार्गगतानां च पददानं सुखप्रदम् ॥ ८६ ॥ आतपस्तत्र वै रौद्रो दह्यते येन मानवः ॥ छत्रादानेन सुच्छाया जायते तस्य मूर्द्धनि ॥८७॥ अतिसंकटसंकीर्णे यमलोकस्य वर्त्मनि अश्वारूढाश्च ते यान्ति ददन्ते यद्युपानहौ ॥८८॥

दान से धार्मिक पुरुष सद्गति पाता है और जो यममार्ग में गये हैं उनको भी यह पददान सुखदेनेवालाहै।।८६।। यममार्ग में निश्चय बड़ा उष्ण घाम होता है, उससे मनुष्य जलते हैं। उनके लिये छाता दान करने से उसके मस्तक पर सुन्दर छाया रहती है।।८७।। जो जूते का दान करता है वह अत्यन्त दुःखपूर्ण यममार्ग में घोड़े पर चढ़कर जाता है।।८८।। हे गरुड़!

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वहाँ शीत, उष्ण और वायु से घोर दुःख मिलता है, परन्तु वस्त्र दान के प्रभाव से मार्ग में सुखसे चलता है॥८९॥ यमदूत भयंकर और कृष्ण-पिङ्गल वर्ण के होते हैं। वे मुद्रिकादान करनेवाले को मार्ग पीड़ा नहीं देते हैं ॥९०॥ कमंडलु दान करने से अति घाम युक्त, पवन तथा जल रहित उस यममार्ग में प्यास लगने पर जल मिलता

शीतोष्णवातदुःखानि तत्र घोराणि खेचर ॥ वस्त्रदानप्रभावेण सुखं निस्तरते पथि ॥८९॥ यमदूता महारौद्राः करालाः कृष्णपिङ्गलाः ॥ न पीडयन्ति तं मार्गे मुद्रिकायाः प्रदानतः ॥९०॥ बहुघर्मसमाकीर्णेनिर्वाते तोयवर्जिते ॥ कमण्डलुप्रदानेन तृषितः पिबते जलम् ॥९१॥ मृतोद्देशेन यो दद्याद् जलपात्रं च ताम्रजम् ॥ प्रपादानसहस्रस्य यत्फलं सोऽश्नुते ध्रुवम् ॥ ९२ ॥ आसनं भोजनं चैव दत्ते सम्यग्द्विजातये ॥ सुखेन भुङ्क्ते पाथेयं पथि गच्छञ्छनैः शनैः ॥९३॥ एवं सपिण्डनदिने दत्त्वा दानं विधानतः ॥ बहून् सम्भोजये-

है ॥ ९१ ॥ मरे हुए जीव के लिए जो ताँबे के जलपात्र का दान करता है उसे हजार प्याऊ लगाने का फल मिलता है ॥९२॥ मृतक के लिये ब्राह्मणको आसन और भोजन देने से यममार्ग में धीरे-धीरे जाता हुआ प्राणी मार्ग-व्यय पाता है जिसे सुख से खाता है ॥९३॥ इस प्रकार सपिंडन के दिन विधि-से दान देकर बहुत से ब्राह्मणों को भोजन कराये और चांडाल आदि को भी भोजन दे ॥९४॥ सपिंडन के उपरान्त और वर्ष के भीतर प्रत्येक मासमें

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पिण्डसहित कुम्भदान करना चाहिये ॥९५॥ हे गरुड़! प्रेतकार्य के बिना अन्य किये हुए कार्य नहीं करना चाहिये। प्रेत को अक्षय तृप्ति के लिए पुनः पुनः पिंडदान करे॥९६॥ अतः मासिक और वार्षिक तथा विशेष तिथियों में विशेष मरने पर पाक्षिक श्राद्ध रूप से कहूँगा। पौर्णमासी को जो मरा है उसकी चतुर्थी पाक्षिक श्राद्ध तिथि है, चतुर्थी

द्विप्रान् यः श्वपाकादिकानपि ॥ ९४ ॥ ततः सपिण्डनादूर्ध्वमर्वाक्संवत्सरादपि ॥ प्रतिमासं प्रदातव्यो जलकुम्भः सपिण्डकः ॥ ९५ ॥ कृतस्य करणं नास्ति प्रेतकार्यादृते खग ॥ प्रेतार्थं तु पुनः कुर्यादक्षय्यतृप्तिहेतवे ॥ ९६ ॥ अतो विशेषं वक्ष्यामि मासिकस्याब्दिकस्य च ॥ पाक्षिकस्य विशेषं च विशेषतिथिसंस्थिते ॥ ९७ ॥ पौर्णमास्यां मृतो यस्तु चतुर्थी तस्य ऊनिका ॥ चतुर्थ्यां तु मृतो यस्तु नवमी तस्य ऊनिका ॥ ९८ ॥ नवम्यां तु मृतो यस्तु रिक्ता तस्य चतुर्दशी ॥ इत्येवं पाक्षिकं श्राद्धं कुर्याद्विंशतिमे दिने ॥ ९९ ॥ एक एव यदा मासः संक्रान्तिद्वयसंयुतः ॥ मासद्वयगतं श्राद्धं मलमासे हि शस्यते ॥१००॥ एक-

को जो मरा है नवमी उसकी पाक्षिक श्राद्ध तिथि है ॥९८॥ नवमीको जो मरा है उसकी रिक्ता चतुर्दशी पाक्षिक श्राद्ध तिथि है। इस प्रकार बीसवें दिन पाक्षिक श्राद्ध करे॥९९॥ जब एक ही महीने में दो संक्राति हों तब दोनों महीनों का श्राद्ध मलमास में करना चाहिये ॥१००॥ एक महीने में यदि दो महीने हो जायँ तो वही पक्ष वही ३०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तिथियाँ जाननी चाहिये ॥१०१॥ जो तिथि के पहले आधे भाग में मृत्यु हुई हो तो पूर्व का मास और दूसरे आधे भाग में मृत्यु हुई हो तो उसके आगे का मास जानिये। इस प्रकार पंडितों को मलमास में विचार करना चाहिये ॥१०२॥ हे गरुड़! संक्रान्तिरहित महीने (मलमास) में सपिण्डीकरण करना चाहिये, वैसे ही मासिक श्राद्ध और वार्षिक श्राद्ध

स्मिन्मासि मासौ द्वौ यदि स्या तां तयोर्द्वयोः॥तावेव पक्षौ तावेव तिथयस्त्रिंशदेव हि॥१०१॥ तिथ्यर्धे प्रथमे पूर्वो द्वितीयाऽर्धेतदुत्तरः॥मासाविति बुधैश्चिन्त्यौ मलमासस्यमध्यगौ॥१०२॥ असंक्रान्ते च कर्तव्यं सपिण्डीकरणं खग ॥ तथैव मासिकं श्राद्धं वार्षिकं प्रथमं तथा ॥ १०३ ॥ संवत्सरस्य मध्ये तु यति स्यादधिमासकः ॥ तदा त्रयोदशे मासि क्रिया प्रेतस्य वार्षिकी ॥ १०४ ॥ पिण्डवर्ज्यमसंक्रान्ते संक्रान्ते पिण्डसंयुतम् ॥ प्रतिसंवत्सरं श्राद्धमेवं मासद्वयेऽपि च ॥ १०५ ॥ एवं संवत्सरे पूर्णे वार्षिकं श्राद्धमाचरेत् ॥ तस्मिन्नपि विशेषेण

भी पूर्व के मास में करना चाहिये ॥१०३॥ वर्ष के मध्य में यदि अधिक मास हो तो प्रेत की वार्षिक क्रिया तेरहवें महीने में करनी चाहिये ॥१०४॥ संक्रान्ति-रहित महीने में पिण्डदान नहीं करना चाहिये और संक्रातियुक्त महीने में पिण्डदान करना चाहिये। ऐसे दोनों महीने में प्रतिवर्ष श्राद्ध करना चाहिये ॥१०५॥ इस प्रकार संवत्सर के पूर्ण होने पर वार्षिक श्राद्ध करे। उसमें विशेषकर ब्राह्मण भोजन कराना योग्य है ॥१०६॥ संवत्सर के उपरान्त श्राद्ध में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तीन पिण्ड सदा करना चाहिये, एकोद्दिष्ट न करनेवाला पुत्र पितृघातक होता है ॥ १०७॥ वार्षिक श्राद्ध हुये बिना तीर्थश्राद्ध, गयाश्राद्ध, गजच्छाय, पितृसम्बन्धी कार्य, ग्रहणमें श्राद्ध और युगादि तिथियों में श्राद्ध नहीं करना चाहिये ॥१०८॥ हे गरुड़! जब पुत्रको गयाश्राद्ध करना हो तो संवत्सरके उपरान्त पिता की भक्ति से करना चाहिये १०९॥

भोजनीया द्विजातयः ॥ १०६ ॥ कुर्यात्संवत्सरादूर्ध्वं श्राद्धे पिण्डत्रयं सदा ॥ एकोद्दिष्टं न कर्तव्यं तेन स्यात्पितृघातकः ॥१०७॥ तीर्थश्राद्धं गया श्राद्धं गजच्छायं च पैतृकम ॥ अब्द-मध्ये न कुर्वीत ग्रहणे न युगादिषु ॥१०८॥ यदा पुत्रेण वै कार्यं गयाश्राद्धं खगेश्वर ॥ तदा संवत्सरादूर्ध्वं कर्तव्यं पितृभक्तितः ॥ १०९ ॥ गयाश्राद्धात् प्रमुच्यन्ते पितरो भव-सागरात् ॥ गदाधरानुग्रहेण ते यान्ति परमां गतिम् ॥ ११० ॥ तुलसीमञ्जरीभिश्च पूजये-द्विष्णुपादुकाम् ॥ तस्या लवादितीर्थेषु पिण्डान् दद्याद्यथाक्रमम् ॥ १११ ॥ उद्धरेत सप्त गोत्राणि कुलमेकोत्तरं शतम् ॥ शमीपत्रप्रमाणेन पिण्डं दद्याद्गयाशिरे ॥ ११२ ॥ गया-

गयाश्राद्ध करने से पितर भवसागर से छुट जाते हैं और गदाधर के अनुग्रह से वे परमगति को प्राप्त होते हैं ॥११०॥ तुलसी की मञ्जरियों से विष्णु की चरणपादुका का पूजन करे और उस गया के लवादि तीर्थ यथाक्रम में पिण्डदान करे ॥१११॥ जो गया के शिर में शमी के पत्ते के प्रमाण का पिण्ड देता है, वह सात गोत्र और एक सौ एक कुल

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का उद्धार करता है ।।११२।। कुल को आनन्द देनेवाले जो पुरुष गया में जाकर पिण्डदान करते हैं, वे पितरों को सन्तुष्ट करनेवाले होते हैं। उनका जन्म लेना सफल है ।।११३।। हिमालय के पास वर्तमान कलाप नामक एक बाग है। उसमें पितरों द्वारा गाई हुई मनु के पुत्र इक्ष्वाकु की कथा सुनी जाती है ।। ११४ ।। हमारे कुल में वे

मुपेत्य यः श्राद्धं करोति कुलनन्दनः ।। सफलं तस्य तज्जन्म जायते पितृतुष्टिदम् ।।११३।।
श्रूयते चापि पितृभिर्गीता गाथा खगेश्वर ।। इक्ष्वाकोर्मनुपुत्रस्य कलापोपवने सुरैः ।।११४।।
अपि नस्ते भविष्यन्ति कुले सन्मार्गशीलिनः ।। गयामुपेत्य ये पिण्डान् दास्यन्त्यस्माक-
मादरात् ।। ११५ ।। एवमामुष्मिकीं तार्क्ष्य यः करोति क्रियां सुतः ।। स स्यात्सुखी भवे-
न्मुक्तः कौशिकस्यात्मजो यथा ।। ११६ ।। भरद्वाजात्मजाः सप्त भुक्त्वा जन्मपरम्पराम् ।।
कृत्वापि गोवधं तार्क्ष्य मुक्ताः पितृप्रसादतः ।। ११७ ।। सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः काला-
ञ्जिरे गिरौ ।। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ।।११८ ।। तेऽपि जाताः कुरुक्षेत्रे

सन्मार्गशील होंगे जो गया में जाकर हमको आदर से पिण्ड देंगे ।।११५।। हे गरुड़ ! इस प्रकार जो पुत्र आमुष्मिकी क्रिया करता है वह कौशिक के पुत्र (विश्वामित्र) के समान सुखी होता है और मुक्त हो जाता है ।।११६।। हे गरुड़ ! भरद्वाज के सात पुत्र जन्म की परम्परा को भोगकर गौ का वध करके भी पितरों के प्रताप से मुक्त हो गये ।।११७।। प्रथम सात व्याध दशार्ण देश में मृग कालाञ्जिर पर्वत में, चक्रवाक शरद्वीप में और हंस इस मानसरोवर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में, ॥११८॥ वेद के पारङ्गत ब्राह्मण के पुत्र भी कुरुक्षेत्र में पिता की भक्ति के कारण मुक्त हुये ॥११९॥ इस कारण यत्नपूर्वक मनुष्यों को पितृभक्त होना चाहिये। पिता की भक्ति से परलोक तथा इस लोक में सुख होता है ॥१२०॥ हे गरुड़! मैंने पुत्रकी इच्छा को देनेवाली, पवित्र मुक्ति को देनेवाली यह सब और्ध्वदेहिक क्रिया कही है

ब्राह्मण वेदपारगाः ॥ पितृभक्त्या च ते सर्वे गता मुक्तिं द्विजात्मजाः ॥११९॥ तस्मात् सर्वप्रयत्नेन पितृभक्तो भवेन्नरः ॥ इह लोके परे वापि पितृभक्त्या सुखी भवेत् ॥ १२० ॥ एतत्तार्क्ष्य मयाऽऽख्यातं सर्वमेवौर्ध्वदेहिकम् ॥ पुत्रवाञ्छाप्रदं पुण्यं पितुर्मुक्तिप्रदायकम् ॥१२१ निर्धनोऽपि नरः कश्चिद्यः शृणोति कथामिमाम् ॥ सोऽपि पापविनिर्मुक्तो दानस्य फलमाप्नुयात् ॥१२२ ॥ विधिना कुरुते यस्तु श्राद्धं दानं मयोदितम् ॥ शृणुयाद् गारुडं चापि शृणु तस्यापि यत्फलम् ॥ १२३ ॥ पिता ददाति सत्पुत्रान् गोधनानि पितामहः ॥ धनदाता भवेत्सोऽपि यस्तस्य प्रपितामहः ॥१२४॥ दद्याद्विपुलमन्नाद्यं वृद्धस्तु प्रपितामहः ॥

॥१२१॥ जो कोई निर्धन मनुष्य भी इस कथा को सुनेगा वह पाप से छूटकर दान के फल का भागी होगा ॥१२२॥ जो कोई मेरा कहा हुआ श्राद्ध और दान विधिपूर्वक करेगा और गरुड़पुराण को सुनेगा उसका फल सुनो॥१२३॥ पिता सत्पुत्रों को गोधन और पितामह धन देते हैं, प्रपितामह भी धन ही देता है ॥१२४॥ वृद्धप्रपितामह बहुत-सा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्न आदि देता है, परन्तु श्राद्ध में तृप्त ये सब (पिता पितामह प्रपितामह आदि) पुत्रों को वाञ्छित फल देकर ।१२५। धर्ममार्ग से धर्मराज के भवन को जाते हैं वहाँ वे धर्मसभा में बड़े आदर से स्थित होते हैं ।।१२६।। सूतजीने कहा—इस प्रकार श्रीविष्णु से कहा हुआ और्ध्वदेहिक दान का महात्म्य सुनकर गरुड़जी बड़े आनन्द मग्न हुये ।।१२७।।

इति श्रीगरुड़पुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां सपिण्डनादिसर्वकर्मनिरूपणं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ।। १३ ।।

तृप्ताः श्राद्धेन ते सर्वे दत्त्वा पुत्रस्य वाञ्छितम् ।। १२५ ।। गच्छन्ति धर्ममार्गैश्च धर्मराजस्य मन्दिरम् ।। तत्र धर्मसभायां ते तिष्ठन्ति परमादरात् ।।१२६ सूत उवाच ।। एवं श्रीविष्णुना प्रोक्तमौर्ध्वदानसमुद्भवम् ।। श्रुत्वा माहात्म्यमतुलं गरुडो हर्षमागतः ।। १२७ ।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे सपिण्डनादिसर्वकर्मनिरूपणं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ।। १३ ।।

गरुड उवाच ।। यमलोकः कियन्मात्रः कीदृशः केन निर्मितः ।। सभा च कीदृशी तस्यां धर्म आस्ते च कैः सह ।। १ ।। ये धर्ममार्गैर्गच्छन्ति धार्मिका धर्ममन्दिरम् ।। तान धर्मानपि

गरुड़जी ने कहा—हे भगवन् ! यमलोक कितना बड़ा है? कैसा है? किसने बनाया है ? वहाँ की सभा कैसी है ? और उस सभा में धर्म किनके साथ रहता है ?।।१।। जो धार्मिक जन जिन धर्म मार्गों पर चलकर धर्म के मन्दिर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में जाते हैं, उन धर्मों और मार्गों को भी हे दयानिधे ! मुझसे कहिये ॥२॥ श्रीभगवान् ने उत्तर दिया—हे गरुड़ ! सुनो मैं कहता हूँ जो नारद आदि देवर्षियों के द्वारा जानने योग्य हैं, वह स्वर्गीय धर्मनगर बड़े पुण्य से मिलता है ॥३॥ याम्य (यमपुरी) और नैर्ऋत्य (राक्षसपुरी) के बीच में यमराज नगर सम्पूर्ण वज्रमय स्वर्णीय और कठोर है और

मार्गांश्च ममाख्याहि दयानिधे ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु तार्क्ष्य प्रवक्ष्यामि यद्गम्यं नारदादिभिः ॥ तद्धर्मनगरं दिव्यं महापुण्यैरवाप्यते ॥ ३ ॥ याम्यनैर्ऋतयोर्मध्ये पुरं वैवस्वतस्य यत् ॥ सर्ववज्रमयं दिव्यमभेद्यं तत्सुरासुरैः ॥ ४ ॥ चतुरस्रं चतुर्द्वारमुच्चप्राकारवेष्टितम् ॥ योजनानां सहस्रं हि प्रमाणेन तदुच्यते ॥ ५ ॥ तस्मिन्पुरेऽस्ति सुभगं चित्रगुप्तस्य मन्दिरम् ॥ पञ्चविंशतिसंख्याकैर्योजनैर्विस्तृतायतम् ॥ ६ ॥ दशोच्छ्रित महादिव्यं लोहप्राकारवेष्टितम् ॥ प्रतोलीशतसञ्चारं पताकाध्वजभूषितम् ॥ ७ ॥ विमानगणसंकीर्णं

देवताओं तथा राक्षसों द्वारा वह अभेद्य है (उसको देवता और असुर कोई नहीं तोड़ सकता है) ॥४॥ चौकोर है, उसमें चार द्वार ऊँची चहारदीवारी से घिरा है और एक हजार योजन (४ हजार कोस) में वह विस्तृत है ॥५॥ उस नगर में सुन्दर चित्रगुप्त का मन्दिर है जिसकी पच्चीस योजन (सौ कोस) की लम्बाई चौड़ाई है ॥६॥ दस योजन ऊँचा है, बड़ा मनोहर है और लोहे के प्राकार (चहार दीवारी) से घिरा हुआ है, सैकड़ों गलियों और पताकाओं तथा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ध्वजाओं से शोभित है।।७।।विमानों के समूह से आच्छादित है, गाने-बजाने से गुञ्जायमान है। उसमें चतुर चित्रकारों द्वारा चित्र बनाये गये हैं और देव-शिल्पियों ने उसका निर्माण किया है ।।८।। बाग, फुलवारी से मनोहर उस चित्रगुप्त मन्दिर में अनेक प्रकार के पक्षी कूज रहे हैं, गन्धर्व और अप्सराओं द्वारा चारों ओर शोभायमान है ।।९।। उस

गीतवादित्रनादितम् ।। चित्रितं चित्रकुशलैर्निर्मितं देवशिल्पिभिः ।। ८ ।। उद्यानोपवनै रम्यं नाना विहगकूजितम् ।। गन्धर्वैरप्सराभिश्च समन्तात्परिवारितम् ।।९।। तत्सभायां चित्रगुप्तः स्वासने परमाद्भुते ।। संस्थितो गणयेदायुर्मानुषाणां यथातथम् ।। १० ।। न मुह्यति कथञ्चित्स सुकृते दुष्कृतेऽपि वा ।। यद्येनोपार्जितं कर्म शुभं वा यदि वाऽशुभम् ।। ११ ।। तत्सर्वं भुञ्जते तत्र चित्रगुप्तस्य शासनात् ।। चित्रगुप्तालयात्प्राच्यां ज्वरस्यास्ति महागृहम् ।। १२ ।। दक्षिणस्यां च शूलस्य लूताविस्फोटयोस्तथा ।। पश्चिमे कालपाशः स्यादजीर्णस्या-

सभा में चित्रगुप्तजी परम अद्भुत आसन पर बैठकर मनुष्यों की यथार्थ आयु की गणना करते हैं ।।१०।। चित्रगुप्त मनुष्य के किये हुए पापों तथा पुण्यों को कभी नहीं भूलते हैं, मानव ने जो शुभ अथवा अशुभ कर्म इकट्ठा किया है ।।११।। वह सब चित्रगुप्त की आज्ञा से प्राणी भोगता है। चित्रगुप्त के घर से पूर्वदिशा में ज्वर का बड़ा भारी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भवन है ॥१२॥ दक्षिण में शूल और विस्फोटक आदि का घर है। पश्चिम में कालपाश, अजीर्ण तथा अरुचि का भवन है॥ १३॥उत्तर दिशा में राजरोग और पाण्डुरोग का आवास है। ईशान दिशा में शिरोव्यथा का और अग्निकोण में मूर्छा का निवास-स्थान है ॥१४॥ नैर्ऋत्यकोण में अतिसार का, वायव्य में शीत और दाह का घर है इत्यादि अनेक रोग-मन्दिरों से घिरा हुआ वह नगर है ॥१५॥ चित्रगुप्त मनुष्यों के शुभ-अशुभ कर्मों को लिखते हैं चित्रगुप्त के घर

रुचेस्तथा ॥ १३ ॥ उदीच्यां राजरोगोऽस्ति पाण्डुरोगस्तथैव च ॥ ऐशान्यां तु शिरोर्तिः स्यादाग्नेय्यामस्ति मूर्च्छना ॥१४॥ अतिसारो नैर्ऋते तु वायव्यां शीतदाहकौ ॥ एवमादिभिरन्यैश्च व्याधिभिः परिवारितः ॥१५॥ लिखते चित्रगुप्तस्तु मानुषाणां शुभाशुभम् ॥ चित्रगुप्तालयादग्रे योजनानां च विंशतिः ॥१६॥ पुरमध्ये महादिव्यं धर्मराजस्य मन्दिरम् ॥ अस्ति रत्नमयं दिव्यं विद्युज्ज्वालार्कवर्चसम् ॥१७॥ द्विशतं योजनानां च विस्तारायामतः स्फुटम् ॥ पञ्चाशच्च प्रमाणेन योजनानां समुच्छ्रितम् ॥१८॥ धृतं स्तम्भसहस्रैश्च वैडूर्यमणि-

के आगे बीस योजन पर ॥१६॥ पुर के मध्य में महादिव्य धर्मराज का रत्नमय मन्दिर है। वह स्वर्गीय रत्नों से जटित, और सूर्य के समान देदीप्यमान है ॥१७॥ दो सौ योजन में विस्तृत है और पचास योजन ऊँचा है॥१८॥ वैदूर्य (लहसुनिया) मणियों से भूषित हजार खम्भों से बना है, सुवर्ण से अलंकृत है, अनेक प्रकार के भवनों और प्रासादों से युक्त है ॥१९॥ शरत्काल के मेरु के समान रंगीन है, स्वर्ण के कलशों से सुसज्जित और मनोहर है, चित्र-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विचित्र स्फटिक की सीढ़ियाँ बनी हैं, वज्र (हीरे) की पच्चीकारी से शोभायमान है ॥२०॥ खिड़कियों में मोतियों की झालरें लटकी हुई शोभा दे रही हैं। पताका तथा ध्वजों से सुशोभित है, घण्टा और नगाड़ों के शब्दों से गुंजित है। द्वारों पर सोने के तोरण सुशोभित हैं ॥२१॥ अनेक प्रकार के आश्चर्यमय और सोने के तोरण सैकड़ों किवाड़ों

मण्डितम् ॥ काञ्चनालङ्कृतं नानाहर्म्यप्रसादसंकुलम् ॥ १९ ॥ शारदाभ्रनिभं रुक्मकलशैः सुमनोहरम् ॥ चित्रस्फटिकसोपानं वज्रकुट्टिमशोभितम् ॥२०॥ मुक्ताजालगवाक्षं च पताका-ध्वजभूषितम् ॥ घण्टानकनिनादाढ्यं हेमतोरणमण्डितम् ॥२१॥ नानाश्चर्यमयं स्वर्णकपाट-शतसंकुलम् ॥ नानाद्रुमलतागुल्मैर्निष्कण्टैः सुविराजितम् ॥ २२ ॥ एवमादिभिरन्यैश्च भूषणैर्भूषितं सदा ॥ आत्मयोगप्रभावैश्च निर्मितं विश्वकर्मणा ॥ २३ ॥ तस्मिन्नस्ति सभा दिव्या शतयोजनमायता ॥ अर्कप्रकाशा भ्राजिष्णुः सर्वतः कामरूपिणी ॥२४॥ नातिशीता

से शोभायमान है। काँटे रहित अनेक प्रकार के वृक्ष, लता और गुल्म से विभूषित है ॥२२॥ उपर्युक्त वस्तुओं तथा और भी अनेक सुन्दर भूषणों से वह सदा सुशोभित है। विश्वकर्मा ने अपने योग के प्रभाव से बनाया है ॥२३॥ उसमें सौ योजन की विस्तृत दिव्य-सभा है। वह सभा सूर्य के प्रकाश के समान चमकीली और सर्वत्र कमनीय है ॥२४॥ वह न तो बहुत गरम है न बहुत ठंढी। मन को अत्यन्त आनन्द देनेवाली है उसमें न तो शोक है और न बुढ़ापा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अप्रिय क्षुधा तथा पिपासा भी नहीं है ॥२५॥ उसमें स्वर्गीय तथा माननीय सभी काम विद्यमान हैं, बड़े स्वादिष्ठ भक्ष्य-भोज्य सभी पदार्थ रस की भाँति विद्यमान हैं ॥२६॥ स्वादिष्ठ शीतल और उष्ण दोनों प्रकार के जल उसमें प्रवाहित है। पवित्र शब्द उसमें बोले जाते हैं। सदा कामना को देनेवाला वृक्ष सभा में वर्तमान हैं ॥२७॥ हे गरुड़ !

न चात्युष्णा मनसोऽत्यन्तहर्षिणी ॥ न शोको न जरा तस्यां क्षुत्पिपासे न चाप्रियम् ॥२५॥ सर्वे कामाः स्थिता यस्य ये दिव्या ये च मानुषाः ॥ रसवच्च प्रभूतं च भक्ष्यं भोज्यं च सर्वशः ॥ २६ ॥ रसवन्ति च तोयानि शीतान्युष्णानि चैव हि ॥ पुण्याः शब्दादयस्तस्यां नित्यकामफलद्रुमाः ॥२७॥ असंबाधा च सा तार्क्ष्य रम्या कामागमा सभा ॥ दीर्घकालं तपस्तप्त्वा निर्मिता विश्वकर्मणा ॥ २८ ॥ तामुग्रतपसो यान्ति सुव्रताः सत्यवादिनः ॥ शान्ताः संन्यासिनः सिद्धाः पूताः पूतेन कर्मणा ॥२९ ॥ सर्वे भास्वरदेहास्तेऽलङ्कृता विरजोऽम्बराः ॥ स्वकृतैः कर्मभिः पुण्यैस्तत्र तिष्ठन्ति भूषिताः ॥ ३० ॥ तस्यां स धर्मो

वह सभा बाधा-रहित है मनोहर है, और कामना को देनेवाली है। विश्वकर्मा ने बहुत काल तक तपस्या करकेउसे बनाया है ॥२८॥ उग्र-तप के करनेवाले, सुन्दर व्रत के करनेवाले, सत्य बोलनेवाले, शान्तस्वभाव-संन्यासी, सिद्ध, पवित्र कर्म द्वारा पवित्र लोग उस सभा में जाते हैं ॥२९॥ सभी का शरीर तेजोमय और अलंकृत है। उसके वस्त्र निर्मल

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हैं। पुरुष अपने किये हुए पुण्यकर्म द्वारा उत्तम अलंकृत होकर स्थित रहते हैं ॥३०॥ उस सभा में अनुपमेय धर्म भगवान्, दस योजन विस्तृत सब रत्नों से मण्डित सुन्दर आसन पर ॥३१॥ बैठे हुए, सज्जनों में श्रेष्ठ और छत्र से शोभित मस्तक-वाले हैं। उनके कर्ण कुण्डल से भूषित हैं॥३२॥ उनको सब अलंकारों से सुसज्जित, नीले मेघ के समान कान्तिवाली

भगवानासनेऽनुपमे शुभे ॥ दशयोजनविस्तीर्णे सर्वरत्नैः सुमण्डिते ॥३१॥ उपविष्टः सतां श्रेष्ठश्छत्रशोभितमस्तकः ॥ कुण्डलालङ्कृतः श्रीमान्महामुकुटमण्डितः ॥३२॥ सर्वालङ्कार-संयुक्तो नीलमेघसमप्रभः ॥ बालव्यजनहस्ताभिरप्सरोभिश्च वीजितः ॥ ३३ ॥ गन्धर्वाणां समूहाश्च सङ्घशश्चाप्सरोगणाः ॥ गीतावादीत्रनृत्याद्यैः परितः सेवयन्ति तम् ॥३४॥ मृत्युना पाशहस्तेन कालेन च बलीयसा ॥ चित्रगुप्तेन चित्रेण कृतान्तेन निषेवितः ॥ ३५ ॥ पाश-दण्डधरैरुग्रैर्निदेशवशवर्तिभिः ॥ आत्मतुल्यबलैर्नानासुभटैः परिवारितः ॥ ३६ ॥ अग्नि-

और हाथ में चमरवाली अप्सरायें वायु करती हैं ॥३३॥ गन्धर्व और अप्सराओं के समूह अपने गायन वादन से चारों ओर से उनकी सेवा करते हैं ॥३४॥ जो हाथ में पाश धारण किये हुये हैं ऐसे मृत्यु से, बलवान् काल से, और विचित्र रूपधारी चित्रगुप्त से यमराज सेवित हैं ॥३५॥ आज्ञापालक दण्डधारी उग्ररूप वाले और अपने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तुल्य बलशाली नाना प्रकार के सुन्दर योद्धाओं से घिरे हुए हैं ।। ३६ ।। हे गरुड़ ! अग्निष्वात्ता, सोमपा, ऊष्मपा और स्वधावन्त, बर्हिषद, मूर्तिमान् , अमूर्तिमान् ।।३७।। अर्यमा पितृगणों तथा और मूर्तिमान् मुनियों सहित धर्मराज की उपासना करते हैं ।।३८।। अत्रि, वसिष्ठ, पुलह, दक्ष, क्रतु, अङ्गिरा, जामदग्न्य, भृगु, पुलस्त्य, अगस्त्य और नारद

ष्वात्ताश्च पितरः सोमपाश्चोष्मपाश्च ये ।। स्वधावन्तो बर्हिषदो मूर्ताऽमूर्ताश्च ये खग ।।३७।।
अर्यमाद्याः पितृगणा मूर्तिमन्तस्तथापरे ।। सर्वे ते मुनिभिः सार्धं धर्मराजमुपासते ।।३८।।
अत्रिर्वसिष्ठः पुलहो दक्षः क्रतुरथाङ्गिराः ।। जामदग्न्यो भृगुश्चैव पुलस्त्यागस्त्यनारदाः ।।३९।।
एते चान्ये च बहवः पितृराजसभासदः ।। न शक्याः परिसंख्यातुं नामभिः कर्मभिस्तथा ।।४०।।
व्याख्याभिर्धर्मशास्त्राणां निर्णेतारो यथातथम् ।। सेवन्ते धर्मराजं ते शासनात्परमेष्ठिनः
।।४१।। राजानः सूर्यवंशीयाः सोमवंश्यास्तथापरे ।। सभायां धर्मराजं ते धर्मज्ञाः पर्युपा-
सते ।। ४२ ।। मनुर्दिलीपो मान्धाता सगरश्च भगीरथः ।। अम्बरीषोऽनरण्यश्च मुचुकुन्दो

।।३९।। ये ऋषिगण तथा और भी बहुत-से पितृराज धर्मराज के सभासद हैं । उनके नाम और कर्म की संख्या नहीं हो सकती है ।।४०।। धर्मशास्त्र की व्याख्या द्वारा यथार्थ निर्णय करनेवाले वे सब परमेश्वर की आज्ञा से धर्मराज की सेवा करते हैं ।।४१।। धर्म को जाननेवाले वे सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजा लोग सभा में धर्मराज की सेवा करते हैं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

 ॥४२॥ मनु, दिलीप, मान्धाता, सगर, भगीरथ,अम्बरीष अनरण्य,मुचुकुन्द, निमि,और पृथु, ॥४३॥ ययाति, दुष्यन्त,
नहुष, पुरु, शिवि, नल, भरत, शान्तनु पाण्डु और सहस्रार्जुन ॥ ४४॥ पवित्र कीर्तिमान् और बहुश्रुत ये राजर्षिगण
९४ बहुत से अश्वमेध यज्ञ करने से धर्म के सभासद हुए हैं ॥ ४५ ॥ धर्मराज की सभा में धर्मपूर्वक काम होते हैं। वहाँ अ० १४

निमिः पृथुः ॥ ४३ ॥ ययातिर्नहुषः पूरुर्दुष्यन्तश्च शिविर्नलः ॥ भरतः शान्तनुः पाण्डुः सहस्रार्जुन एव च ॥ ४४ ॥ एते राजर्षयः पुण्याः कीर्तिमन्तो बहुश्रुताः ॥ इष्ट्वाऽश्वमेधैर्बहुभिर्जाता धर्मसभासदः ॥ ४५ ॥ सभायां धर्मराजस्य धर्म एव प्रवर्तते ॥ न तत्र पक्षपातोऽस्ति नानृतं न च मत्सरः ॥ ४६ ॥ सभ्याः सर्वे शास्त्रविदः सर्वे धर्मपरायणाः ॥ तस्यां सभायां सततं वैवस्वतमुपासते ॥ ४७ ॥ ईदृशी सा सभा तार्क्ष्य धर्मराजमहात्मनः ॥ न तां पश्यन्ति ये पापा दक्षिणेन पथा गताः ॥४८॥ धर्मराजपुरे गन्तुं चतुर्मार्गा भवन्ति

पक्षपात नहीं है, न असत्य है और न मत्सर है ॥ ४६ ॥ सभा में बैठनेवाले सभी शास्त्र को जाननेवाले, धर्म में
परायण हैं । वे सभा में सदा धर्मराज की उपासना करते हैं ॥४७॥ हे गरुड़! महात्मा धर्मराज की ऐसी सभा है। ९४
पापी लोग, जो उसमें दक्षिण मार्ग में होकर जाते हैं, उस सभा को नहीं देख सकते हैं ॥ ४८॥ धर्मराज के नगर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

में जाने के चार मार्ग हैं। पापियों के और १ वाले मार्ग को मैं तुमसे कह चुका हूँ ।।४९।। शेष तीन मार्गों से जो लोग धर्म के मन्दिर में जाते हैं वे बड़े पुण्यशील होते हैं, उनको सुनो ।।५०।। वहाँ पूर्व में एक मार्ग है, वह सब प्रकार के भोगों से युक्त, पारिजात वृक्ष की छाया से पूर्ण आच्छादित और रत्नों से शोभित है ।।५१।। वह मार्ग अनेक

च ।। पापिनां गमने पूर्वं स तु ते परिकीर्तितः ।।४९।। पूर्वादिभिस्त्रिभिर्मार्गैर्ये गता धर्ममन्दिरे ।। ते हि सुकृतिनः पुण्यैस्तस्यां गच्छन्ति तान् शृणु ।।५०।। पूर्वमार्गस्तु तत्रैकः सर्वभोगसमन्वितः ।। पारिजाततरुच्छायाच्छादितो रत्नमण्डितः ।।५१।। विमानगणसङ्कीर्णो हंसावलिविराजितः ।। विद्रुमारामसंकीर्णपीयूषद्रवसंयुतः ।।५२।। तेन ब्रह्मर्षयो यान्ति पुण्या राजर्षयोऽमलाः ।। अप्सरोगणगन्धर्वविद्याधरमहोरगाः ।।५३।। देवताराधकाश्चान्ये शिवभक्तिपरायणः ।। ग्रीष्मे प्रपादानरता माघे काष्ठप्रदायिनः ।।५४।। विश्रामयन्ति वर्षासु

विमानों से पूर्ण हैं, हंसो की पंक्ति से सुशोभित, मूँगा के बागों से सुसज्जित और अमृतरूपी जल से युक्त है ।।५२।। उस द्वार में होकर पवित्र देवर्षि, निर्मल राजर्षि, अप्सरा, गन्धर्वः विद्याधर और बड़े-बड़े सर्प जाते हैं ।।५३।। तथा और लोग देवताओं की आराधना करनेवाले पुरुष, शिव की भक्ति में तत्पर, ग्रीष्मऋतु में जलदान देनेवाले और माघ में इन्धन देनेवाले ।।५४।। वर्षाऋतु में विरक्तों को दान-मान से विश्राम देनेवाले, दीन-दुखियों को अमृत समान

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वचन बोलकर आश्रय देनेवाले ॥५५॥ सत्यधर्म का पालन करनेवाले, क्रोध और लोभ से रहित, पिता-माता के भक्त, गुरु की सेवा में तत्पर रहनेवाले ॥५६॥ भूमि, गौ और विद्या दान देनेवाले, पुराण को कहने सुनने और पारायण (पाठ) करनेवाले तथा अन्य प्रकार के पुण्य करनेवाले लोग पूर्व के द्वार में होकर धर्मराजपुर में प्रवेश करते

विरक्तान् दानमानतः ॥ दुःखितस्यामृतं ब्रूते ह्याश्रयं तु ददन्ति ये ॥ ५५ ॥ सत्यधर्मे रता ये च क्रोधलोभविवर्जिताः ॥ पितृमातृषु ये भक्ता गुरुशुश्रूषणे रताः ॥५६॥ भूमिदा गृहदा गोदा विद्यादानप्रदायकाः ॥ पुराणवक्तृश्रोतारः पारायणपरायणाः ॥ ५७ ॥ एते सुकृतिनश्चान्ये पूर्वद्वारे विशन्ति च ॥ यान्ति धर्मसभायां ते सुशीलाः शुद्धबुद्धयः ॥ ५८ ॥ द्वितीयस्तूत्तरो मार्गो महारथशतैर्वृतः ॥ नरयानसमायुक्तो हरिचन्दनमण्डितः ॥ ५९ ॥ हंससारससङ्कीर्णश्चक्रवाकोपशोभितः ॥ अमृतद्रवसम्पूर्णस्तत्र भाति सरोवरः ॥ ६० ॥ अनेन वैदिका यान्ति तथाऽभ्यागतपूजकाः ॥ दुर्गाभान्वोश्च ये भक्तास्तीर्थस्नाताश्च पर्वसु

हैं। सुशील तथा शुद्ध-बुद्धि वे धर्मसभा में जाते हैं ॥५७-५८॥ दूसरा उत्तर का मार्ग है वह सैकड़ों महारथों तथा पालकी से युक्त है और हरिचन्दन से भूषित है ॥५९॥ हंस और सारसों से पूर्ण है, चक्रवाकी-चक्रवाकों से सुशोभित है और अमृत के समान जल से भरा हुआ सरोवर वहाँ शोभायमान है ॥ ६० ॥ इस द्वार से वेद के पढ़नेवाले, अतिथि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

की पूजा करनेवाले, दुर्गा-सूर्य के भक्त और पर्वों पर तीर्थ में स्नान करनेवाले जाते हैं ॥६१॥ धर्मयुग में मारे जानेवाले अनशन (लंघन) से मरनेवाले, काशी में, गौ के घर में, तीर्थ के जल में मरनेवाले ॥ ६२ ॥ ब्राह्मण के लिए, स्वामी के कार्यवश और तीर्थ क्षेत्र में मरनेवाले, देवता के विध्वंसकाल में मरनेवाले, योगाभ्यास से मरनेवाले, ॥६३॥

॥ ६१ ॥ ये मृता धर्मसंग्रामेऽनशनेन मृताश्च ये ॥ वाराणस्यां गोगृहे च तीर्थतोये मृता द्विजैः ॥६२॥ ब्राह्मणार्थे स्वामिकार्ये तीर्थक्षेत्रेषु ये मृताः ॥ ये मृता देवविध्वंसे योगाभ्यासेन ये मृताः ॥ ६३ ॥ सत्पात्रपूजका नित्यं महादानरताश्च ये ॥ प्रविशन्त्युत्तरे द्वारे यान्ति धर्मसभां च ते ॥ ६४ ॥ तृतीयः पश्चिमो मार्गो रत्नमन्दिरमण्डितः ॥ सुधारससदापूर्णदीर्घिकाभिर्विराजितः ॥ ६५ ॥ ऐरावतकुलोद्भूतमत्तमातङ्गसंकुलः ॥ उच्चैःश्रवसमुत्पन्नहयरत्नसमन्वितः॥ ६६ ॥ एतेनात्मपरा यान्ति सच्छास्त्रपरिचिन्तकाः ॥ अनन्यविष्णुभक्ताश्च

सत्पात्रको पूजनेवाले और नित्य महादान करनेवाले ये सब उत्तर के द्वार में प्रवेश करके धर्मसभा में जाते हैं ॥६४॥ तीसरा पश्चिम का मार्ग है वह रत्नों के बने हुए मन्दिरों से शोभित है और सदा अमृत-जल से भरी हुई बावलियों से शोभायमान रहता है ॥६५॥ ऐरावत के कुल में उत्पन्न मत्तहाथियों से घिरा हुआ और उच्चैःश्रवा से उत्पन्न अश्वरत्नों से सुशोभित है ॥६६॥ इस द्वार से आत्मा में परायण, शास्त्र का उत्तम विचार करनेवाले, विष्णु के अनन्य भक्त

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तथा गायत्री मन्त्र के जपनेवाले जा० ए० ॥६७॥ दूसरे की हिंसा, दूसरे का द्रव्य लेने में और दूसरे से विवाह करने से पराङ्मुख रहनेवाले, अपनी स्त्री में लीन रहनेवाले, अग्निहोत्र-कर्ता और वेद के पढ़नेवाले उस मार्ग से जाते हैं ॥६८॥ ब्रह्मचर्य-व्रत के धारण करनेवाले वानप्रस्थी तपस्वी श्रीपाद नामक संन्यास में तत्पर और कङ्कड़-पत्थर और

गायत्रीमन्त्रजापकाः ॥६७॥ परहिंसापरद्रव्यपरवादपराङ्मुखाः ॥ स्वदारनिरताः सन्तः साग्निका वेदपाठकाः ॥६८ ॥ ब्रह्मचर्यव्रतधरा वानप्रस्थास्तपस्विनः ॥ श्रीपादसंन्यासपराः समलोष्टाश्मकाञ्चनाः ॥६९॥ ज्ञानवैराग्यसम्पन्नाः सर्वभूतहिते रताः ॥ शिवविष्णुव्रतकराः कर्मब्रह्मासमर्पकाः ॥ ७० ॥ ऋणैस्त्रिभिर्विनिर्मुक्ताः पञ्चयज्ञरताः सदा ॥ पितॄणां श्राद्धदातारः काले सान्ध्यमुपासकाः ॥७१॥ नीचसङ्गविनिर्मुक्ताः सत्सङ्गतिपरायणः ॥ एतेऽप्सरोगणैर्युक्ता विमानवरसंस्थिताः ॥७२॥ सुधापानं प्रकुर्वन्तो यान्ति ते धर्ममन्दिरम् ॥ विशन्ति

सोना बराबर समझनेवाले ॥६९॥ ज्ञान और वैराग्य से सम्पन्न, सब प्राणियों के हित में लगे हुए, शिव-विष्णु का व्रत करनेवाले और स्वकर्म को ब्रह्म में समर्पण करनेवाले ॥७०॥ (देव ऋषि पितृ) तीन ऋणों से मुक्त, सदा पञ्चयज्ञ में तत्पर रहनेवाले, पितरों का श्राद्ध करनेवाले तथा त्रिकाल में सन्ध्योपासन करनेवाले, ॥७१॥ नीचों के संसर्ग से दूर रहनेवाले, और सत्संग में उद्यत (ये लोग) अप्सरागणों से सेवित श्रेष्ठ विमानों में बैठकर ॥ ७२ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अमृत पान करते हुए धर्ममन्दिर में प्रवेश करते हैं और पश्चिम द्वार से होकर धर्मसभा में जाते हैं ॥७३॥ यम उनको आते देखकर बारम्बार स्वागत करते हैं और उठकर उनके सम्मुख जाते और स्वागत करते हैं ॥७४॥ उस समय यमराज चतुर्भुज होकर शङ्ख, चक्र, गदा और खड्ग को धारण कर पुण्यकर्म में रत जीवों से बड़ा स्नेह तथा मित्र

पश्चिमद्वारे यान्ति धर्मसभान्तरे ॥ ७३ ॥ यमस्तानागतान् दृष्ट्वा स्वागतं वदते मुहुः ॥
समुत्थानं च कुरुते तेषां गच्छति सम्मुखम् ॥ ७४ ॥ तदा चतुर्भुजो भूत्वा शङ्खचक्रगदा-
सिभृत् ॥ पुण्यकर्मरतानां च स्नेहान्मित्रवदाचरेत् ॥ ७५ ॥ सिंहासनं च ददते नमस्कारं
करोति च ॥ पादार्घं कुरुते पश्चात्पूजते चन्दनादिभिः ॥ ७६ ॥ नमस्कुर्वन्तु भो सभ्या
ज्ञानिनं परमादरात् ॥ एष मे मण्डलं भित्त्वा ब्रह्मलोकं प्रयास्यति ॥७७॥ भो भो बुद्धिमतां
श्रेष्ठा नरकक्लेशभीरवः ॥ भवद्भिः साधितं पुण्यैर्देवत्वं सुखदायकम् ॥७८॥ मानुषं दुर्लभं

के समान आचरण करते हैं ॥७५॥ सिंहासन देते हैं, नमस्कार करते हैं, पाद्यार्घ देते हैं पीछे चन्दन आदि से पूजन करते हैं ॥७६॥ यमराज अन्य सदस्यों से कहते हैं कि हे सभा के सदस्यो! इन ज्ञानियों को बड़े आदर से नमस्कार कीजिये । ये मेरे मण्डल का भेदन करके ब्रह्मलोक को जायँगे ॥७७॥ हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ! नरक के क्लेशों से डरनेवाले! तुमने पुण्य करके सुखदेनेवाला देवत्व प्राप्त किया है ॥७८॥ दुर्लभ मनुष्य शरीर पाकर जो नित्य साधना

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नहीं करते हैं वे घोर नरक में जाते हैं। उनसे महान् जड़ दूसरा कौन है ? ॥७९॥ अस्थिर शरीर और धनादिकों से जो पुरुष स्थिर धर्म को इकट्ठा करता है वही एक बुद्धिमान् मनुष्य है ॥८०॥ इसलिए सब यत्न से धर्म का संग्रह करना चाहिये जिससे सब भोगों से युक्त पुण्यवान् स्थान (स्वर्ग) को जाइय ॥८१॥ इस प्रकार धर्मवचन सुनकर

प्राप्य नित्यं यस्तु न साधयेत् ॥ स याति नरकं घोरं कोऽन्यस्तस्मादचेतनः ॥७९॥ अस्थिरेण शरीरेण योऽस्थिरैश्च धनादिभिः ॥ सञ्चिनोति स्थिरं धर्मं स एको बुद्धिमान्नरः ॥ ८० ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कर्तव्यो धर्मसञ्चयः ॥ गच्छध्वं पुण्यवत्स्थानं सर्वभोगसमन्वितम् ॥८१॥ इति धर्मवचः श्रुत्वा तं प्रणम्य सभां च ताम् ॥ अमरैः पूज्यमानास्ते स्तूयमाना मुनीश्वरैः ॥ ८२ ॥ विमानगणसंकीर्णाः प्रयान्ति परमं पदम् ॥ केचिद्धर्मसभायां हि तिष्ठन्ति परमादरात् ॥ ८३ ॥ उषित्वा तत्र कल्पान्तं भुक्त्वा भोगानमानुषान् ॥ प्राप्नोति पुण्यशेषेण मानुष्यं पुण्यदर्शनम् ॥ ८४ ॥ महाधनी च सर्वज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः ॥ पुनः स्वात्म-

उनको और उस सभा को प्रणाम कर देवताओं से पूजित और मुनिश्वरों से स्तुत वे ॥८२॥ विमान के गणों से संयुक्त हो परम पद को जाते हैं और कुछ लोग बड़े आदर से धर्मसभा में ही स्थित रहते हैं ॥८३॥ यहाँ कल्पान्त तक वास करके और दिव्य भोगों को भोगकर, शेष पुण्य से वे पुण्यवान् जीव मनुष्यलोक में उत्पन्न होते हैं ॥८४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महाधनी, सर्वज्ञ तथा सब शास्त्रों में चतुर वे जीव पुनः अपने आत्मा के विचार से परम गति पाते हैं ॥८५॥ (हे गरुड़) तुमसे पूछा हुआ यमालय का वर्णन मैंने किया। इसको भक्ति से सुनते हुए मनुष्य धर्मराज की सभा में जाते हैं ॥८६॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायाँ धर्मराजनगरनिरूपणं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

विचारेण ततो याति परां गतिम् ॥ ८५ ॥ एतत्ते कथितं सर्वं त्वया पृष्टं यमालयम् ॥ इदं शृण्वन्नरो भक्त्या धर्मराजसभां व्रजेत् ॥ ८६ ॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे धर्मराजनगरनिरूपणं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

गरुड उवाच ॥ धर्मात्मा स्वर्गतिं भुक्त्वा जायते विमले कुले ॥ अतस्तस्य समुत्पत्तिं जननीजठरे वद ॥ १ ॥ यथा विचारं कुरुते देहेऽस्मिन् सुकृती जनः ॥ तथाऽहं श्रोतुमि-

गरुड़जी ने पूछा—धर्मात्मा स्वर्ग की गति भोगकर निर्मल कुल में उत्पन्न होते हैं, अतः माता के गर्भ से उनकी उत्पत्ति कैसे होती है ? इसका वर्णन कीजिये ॥१॥ सुकृति मनुष्य गर्भ में कैसा विचार करते हैं, उसे मैं सुनना

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चाहता हूँ । हे करुणानिधे ! मुझसे कहिये ।।२।। श्रीभगवान् ने उत्तर दिया—हे गरुड़ ! तुमने अच्छा प्रश्न किया । यह परम गोप्य विषय मैं तुमसे कहता हूँ जिसके जानने ही मात्रसे सर्वज्ञता की योग्यता प्राप्त हो जाती है ।।३।। शरीर के पारमार्थिक स्वरूप को कहता हूँ जो ब्रह्माण्ड के गुणों से सम्पन्न है और योगियों के धारण करने योग्य है

च्छामि वद मे करुणानिधे ।। २ ।। श्रीभगवानुवाच ।। साधु पृष्टं त्वया तार्क्ष्य परं गोप्यं वदामि ते ।। यस्य विज्ञानमात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रजायते ।। ३ ।। वक्ष्यामि च शरीरस्य स्वरूपं पारमार्थिकम् ।। ब्रह्माण्डगुणसम्पन्नं योगिनां धारणास्पदम् ।। ४ ।। षट्चक्रचिन्तनं यस्मिन् यथा कुर्वन्ति योगिनः ।। ब्रह्मरन्ध्रे चिदानन्दरूपध्यानं तथा शृणु।। ५ ।। शुचीनां श्रीमतां गेहे जायते सुकृती यथा ।। तथा विधानं नियमं तत्पित्रोः कथयामि ते ।।६ ।। ऋतुकाले तु नारीणां त्यजेद्दिनचतुष्टयम् ।। तावन्नालोकयेद्वक्त्रं पापं वपुषि सम्भवेत् ।।७।। स्नात्वा सचैलं

।।४।। योगी लोग षट्चक्र का चिन्तन जिस प्रकार करते हैं और ब्रह्मरन्ध्र में (सत्) चिदानन्द रूप का ध्यान जिस प्रकार करते हैं, उसे सुनो ।।५।। जिस प्रकार सुकृती लोग शुद्ध और श्रीमान् के घर में उत्पन्न होते हैं उनके माता-पिता का विधान और नियम मैं कहता हूँ ।।६।। ऋतुकाल में नारी को चार दिन त्याग कर और जब तक शरीर में पाप (इन्द्रकी ब्रह्महत्या से उत्पन्नदोषविशेष) रहता है तब तक स्त्री का मुख न देखे ।।७।। वह नारी कपड़े के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सहित स्नान करके चौथे दिन शुद्ध होती है। सात दिन के पश्चात् पितर और देवताओं के व्रत तथा पूजन के योग्य होती है ॥ ८ ॥ सात दिन के भीतर जो गर्भ होता है वह मलिनाशय (मलिन चित्तवाला) होता है। इसमें बहुधा आठवें दिन गर्भाधान होने पर पुत्र ही उत्पन्न होते हैं ॥९॥ सम रात्रियों में गर्भाधान होने पर पुत्र उत्पन्न होता है, और

सा नारी चतुर्थेऽहनि शुध्यति ॥ सप्ताहात् पितृदेवानां भवेद्योग्या व्रतार्चने ॥८॥ सप्ताहमध्ये यो गर्भः स भवेन्मलिनाशयः ॥ प्रायशः सम्भवन्त्यत्र पुत्रास्त्वष्टाहमध्यतः ॥ ९ ॥ युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु ॥ पूर्वसप्तकमुत्सृज्य तस्माद्युग्मासु संविशेत् ॥१०॥ षोडशर्तुनिशाः स्त्रीणां सामान्याः समुदाहृताः ॥ या वै चतुर्दशी रात्रिर्गर्भस्तिष्ठति तत्र वै ॥ ११ ॥ गुणभाग्यनिधिः पुत्रस्तदा जायेत धार्मिकः ॥ सा निशा प्राकृतैर्जीवैर्नलभ्येत कदाचन ॥ १२ ॥ पञ्चमेऽहनि नारीणां कार्यं मधुरभोजनम् ॥ कटु क्षारं च तीक्ष्णं च त्याज्य

विषम रात्रियों में कन्या उत्पन्न होती है इसलिये पहले के सात दिन छोड़कर युग्म रात्रि में स्त्री-गमन करे ॥ १० ॥ ऋतु के प्रारम्भ से सोलह रात्रियाँ स्त्रियों का सामान्य रीति से ऋतुकाल कहा गया है। चौदहवीं रात्रि में प्रसंग करने से निश्चय करके गर्भ की स्थिति होती है ॥११॥ धर्मात्मा पुरुष गुणवान् तथा भाग्यशाली पुत्र उत्पन्न करता है। इस प्रकार की (पुत्रोत्पन्न कारक) रात्रि प्राकृत (साधारण) जीवों को कभी नहीं मिलती है ॥१२॥ पाँचवें दिन स्त्रियों को

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मधुर भोजन करना चाहिये और कड़ुवा,खारा,तीखा और उष्ण भोजन दूर से त्यागना चाहिये ॥१३॥ वह क्षेत्र औष-धियों का पात्र है और बीज अमृत के समान है, स्वामीरूपी गुरु से उस क्षेत्र में बीज बोकर अच्छा फल प्राप्त करना चाहिये ॥१४॥ पान खाकर, फूल तथा चन्दन को धारण करके और शुद्ध वस्त्र धारण कर पुरुष मनमें धर्म को धारण

मुष्णं च दूरतः ॥ १३ ॥ तत्क्षेत्रमौषधीपात्रं बीजं चाप्यमृतायनम् ॥ तस्मिन्नुप्त्वा नरः स्वामी सम्यक्फलमवाप्नुयात् ॥ १४ ॥ ताम्बूलपुष्पश्रीखण्डैः संयुक्तः शुचिवस्त्रभृत् ॥ धर्म-मादाय मनसि सुतल्पं संविशेत् पुमान् ॥ १५ ॥ निषेकसमये यादृङ्नरचित्तविकल्पना ॥ तादृक्स्वभावसम्भूतिर्जन्तुर्विशति कुक्षिगः ॥ १६ ॥ चैतन्यं बीजभूतं हि नित्यं शुक्रेऽप्य-वस्थितम् ॥ कामश्चित्तं च शुक्रं च यदा ह्येकत्वमाप्नुयात् ॥ १७ ॥ तदा द्रावमवाप्नोति योषिद्गर्भाशये नरः ॥ शुक्रशोणितसंयोगात्पिण्डोपत्तिः प्रजायते ॥ १८ ॥ परमानन्ददः

कर उत्तम शय्या पर सोवे ॥१५॥ गर्भाधान के समय जैसी चित्त की कल्पना होती है, उसी स्वभाव का जीव माता की कोख में प्रवेश करता है ॥१६॥ बीजस्वरूप चैतन्य सदा वीर्य में स्थित रहता है । काम-चित्त और शुक्र जब तन्मय होते हैं ॥१७॥ तब मनुष्य का स्त्री के गर्भाशय में वीर्य-स्खलन होता है । शुक्र तथा रुधिर के संयोग से पिंड की उत्पत्ति होती है ॥१८॥ गर्भ में प्राप्त सुकृती-पुत्र परम आनन्द देनेवाला होता है । उसकी सम्पूर्ण पुंसवन आदि

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America (HHFA(USA))

१मन: पवित्र सद... गात्र भुवनाभि पात्र
छत्रा: पवित्रा. फल भोगी भक्ते.। २- वदन प्रसाद सदनं सदय हृदयं०

क्रिया होती है ।।१९।। पुण्यात्मा ऊँचे ग्रहों की स्थिति में जन्म पाता है । उसके जन्म समय में ब्राह्मण बहुत-सा धन पाते हैं ।। २० ।। विद्या और नियम से सम्पन्न वह पुत्र पिता के घर में बढ़ता है और सज्जनों के संग से वह सब शास्त्रों का पण्डित होता है ।। २१ ।। पूर्व जन्म में किये हुए तप, तीर्थयात्रा के महापुण्य फल के उदय होने

पुत्रो भवेद्धर्मगतः कृती ॥ भवन्ति तस्य निखिलाः क्रिया पुंसवनादिकाः ॥ १९ ॥ १ जन्म प्राप्नोति पुण्यात्मा ग्रहेषूच्चगतेषु च ॥ तज्जन्मसमये विप्राः प्राप्नुवन्ति धनं बहु ॥ २० ॥ विद्याविनयसम्पन्नो वर्धते पितृवेश्मनि ॥ सतां सङ्गेन स भवेत्सर्वागमविशारदः ॥ २१ ॥ दिव्याङ्गनादिभोक्ता स्यात्तारुण्ये दानवान् धनी ॥ पूर्वं कृततपस्तीर्थमहापुण्यफलोदयात् ॥ २२ ॥ ततश्च यतते नित्यमात्मानात्मविचारणे ॥ अध्यारोपापवादाभ्यां कुरुते ब्रह्म-चिन्तनम् ॥२३॥ अस्यासङ्गावबोधाय ब्रह्मणोऽन्वयकारिणः ॥ क्षित्याद्यनात्मवर्गस्य गुणांस्ते कथयाम्यहम् ॥ २४ ॥ क्षितिर्वारि हविर्भोक्ता वायुराकाश एव च ॥ स्थूलभूता इमे प्रोक्ताः

पर युवा अवस्था में दिव्य स्त्री आदि का भोग करता है ।।२२।। तत्पश्चात् आत्मा और अनात्मा के विचार में सदा यत्न करता है और आध्यारोप तथा अपवाद द्वारा ब्रह्म का चिन्तन करता है ।।२३।। अन्वय करनेवाले इस ब्रह्म के पुरुष सङ्ग रहित है इस वार्ता के जानने के लिए भूमि-आदि अनातमवर्ग पञ्चभूतों के गुणों को मैं तुमसे कहता हूँ।।२४।।

२- दुःशीलो मातृदोषेण पितृदोषेण मूर्खता
कार्पण्यं वंश दोषेण आत्मदोषाद्दरिद्रता।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन और आकाश—ये पाँचों स्थूल भूत हैं। यह पिण्ड पञ्चभूतों से बना है ॥२५॥ हे गरुड़ ! त्वचा, हड्डी, नाड़ी, रोम और मांस ये पाँच गुण भूमि द्वारा निर्मित हैं यह मैंने तुमसे कहा ॥२६॥ लार, मूत्र, वीर्य, मज्जा और पाँचवाँ रक्त, ये पाँच गुण जल से बने हैं ॥ अब तेज का गुण सुनो ॥२७॥ क्षुधा, तृषा, आलस्य, निद्रा

पिण्डोऽयं पाञ्चभौतिकः ॥ २५ ॥ त्वगस्थिनाड्या रोमाणि मांसं चैव खगेश्वर ॥ एते पञ्च-गुणा भूमेर्मया ते परिकीर्तिताः ॥ २६ ॥ लाला मूत्रं तथा शुक्रं मज्जा रक्तं च पञ्चमम् ॥ अपां पञ्चगुणाः प्रोक्तास्तेजसो विनिशामय ॥ २७ ॥ क्षुधा तृष्णा तथाऽऽलस्यं निद्रा कान्तिस्तथैव च ॥ तेजः पञ्चगुणं तार्क्ष्य प्रोक्तं सर्वत्र योगिभिः ॥२८॥ आकुञ्चनं धावनं च लंघनं च प्रसारणम् ॥ चेष्टितं चेति पञ्चैव गुणा वायोः प्रकीर्तिताः ॥२९॥ घोषश्चिन्ता च शून्यत्वं मोहश्चिन्ता न संशयः ॥ आकाशस्य गुणाः पञ्च ज्ञातव्यास्ते प्रयत्नतः ॥ ३० ॥ मनो बुद्धिरहङ्कारश्चित्तं चेति चतुष्टयम् ॥ अन्तःकरणमुद्दिष्टं पूर्वकर्माधिवासितम् ॥ ३१ ॥

और कान्ति, हे गरुड़ ! ये पाँचों तेज के गुण से उत्पन्न हैं यह योगीश्वरों ने कहा है ॥ २८ ॥ समेटना, दौड़ना, उल्लंघन, फैलना और चेष्टित, ये पाँच गुण वायु द्वारा कहे गये हैं ॥२९॥ शब्द, चिंता, शून्यता, मोह और संदेह ये पाँच गुण आकाश द्वारा सम्भूत हैं, वे प्रयत्न से जानने योग्य हैं ॥३०॥ मन, बुद्धि, अहङ्कार और चित्त ये चार

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्तःकरण के नाम हैं, ये पूर्वजन्म के कर्म द्वारा संभूत संस्कार से होते हैं।।३१।।कान, त्वचा, आँख, जीभ, नाक ये ज्ञानेन्द्रिय हैं और वाक्‌पाणि, पाद, गुदा और लिङ्ग, ये कर्मेन्द्रिय हैं ।।३२।। दिशायें,वायु, सूर्य,प्रचेता,अश्विनीकुमार, वह्नि, इन्द्र, उपेन्द्र और मित्र ये ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रियों के देवता कहे गये हैं ।।३३।। इड़ा, पिङ्गला और तीसरी सुषुम्ना

श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा घ्राणं ज्ञानेन्द्रियाणि च ॥ वाक्पाणिपादपायूपस्थानि कर्मेन्द्रियाणि च ॥ ३२ ॥ दिग्वातार्कप्रचेतोऽश्विवह्नीन्द्रोपेन्द्रमित्रकाः ॥ ज्ञानकर्मेन्द्रियाणां च देवताः परिकीर्तिता ॥ ३३ ॥ इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्नाख्या तृतीयका ॥ गान्धारी गजजिह्वा च पूषा चैव यशस्विनी ॥ ३४ ॥ अलंम्बुषा कुहूश्चापि शंखिनी दशमी तथा ॥ पिण्डमध्ये स्थिता ह्येताः प्रधाना दश नाडिकाः ॥३५॥ प्राणोऽपानः समानाख्य उदानो व्यान एव च ॥ नागः कूर्मश्च कृकलो देवदत्तो धनञ्जयः ॥३६॥ हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले ॥ उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः ॥३७॥ उद्गारे नाग आख्यातः कूर्म

गान्धारी, गजजिह्वा, पूषा, यशस्विनी ।।३४।। अलम्बुषा तथा दशवीं शंखिनी ये प्रधान दस नाड़ियाँ शरीर में स्थित ।।३५।। प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय ये १० वायु हैं ।।३६।। हृदय में प्राण, गुदा में अपान, नाभिमण्डल में समान, कण्ठदेश में उदान और सब शरीर में व्यान स्थित है ।।३७।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डकार को नाग कहते हैं और उन्मीलन में कूर्म वायु कहा गया है । कृकल वायु को क्षुधाकारक जानना चाहिये और विजृम्भण में देवदत्त नामक वायु जानिये ।।३८।। सर्वव्यापी धनञ्जय वायु है । वह मृतक को भी नहीं छोड़ता है । ग्रासों द्वारा खाया हुआ अन्न सब शरीरधारियों को पुष्टि देनेवाला है ।।३९।। व्यान वायु अन्न के रस को सब

उन्मीलने स्मृतः ॥ कृकलः क्षुत्करो ज्ञेयो देवदत्तो विजृम्भणे ॥३८॥ न जहाति मृतं वापि सर्वव्यापी धनञ्जयः ॥ कवलैर्भुक्तमन्नं हि पुष्टिदं सर्वदेहिनाम् ॥३९॥ नयते व्यानको वायुः सारांशं सर्वनाडिषु ॥ आहारो भुक्तमात्रो हि वायुना क्रियते द्विजा ॥४०॥ संप्रविश्य गुदे सम्यक्पृथगन्नं पृथग्जलम् ॥ ऊर्ध्वमग्नेर्जलं कृत्वा कृत्वाऽन्नं जलोपरि ॥ ४१ ॥ अग्नेश्चाधः स्वयं प्राणः स्थित्वाऽग्निं धमते शनैः ॥ वायुना ध्मायमानोऽग्निः पृथक्किट्टं पृथग्रसम् ॥४२॥ कुरुते व्यानको वायुर्विष्वक्सम्प्रापयेद्रसम् ॥ द्वारैर्द्वादशभिर्भिन्नं किट्टं देहाद्बहिः स्रवेत् ॥४३॥

नाड़ियों में पहुँचा देता है, भोजन किया हुआ आहार वायु द्वारा दो भागों में बँट जाता है ।।४०।। गुदा में प्रवेश कर अपच्च अन्न और जल को पृथक्-पृथक् कर देता है, अग्नि के ऊपर जल करके और अन्नको जल के ऊपर करके ।।४१।। और प्राण स्वयं अग्नि के नीचे स्थिर होकर धीरे-धीरे धौंकता है । वायु से धौंकी हुई शरीर की अग्नि रस को और मल को पृथक् पृथक् कर देती है ।।४२।। व्यान वायु शरीर में सब ओर रस पहुँचाता है बारहों द्वार से

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अलग किये हुये मल को बाहर निकालता है ॥४३॥ कान, आँख, नाक, जीभ, दाँत, नाभि, नख, गुदा, लिङ्ग, शिरा, वपु और लोम इनको मलस्थान कहते हैं ॥४४॥ इस प्रकार सब वायु अपने-अपने कर्म में प्रवृत्त रहते हैं जैसे मनुष्य लोग सूर्य के प्रकाश को पाकर अपनी सत्ता जानते हैं (सूर्य के उदय होने पर अपने काम में लग जाते हैं) ॥४५॥

कर्णाऽक्षिनासिका जिह्वा दन्ता नाभिर्नखा गुदम् ॥ गुह्यं शिरा वपुर्लोम मलस्थानानि चक्षते ॥ ४४ ॥ एवं सर्वे प्रवर्तन्ते स्वस्वकर्मणि वायवः ॥ उपलभ्यात्मनः सत्तां सूर्यालोकं यथा जनाः ॥ ४५ ॥ इदानीं नरदेहस्य शृणु रूपद्वयं खग ॥ व्यावहारिकमेकं च द्वितीयं पारमार्थिकम् ॥४६॥ तिस्रः कोट्योऽर्धकोटी च रोमाणि व्यावहारिके ॥ सप्तलक्षाणि केशाः *स्युर्नखाः प्रोक्तास्तु विंशतिः ॥४७॥ द्वात्रिंशद्दशनाः प्रोक्ताः सामान्याद्विनतासुत ॥ मांसं पलसहस्रं तु रक्तं पलशतं स्मृतम् ॥ ४८ ॥ पलानि दश मेदस्तु त्वक्पलानि च सप्ततिः ॥

हे खग ! नरदेह के दो रूप हैं, एक व्यावहारिक और दूसरा पारमार्थिक ॥४६॥ व्यावहारिक शरीरमें-साढ़े तीन करोड़ रोम हैं, सात लाख केश हैं और बीस नख कहे गये हैं ॥४७॥ हे गरुड़ ! सामान्यतः बत्तीस दाँत कहे गये हैं। हजार पल मांस है और सौ पल रक्त है ॥४८॥ मेदा दस पल है, सत्तर पल त्वचा है, बारह पल मज्जा है, तीन पल महारक्त है

* 'पल कुड़व' आदि प्राचीन काल की तौल है। ५ गुञ्जा का एक माषा, १६ माषा का एक कर्ष तथा ४ कर्ष का एक पल होता है। १ हाथ लम्बा, १ हाथ चौड़ा, एक हाथ गहरा गड्ढे का ८०६४ वाँ भाग कुड़व होता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥४९॥ शुक्र दो कुड़व है शोणित एक कुड़व कहा गया है देह में तीन सौ साठ हड्डियाँ कही गई हैं ॥५०॥ स्थूल तथा नाड़ियाँ शरीर में करोड़ों कही गई हैं । पचास पल पित्त है और उसका आधा (पचीस पल) कफ है ॥ ५१ ॥ सदा उत्पन्न होनेवाली विष्ठा और मूत्र का कोई नियमित परिमाण नहीं है । इन गुणों और सामग्रियों से युक्त व्याव-

पलद्वादशकं मज्जा महारक्तं पलत्रयम् ॥४९॥ शुक्रं द्विकुडवं ज्ञेयं कुडवं शोणितं स्मृतम् ॥ षष्ट्युत्तरं च त्रिशतमस्थ्नां देहे प्रकीर्तितम् ॥ ५० ॥ नाड्यः स्थूलाश्च सूक्ष्माश्च कोटिशः परिकीर्तिताः ॥ पित्तं पलानि पञ्चाशत्तदर्धं श्लेष्मणस्तथा ॥ ५१ ॥ सततं जायमानं तु विण्मूत्रं चाप्रमाणतः ॥ एतद्गुणसमायुक्तं शरीरं व्यावहारिकम् ॥ ५२ ॥ भुवनानि च सर्वाणि पर्वतद्वीपसागराः ॥ आदित्याद्या ग्रहाः सन्ति शरीरे पारमार्थिके ॥ ५३ ॥ पारि-मार्थिकदेहे हि षट्चक्राणि भवन्ति च ॥ ब्रह्माण्डे ये गुणः प्रोक्तास्तेऽप्यस्मिन्नेन संस्थिता ॥ ५४ ॥ तानहं ते प्रवक्ष्यामि योगिनां धारणास्पदान् ॥ येषां भावनया जन्तुर्भवेद्वै राज-

हारिक शरीर है ॥५२॥ सब भुवन, पर्वत, द्वीप, सागर, आदित्य आदि ग्रह पारमार्थिक शरीर में हैं ॥५३॥ पारमार्थिक देह में छः चक्र निश्चय होते हैं । जो गुण ब्रह्माण्ड में कहे हैं वे सब इसमें विद्यमान हैं ॥ ५४ ॥ ये सब गुण योगियों के अवधान और उपाधि में आते हैं, उनको मैं तुमसे कहता हूँ जिनकी भावना करके जीव विराट्रूप को प्राप्त होता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है ॥५५॥ विराट्रूप ही को कहता हूँ, पैरों के नीचे तल जानिये और पैरों के ऊपर वितल है और घुटने में सुतल जानो और सक्थि देश (गुप्तेन्द्रियों के जोड़ स्थान) में महातल जानो ॥ ५६ ॥ सक्थि के मूल में तलातल और गुह्य देश में रसातल जानो और कटि में पाताल जानो ये सात लोक कहलाते हैं ॥५७॥ नाभि में भूलोक, उसके

रूपभाक् ॥५५॥ पादाधस्तात्तलं ज्ञेयं पादोर्ध्वं वितलं तथा ॥ जानुनोः सुतलं विद्धि सक्थिदेशे महातलम् ॥ ५६ ॥ तलातलं सक्थिमूले गुह्यदेशे रसातलम् ॥ पातालं कटि-संस्थं च सप्तलोकाः प्रकीर्तिताः ॥ ५७ ॥ भूर्लोकं नाभिमध्ये तु भुवर्लोकं तदूर्ध्वके ॥ स्वर्लोकं हृदये विद्यात् कण्ठदेशे महस्तथा ॥५८॥ जनलोकं वक्त्रदेशे तपोलोकं ललाटके ॥ सत्यलोकं ब्रह्मरन्ध्रे भुवनानि चतुर्दश ॥५९॥ त्रिकोणे संस्थितो मेरुरधःकोणे च मन्दरः ॥ दक्षकोणे च कैलासो वामकोणे हिमाचलः ॥६०॥ निषधश्चोर्ध्वरेखायां दक्षायां गन्धमादनः ॥

ऊपर भुवर्लोक और हृदय में स्वर्लोक जानो, कण्ठ देश में महर्लोक जानो ॥ ५८ ॥ मुख में जनलोक, ललाट में तपोलोक और ब्रह्मरन्ध्र में सत्यलोक जानो । ये चौदह भुवन हैं ॥५९॥ त्रिकोण में मेरु स्थित है, नीचे कोण में मन्दराचल और दक्षिण कोण में कैलास और वाम (वायव्य) कोण में हिमाचल है ॥६०॥ उसके ऊर्ध्व रेखा में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऊपर निषधपर्वत दक्षिण रेखा में गन्धमादन और वामरेखा में रमणाचल । ये कुल सात पर्वत कहे जाते हैं ॥६१॥ हड्डियों के स्थान में जम्बूदीप, मज्जा के स्थान पर शाकद्वीप, मांस में कुशदीप और शिराओं में क्रौञ्चद्वीप स्थित है ॥ ६२ ॥ त्वचा में शाल्मलीद्वीप, रोम-समूह में गोमेदद्वीप, और पुष्कर को नख में स्थित जानो । उन्हीं द्वीपों के

रमणा वामरेखायां सप्तैते कुलपर्वताः ॥ ६१ ॥ अस्थिस्थाने भवेज्जम्बूः शाको मज्जासु संस्थितः ॥ कुशद्वीपः स्थितो मांसे क्रौञ्चद्वीपः शिरासु च ॥ ६२ ॥ त्वचायां शाल्मलीद्वीपो गोमेदो रोमसञ्चये ॥ नखस्थं पुष्करं विद्यात्सागरास्तदनन्तरम् ॥ ६३ ॥ क्षारोदो हि भवेन्मूत्रे क्षीरे क्षीरोदसागरः ॥ सुरोदधिः श्लेष्मसंस्था मज्जायां घृतसागरः ॥ ६४ ॥ रसोदधि रसे विद्याच्छोणिते दधिसागरः ॥ स्वादूदो लम्बिकास्थाने जानीयाद्विनतासुत ॥ ६५ ॥ नादचक्रे स्थितः सूर्यो बिन्दुचक्रे च चन्द्रमाः ॥ लोचनस्थः कुजो ज्ञेयो हृदये ज्ञः प्रकीर्तितः ॥ ६६ ॥

अन्तर्गत सागरों को सुनो ॥ ६३ ॥ उस विराट पुरुष के मूत्र में खारा समुद्र स्थित है, दूध में दूध का समुद्र और श्लेष्मा में सुरा (मदिरा) का समुद्र स्थित है और मज्जा में घी का समुद्र स्थित है ॥६४॥ रस में रस का समुद्र जानिये और रुधिर में दही का समुद्र जानिये । हे विनता के पुत्र ! लम्बिका (कण्ठके भीतर) उसके स्थान में स्वादिष्ठ जल जानिये ॥ ६५ ॥ उस विराट पुरुष के नादचक्र में सूर्य स्थित है, और बिन्दुचक्र में चन्द्रमा स्थित है,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नेत्र में मङ्गल स्थित है और हृदय में बुध स्थित है ।। ६६ ।। विष्णुस्थान नाभिगोल में गुरु को स्थित जानिये और शुक्र में शुक्र स्थित है । नाभि के स्थान में शनैश्चर स्थित जानिये और मुख में राहु स्थित है ।। ६७ ।। वायु के स्थान में केतु स्थित है, इस प्रकार उस विराट् शरीर में ग्रहमण्डल हैं । सर्वव्यापक इस प्रकार स्वरूप

विष्णुस्थाने गुरुं विद्याच्छुक्रे शुक्रो व्यवस्थितः ।। नाभिस्थाने स्थितो मन्दो मुखे राहुः प्रकीर्तितः ।।६७।। वायुस्थाने स्थितः केतुःशरीरे ग्रहमण्डलम् ।। एवं सर्वस्वरूपेण चिन्तये-दात्मनस्तनुम् ।। ६८ ।। सदा प्रभातसमये बद्धपद्मासनः स्थितः ।। षट्चक्रचिन्तनं कुर्याद्यथोक्तमजपाक्रमम् ।। ६९ ।। अजपानाम गायत्री मुनीनां मोक्षदायिनी ।। अस्याः संकल्पमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। ७० ।। शृणु तार्क्ष्य प्रवक्ष्येऽहमजपाक्रममुत्तमम् ।। यं कृत्वा सर्वदा जीवो जीवभावं विमुञ्चति ।। ७१ ।। मूलाधारः स्वधिष्ठानं मणिपूरकमेव

को अपने शरीर में चिन्तन करे ।। ६८ ।। नित्य प्रभात समय बँधे हुये पद्मासन में स्थित हो षट्चक्रों का चिंतन करे और कहे हुये अजपा के क्रम का मनन करे ।।६९।। मुनियों को मोक्ष देनेवाली अजपा नाम की गायत्री है। इसके सङ्कल्पमात्र से जीव सब पापों से छूट जाता है ।।७०।। हे गरुड़ ! सुनो, मैं अजपा का उत्तम क्रम कहता हूँ, इसको करकेजीव अपने जीवभाव को छोड़ देता है ।।७१।। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और आज्ञा ये षट्चक्र कहे जाते हैं ॥७२॥ लिङ्गदेश में मूलाधार को स्थित करके क्रमशः नाभि, हृदय, कण्ठ, भौहों के मध्य में और ब्रह्मरन्ध्र में क्रमशः शेष चक्रों का चिन्तन करे ॥७३॥ 'व श ष स' ये चार दलवाले अग्नि के समान वर्णवाला मूलाधार चक्र होता है। सूर्य के समान 'ब भ म य र ल' ये ६ पत्रवाला स्वाधिष्ठान चक्र होता है।

च ॥ अनाहत्तं विशुद्धयाख्यमाज्ञाषट्चक्रमुच्यते ॥ ७२ ॥ मूलाधारे लिङ्गदेशे नाभ्यां हृदि च कण्ठगे ॥ भ्रुवोर्मध्ये ब्रह्मरन्ध्रे क्रमाच्चक्राणि चिन्तयेत् ॥ ७३ ॥ आधारं तु चतुर्दलानलसमं वासान्तवर्णाश्रयं स्वाधिष्ठानमपि प्रभाकरसमं बालान्तषट्पत्रकम् ॥ रक्ताभं मणिपूरकं दशदलं डाद्यं फकारान्तकं पत्रैर्द्वादशभिरनाहत पुरं हैमं कठान्तावृतम् ॥७४॥ पत्रैः सस्वरषोडशैः शशधरज्योतिर्विशुद्धाम्बुजं हंसेत्यक्षरयुग्मकं द्वयदलं रक्ताभमात्राम्बुजम् ॥ तस्मादूर्ध्वगतं प्रभासितमिदं पद्मं सहस्रच्छदं सत्यानन्दमयं सदा शिवमयं ज्योतिर्मयं

रक्त आभावाला ड से फ तक अर्थात् ड ढ ण त थ द ध न प फ इनसे युक्त दश दलवाला मणिपूरक चक्र होता है। सुवर्ण के समान वर्णमाला क से ठ तक (क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ) इनसे युक्त बारह पत्रोंवाला अनाहत चक्र होता है ॥७४॥ चन्द्रमा की ज्योति के समान १६ सोलह 'अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः, इन स्वरों से युक्त १६ पत्रोंवाला विशुद्धि चक्र होता है। हंस इन दो अक्षरों से युक्त तथा लाल कान्तिवाला आज्ञा-चक्र

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

होता है। उससे ऊपर देदीप्यमान १००० दलवाला कमल है जो सत्य आनन्दमय तथा शिवमय (कल्याणमय), ज्योतिर्मय और शाश्वत है ॥७५॥ गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, जीव, गुरु का व्यापक परब्रह्म का चक्रों में चिन्तन करे ॥७६॥ रात्रि-दिन में पण्डितों ने श्वास की गति इक्कीस हजार छः सौ से अधिक कही है ॥७७॥ हकार से बाहर आते

शाश्वतम् ॥ ७५ ॥ गणेशं च विधिं विष्णुं शिवं जीवं गुरुं ततः ॥ व्यापकं च परं ब्रह्म क्रमाच्चक्रेषु चिन्तयेत् ॥ ७६ ॥ एकविंशत्सहस्राणि षट्शतान्यधिकानि च ॥ अहोरात्रेण श्वासस्य गतिः सूक्ष्मा स्मृता बुधैः ॥७७॥ हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत्पुनः ॥ हंसो हंसेति मन्त्रेण जीवो जपति तत्त्वतः ॥७८॥ षट्शतं गणनाथाय षट्सहस्रं तु वेधसे ॥ षट्-सहस्रं च हरये षट्सहस्रं हराय च ॥ ७९ ॥ जीवात्मने सहस्रं सहस्रं गुरवे तथा ॥ चिदात्मने सहस्रं च जपसंख्यां निवेदयेत् ॥ ८० ॥ एतांश्चक्रगतान् ब्रह्म मयूखान् मुनयोऽमरान् ॥

हैं और सकार से फिर भीतर प्रवेश करते हैं और "हंसो हंसः" इस मन्त्र से जीवतत्त्व को जपते हैं ॥७८॥ छः सौ गणेश के लिये, छः हजार ब्रह्मा के लिये, छः हजार हरि के लिये, छः हजार शिव के लिये ॥७९॥ एक हजार जीवात्मा के लिए, एक हजार गुरुके लिये और एक हजार चैतन्यरूप आत्मा के लिये। इसप्रकार जप की संख्या निवेदन करे।८०।सतसम्प्रदाय

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America: HHFA(USA)

के जाननेवाले अरुणादिक मुनीश्वर लोग चक्रमें स्थित ब्रह्म को किरणों में देवताओं का चिन्तन करते हैं ॥८१॥ शुक आदि मुनीश्वर शिष्योंको उपदेश करते हैं, अतः बुध जन को इस महान् प्रवृत्तिका ध्यान करके फिर परब्रह्म का ध्यान करना चाहिये ।८२। एकाग्रचित्त होकर सभी चक्रों में मानसी पूजा कर उसके उपरान्त गुरु के उपदेश द्वारा अजपा नाम

सत्सम्प्रदायवेत्तारश्चिन्तयन्त्यरुणादयः ॥८१॥ शुकादयोऽपि मुनयः शिष्यानुपदिशन्ति च ॥
अतः प्रवृत्तिं महतां ध्यात्वा ध्यायेत्सदा बुधः ॥ ८२ ॥ कृत्वा च मानसीं पूजां सर्वचक्रेष्व-
नन्यधीः॥ ततो गुरूपदेशेनगायत्रीमजपां जपेत् ॥८३॥ अधोमुखे ततो रन्ध्रे सहस्रदलपङ्कजे ॥
हंसगं श्रीगुरुं ध्यायेद्वराभयकराम्बुजम् ॥ ८४ ॥ क्षालितं चिन्तयेद्देहं तत्पादामृतधारया ॥
पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रणमेत्तत्स्तवेन च ॥ ८५ ॥ ततः कुण्डलिनीं ध्यायेदारोहादवरोहतः ॥
षट्चक्रकृतसञ्चारां सार्धत्रिवलयां स्थिताम् ॥८६॥ ततो ध्यायेत्सुषुम्नाख्यं* धाम रन्ध्राद्ब-

गायत्री का जप करे ॥८३॥ अधोमुख छिद्रवाले हजार दल के कमल में हंस पर चढ़े हुए और वर दान, अभय दान हाथों में धारण किये हुए गुरु का ध्यान करे ॥८४॥ उन गुरु के चरणामृत-धारा से अपना देह धोवे और पञ्चो-पचार से पूजन करे, उनका स्तवन करे और प्रणाम करे ॥८५॥ ततः छः चक्रों में संचार करनेवाली, साढ़े तीन वलय-वाली कुण्डलिनी को आरोह तथा अवरोह के क्रम से स्थित ध्यान करे ॥८६॥ ब्रह्मरन्ध्र से बाहर गये हुए सुषुम्ना-

* ये सब यौगिक क्रियायें हैं, विना गुरु के इनका ज्ञान होना असम्भव है।

= ऋण मोचन कर्ता ... ... मुकुन्द ... ...स्मादन्यो न कश्चन
२ एकोऽपि कृष्णस्य कृत प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म, कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय।

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America, HHFA(USA)

नाम धाम का ध्यान करे, उस सुषुम्ना नामक मार्ग में होकर गये हुए जीव विष्णु के परमपद को प्राप्त करते हैं ॥८७॥ पश्चात् ब्राह्ममुहूर्त में स्वयं देदीप्यमान सनातन सत् चित् आनन्दवाले परब्रह्म का ध्यान करे जिसे मैं सदा चिन्तन करता हूँ ॥८८॥ इस प्रकार गुरु के उपदेश से मन को स्थिर करे, अपने प्रयत्न से न करे। गुरु के उपदेश बिना

हिर्गतम् ॥ तथा तेन गता यान्ति तद्विष्णोः परमं पदम् ॥८७॥ ततो मच्चिन्तितं रूपं स्वयं-
ज्योतिः सनातनम् ॥ सदानन्दं सदा ध्यायेन्मुहूर्ते ब्राह्मसंज्ञके ॥८८॥ एवं गुरूपदेशेन मनो
निश्चलतां नयेत् ॥ न तु स्वेन प्रयत्नेन तद्विना पतनं भवेत् ॥८९॥ अन्तर्योगं विधायैवं
बहिर्योगं समाचरेत् ॥ स्नानसन्ध्यादिकं कृत्वा कुर्याद्धरिहरार्चनम् ॥९०॥ देहाभिमानि-
नामन्तर्मुखी वृत्तिर्न जायते ॥ अतस्तेषां तु मद्भक्तिः सुकरा मोक्षदायिनी ॥९१॥ तपो-
योगादयो मोक्षमार्गाः सन्ति तथापि च ॥ समीचीनस्तु मद्भक्तिमार्गः संसारतामिह ॥९२॥

पतन अर्थात् योगभ्रष्ट होना निश्चित है ॥८९॥ इस प्रकार अंतर्योग करके पुनः बहिर्योग को आरंभ करे। स्नान-संध्या आदि करके हरि का पूजन करे ॥ ९० ॥ देह के अभिमानी पुरुषों की अन्तर्मुख वृत्ति (यौगिक) नहीं होती है, इसी से उनको मेरी भक्ति सरलतापूर्वक मोक्ष को देनेवाली है ॥९१ ॥ यद्यपि तप, योग आदि मोक्ष के मार्ग हैं तथापि इन सांसारिक पुरुषों के लिए मेरी भक्ति का मार्ग ही समीचीन है ॥ ९२ ॥ ब्रह्मा आदि सर्वज्ञों ने

Digitization by Hindu-Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

अनायासेन [illegible] विना [illegible] कथं भवेत्
देह [illegible] आत्मशुद्धि [illegible] निश्चिता भोति।

तीन बार वेदशास्त्र का बारम्बार अध्ययन मनन कर यही निश्चय किया है कि ॥९३॥ यज्ञ आदि श्रेष्ठ धर्म चित्त को शुद्ध करनेवाले हैं और मेरी भक्ति उनके फलस्वरूप है, इसको पाकर मानव कभी दुःखी नहीं होता है ॥९४॥ हे

ब्रह्मादिभिश्च सर्वज्ञैरयमेव विनिश्चितः॥ त्रिवारं वेदशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः ॥९३॥
यज्ञादयोऽपिसद्धर्माश्चित्तशोधनकारकाः॥ फलरूपा च मद्भक्तिस्तां लब्ध्वा नावसीदति॥९४॥
एवमाचरणं तार्क्ष्य करोति सुकृती नरः॥ संयोगेन च मद्भक्त्या मोक्षं याति सनातनम् ॥९५॥
इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे सुकृतिजनजन्माचरणनिरूपणं नाम पञ्चदशोध्यायः ॥१५॥

गरुड उवाच॥ श्रुतं मया दयासिन्धो ह्यज्ञानाज्जीवसंसृतिः॥ अधुना श्रोतुमिच्छामि मोक्षोपायं सनातनम् ॥ १ ॥ भगवन् देवदेवेश शरणागतवत्सल॥ असारे घोरसंसारे

गरुड़! जो सुकृती नर इस प्रकारका आचरण करते हैं वे मेरी भक्ति के सहयोगसे सनातन मोक्ष को प्राप्त होते हैं।।९५।।

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां सुकृतिजनजन्माचरणनिरूपणं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

गरुड़जी ने पूछा—हे दयासिन्धु! अज्ञान से जीवों का संसार-आवागमन का वर्णन सुना। अब मैं सनातन मोक्ष का उपाय सुनना चाहता हूँ ॥१॥ हे भगवन्! हे देव! हे ईश! हे शरणागत-वत्सल! सब दुःखमय अति मलिन इस

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घोर असार संसार में ।।२।। अनेक प्रकार के शरीरों विद्यमान अनन्त जीवों के समूह उत्पन्न होते हैं और मरते हैं। उनका अन्त नहीं है ।।३।। वे सर्वदा दुःख ही में व्याकुल रहते हैं, कभी कोई सुखी नहीं रहता है। वे किन उपायों से इस संसार की बाधाओं से छूटेंगे, हे प्रभो! मुझसे कहिये ।।४।। श्री भगवान् ने उत्तर दिया—हे गरुड़! सुनो, जो तुम

सर्वदुःखमलीमसे ॥ २ ॥ नानाविधशरीरस्था ह्यनन्ता जीवराशयः ॥ जायन्ते च म्रियन्ते च तेषामन्तो न विद्यते ॥ ३ ॥ सदा दुःखातुरा एव न सुखी विद्यते क्वचित् ॥ केनोपायेन मोक्षेश मुच्यन्ते वद मे प्रभो ॥ ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ शृणु तार्क्ष्य प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ यस्य श्रवणमात्रेण संसारान्मुच्यते नरः ॥ ५ ॥ अस्ति देवः परब्रह्मस्वरूपी निष्कलः शिवः ॥ सर्वज्ञः सर्वकर्ता च सर्वेशो निर्मलोऽद्वयः ॥ ६ ॥ स्वयंज्योतिरनाद्यन्तो निर्विकारः परात्परः ॥ निर्गुणः सच्चिदानन्दस्तदंशाज्जीवसंज्ञकः ॥ ७ ॥ अनाद्यविद्योपह-

मुझसे पूछते हो उसका उत्तर मैं तुमसे कहता हूँ जिसके सुनने ही मात्र से मनुष्य संसार से छूट जाता है ।।५।। परब्रह्म-स्वरूप, कला-रहित, सर्वज्ञ, सबके कर्त्ता, सबके स्वामी, निर्मल और अद्वय शिव हैं ।।६।। स्वयं देदीप्यमान, आदि-अन्त-रहित, विकार-रहित, अनिर्वचनीय, 'निर्गुण' सत्-चित्-आनन्दरूप परमेश्वर हैं, 'जीव' उनका अंश मात्र है ।।७।। जिस प्रकार आघात लगनेपर अग्निमेंसे चिनगारी निकलती है उसी प्रकार अनादि कर्ममेंसे अनादि विद्या द्वारा आघात होने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पर देह आदि उपाधियों से विभूषित जीव उत्पन्न होता है ॥८॥ वह देहधारी जीव सुख-दुःख को देनेवाले, पुण्य तथा पापरूपी कर्मों से बँधे हुए होते हैं। जाति का बन्धन, देह, आयु आदि सब पूर्व कर्मों द्वारा ही प्राप्त होते हैं,॥९॥ हे गरुड़! फिर वे जीव उनसे भी उत्कृष्ट अनाशवान सूक्ष्म-लिङ्ग-शरीर प्रत्येक जन्म में पाते हैं ॥१०॥ मोक्षका क्रम

तावद्यथाग्नौ विस्फुलिङ्गकाः ॥ देहाद्युपाधिसंभिन्नास्ते कर्मभिरनादिभिः ॥८॥ सुखदुःखप्रदैः पुण्यपापरूपैर्नियन्त्रिताः ॥ तत्तज्जातियुतं देहमायुर्भोगं च कर्मजम् ॥ ९ ॥ प्रतिजन्म प्रपद्यन्ते तेषामपि परं पुनः ॥ ससूक्ष्मलिङ्गशारीरमामोक्षादक्षरं खग ॥ १० ॥ स्थावराः कृमयश्चाब्जाः पक्षिणः पशवो नराः ॥ धार्मिकास्त्रिदशास्तद्वन्मोक्षिणश्च यथाक्रमम् ॥११॥ चतुर्विधशरीराणि धृत्वा मुक्त्वा सहस्रशः ॥ सुकृतान्मानवो भूत्वा ज्ञानी चेन्मोक्षमाप्नुयात् ॥ १२ ॥ चतुरशीतिलक्षेषु शरीरेषु शरीरिणाम् ॥ न मानुषं विनाऽन्यत्र तत्त्वज्ञानं तु

यह है। प्रथम स्थावर का जन्म होता है, दूसरे जन्म में वही स्थावर कीड़ा होता है, ततः (वृक्ष आदि) पक्षी, पशु मनुष्य धर्म करनेवाले मनुष्य, अन्त में देवता होता है। देवता क्रम से जीव मोक्ष करनेवाले होते हैं ॥११॥ जीव हजारों बार चार प्रकार (पिण्डज-अण्डज-स्वेदज-उद्भिज) का शरीर धारण करता है तथा छोड़ता है और अन्त में सुकृतसे मनुष्य होता है। उनमें ज्ञानी मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है ॥१२॥ देहधारियों को चौरासी लाख शरीर में ग्रहण करना

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पड़ता है परन्तु बिना मनुष्य-शरीर के किसी शरीर में तत्त्वज्ञान नहीं होता है और तत्त्वज्ञान के बिना मुक्ति नहींहोती है ॥१३॥ यहाँ हजारों जन्म में हजार-करोड़ों जीवों में पुण्यकर्मों के सञ्चय से मनुष्य का शरीर प्राप्त होता है ॥१४॥ मोक्ष की सीढ़ी सदृश्य इस दुर्लभ मनुष्य-देह को पाकर जो अपने को नहीं तारता है उससे अधिक पापी कौन है ?॥१५॥

लभ्यते ॥१३॥ अत्र जन्मसहस्राणां सहस्रैरपि कोटिभिः ॥ कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्यसञ्चयात् ॥१४॥ सोपानभूतं मोक्षस्य मानुष्यं प्राप्य दुर्लभम् ॥ यस्तारयति नात्मानं तस्मात्पापतरोऽत्र कः ॥१५॥ नरः प्राप्योत्तमं जन्म लब्ध्वा चेन्द्रियसौष्ठवम् ॥ न वेत्त्यात्महितं यस्तु स भवेद्ब्रह्मघातकः ॥ १६ ॥ विना देहेन कस्यापि पुरुषार्थो न विद्यते ॥ तस्माद्देहं धनं रक्षेत्पुण्यकर्माणि साधयेत् ॥ १७ ॥ रक्षयेत्सर्वदात्मानमात्मा सर्वस्य भाजनम् ॥ रक्षणे यत्नमातिष्ठेज्जीवन् भद्राणि पश्यति ॥१८॥ पुनर्ग्रामः पुनः क्षेत्रंपुनर्वित्तं पुनर्गृहम् ॥

जीव सर्वोत्तम नरदेह और सभी सुन्दर इन्द्रियों को प्राप्त कर भी अपना हित नहीं जानता है वह ब्रह्महत्यारा के समान होता है ॥१६॥ देह के बिना कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकता है, इसलिए देह और धन की रक्षा कर पुण्यकर्मों का साधन करे ॥१७॥ सदा अपनी आत्मा की रक्षा करे क्योंकि आत्मा ही सबका पात्र है। इससे आत्मा की रक्षा में यत्न करे, क्योंकि जीवित रहने पर अनेक कल्याण को देखता है ॥१८॥ जीवित शरीर रहने पर ग्राम, क्षेत्र, धन, घर

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America (HHFA USA)

[illegible]
आयुः स्रवति भि[illegible]घटादिवाम्भः लोकस्तथाप्यहितमाचरतीति चित्रम् ॥

और शुभ अशुभ कर्म बार-बार होते हैं किन्तु यह मानव-शरीर बारम्बार नहीं होता ॥१९॥ विज्ञ जन सदा शरीर की
ग० पु० रक्षा का उपाय किया करते हैं, कोढ़ी आदि दुःखी भी इस शरीर के त्याग की इच्छा नहीं करते हैं ॥२०॥ रक्षा किया भा० टी०
१०८ गया यह शरीर धर्म के लिये होता है, धर्म ज्ञान के लिये तथा ज्ञान योग के लिये होता है, ततः जीव शीघ्र ही अ० १६

पुनः शुभाशुभं कर्म न शरीरं पुनः पुनः ॥ १९ ॥ शरीररक्षणोपायाः क्रियन्ते सर्वदा
बुधैः ॥ नेच्छन्ति च पुनस्त्यागमपि कुष्ठादिरोगिणः ॥ २० ॥ तद्गोपितं स्याद्धर्मार्थं धर्मो
ज्ञानार्थमेव च ॥ ज्ञानं तु ध्यानयोगार्थमचिरात् प्रविमुच्यते ॥२१॥ आत्मैव यदि नात्मान-
महितेभ्यो निवारयेत् ॥ कोऽन्यो हितकरस्तस्मादात्मानं तारयिष्यति ॥२२॥ इहैव नरक-
व्याधेश्चिकित्सां न करोति यः ॥ गत्वा निरौषधं देश व्याधिस्थः किं करिष्यति ॥२३॥
व्याघ्रीवास्ते जरा चायुर्याति भिन्नघटाम्बुवत् ॥ निघ्नन्ति रिपुवद्रोगास्तस्माच्छ्रेयः समभ्यसेत्

मुक्त हो जाता है ॥२१॥ जो स्वयं ही आत्मा को अहित से न बचावे तो इससे बढ़कर और कौन हितकर होगा जो
आत्मा को तारेगा ॥२२॥ जो इसी लोक में ही नरकरूपी रोग की चिकित्सा नहीं करता है तो निरौषधि देश में रोगी १०८
देह जाकर क्या करेगा ?॥२३॥ व्याघ्री के समान वृद्धावस्था है, फूटे हुए घट के पानी के समान आयु घटती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शत्रु के समान रोग प्रहार करते हैं। इसलिए कल्याण देनेवाली वार्ताका अभ्यास करना चाहिए ॥२४॥ जब तक दुःख अपना आश्रय शरीर में न करे, जब तक आपत्तियाँ न आवें और जब तक इन्द्रियाँ व्याकुल (विकृत) न हों, उसके पहले ही ज्ञान-तत्त्व का अभ्यास करे ॥२५॥ जब तक यह देह रहे तब तक ज्ञान तत्त्वका अभ्यास करे, घर के

॥ २४ ॥ यावन्नाश्रयते दुःखं यावन्नायान्ति चापदः ॥ यावन्नेन्द्रियवैकल्यं तावच्छ्रेयः समभ्यसेत् ॥ २५ ॥ यावत्तिष्ठति देहोऽयं तावत्तत्त्वं समभ्यसेत् ॥ सन्दीप्ते कोणभवने कूपं खनति दुर्मतिः ॥ २६ ॥ कालो न ज्ञायते नानाकार्यैः संसारसम्भवैः ॥ सुखं दुःखं जनो हन्त न वेत्ति हितमात्मनः ॥२७॥ जातानार्तान्मृतानापद्ग्रस्तान् दृष्ट्वा च दुःखितान् ॥ लोको मोहसुरां पीत्वा न बिभेति कदाचन ॥२८ ॥ सम्पदः स्वप्नसंकाशा यौवनं कुसुमो-

कोनेमें अग्नि लगनेपर दुर्बुद्धि कुआँ खोदने का उपाय करता है (मृत्यु के समीप ज्ञान का अभ्यास नहीं हो सकता) ॥२६॥ काल संसार में उत्पन्न हुए अनेक कार्यों को नहीं देखता है। परन्तु बड़े खेद की बात है कि मनुष्य सुख-दुःख तथा अपने हितको नहीं जानता है ॥२७॥ सभी उत्पन्न हुए लोगों को दुःखित, मरा हुआ और आपत्तिमें ग्रस्त और दीन-दुखियों को देखकर भी मनुष्य मोहरूपी मदिरा पीकर कभी भी पाप से नहीं डरता है ॥२८॥ सम्पत्तियाँ स्वप्नके

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विद्युच्चलं धनं, यौवनमायुः = सामान्य स्त्री नरस्य पद्मपत्र की रजनी

समान हैं, यौवन फूलके समान है और आयुष्य बिजलीके समान चञ्चल है। इन बातोंको जानते हुए किस पुरुष को धीरज हो सकता है ॥२९॥ सौ वर्षका जीवन ही थोड़ा है। उसमें भी आधा निद्रा और आलस्य में जाता है और बाल्यावस्था, रोग, जरा, इनके दुःखसे कुछ अल्प हुआ जो शेष बचा वह भी निरर्थक है ॥३०॥ प्रारब्ध (ब्रह्म) के उपाय करने योग्य समय में उद्योग-रहित रहनेवाला, जागने योग्य (ब्रह्म चिन्तन) समय में सोनेवाला और भय

पमम् ॥ तडिच्चपलमायुष्यं कस्य स्याज्जानतो धृतिः ॥२९॥ शतं जीवितमत्यल्पं निद्रालस्यैस्तदर्धकम् ॥ बाल्यरोगजरादुःखैरल्पं तदपि निष्फलम् ॥३०॥ प्रारब्धव्ये निरुद्योगो जागर्तव्ये प्रसुप्तकः ॥ विश्वस्तव्यो भयस्थाने हा नरः को न हन्यते ॥३१॥ तोयफेनसमे देहे जीवेनाक्रम्य संस्थिते ॥ अनित्यप्रिय संवासे कथं तिष्ठति निर्भयः ॥३२॥ अहिते हित-

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति ०

स्थान (संसार माया) में विश्वास करनेवाला कौन मनुष्य नहीं मारा जाता है ? (सभी मारे जाते हैं)॥३१॥ जलके फेनके समान अनित्य देहमें बलपूर्वक जीव स्थित रहता है। अपने प्यार का सहवास पानेपर जीव निर्भर कैसे स्थित रह सकता है?॥३२॥ जो लोग अहित (परिणाम में विषके समान) विषयों को इष्टलाभ जानते हैं और अध्रुव देह,

* जीव ब्रह्म का अंश है, वही अनित्य देह में रहता है। जब ब्रह्म को देखेगा तुरन्त उसमें मिल जायगा ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

धन आदि को ध्रुव; और अनर्थ (दम्भ, झूठ आदि पन्द्रह अनर्थों का मूल) धन को अर्थ (प्रयोजनों को सिद्ध करने-वाला) जानते हैं ऐसे नर मुक्तिको देनेवाले आत्मज्ञानरूप अपने अर्थ को नहीं जानते हैं ।।३३।। देवमाया से मोहित वे लोग इस बातको जानते हुए भी कि आत्मज्ञान से मोक्ष होता है मोक्ष मार्ग से गिर जाते हैं। शुद्ध मार्ग देखते हुये भी

संज्ञः स्याद्ध्रुवे ध्रुवसंज्ञकः ।। अनर्थे चार्थविज्ञानः स्वमर्थं यो न वेत्ति सः ।।३३।। पश्यन्नपि प्रस्खलति शृण्वन्नपि न बुद्धयति ।। पठन्नपि न जानाति देवमायाविमोहितः ।। ३४ ।। तन्निमज्जज्जगदिदं गम्भीरे कालसागरे ।। मृत्युरोगजराग्राहैर्न कश्चिदपि बुद्ध्यते ।।३५।। प्रतिक्षणमयं कालः क्षीयमाणो न लभ्यते ।। आमकुम्भ इवाम्भस्थो विशीर्णो न विभाव्यते ।। ३६ ।। युज्यते वेष्ठनं वायोराकाशस्य च खण्डनम् ।। ग्रन्थनं च तरङ्गाणामास्था नायुषि

अनदेखा कर देते हैं; ज्ञान-वाणी सुनते हुए भी नहीं सुनते हैं ।।३४।। यह जगत कालरूपी सागर में डूब रहा है। इसमें मृत्यु, रोग, जरा आदि ग्राह हैं। इन्हीं ग्राहों द्वारा मनुष्य काल-सागर में डूबता हुआ भी नहीं जानता है।।३५।।क्षण-क्षणमें क्षीण होता हुआ भी यह काल मनुष्यों द्वारा न जाना जाता है और न ग्रहण किया जाता है। जलमें स्थित कच्चे घड़े के समान बिखरते हुये भी इसके नष्ट होने का पता नहीं चलता है।।३६।। पवन का बांधना सम्भव हो सकता है और आकाश

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का खण्डन सम्भव हो सकता है, तरंगे गुंथी जा सकती हैं, परन्तु आयुष्य पर विश्वास करना उचित नहीं है ॥३७॥ पृथ्वी काल द्वारा जलाई जाती है, सुमेरु पर्वत कालके द्वारा ही बिखर जाता है और काल द्वारा ही समुद्र का जल सूख जाता है । इस शरीर की क्या हस्ती है ॥३८॥ यह मेरी संतान है, यह मेरी स्त्री है और ये मेरे भाई-बन्धु हैं ऐसे

युज्यते ॥ ३७ ॥ पृथिवी दह्यते येन मेरुश्चापि विशीर्यते ॥ शुष्यते सागरजलं शरीरस्य च का कथा ॥ ३८ ॥ अपत्यं मे कलत्रं मे धनं मे बान्धवाश्च मे ॥ जल्पन्तमिति मर्त्याजं हन्ति कालवृको बलात् ॥ ३९ ॥ इदं कृतमिदं कार्यमिदमन्यत्कृताकृतम् ॥ एवमीहासमायुक्तं कृतान्तः कुरुते वशम् ॥४०॥ श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम् ॥ न हि मृत्युः प्रतीक्षेत कृतं वाप्यथवाऽकृतम् ॥ ४१ ॥ जरादर्शितपन्थानं प्रचण्डव्याधिसैनिकम् ॥

कहते हुए भी मनुष्यरूपी बकरे को कालरूपी भेड़िया बलपूर्वक मार डालता है ॥३९॥ यह काम पूर्ण हो गया है, यह कार्य करना शेष है और यह किया हुआ कार्य अपूर्ण है, ऐसी अभिलाषा करता हुआ पुरुष कृतान्त (यम) के वश में चला जाता है ॥४०॥ कल के काम को आज करे और शाम के काम को प्रातः करे, क्योंकि मृत्यु किये अनकिये की प्रतीक्षा नहीं करती है ॥४१॥ बुढ़ापे ने जिस मृत्यु का मार्ग दिखाया है और प्रचण्ड रोग जिस मृत्यु के सैनिक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है, ऐसे मृत्युरूपी शत्रु द्वारा ग्रसित जीव अपने रक्षक परमेश्वर को क्यों नहीं देखता है ? ॥४२॥ लालच रूपी सूई से छेदे गये, विषयरूपी घी से सींचे गये और राग-द्वेषरूप अग्नि में पकाये गये मनुष्य को मृत्यु खाती है ॥४३॥ बालकों में, तरुणों में, वृद्धों में तथा गर्भ में स्थित रहनेवालों में मृत्यु अवश्य आती है, यही जगत् का विधान है ॥ ४४ ॥

मृत्युशत्रुमधिष्ठोऽसि त्रातारं किं न पश्यसि ॥ ४२ ॥ तृष्णासूचीविनिर्भिन्नं सिक्तं विषयसर्पिषा ॥ रागद्वेषानले पक्वं मृत्युरश्नाति मानवम् ॥ ४३ ॥ बालांश्च यौवनस्थांश्च वृद्धान् गर्भगतानपि ॥ सर्वानाविशते मृत्युरेवंभूतमिदं जगत् ॥ ४४ ॥ स्वदेहमपि जीवोऽयं मुक्त्वा याति यमालयम् ॥ स्त्रीमातृपितृपुत्रादिसम्बन्धः केन हेतु ना ॥ ४५ ॥ दुःखमूलं हि संसारः स यस्यास्ति स दुःखितः ॥ तस्य त्यागः कृतो येन स सुखी नापरः क्वचित् ॥ ४६ ॥ प्रभवं सर्वदुःखानामालयं सकलापदाम् ॥ आश्रयं सर्वपापानां संसारं वर्जयेत्क्षणात् ॥ ४७ ॥

यह जीव अपने देह को भी छोड़कर यम के घर जाता है और स्त्री, माता, पिता पुत्र आदि के सम्बन्ध का तो कहना ही क्या है ॥४५॥ दुःखमूल ही यह संसार है। जो संसारी (गृहस्थ) है वही दुःखी है । इस संसार को जिसने त्याग दिया वह सुखी है, और कोई नहीं ॥४६॥ सब दुःखों को उत्पन्न करनेवाले, सब आपत्तियों के घर और सब पापों के आश्रयदाता इस संसार को क्षणमात्र में ही छोड़ देवे ॥ ४७ ॥ लोहे तथा लकड़ियों के बने हुए फन्दों से बँधा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हुआ मनुष्य छूट जाता है किन्तु पुत्र-स्त्रीमय पाशों से बँधा हुआ मानव कभी नहीं छूटता ॥४८॥ जीव मन के प्यारे जितने सम्बन्धों को करता है उतनी ही शोकरूपी कीलें इसके हृदय में पीड़ा देती हैं ॥४९॥ हाय! हाय! विषय-रूपी आहार करनेवाले, देह में स्थित इन्द्रियरूपी तस्करों ने छलसे सब धन हर लिया और सदा यह लोक नाश किया

लोहदारुमयैः पाशैः पुमान् बद्धो विमुच्यते ॥ पुत्रदारमयैः पाशैर्मुच्यते न कदाचन ॥४८॥ यावन्तः कुरुते जन्तुः सम्बन्धान् मनसः प्रियान् ॥ तावन्तोऽस्य निखन्यन्ते हृदये शोक-शङ्कवः ॥ ४९ ॥ वञ्चिताशेषविषयैस्तैर्नित्यं लोको विनाशितः ॥ हा हन्त विषयाहारैर्देहस्थे-न्द्रियतस्करैः ॥ ५० ॥ मांसलुब्धो यथा मत्स्यो लोहशंकुं न पश्यति ॥ सुखलुब्धस्तथा देही यमबाधां न पश्यति ॥ ५१ ॥ हिताहितं न जानन्तो नित्यमुन्मार्गगामिनः ॥ कुक्षि-पूरणनिष्ठा ये ते नरा नारकाः खग ॥ ५२ ॥ निद्रादिमैथुनाहाराः सर्वेषां प्राणिनां समाः

॥५०॥ जैसे लोह की कील में लगे हुए मांस का लोभी मत्स्य लोह की कील को नहीं देखता है, ऐसे ही सुख का लोभी प्राणी यम की बाधा को नहीं देखता है ॥ ५१ ॥ हे गरुड़! हित-अहित को न जाननेवाले, सदा कुमार्ग पर चलनेवाले और सर्वदा पेट भरने में लगे हुए मनुष्य नरक में जानेवाले होते हैं ॥५२॥ निद्रा, मैथुन, आहार आदि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सब प्राणियों को सर्वदा समान हैं, अतः ज्ञानवान् मनुष्य कहा जाता है और ज्ञानहीन पशु के तुल्य हैं ।।५३।। मूर्ख मनुष्य प्रभात-समय मल और मूत्र त्याग में फँसे रहते हैं । मध्याह्न में भूख-प्यास की शान्ति में और रात्रि में मदन तथा निद्रा में व्यस्त रहते हैं ।।५४।। हाय ! अपनी देह, धन, स्त्री आदि में तल्लीन सभी जीव अज्ञान से मोहित होकर

ज्ञानवान् मानवः प्रोक्तो ज्ञानहीनः पशुः स्मृतः ।। ५३ ।। प्रभाते मलमूत्राभ्यां क्षुत्तृड्भ्यां मध्यगे रवौ ।। रात्रौ मदननिद्राभ्यां बाध्यन्ते मूढमानवाः ।। ५४ ।। स्वदेहधनदारादि-निरताः सर्वजन्तवः ।। जायन्ते च म्रियन्ते च हा हन्ताज्ञानमोहिताः ।। ५५ ।। तस्मात्सङ्गः सदा त्याज्यः सर्वस्त्यक्तुं न शक्यते ।। महद्भिः सह कर्तव्यः सन्तः सङ्गस्य भेषजम् ।।५६।। सत्सङ्गश्च विवेकश्च निर्मलं नयनद्वयम् ।। यस्य नास्ति नरः सोऽन्धः कथं न स्यादमार्गगः ।। ५७ ।। स्वस्ववर्णाश्रमाचारनिरताः सर्वमानवाः ।। न जानन्ति परं धर्मं वृथा नश्यन्ति

उत्पन्न होते और मरते हैं ।।५५।। इस कारण सङ्ग का सर्वथा त्याग करना चाहिये और जो सब धन आदि का संग न छोड़ सके तो बड़ों का संग करना चाहिये । सज्जनों का संग ही संसार की औषधि है ।।५६।। सत्संग और विवेक ये दोनों निर्मल नेत्र हैं । जिनको ये नेत्र नहीं हैं वे अन्धे कुमार्ग में जानेवाले क्यों न हों ।। ५७ ।। सभी मनुष्य अपने-अपने वर्णाश्रम धर्म और आचार में तत्पर हैं, दूसरे धर्म को नहीं जानते हैं । दम्भी मनुष्य व्यर्थ नष्ट होते हैं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।।५८।। कुछ लोग कर्म में श्रम करनेवाले हैं, कुछ लोग व्रत करने लगे हैं। इस प्रकार वे अज्ञान से घिरे हैं। उनके चित्त में वंचक ही विचरते हैं।।५९।। मेरी मायासे मोहित कुछ लोग मेरा नाममात्र ले लेने से संतुष्ट रहकर मोक्ष की कामना करते हैं। कुछ लोग कर्मकाण्ड में रत होते हुए मन्त्र के उच्चारण, हवन आदि से और कुछ लोग यज्ञों का विस्तार कर

दाम्भिकाः ।। ५८ ।। क्रियायासपराः केचिद्व्रतचर्यादिसंयुताः ।। अज्ञातसंवृतात्मानः संचरन्ति प्रतारकाः ।। ५९ ।। नाममात्रेण सन्तुष्टाः कर्मकाण्डरता नराः मन्त्रोच्चारण-होमाद्यैर्भ्रामिताः क्रतुविस्तरैः ।। ६० ।। एकभुक्तोपवासाद्यैर्नियमैः कायशोषणैः ।। मूढाः परोक्षमिच्छन्ति मम मायाविमोहिताः ।। ६१ ।। देहदण्डेनमात्रेण का मुक्तिरविवेकिनाम् ।। वल्मीकताडनादेव मृतः कुत्र महोरगः ।। ६२ ।। जटाभाराजिनैर्युक्ता दाम्भिका वेष-

मोक्ष चाहते हैं। कुछ लोग एक बार भोजन करने से, उपवास से और शरीर को सुखानेवाले नियमों से मोक्ष की कामना करते हैं। परन्तु मेरी मायासे मोहित मूढ़ मनुष्य परोक्ष के मोक्ष इस प्रकार नहीं प्राप्त कर सकते हैं ।।६०-६१।। देह के दण्ड देने ही मात्र से अविवेकियों की कहीं मुक्ति होती है ? क्या बाँबी को पीटने से बड़ा साँप मरा है ?।।६२।। जटाओं के भार और मृगचर्म से युक्त वेष धारण करनेवाले दम्भी लोग ज्ञानीके समान लोकमें भ्रमण करते हैं और अन्य

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जनों को भी भ्रम में डालते हैं ॥६३॥ संसार से उत्पन्न सुख में तल्लीन रहनेवाला अपने को 'ब्रह्मज्ञ हूँ' ऐसा कहे तो कर्म तथा ब्रह्म दोनों से भ्रष्ट उस पुरुष को अन्त्यज के समान त्याग करना चाहिये ॥६४॥ घर और वन जिनके लिये तुल्य है और संसार में निर्लज्जतापूर्ण दिगम्बर होकर जो गर्दभ आदि की भाँति घूमते हैं वे कहाँ मुक्त होते हैं? ॥६५॥

धारिणः ॥ भ्रमन्ति ज्ञानिवल्लोके भ्रामयन्ति जनानपि ॥६३॥ संसारजसुखासक्तं ब्रह्मज्ञोऽस्मीति वादिनम् ॥ कर्मब्रह्मोभयभ्रष्टं तं त्यजेदन्त्यजं यथा ॥ ६४ ॥ गृहारण्यसमा लोके गतव्रीडा दिगम्बराः ॥ चरन्ति गर्दभाद्याश्च विरक्तास्ते भवन्ति किम् ॥ ६५ ॥ मृद्भस्मोद्धूलनादेव मुक्ताः स्युर्यदि मानवाः ॥ मृद्भस्मवासी नित्यं श्वा स किं मुक्तो भविष्यति ॥६६॥ तृणपर्णोदकाहाराः सततं वनवासिनः ॥ जम्बुकाखुमृगाद्याश्च तापसास्ते भवन्ति किम् ॥ ६७ ॥ आजन्ममरणान्तं च गङ्गादितटिनीस्थिताः ॥ मण्डूकमत्स्यप्रमुखा योगि-

जो मनुष्य केवल मिट्टी-भस्म आदि के लगाने ही से मुक्त हो जाय तो नित्य मिट्टी और भस्म में रहनेवाला कुत्ता क्यों नहीं मुक्त होता? ॥६६॥ घास, पत्र और जल आहार करनेवाला मानव, जम्बुक, चूहा, मृग आदि की भाँति कहीं तपस्वी होते हैं ॥ ६७ ॥ जन्म से मरण तक गंगा आदि नदियों में स्थित मेढक, मछली क्या योगी हो जाते हैं ?

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अर्थात् नहीं ॥६८॥ पारावत पक्षी एक-एक कण का आहार करते हैं और पपीहा भूमि में गिरे जल को कभी नहीं पीते। क्या वे व्रती हो जाते हैं ?॥ ६९ ॥ हे गरुड़! ये सब कृत्य केवल लोकरञ्जन के लिये हैं। मोक्ष का कारण तो साक्षात् तत्त्वज्ञान ही है ॥७०॥ हे गरुड़! षड्दर्शनरूप महाकूप में गिरे हुए ये नर-पशु परमार्थ नहीं जानते हैं और

नस्ते भवन्ति किम् ॥ ६८ ॥ पारावताः शिलाहाराः कदाचिदपि चातकाः ॥ न पिबन्ति महीतोयं व्रतिनस्ते भवन्ति किम् ॥ ६९ ॥ तस्मादित्यादिकं कर्म लोकरञ्जनकारकम् ॥ मोक्षस्य कारणंसाक्षात्तत्त्वज्ञानंखगेश्वर ॥७०॥ षड्दर्शनमहाकूपे पतिताः पशवः खग ॥ परमार्थं न जानन्ति पशुपाशनियन्त्रिताः ॥७१॥ वेदशास्त्रार्णवे घोरे उह्यमाना इतस्ततः ॥ षड्र्मिनिग्रह-ग्रस्तास्तिष्ठन्ति हि कुतार्किकाः ॥७२॥ वेदागमपुराणज्ञः परमार्थं न वेत्ति यः ॥ विडम्ब-कस्य तस्यैव तत्सर्वं काकभाषितम् ॥ ७३ ॥ इदं ज्ञानमिदं ज्ञेयमिति चिन्तासमाकुलाः ॥

वे पशुओं के बन्धन में बँधे हुए हैं ॥७१॥ वेदशास्त्ररूपी घोर समुद्र ही में बिखरे हुए तर्क-शास्त्ररूपी ६ लहरों में ही कुतार्किक लोग फँसे रहते हैं (वे ज्ञान तत्व को नहीं जानते)॥७२॥ वेद, शास्त्र और पुराण को जाननेवाला जो परमार्थ नहीं जानता है उस दिखाऊ पण्डित का वह सब बोलना कौवे के बोलने के समान व्यर्थ है ॥७३॥ यह ज्ञान है और जानने योग्य है, इस चिन्ता से व्याकुल वे रात-दिन शास्त्र को पढ़ते हैं, किन्तु परतत्त्व से पराङ्मुख रहते

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हैं ॥७४॥ काव्य, अलंकार, छन्द, निबन्ध, रसात्मक वाक्य की चिन्ता में कवि, साहित्यिक लोग फँसे रहते हैं, किन्तु उनकी इन्द्रियाँ व्याकुल ही रहती हैं ॥७५॥ परमतत्त्व कुछ और है, ("तत्त्वमसि" यह गुरु के उपदेश से जानने योग्य है) लोग व्यर्थ कुतर्क के बल से उसके जानने का कष्ट करते हैं। शास्त्र का उद्देश्य, तो और है, किन्तु वे कुछ

पठन्त्यहर्निशं शास्त्रं परतत्त्वपराङ्मुखाः ॥ ७४ ॥ वाक्यच्छंदोनिबंधेन काव्यालंकार शोभिताः ॥ चिंतया दुःखिता मूढास्तिष्ठन्ति व्याकुलेन्द्रियाः ॥ ७५ ॥ अन्यथा परमं तत्त्वं जनाः क्लिश्यन्ति चान्यथा ॥ अन्यथा शास्त्रसद्भावो व्याख्यां कुर्वंति चान्यथा ॥ ७६ ॥ कथयन्त्युन्मनीभावं स्वयं नानुभवन्ति च ॥ अहंकाररताः केचिदुपदेशादिवर्जिताः ॥ ७७ ॥ पठन्ति वेदशास्त्राणि बोधयन्ति परस्परम् ॥ न जानन्ति परं तत्त्वं दर्वी पाकरसं यथा ॥ ७८ ॥ शिरो वहति पुष्पाणि गंध जानाति नासिका ॥ पठंतिं वेदशास्त्राणि दुर्लभो

और ही व्याख्या करते हैं ॥७६॥ अहङ्कारी गुरु के उपदेश से वर्जित पण्डित लोग उपेक्षाभाव से कहते है कि 'हम कहाँ पूछें ?' और स्वयं परतत्त्व का अनुभव नहीं करते हैं ॥७७॥ वे लोग वेद और शास्त्रों को पढ़ते हैं और परस्पर बोध कराते हैं, परन्तु परमतत्त्व को नहीं जानते, जैसे पाक चलानेवाली करछी पाक में रस को नहीं जानती है ॥७८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

फूलों को शिर धारण करता है, परन्तु उनकी गन्ध नासिका जानती है, उसी प्रकार ये लोग वेद शास्त्रों को तो पढ़ते-पढ़ाते हैं, परन्तु उन्हें भाव का बोध नहीं होता है। भावका बोध करानेवाले दुर्लभ हैं ॥७९॥ अपने शरीरमें स्थित तत्त्व को न जानकर मूर्ख शास्त्रों में मोहित होता है। मूर्ख गोप काँखमें बकरा स्थित होनेपर कुएँ में ढूँढ़ता है ॥८०॥ संसार के अज्ञान नाश करने में शब्द का बोध समर्थ नहीं है, जिस प्रकार दीपक की वार्ता करने से अन्धकार नष्ट नहीं

भावबोधकः ॥ ७९ ॥ तत्त्वमात्मस्थमज्ञात्वा मूढः शास्त्रेषु मुह्यति ॥ गोपः कुक्षिगते छागे कूपे पश्यति दुर्मतिः ॥ ८० ॥ संसारमोहनाशाय शब्दबोधो न हि क्षमः ॥ न निवर्तेत तिमिरं कदाचिद्दीपवार्तया ॥ ८१ ॥ प्रज्ञाहीनस्य पठनं यथांधस्य च दर्पणम् ॥ अतः प्रज्ञावतां शास्त्रं तत्त्वज्ञानस्य लक्षणम् ॥ ८२ ॥ इदं ज्ञानमिदं ज्ञेयं सर्वं तु श्रोतुमिच्छति ॥ दिव्यवर्षसहस्रायुः शास्त्रान्तं नैव गच्छति ॥ ८३ ॥ अनेकानिच शास्त्राणि स्वल्पायुर्विघ्न-

होता है ॥८१॥ जिस प्रकार बुद्धिरहित मनुष्य का पढ़ना, अन्धे को दर्पण व्यर्थ होता है, उसी प्रकार प्रज्ञाहीनों को शास्त्र अध्ययन तत्त्वज्ञान के लिये व्यर्थ है ॥८२॥ शास्त्रों में कथित 'यह ज्ञान है' 'यह जानने योग्य है' लोग यह सुनने की इच्छा करते हैं, परन्तु लोगों की, यदि देवताओं की हजार वर्ष की आयु भी हो, तब भी शास्त्र का अन्त नहीं होता है ॥८३॥ शास्त्र अनेक हैं और आयु स्वल्प है, उसमें भी करोड़ों विघ्न हैं, अतः शास्त्रों के तत्त्व को ही ग्रहण

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America HHFA(USA)

- ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।

करना चाहिये जैसे, जल में से हंस दूध को ग्रहण कर लेता है ॥ ८४ ॥ बुद्धिमान् पुरुष वेद-शास्त्रों का अभ्यास करके तत्त्व को जान सब शास्त्रों को इस प्रकार छोड़ दे जैसे धान को चाहनेवाला पुआल को छोड़ देता है ॥ ८५ ॥ हे गरुड़ ! जैसे अमृत से तृप्त पुरुष को भोजन की आवश्यकता नहीं है । ऐसे ही तत्त्वज्ञानी को शास्त्र की कोई भी

कोटयः ॥ तस्मात्सारं विजानीयात्क्षीरं हंस इवाम्भसि ॥ ८४ ॥ अभ्यस्य वेदशास्त्राणि तत्त्वं ज्ञात्वार्थ बुद्धिमान् ॥ पलालमिव धान्यार्थी सर्वशास्त्राणि संत्यजेत् ॥ ८५ ॥ यथाऽमृतेन तृप्तस्य नाहारेण प्रयोजनम् ॥ तत्त्वज्ञस्य तथा तार्क्ष्य न शास्त्रेण प्रयोजनम् ॥८६॥ न वेदाध्ययनान्मुक्तिर्न शास्त्रपठनादपि ॥ ज्ञानादेव हि कैवल्यं नान्यथा विनतात्मज ॥८७॥ नाश्रमः कारणं मुक्तेर्दर्शनानि न कारणम् ॥ तथैव सर्वकर्माणि ज्ञानमेव हि कारणम् ॥८८॥ मुक्तिदा गुरुवागेका विद्याः सर्वा विडम्बिकाः ॥ काष्ठभारसहस्रेषु ह्येकं सञ्जीवनं

आवश्यकता नहीं है ॥ ८६ ॥ हे गरुड़ ! वेदों के पढ़ने से मुक्ति नहीं होती है और न शास्त्र के पठन से ही मुक्ति होती है, केवल ज्ञान ही से कैवल्य (मुक्ति) होती है । यह अन्यथा नहीं है ॥८७॥ चारों आश्रम मुक्ति का कारण नहीं हैं, न षट्दर्शन ही कारण हैं, उसी प्रकार सब शुभ कर्म भी मुक्तिदाता नहीं होते । केवल ज्ञान ही मुक्ति का कारण है ॥८८॥ गुरु की केवल एक वाणी मुक्ति को देनेवाली है और सब विद्यायें विडम्बना करनेवाली हैं, जैसे काठ के

पुआल - भुस

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हजारों गट्ठरों में सञ्जीवन काष्ठ एक ही श्रेष्ठ है ॥८९॥ क्रिया के श्रम से रहित अद्वैतवाद ही शिवरूप है। वह गुरु के मुख से ही मिलता है, करोड़ों आगमों के पढ़ने से नहीं मिलता है ॥९०॥ ज्ञान दो प्रकार का कहा है। एक आगम में कहा हुआ और दूसरा विवेक से उत्पन्न। आगममय ज्ञान तो शब्दब्रह्म है और विवेक से उत्पन्न ज्ञान परब्रह्म रूप है

परम् ॥८९॥ अद्वैतं हि शिवं प्रोक्तं क्रियायासविवर्जितम् ॥ गुरुवक्त्रेण लभ्येत नाधीतागमकोटिभिः ॥ ९० ॥ आगमोक्तं विवेकोत्थं द्विधा ज्ञानं प्रचक्षते ॥ शब्दब्रह्मागममयं परब्रह्मविवेकजम् ॥ ९१ ॥ अद्वैतं केचिदिच्छन्ति द्वैतमिच्छन्ति चापरे ॥ समं तत्त्वं न जानन्ति द्वैताद्वैतविवर्जितम् ॥ ९२ ॥ द्वे पदे बन्धमोक्षाय न ममेति ममेति च ॥ ममेति बध्यते जन्तुर्न ममेति प्रमुच्यते ॥९३॥ तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तिदा ॥ आया-

॥९१॥ कुछ लोग अद्वैतवाद-ज्ञान की इच्छा करते हैं, और अन्य कुछ लोग द्वैतवाद-ज्ञान की इच्छा करते हैं, परन्तु वे लोग अद्वैत और द्वैत से रहित समतत्त्व को नहीं जानते हैं ॥९२॥ यह मेरा नहीं और यह मेरा है ये दो शब्द मोक्ष और बन्ध के लिये हैं। 'मम' (यह मेरा है) इससे जन्तु बँध जाता है। और न मम (संसार में मेरा कुछ नहीं है) इससे छूट जाता है ॥९३॥ कर्म वह है जो बन्धन के लिये न हो और विद्या वह है जो मुक्ति को देनेवाली हो। अध्यात्मविद्या से भिन्न

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कहने के लिये तो और शिल्प-नैपुण्य (हर्म्य आदि के बनाने की चतुराई) आदि भी विद्या ही है ॥९४॥ जब तक कर्म किये जाते हैं, जब तक संसार की वासना है, जब तक इंद्रियाँ चञ्चल हैं तब तक तत्त्व की कथा कहाँ ? (कहीं नहीं) ॥९५॥ जब तक देह का अभिमान है, जब तक ममता है, संसार की वासना रहती है, जब तक प्रयत्न का वेग है

मायापरं कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम् ॥ ९४ ॥ यावत्कर्माणि दीयन्ते यावत्संसारवासना ॥ यावदिन्द्रियचापल्यं तावत्तत्त्वकथा कुतः ॥ ९५ ॥ यावद्देहाभिमानश्च ममता यावदेव हि ॥ यावत्प्रयत्नवेगोस्ति यावत्संकल्पकल्पना ॥ ९६ ॥ यावन्नो मानमस्थैर्यं न यावच्छास्त्र-चिन्तनम् ॥ यावन्न गुरुकारुण्यं तावत्तत्त्वकथा कुतः ॥९७॥ तावत्तपो व्रतं तीर्थं जपहोमा-र्चनादिकम् ॥ वेदशास्त्रागमकथा यावत्तत्त्वं न विन्दति ॥ ९८ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वाव

और जब तक संकल्प की कल्पना है, ॥९६॥ जब तक मन की स्थिरता नहीं है, जब तक शास्त्र में विचार नहीं करता है और जब तक गुरु की दया नहीं होती है तब तक तत्त्व की कथा कहाँ, अर्थात् कहीं नहीं ॥ ९७ ॥ जप, तप, हवन और पूजन, तीर्थ आदि वेद-शास्त्रों का अध्ययन और पुराणों की कथा तभी तक है जब तक तत्त्व का ज्ञान नहीं होता है ॥९८॥ इसलिये हे गरुड़! सब प्रयत्न करके सब अवस्था में यदि अपना मोक्ष चाहे तो सदा वह तत्त्वनिष्ठ होवे

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America- HHEA(USA)

॥९९॥आध्यात्मिकादि तीनों तापों से तपे हुये लोग धर्मज्ञान रूपी फूल वाले स्वर्ग तथा मोक्षरूपी फलवाले मोक्षरूपी वृक्ष की छाया का आश्रय लेवे ॥१००॥ इसलिये ज्ञान द्वारा श्रीगुरु के मुख से आतमतत्त्व जानना चाहिये। जिससे जीव घोर संसाररूपी बन्धन से छूट जावे॥१०१॥तत्त्व जाननेवाले का अन्तिम कृत्य सुनो, मैं तुमसे कहता हूँ जिससे जीव

स्थासु सर्वदा तत्त्वनिष्ठो भवेत्तार्क्ष्य यदीच्छेन्मोक्षमात्मनः ॥ ९९ ॥ धर्मज्ञानप्रसूनस्य स्वर्गमोक्षफलस्य च ॥ तापत्रयादिसन्तप्तश्छायां मोक्षतरोः श्रयेत् ॥१००॥ तस्माज्ज्ञानेनात्मतत्त्वं विज्ञेयं श्रीगुरोर्मुखात् ॥ सुखेन मुच्यते जन्तुर्घोरसंसारबन्धनात् ॥ १०१ ॥ तत्त्वज्ञस्यान्तिमं कृत्यं शृणु वक्ष्यामि तेऽधुना ॥ येन मोक्षमवाप्नोति ब्रह्मनिर्वाणसंज्ञकम् ॥१०२॥ अन्तकाले तु पुरुष आगते गतसाध्वसः ॥ छिन्द्यादसङ्गशस्त्रेण स्पृहां देहेऽनु ये च तम् ॥१०३॥ गृहात् प्रव्रजितो धीरः पुण्यतीर्थजलाप्लुतः ॥ शुचौ विविक्त आसीनो विधिवत्कल्पि-

मोक्ष निर्वाणसंज्ञक ब्रह्म को पाता है ॥१०२॥ पुरुष अन्तकाल आने पर मृत्यु के भय से शून्य (रहित) हो असङ्ग (त्याग) रूपी शास्त्र द्वारा देह में वर्तमान स्पृहा (लालच) को काटे और देह के अनुगामी पुत्र कलत्र आदि में राग-रहित होवे॥१०३॥ घर का त्याग किया हुआ धीर पुरुष पुण्यरूपी तीर्थ के जल में स्नान कर शुद्ध और एकान्त स्थान में

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विधिपूर्वक बनाये हुए (कुश, मृगचर्म और वस्त्रों के क्रम से बनाये हुए) आसन पर स्थित होवे ।।४।। शुद्ध त्रिवृत् अकार, उकार और मकाररूपी परब्रह्म के अक्षर 'ॐकार' का मनसे अभ्यास करे और श्वासको जीतकर ब्रह्मबीज को स्मरण करता हुआ मन को रोके ।।५।। बुद्धिरूपी सारथिद्वारा मन और इन्द्रिय रूपी घोड़ों को विषय वासनाओं

तासने ॥ ४ ॥ अभ्यसेन्मनसा शुद्धं त्रिवृद्ब्रह्माक्षरं परम् ॥ मनो यच्छेज्जितश्वासो ब्रह्मबीजमविस्मरन् ॥ ५ ॥ नियच्छेद्विषयेभ्योऽक्षान्मनसा बुद्धिसारथिः ॥ मनः कर्मभिराक्षिप्तं शुभार्थे धारयेद्धिया ॥ ६ ॥ अहं ब्रह्म परं धाम ब्रह्माहं परमं पदम् ॥ एवं समीक्ष्य चात्मानमात्मन्याधाय निष्कले ॥ ७ ॥ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥ ८ ॥ न यत्र दाम्भिका यान्ति ज्ञानवैराग्यवर्जिताः ॥

से रोके और कर्म से प्रेरित मन को बुद्धिद्वारा शुभ कर्म में धारण करे ।।६।। मैं ही परमधाम हूँ, मैं ही ब्रह्म हूँ और परमपदरूपी ब्रह्म भी मैं ही हूँ ऐसा भली भाँति देखकर निरुपद्रव आत्मा में अपने आपको स्थापित करे ।।७।। 'ओ३म्' इस एकाक्षर ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और मेरा स्मरण करता हुआ जो पुरुष देह का त्याग करता है वह परमगति (मुक्ति) को प्राप्त होता है ।।८।। जहाँ ज्ञान और वैराग्य से वर्णित दम्भ दिखानेवाले नहीं जाते हैं ज्ञानी पुरुष

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उस गति को प्राप्त होते हैं उनको मैं तुमसे कहता हूँ ॥९॥ मान और मोह से रहित, संग दोष को जीतनेवाले, आत्मज्ञान में परिनिष्ठित, अभिलाषाओं का त्याग करनेवाले और सुख-दुःख के द्वन्द्व से छूटे हुए ज्ञानी मनुष्य उस अविनाशी पदको प्राप्त करते हैं ॥१०॥ ज्ञानरूपी कुण्ड है, उसमें सत्यरूपी जल है, राग-द्वेषरूपी मल को दूर करनेवाला है।

सुधियस्तां गतिं यान्ति तानहं कथयामि ते ॥९॥ निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ॥ द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥१०॥ ज्ञानह्रदे सत्यजले रागद्वेषमलापहे ॥ यः स्नाति मानसे तीर्थे स वै मोक्षमवाप्नुयात् ॥११॥ प्रौढं वैराग्यमास्थाय भजते मामनन्यभाक् ॥ पूर्णदृष्टिः प्रसन्नात्मा स वै मोक्षमवाप्नुयात् ॥१२॥ त्यक्त्वा गृहं च यस्तीर्थे निवसेन्मरणोत्सुकः ॥ म्रियते मुक्तिक्षेत्रेषु स वै मोक्षमवाप्नुयात् ॥१३॥ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ॥ पुरी द्वारावती ज्ञेयाः

ऐसे मानसतीर्थ में जो स्नान करता है वह मोक्ष प्राप्त करता है ॥११॥ पुष्ट वैराग्य में स्थित हो और अन्य को न भजता हुआ जो केवल मुझको भजता है, जिसकी दृष्टि पूर्ण परमात्मा में ही है वह प्रसन्नात्मा निश्चय मोक्ष को प्राप्त करता है ॥१२॥ जो मरने की उत्कण्ठा करके घर को छोड़कर तीर्थ में वास करता है या मुक्ति देनेवाले क्षेत्रमें मरता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है ॥१३॥ अयोध्या १, मथुरा २, माया ३, काशी ४, कांची ५, अवन्तिका ६, द्वारावती

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

७ ये पुरी मोक्ष को देनेवाली हैं ॥१४॥ हे गरुड़! मैंने तुमसे इस प्रकार सनातन मोक्षधर्म कहा, ज्ञान और वैराग्य समेत इसको सुनने से मोक्ष प्राप्त होता है ॥१५॥ तत्व के जाननेवाले मोक्ष को प्राप्त होते हैं, धर्म करनेवाले स्वर्ग को जाते हैं, पापी दुर्गति को प्राप्त होते हैं और पक्षी आदि यहीं उत्पन्न होते हैं और यहीं मरते हैं॥१६॥ इस प्रकार मैंने

सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥११४॥ इति ते कथितं तार्क्ष्य मोक्षधर्मं सनातनम् ॥ ज्ञानवैराग्य-सहितं श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात् ॥११५॥ मोक्षं गच्छन्ति तत्त्वज्ञा धार्मिकाः स्वर्गतिं नराः ॥ पापिनो दुर्गतिं यान्ति संचरन्ति खगादयः ॥११६॥ इत्येवं सर्वशास्त्राणां सारोद्धारो निरूपितः ॥ मया ते षोडशाध्यायैः किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥११७॥ सूत उवाच ॥ एवं श्रुत्वा वचो राजन् गरुडो भगवन्मुखात् ॥ कृताञ्जलिरुवाचेदं तं प्रणम्य मुहुर्मुहुः ॥११८॥ भगवन्देवदेवेश श्रावयित्वा वचोऽमृतम् ॥ तारितोऽहं त्वया नाथ भवसागरतः प्रभो ॥११९॥ स्थितोऽस्मि गतसन्देहः कृतार्थोऽस्मि न संशयः ॥ इत्युक्त्वा गरुडस्तूष्णीं

तुमसे शास्त्र का सारोद्धार सोलह अध्याय में निरूपण किया, अब क्या सुनना चाहते हो ?॥१७॥ सूतजी बोले—हे राजन्! गरुड़ जी इस प्रकार भगवान् के मुख से वचन सुनकर उनको बारम्बार प्रणाम कर हाथ जोड़कर बोले ॥१८॥ हे भगवन्! हे देवदेवेश! हे प्रभो! तुमने मुझको अमृतरूपी वाणी सुनाकर भवसागर से पार किया ॥१९॥ अब संदेह-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रहित स्थिर होकर कृतार्थ हूँ, इसमें सन्देह नहीं है। ऐसा कहकर गरुड़जी चुपचाप बैठ ध्यान में तत्पर होगये॥२०॥ स्मरण मात्र से दुर्गति को हरनेवाले, पूजनरूपी यज्ञ से उत्तम गति देनेवाले और अपनी परम भक्ति से मुक्ति देनेवाले हरि मेरी रक्षा करें॥ २१॥

इति श्री गरुड़पुराणे सारोद्धारे भाषाटीकायां षोडशोऽध्यायः॥१६॥

स्थित्वा ध्यानपरोऽभवत्॥२०॥ स्मरणाद् दुर्गतिहर्ता पूजनयज्ञेन सद्गतेर्दाता॥ यः परया निजभक्त्या ददाति मुक्तिं स मां हरिः पातु॥२१॥

इति श्रीगरुडपुराणे सारोद्धारे भगवद्गरुडसंवादे मोक्षधर्मनिरूपणं नाम षोडशोऽध्यायः॥१६॥

श्रीभगवानुवाच॥ इत्याख्यातं मया तार्क्ष्य सर्वमेवौर्ध्व दैहिकम्॥ दशाहाभ्यन्तरे श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१॥ इदं चामुष्मिकं कर्म पितृमुक्तिप्रदायकम्॥ पुत्रवाञ्छितदं चैव

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीभगवान् ने कहा—हे गरुड़! मैंने सब औध्र्वदैहिक क्रिया (मरने के अनन्तर के कर्म) तुमसे कही जिसको दस दिन के भीतर सुनकर मनुष्य सब पाप से छूट जाता है॥१॥ यह आमुष्मिक (पारमार्थिक) कर्म पितरों को मुक्ति देनेवाला, पुत्र की वाञ्छित कामना को देनेवाला और परलोक तथा इस लोक में सुख देनेवाला

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है ॥२॥ जो नास्तिक अधम नर इस कर्म को नहीं करते हैं उनका स्पर्श किया हुआ जल भी सुरा के तुल्य पीने के अयोग्य है इसमें सन्देह नहीं ॥३॥ देवता-पितर गण उसके घर को नहीं देखते हैं, अतः उनके कोप से पुत्र-पौत्र सब दरिद्री होते हैं ॥४॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा और लोगों को भी प्रेतक्रिया के बिना चाण्डाल के समान

परत्रेह सुखप्रदम् ॥ २ ॥ इदं कर्म न कुर्वन्ति ये नास्तिकनराधमाः ॥ तेषां जलमपेयं स्यात्सुरातुल्यं न संशयः ॥ ३ ॥ देवताः पितरश्चैव नैव पश्यन्ति तद्‌गृहम् ॥ भवन्ति तेषां कोपेन पुत्राः पौत्राश्च दुर्गताः ॥४॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चैवेतरेऽपि च ॥ ते चाण्डालसमा ज्ञेयाः सर्वे प्रेतक्रियां विना ॥ ५ ॥ प्रेतकल्पमिदं पुण्यं शृणोति श्रावयेच्च यः ॥ उभौ तौ पापनिर्मुक्तौ दुर्गतिं नैव गच्छतः ॥ ६ ॥ मातापित्रोश्च मरणे सौपर्णं शृणुते तु यः ॥ पितरौ मुक्तिमापन्नौ सुतः संततिमान् भवेत् ॥ ७ ॥ न श्रुतं गारुडं येन गयाश्राद्धं

जानना चाहिये ॥५॥ इस पवित्र प्रेतकल्प को जो सुनाता है और सुनता है वे दोनों पाप से छूटकर दुर्गति को प्राप्त नहीं होते हैं ॥६॥ हे गरुड़ ! माता-पिता के मरने में जो पुत्र इसको सुनते हैं उनके माता-पिता मुक्ति को प्राप्त होते हैं और वह पुत्र सन्ततिवाला होता है ॥७॥ जिसने गरुड़पुराण न सुना हो, गया-श्राद्ध न किया हो, जिसने वृषो-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्सर्ग न किया हो, जिसने मासिक तथा वार्षिक श्राद्ध न किया हो ॥८॥ उसे कैसे पुत्र कहा जाय ? वह तीनों प्रकार के ऋण से कैसे छूटेगा ? माता-पिता को तारने में कैसे समर्थ होगा ?॥९॥ इसलिये सब प्रयत्न से गरुड़पुराण निश्चय सुनना चाहिये। यह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देनेवाला है और दुःख का नाश करनेवाला है ॥ १० ॥ यह

च नो कृतम् ॥ वृषोत्सर्गः कृतो नैव न च मासिकवार्षिके ॥ ८ ॥ स कथं कथ्यते पुत्रः कथं मुच्येदृणत्रयात् ॥ मातरं पितरं चैव कथं तारयितुं क्षमः ॥ ९ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रोतव्यं गारुडं किल ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणां दायकं दुःखनाशनम् ॥ १० ॥ पुराणं गारुडं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ॥ शृण्वतां कामनापूरं श्रोतव्यं सर्वदैव हि ॥ ११ ॥ ब्राह्मणो लभते विद्यां क्षत्रियः पृथिवीं लभेत् ॥ वैश्यो धनिकतामेति शूद्रः शुद्ध्यति पातकात् ॥ १२ ॥ श्रुत्वा दानानि देयानि वाचकायाखिलानि च ॥ पूर्वोक्तशयनादीनि नान्यथा सफलं भवेत्

गरुड़पुराण पवित्र करनेवाला, पापों का नाश करनेवाला और सुननेवाले पुरुषों की कामना को पूरी करनेवाला है, अतः इसे सदा सुनना चाहिये ॥११॥ ब्राह्मण विद्या प्राप्त करता है, क्षत्रिय पृथिवी को पाता है, वैश्य धनवान् होता है, और शूद्र पाप से शुद्ध हो जाता है ॥१२॥ इस गरुड़पुराण को सुनकर इस पुराण के बाँचनेवाले को पूर्वोक्त सब दान देना चाहिये। जो पहले कहे हुये सम्पूर्ण शय्यादान आदि वाचक को नहीं देता है उसका दिया हुआ दान निष्फल होता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। १३ ।। पहले पुराण की पूजा करे ततः वस्त्र, अलङ्कार, गोदान और दक्षिणा से आदरपूर्वक वाचक की पूजा करे
।। १४।। अन्न, सोने के दान और बहुत भूमिदान से अधिक फल की प्राप्ति के लिये भक्तिपूर्वक वाचक की पूजा

।।१३।।पुराणं पूजयेत् पूर्वं वाचकं तदनन्तरम्।।वस्त्रालंकारगोदानैर्दक्षिणाभिश्च सादरम्।।१४
अन्नैश्च हेमदानैश्च भूमिदानैश्च भूरिभिः ।। पूजयेद्वाचकं भक्त्या बहुपुण्यफलाप्तये ।।१५
वाचकस्यार्चनेनैव पूजितोऽहं न संशयः ।। सन्तुष्टे तुष्टितां यामि वाचके नात्र संशयः ।।१६

इति श्रीगरुडपुराणश्रवणफलम् ।।

करे ।।१५ ।। बाँचनेवाले की पूजा करने से मैं पूजित होता हूँ इसमें सन्देह नहीं है। वाचक के संतुष्ट होने पर मैं भी सन्तुष्ट होता हूँ इसमें भी सन्देह नहीं है ।।१६।।

इति श्री गरुडपुराणश्रवणफलं सम्पूर्णम् ।

संशोधक—चन्द्रशेखरशास्त्रिणा परिष्कृत्य सम्पादितम् ।।

मुद्रक—नरेन्द्र भार्गव, भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

* संक्षिप्त सूचीपत्र *

श्रीरामचरितमानस, भाषा टीका सचित्र तथा सजिल्द (देवदीपिका टीका) आठ-काण्ड क्षेपक सहित रायल चौपेजी छप रही है

श्रीरामचरितमानस सटीक सचित्र तथा सजिल्द आठ काण्ड २२×२९ = ८ पेजी ग्लेज कागज

श्रीरामचरितमानस सटीक सचित्र तथा सजिल्द आठ काण्ड २२×२९ = ८ पेजी

(१) सचित्र भार्गव स्टैण्डर्ड अंग्रेजी-हिन्दी डिक्शनरी बड़ी २३×३६ = १६ पेजी

(२) भार्गव कन्साइज अंग्रेजी-हिन्दी डिक्शनरी छोटी २३×३६ = ३२ पेजी

(३) सचित्र भार्गव स्टैण्डर्ड हिन्दी-अंग्रेजी डिक्शनरी बड़ी यह अपने ढंग की अपूर्व पुस्तक है, २३×३६ = १६ पेजी

मिलने का पता—श्री गंगा पुस्तकालय, गायघाट, वाराणसी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

* हमारी नई प्रकाशित पुस्तकें *

मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका
शीघ्रबोध भाषा टीका
ग्रहगोचर भाषा टीका
चमत्कार-चिन्तामणि भाषा टीका
लग्नजातक भाषा टीका
जातकालंकार भाषा टीका
बृहद् अवकहड़ा चक्र भाषा टीका

रामायण बतर्ज राधेश्याम

रामायण की सम्पूर्ण कथा मय क्षेपक के २८ भागों में, रायल ८ पेजी साइज, सुन्दर जिल्द में अपने तर्ज की निराली, छपकर तैयार हो गई है।

बृहत् नवीन सुखसागर

श्रीमद्भागवत् के १२ स्कन्धों का सरल, सुन्दर और रोचक भाषा में हिन्दी अनुवाद, २२×२९=८ पेजी, १५ रंगीन चित्रों से सुसज्जित। छप रहा है

श्री काशी मकरंदीय दशवर्षीय पंचांग

संवत् २०२८ से २०३७ तक

प्रत्येक वर्ष का भविष्यफल, राशिफल, संवत्सरफल तथा हरएक मास की तेजी-मन्दी की भविष्यवाणी आदि

सम्पूर्ण सर्वोपयोगी विषयों से सुसज्जित

मिलने का पता—**श्री गंगा पुस्तकालय, त्रिलोचन, वाराणसी**

मूल्य के लिये ऊपर लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

५/-

* इति *

गरुडपुराणम्

भाषाटीकासहितम्

प्रकाशक—भार्गव बुकडिपो, चौक, वाराणसी